आग्रह



तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो विषे रस लाग ।
पाउं पकड़ कहे इन्द्रावती, उठ खड़े रहो जाग ।।

- (प्रकाश हिं. प्र.१७/चौ.२१) ।

अर्थः- हे मेरे धाम के सुमन सुन्दरसाथजी !

आप सभी तो अत्यंत ही बुद्धिमान्, होशियार एवं समझदार हैं । सुनो, देखो और विचार करो ! पंचविषय के इन्द्रियजन्य स्वाद में ही मत लगे रहो । मैं इन्द्रावती आप सबके चरण पकड़कर कहती हूँ कि अज्ञानरूपी निद्रा में से ज्ञान लेकर जागो ! उठो !! खड़े हो जाओ !!! क्योंकि आब अपने घर जाने का समय हो गया है।

- लेखक

पुनश्चः-

❋ आत्मीय प्रेमाग्रह ❋

सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को ।
बिचार देखो हादीय की, बानी ले दिलमों ।।

- (श्री खुलासा, प्र.१६/चौ. ७९)।

हे मेरी प्यारी धामस्थ आत्माओं ! आप लोग निजधाम से इस दुःखरूपी ब्रह्माण्ड में क्यों आए हो ? असत्, जड़, दुःख और सत्, चिद्, आनन्द का तारतम ज्ञान के माध्यम से संतुलनात्मक ज्ञानार्जित कर उस ज्ञान के द्वारा आत्म-जागृति करो क्योंकि आत्म-जागृति का अपूर्व, अवर्णनीय सुखानुभव करने के लिए ही आप सब श्री राजजी से वचनबद्ध होकर आये हो । दिए हुए वचन को याद करो ।

श्री राजजी ने आप लोगों को दिए हुए वचन को बिलकुल भूलकर कुम्भकर्णवत् मायावी नशे में चूर होकर सोवने के अथवा भूलने के लिए खेल में नहीं भेजा है। यदि आप सब धामधनी सम्बन्धी आत्माओं में से हो, तो अपने हादी-सद्गुरु निजानन्द श्री देवचंद्रजी और महामति श्री प्राणनाथजी प्रदत्त उक्त वाणी की चौपाई को कोमल चित्त में धारण करो और निश्चिंत होकर शीघ्रातिशीघ्र निर्णय कर लो कि आप लोग धाम से संसार में क्यों आए हो तथा श्री राजजी ने क्यों भेजा है ? खेल में आकर क्या करना था ? विचार-विवेक करके देखो ! क्या आप सब दिए हुए वचनानुसार चल रहे हो ?

हे आत्माओं !

चरण पकड़ कहे यशवन्ती,
उठो ! खड़े रहो जाग ।

- प्रणाम ।

अक्षरातीत श्री कृष्ण परमात्मने नमः

(श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-श्रीमन्निजानन्द संप्रदाय)

स्वामी श्री लालदासजी महाराज प्रणीत बीतक साहेब

के -

श्री १०८ श्री दीनदयालजी महाराज कृत

सवाल - जवाब

(पूर्वांश - प्रथम खण्ड)

लेखक -

"प्राणनाथ साहित्य भास्कर" - सम्मान से विभूषित

परमपूज्य "वाणी आचार्य"

श्री १०८ श्री दीनदयालजी महाराज

संरक्षक - श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र चे. ट्रस्ट

बोरीवली (प.), मुंबई - ४०० ०९२.

प्रकाशक -

१. हिन्दी - श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र के संस्थापक,
"प्राणनाथ साहित्य भास्कर" - सम्मान से विभूषित
परमपूज्य "वाणी आचार्य"
श्री १०८ श्री दीनदयालजी महाराज
बोरीवली (प.), मुंबई - ४०० ०९२.

२. गुजराती - ज्ञान केन्द्र -
C/O श्री प्राणनाथ महिला मंडल (रजि.),
बोरीवली (प.), मुंबई - ४०० ०९२.

पुस्तक प्राप्ति स्थान

१. श्री १०८ प्राणनाथजी मंदिर
श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम (मुक्तिपीठ),पन्ना,
मध्य प्रदेश - ४८८ ००१. संपर्क: ०७७३२-२५२०४६

२. श्री ५ महामंगलपुरी धाम
श्री कृष्ण प्रणामी मोटा मंदिर,
सैयदवाड़ा, सूरत - ३. संपर्क: ०२६१-२४२४९८६

३. श्री कृष्ण प्रणामी मूल मिलावा मानव मंदिर
वेड रोड, सूरत. संपर्क: ०२६१-२५१२७२२

४. श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र चे. ट्रस्ट
३, सुंदरधाम बिल्डिंग, जामली गली, बोरीवली (प.),
मुंबई - ४०० ०९२. संपर्क: ०२२-२८९९ ८७५८

५. श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर
डिल्ली बाजार, काठमाण्डौ (नेपाल).
संपर्क: ००९७७-९८४१२३१०३५

६. श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर
सेवक रोड, सिलिगुड़ी, (पश्चिम बंगाल).
संपर्क: ०३५३-२६४२७२८

७. श्री कृष्ण प्रणामी साधनालय चे. ट्रस्ट
श्री प्राणनाथ वाणी प्रशिक्षण केन्द्र,
पोस्ट - गडऊमरिया, धरमपुर, दर्रामुरा,
रायगढ़, छत्तीसगढ़ - ४९६ ००१.
संपर्क: ०९९०७ ४४२ ४४२

❖ विषय सूची ❖

क्रम संख्या	प्रकरणों के नाम	पृष्ठ संख्या
१.	अनुभूमिका	१
२.	स्वलीला अनुशीलन	१०
३.	मूलपाठ-अथ शास्त्र की साक्षी	२०
४.	महाकारण	३२
५.	कच्छ में खोज	७०
६.	श्री देवचन्द्र स्वरूप की पहचान	९०
७.	नवतनपुरी लीला	१०४
८.	तारतम प्रकाश	१२०
९.	संक्षिप्त जीवन वृत्त	१३६
१०.	अन्तर्ध्यान एवं बलिदान	१४२
११.	मोमिनों की कुर्बानी	१४६
१२.	श्री देवचन्द्रजी के परिवार प्रसंग	१५२
१३.	सुन्दरसाथ आगमन	१५४
१४.	कुरान पुरान साक्षी	१६०
१५.	दोनों स्वरूपों का मिलाप	१६६
१६.	कसौटी	१९४
१७.	अरब यात्रा	२१०

१८.	सद्गुरु अन्तर्ध्यान लीला	२४०
१९.	तारतम वाणी अवतरण	२५२
२०.	सुन्दरसाथ प्रबोध	२७६
२१.	तीन सृष्टि	३०२
२२.	कब लों कांसा कूटेगा	३०६
२३.	जाति स्मरण बोध	३२२
२४.	ब्रह्ममुनियों की रक्षा	३३०
२५.	ठट्ठा नगर वृत्तान्त	३४६
२६.	चिन्तामणि बोध	३६२
२७.	लालदास मिलाप	३७६
२८.	मसकत बंदर	३८६
२९.	अबासी बंदर वृत्तान्त	४०२
३०.	नलिया की ओर	४३०
३१.	निष्कासित धारा का प्रत्यागमन	४३८
३२.	नाद और बिन्दु में भेद	४६२
३३.	सूरत आगमन	४७४

पूर्वांश-प्रथम खण्ड समाप्त ।



❖ अनुभूमिका ❖

अहो! ..... श्री निजधामस्थ सुमन सुन्दरसाथजी!

यह संसार सागर अति निरस, धोखेदार, छल-कपट से भरा हुआ पुनः अविश्वसनीय, निर्दयी, दुस्तरातिदुस्तर एवम् विभिन्न अनर्थमय गुणों से युक्त है। ऐसे इस पानी के बुलबुले सदृश क्षणिक जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिनने के अवधि काल में भी मुझे आज पुनः लोकाभ्युदय गहन विषयात्मक स्व-समाज सेवा का अति सुहावना अवसर उपलब्ध हुआ है। फलतः मेरे दिमाग का सातवें आसमान में होना[1] कोई अस्वाभाविक बात नहीं है । किंतु इस जागनी के ब्रह्माण्ड में मुझ जैसे अशक्त शारीरिक अवस्थावाले व्यक्ति पर धामधनी श्री राजजी द्वारा ऐसी अहोभाग्यमय सुअवसर की प्रेरणायुक्त असीमातिअसीम अनुकम्पा होना, तो वास्तव में मेरे दीनैकबन्धो परमपूज्य धामधनी स्वरूप गुरुप्रवर बाबाजी श्री लक्ष्मीदासजी महाराज, नवतनपुरी (जामनगर) की आत्मीय प्रेरणा, अपार दया-कृपा के सिवाय अकाट्य रूपेण असम्भव है।

अतः उनकी हृदयस्थ आत्मीय प्रेरणा, असीम दया-कृपा के प्रतिफल जो कार्य आगे होने जा रहा है, उन सभी प्रतिक्रियाओं के प्रति मैं मेरे धामधनी स्वरूप श्री गुरुदेव के चरणों में नतमस्तक होता हूँ और मैं अपने आपको आजीवन उनका ऋणी मानता रहूँगा। उक्त प्रकार की असीम, अपार दया-कृपा अथवा यह कहा जाय कि उनकी अदृश्य हार्दिक अनुकम्पा के कारण ही मैं ७६ साल की उम्र में अपने अंत समय में भी दम तोड़ना छोड़कर रहल-पहल एवं बची-कुची हिम्मत और ताकत बटोरकर अपने समाज-सेवार्थ फूँक से पहाड़ उड़ाने[2] जैसा कार्य अर्थात् स्वामी श्री लालदासजी महाराज कृत मूल बीतक साहेब को सवाल-जवाब के रूप में प्रकाशित कर समाज के समक्ष रखने जा रहा हूँ।

आज से पहले अपने श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-निजानन्द सम्प्रदाय में करीब २५-३० बीतकों की रचना हो चुकी है। उनमें से स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब उक्त सभी बीतकों की आधारभूता एवम् मूल बीतक साहेब है। श्री निजानन्द सम्प्रदाय में जिस प्रकार श्री प्राणनाथजी के बाद श्री

१. बड़ा घमंड करना । २. थोडी-सी शक्ति से बड़े काम करने का उद्योग करना ।

लालदासजी का स्थान है, उसी प्रकार प्रणामी साहित्य में उपास्य ग्रन्थ "श्री कुलजम स्वरूप साहेब-श्री तारतम सागर" के बाद "स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब" का स्थान है। इसीलिए अन्य बीतकों में स्वामी लालदास कृत बीतक साहेब सर्वाधिक प्राचीन, पूज्य और विश्वसनीय है तथा प्रणामी समाज में इसे प्रथम दर्जे की मान्यता प्राप्त है।

आदिकाल से प्रचलित इस बीतक साहेब में कुल ७३ प्रकरण और ४३७७ चौपाइयाँ हैं। इसी बीतक ग्रन्थ के सवाल-जवाब के रूप में प्रकाशित प्रस्तुत ग्रन्थ आप लोगों के समक्ष उपस्थित है, जिसमें कुल ५४७७ सवाल-जवाब हैं। उक्त ५४७७ सवाल-जवाब को तीन खण्डों में विभक्त किया गया है। जैसे -

१. प्रथम खण्ड में सवाल-जवाब की कुल संख्या १२५० रहेगी और बीतक की मजल शुरूआत से लेकर सूरत की बीतक पर्यन्त आयेगी।

२. द्वितीय खण्ड में सवाल-जवाब की कुल संख्या २०१६ होगी। पुनः मजल सूरत से लेकर उदयपुर की बीतक पर्यन्त आयेगी।

३. तृतीय खण्ड में सवाल-जवाब की कुल संख्या २२११ होगी। पुनः मजल मंदसोर से लेकर अष्ट पहर की सेवा पर्यन्त अर्थात् बीतक समाप्ति तक होगी। अतः संक्षिप्त रूप में :-

(१) प्रथम भाग में सवाल-जवाब की कुल संख्या १२५० होगी।

(२) द्वितीय भाग में सवाल-जवाब की कुल संख्या २०१६ होगी।

(३) तृतीय भाग में सवाल-जवाब की कुल संख्या २२११ होगी।

अतः तीनों खण्डों को मिलाकर सवाल-जवाब की कुल संख्या (१२५०+२०१६+२२११=५४७७) पाँच हजार चार सौ सतहत्तर होगी।

उपरोक्त स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब में मुख्यतः तीन स्वरूप की बीतक आती है। इनमें से कौन-कौन से स्वरूप किस-किस कार्यार्थ आये और वे किस प्रकार इस दुस्तर संसार सागर के बीच आये निजधामस्थ समाज के साथ-साथ संसार की सर्वात्माओं को सब धान बाइस पसेरी[१] के दर्जे में रखकर शेर के मुँह में हाथ डालने[२] जैसा कार्य सम्पन्न कर गये ?

---

१. भले-बुरे को समान जानना । २. साहस का काम करना ।

वर्तमान कलिकाल गुण ग्रस्त निजानन्दी-प्रणामी प्रचारकों को श्रीमन्निजानन्द-श्री कृष्ण प्रणामी धर्म सिद्धान्त अन्तर्गत इस मान्यता को ध्यान में लेकर चलना जरूरी और अनिवार्य देखने में आ रहा है। क्योंकि हमारा धर्म सिद्धान्त टकसाली बात करनेवाले[१] प्रचारकों को मान्यता देता है, न कि बकवादी एवम् धर्म का दाना बिगाड़नेवाले नामधारी प्रचारकों को! अतः श्री लालदास कृत बीतक साहेब में स्थित, "तीन स्वरूपों की बीतक" विषय को निम्न प्रकार से समझने पर टट्टी की आड़ में शिकार करने[२] के प्रतिफलरूपी पाप-अपराध से बच सकते हैं। जैसे -

१) **"पीउ पांच बेर हम वास्ते, सागर में डारया आप"**

- (श्री प्रकाश हिन्दी, प्र.१७/चौ.९)।

पीउ (मूल मिलावेवाले धनीजी का जोश) व्रज में, रास में और जागनी के ब्रह्माण्ड के तीन स्वरूप के रूप में ब्रह्मात्माओं को खेल दिखलाने हेतु पाँच बार पञ्चभौतिक शरीर धारण कर संसार में आये। मूल मिलावेवाले श्री राजजी ने इन ब्रह्माण्ड के कार्यकलाप का मुद्दार भी इन तीन मर्द स्वरूपों के ऊपर ही सौंपा है। जैसे -

"मरद तीनों पर है मुद्दार"

पुनश्च -

२) **"ए तीनों सूरत हैं एक,सो रसूल तीनों सरूप बिसेक"**

- (श्री बड़ा कयामतनामा, प्र.१२/चौ.२)।

अतः तीनों स्वरूप-बसरी, मलकी और हकी में से बसरी स्वरूप ***"रास खेलके आये बरारब स्याम"*** अर्थात् बरारब-अरबवाले तृतीय श्याम स्वरूप मुहम्मद साहेब हैं। पुनः मलकी-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और हकी स्वरूप श्री मेहराज अर्थात् महामति श्री प्राणनाथजी हैं। यसर्थ हे मेरे आत्मीय बन्धुओं, धामस्थ दोस्त अथवा निजानन्दी - प्रणामी प्रचारकों! अपने दिमाग को थोड़ी-सी कसरत कराना जी। आप लोग व्यर्थ में आकाश में छेद करने[३] जैसी हिम्मत क्यों करने लगे हो? वह भी श्री सद्गुरु और महामति स्वरूपों

१. प्रामाणिक बात करना। २. धूर्तता से छिपकर कार्य साधना; छिपकर पाप करना।
३. बड़ी चालाकी दिखलाना।

के खिलाफ? वाह रे वाह! मेरे मित्र बन्धुओं!! तारतम वाणी के इलमी कहलाकर ऐसा? अपनी-अपनी आँखों से निहारकर निम्नोक्त प्रमाण देख लीजिये न !

३) बसरी मलकी और हकी, ए तीनों के जुदे खिताब।
एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब।।

- (श्री छोटा कयामतनामा, प्र.१/चौ.८)।

श्री श्यामाजी के तीनों स्वरूपों-बसरी, मलकी और हकी को अलग- अलग प्रकार की शोभा (उपाधियाँ) प्राप्त हुई हैं। अतः किससे प्राप्त हुई? मूल मिलावेवाले श्री राजजी से। उनमें से एक परमात्मा (श्री राजजी) का सन्देश लेकर आए, दूसरे ने तारतम ज्ञानरूपी कुंजी प्रदान की, तो तीसरे ने सभी धर्मग्रन्थों के गूढ़ रहस्यों को स्पष्ट किया।

अतः उक्त तीनों मर्द स्वरूपों-बसरी-मुहम्मद साहेब, मलकी-श्री सद्गुरु देवचन्द्रजी और हकी-श्री मेहराज (महामति श्री प्राणनाथजी) को इस जागनी के ब्रह्माण्ड में किन-किन कार्यों का श्रेय अथवा खिताब मिला? अतः बसरी स्वरूप को ला, इल्लाह अर्थात् क्षर, अक्षर से परे इलिल्लाह-अक्षरातीत ब्रह्मधाम खुदा के अर्शरूपी लक्ष्य को संसार में अवतरित करने का तथा वहाँ के लोगों को शरीअत के मार्ग पर चलाकर इंसानियत की मर्यादा का पालन कराने का, पुनः ब्रह्म एवम् ब्रह्मात्माओं के दूसरी बार स्वप्निक जगत्-खेल में आने विषय की साक्षी रखने का खिताब अथवा श्रेय मिला। मलकी स्वरूप-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को हकीकत-वास्तविकता अथवा वास्तविक ब्रह्म को इंगित करनेवाला ब्रह्म मंत्र-तारतम ज्ञान खेल में अवतरित कर उस ब्रह्मज्ञानाधार प्रथम स्वरूप द्वारा दिए हुए लक्ष्य में पहुँचाने का, प्रेम-सेवारूपी भक्ति-मार्ग जाहिर करने का खिताब-श्रेय मिला। पुनः हकी स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी को विज्ञान दर्जे के तारतम-मारफती ज्ञान के माध्यम से सृष्टि के सारे धर्मग्रन्थों के गुह्य-गोप्य अथवा सांकेतिक बातुनी भेदों को खुलस्त कर तीनों सृष्टियों को एक अद्वैत ब्रह्म के चरणों में दृढ़ विश्वास दिलाकर मायावी भूमिका से परे बेहद स्थित अक्षर-अक्षरातीत ब्रह्म के चरण तले सच्चिदानन्दमय भूमिका में पहुँचाने अथवा अखण्ड मुक्तिस्थान में अखण्ड करने का खिताब-श्रेय प्राप्त हुआ। इतना ही नहीं, जड़-चेतन की मुक्ति का विधान जाहिर करने का खिताब अथवा श्रेय भी उन्हीं को दिया गया। अतः

उक्त तीनों स्वरूपों को उक्त भिन्न-भिन्न कार्यों का खिताब-श्रेय दिया तो, किसने? स्वयं मूल मिलावेवाले अद्वैत ब्रह्म श्री राजजी ने! इस प्रकार की गुह्य वास्तविकता को समझे बिना श्री राजजी के आदेश के विरुद्ध आत्मघातरूपी प्रचार-प्रसार करके मेरे निजानन्दी-प्रणामी प्रचारक बन्धु धर्मस्थान एवम् धर्म सिद्धान्त विरुद्ध जीवन यापन कर अन्त में कहाँ प्रस्थान करने के लिए कमर बाँध रहे हैं? हे मेरे मित्रगणों! आकाश-पाताल एक करके[9] भी जघन्य अपराधरूपी कार्य में क्यों प्रवृत्त होते हो? अतः आप प्रचारकों से विनयपूर्वक कहता हूँ कि कृपया धर्म-सिद्धान्त द्रोही साबित होने से पहले ही अपनी-अपनी आँखों में तारतमरूपी चश्मा पहनकर निम्नोक्त चौपाई प्रमाण के रूप में देख लीजिये न! जैसे-

४) बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत।
ए तीनों महंमद की, बीच अरस वाहेदत ।।

-(श्री मारफत सागर, प्र.१४/चौ.८५)।

अरे मेरे आत्मीय बन्धुओं! अथवा वर्तमान तारतम ज्ञान के नामधारी निजानन्दी इलमियों!! *"बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत"* कहा, अतः किसकी एक सुरत? पुनः अर्श वाहेदत के मुहम्मद कौन हैं? अतः उनकी तीन सूरतों (स्वरूपों) को अलग करनेवाले सिद्धान्तद्रोही क्या वाणी-बीतक के दुश्मन तथा श्री राजजी के ही द्रोही नहीं होंगे? अहो मेरे धामस्थ आत्माधार सम्बन्धी निजानन्दी-प्रणामी धर्मप्रचारकों! बिचारा समाज जैसे उस समय निजानन्दाचार्य श्री सद्गुरु और महामति श्री प्राणनाथजी के आश्रय पर निर्भर था, वैसे ही आज का समाज आप लोगों पर आश्रित तथा निर्भर है। अतः क्या आप वर्तमान समाज को उन दोनों सिद्धान्त प्रदत्त महापुरुषों के सिद्धान्त से विमुख बनाकर धुन्धुकारी-परीक्षित मार्ग पर जबरदस्ती घसीटकर दौड़ाने से मूल मिलावेवाले श्री राजजी स्वरूप की नजर में एक कर्त्तव्यपरायण सच्चे धर्मप्रचारक साबित हो पायेंगे? अतः निम्नोक्त चौपाई भी देख लीजिये। जैसे -

५) रसूल रूहअल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम ।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी ।

-(श्री बड़ा कयामतनामा, प्र. ५/चौ. ३७)।

९. बड़ा अन्वेषण करना, बड़ी जाँच-पड़ताल करना ।

रसूल-मुहम्मद साहेब, रूह अल्लाह-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और इमाम-महामति श्री प्राणनाथजी-ये तीनों ही मूल में एक ही स्वरूप हैं। इस बात की साक्षी अल्लाह कलाम-श्री मुख बानी है। उक्त तीनों ही बसरी, मलकी और हकी स्वरूप हैं। जागनी के ब्रह्माण्ड में ये तीनों स्वरूप ही अक्षरातीत ब्रह्म-श्री राजजी के प्रेमरूपी अमृत को तारतम ज्ञान के माध्यम से तीनों सृष्टियों को पिलानेवाले हैं और पिला रहे हैं।

अरे मेरे प्रियात्माओं में भी अग्रगण्य, निजानन्दी-प्रणामी धर्म-प्रचारकों! हाय रे हाय!! श्री राजजी के हुकम-आदेश के स्वरूपयुक्त श्री श्यामाजी का ही अंग भंग करना और अपने ही सिद्धान्त विरुद्ध समाज-द्रोही बनकर धाम में मुँह दिखाने का दावा भी करना? वाह रे वाह!! "हम तुम एक बतन के" हैं, इसलिए सविनय हाथ जोड़ता हूँ कि अपनी आत्मा के उद्धार के लिये श्री लालदास कृत बीतक साहेब के अष्ट-पहर के मंगलाचरण की चौपाई नं. १९ को अच्छी तरह से निहारकर देखिये जरा क्योंकि आप लोग बाणी-बीतक को मानने और सद्गुरु तथा महामति को जाननेवाले कहलाते तो हो, परन्तु किसके आधार पर मानते तथा जानते हो, यह भी विचारणीय है न? अतः

६) बसरी मलकी और हकी, ए हुकम तीन सूरत ।
तिन दई हैयाती दुनी को, करी सैयन वास्ते सरत ।।

बसरी-मुहम्मद साहेब, मलकी-श्री देवचन्द्रजी तथा हकी-श्री मेहराज ठाकुर (महामति श्री प्राणनाथजी), ये तीनों परब्रह्म श्री राजजी के आदेश के स्वरूप हैं। इन स्वरूपों ने संसार के लोगों को अखण्ड मुक्ति प्रदान की। इनमें से हुकम के स्वरूप ने ब्रह्मात्माओं के संसार में प्रकट होने की भविष्यवाणी की थी।

अतः वर्तमान अग्रगण्य तारतम ज्ञान के निजानन्दी-प्रणामी धर्म-प्रचारकों! मैं इसलिए आप लोगों को सचेत कर रहा हूँ कि कहीं आप लोग जिस हाँडी में खा रहे हैं, उसी में छेद तो नहीं कर[9] रहे हैं न ? वर्तमान समाज के कर्णधार विशिष्ट धुरन्धर ब्रह्मज्ञानज्ञ- तारतम ज्ञानज्ञ मेरे आत्मीय दोस्तों! मैं तो आप लोगों के चलन-व्यवहार, धर्म प्रचार-प्रसार को देख-सुनकर

9. उपकार के बदले अपकार (अवगुण) करना ।

चक्कर में पड़ा हुआ हूँ। यसर्थ आप जैसों के समक्ष प्रश्न कर रहा हूँ। मैं अपनी धृष्टता के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ। किंतु हे धुरन्धर अथवा विशिष्ट विद्वानों! मैं श्री मारफत सागर प्र. १३ की चौ. १२ से डरता हूँ, जहाँ कहा है कि, *"तो कह्या जलना याको होए"* परब्रह्म सम्बन्धी ब्रह्मात्माओं का दावा लेनेवाले ये सभी जीवों को उनके दावा लेने मात्र से अथवा इस जघन्य अपराध के कारण नरक की अग्नि में जलना पड़ेगा, तो सिद्धान्तद्रोही, श्री राजजी-द्रोहियों की कौन-सी गति होगी?

पुनः श्री बड़ा कयामतनामा ग्रंथ के प्र.८ की चौ. ४० को देखकर आप प्रचारकों के प्रति दया-भाव भी उत्पन्न होता है, जहाँ कहा है कि -

जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख माहें काफर ।
भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें ।।

जो लोग अन्तिम समय में अवतरित परमात्मा स्वरूप श्री प्राणनाथजी के सिद्धान्त को नहीं मानते हैं, वे नास्तिक सिद्धान्तद्रोही लोग नरक की आग में जलते हैं। मुक्तिस्थलों में रहनेवाली मुक्तात्माओं के सुखों को दूर से देखकर वे सिद्धान्तद्रोही और अधिकाधिक रूप से नरकाग्नि में सन्तप्त होते रहते हैं।

अतः मुझे दुःख हो रहा है क्योंकि जीवन भर के शुभाशुभ कर्म का फल, तो धर्म सिद्धान्त देनेवाले स्वरूप के हाथ में ही है न! उक्त चौपाई के आधार पर यहाँ एक जमात निजानन्द सिद्धान्त हम रहे। अंततः हममें से कोई धाम में, तो कोई नरक में होंगे, तो? जब एक दूसरे में परस्पर चार आँख होगी, तब नरकवाले कैसे नरकाग्नि की बढ़ती ताप सहन कर सकेंगे तथा धाम (भिस्त) वाले उनकी गतिविधि को देखकर कैसे अपने आप को सँभाल सकेंगे?

यसर्थ *"एक मिलाय खोल दीजिए, ए वस्तु पावे तब"* के अनुसार उक्त सभी चौपाइयों का मिलान कर अभी-इसी वक्त सतर्क हो जाने में ही आप सबका कल्याण देखकर मैं अर्ज कर रहा हूँ। देखिये तो भी मेरे लिये नहीं, बल्कि अपनी-अपनी आत्मा के लिये ही देखने का कष्ट करें। अभी यहाँ मात्र छः प्रमाण दिए गए हैं। जरूरत पड़ने पर अनगिनत

और कइयों प्रमाण दिए जा सकते हैं। किंतु आशा करता हूँ कि उक्त प्रमाणों के द्वारा ही अपनी आत्मा का कल्याण करने की ओर अग्रसर होंगे एवम् मुझे पुनः कष्ट उठाना नहीं पड़ेगा।

लक्ष्यबोध करानेवाला उक्त आत्मीय ज्ञान निजधामस्थ आत्माओं के जीवन में अत्यधिक उपयोगी साबित होगा। अतः उक्त तीनों स्वरूपों के जीवन-यात्रा विषयक ज्ञान ब्रह्मात्माओं के लिए जीवन यापन में अवर्णनीय रूपेण फलदायक सिद्ध होगा, इस बात में किंचित् मात्र भी शंका की गुंजाइश नहीं है क्योंकि इन स्वरूपों ने आत्मा के तरण-तारण के लिए साधक को जिन-जिन विषय-वस्तुओं को हृदयाङ्गम करना जरूरी होता है, उन्हें समाज के समक्ष शरीर से कलेजा निकालकर रख देने सदृश समर्पित कर दिया है। अतः उक्त बातों को हृदयाङ्गम कर सृष्टि की सर्वात्माएँ अपनी आत्मा को एक के तीन बनाने[1] की होड़ से बचा सकती हैं और निःशंक बनकर लक्ष्य में पहुँच सकती हैं।

इन तीन महानातिमहान पुरुषों के वास्तविक लक्ष्यबोध ज्ञान का अनुकरण कर निजधामस्थ उन आत्माओं को, जो संसार सागर में भूली-भटकी, मारी-मारी फिर रहीं हैं, अवश्यमेव ही अपने धनी के कदम पर कदम रखकर चलने का प्रेममय आह्वान प्राप्त होगा और "यथा नाम तथा गुणः" चरितार्थ तुल्याने में वे अवश्यमेव कामयाब हो सकेंगी। जैसे -

चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम।
आदमी चले न चाल रूह की, इत दुनी मार न सके दम।।

-(श्री सिनगार, प्र. २३/चौ.६२)।

उक्त स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब को हमारे निजानंदी -श्री कृष्ण प्रणामी समाज में स्वयं साध्य स्वरूप हमारे इष्ट द्वारा ही कथित रचना का दर्जा एवम् महत्त्व प्राप्त है। इसीलिए उक्त बीतक साहेब के प्रत्येक प्रकरण के अंत में महामतिजी की छाप दिखाई पड़ती है। अतः जिस प्रकार निष्कलंक बुद्धावतार महामति श्री प्राणनाथजी द्वारा प्रदत्त श्री मुखवाणी - श्री कुलजम स्वरूप साहेब और स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब उनके तत्कालीन समाज के लिए नहीं थी, क्योंकि वे स्वयं श्री मुख

१. अनुचित लाभ उठाना।

वाणी में कहते हैं, *"चरने हैं सो तो आए सही, पर पिछले कारन ए बानी कही"* - (श्री प्रकाश हिन्दी, प्र.३४/चौ.२०), उसी प्रकार मुझ कालबूत द्वारा हो रहा यह प्रकाशन कार्य मेरे समकालीन वर्तमान मात्र जीभ चलानेवाले समाजार्थ हरगिज़ नहीं है क्योंकि ये लोग तो सत्तू बाँधकर मेरा पीछा करना[१] छोड़ते नहीं हैं।

तथापि समाज भले जूते की नोक पर मारना[२] न छोड़े, मेरे कार्यों में टाँग अड़ाने का धर्म पालन करते ही रहे, फिर भी मेरी ओर से उन्हें यही आशीर्वाद है कि वे मेरे कलेजे को मसलना[३] कभी न छोड़ें, हमेशा मसलते ही रहें क्योंकि संसार-समाज में यही तो प्रसिद्ध रूपेण प्रचलित है कि गधा खेत खाय, जुलाहा मारा जाय[४] !

अन्ततोगत्त्वा वर्तमान समकालीन निजानन्दी-प्रणामी समाज समक्ष सविनय निवेदन करता हूँ कि आप लोग मेरे परमार्थी कार्यों के विषय में एक का एक खाये जाने[५] का स्वधर्म तुरन्त परित्याग दें। छट्ठी के दिन भाग्यविधाता ने उनके नसीब में मेरे कार्यकलाप में मदद पहुँचाने का लिखा ही न हो, *"सुख ताले लिख्या नाहीं"* तो वे बिचारे क्या करें? अपितु मेरी धामस्थ दिलदार आत्माएँ-सखियाँ तो जरूर ही इन ग्रन्थों से लाभ उठायेंगी और इन ग्रन्थों की जतन-इज्जत भी करेंगी।

इस प्रकार के मनोवांछित अधूरे-मधुरे भरोसे के साथ मैं अपनी कलम बन्द करने जा रहा हूँ। आशा है, इन बातों पर मेरी धामस्थ दिलदार सज्जन श्रद्धा सुमन आत्माएँ विचार-विवेक जरूर करेंगी।

सुज्ञेषु किं बहुना

दिनांक १७/१२/२०१३

लेखक-

दीनदयाल।

---

१. बुरी तरह से परेशान करना। २. अति तुच्छ समझना। ३. हृदय को चोट पहुँचाना। ४. अपराध कोई करे और दण्ड किसी दूसरे को दिया जाय। ५. आपस में द्वेष करना।

❖ स्वलीला अनुशीलन ❖

धर्मप्रेमी धामस्थ अद्वैत दिलवाली आत्माओं ! जागनी के ब्रह्माण्ड का अत्यधिक सुहावना अवसर हमें प्राप्त हुआ है। पुनः इस उत्तमातिउत्तम साधनयुक्त ब्रह्माण्ड में प्राप्त मानव जीवन को सार्थक बनाने हेतु ब्रह्मज्ञान-तारतम ज्ञान ग्रन्थ भी अपने हाथ में ही है। किंतु श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त - श्री कृष्ण प्रणामी धर्मान्तर्गत प्रचारकों द्वारा वर्तमान समाज की आत्माओं का कल्याण-उद्धार तभी हो सकेगा, जब वे स्वयं सिद्धान्त प्रदत्त महापुरुषों - सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और महामति श्री प्राणनाथजी के सैद्धान्तिक धर्म-मार्ग पर चलें और सामाजिक आत्माओं को भी चलावें।जैसे -

चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम ।
आदमी चले न चाल रूह की, इत दुनी मार न सके दम।।

-(श्री सिनगार, प्र. २३/चौ.६२)।

अरे प्रिय धामस्थ आत्माओं! हादी-सद्गुरु के सिद्धान्त को छोड़कर मनमानी चलनेवालों को कदम पर कदम रखकर चलनेवाला थोड़े ही कहेंगे। आप सब जरा सिद्धान्त विषय देखकर ब्रह्मात्माओं की चाल चलें, न कि दुनियाई दम भरें। हे मेरे धामस्थ दोस्तों! आप सबके दिमाग में यह बात यथातथ्य क्यों नहीं आती कि सूरज धूल डालने से नहीं छिपता[1]। अतः सैद्धान्तिक बात तो सैद्धान्तिक ही है। वह अविकल्प एवम् अकाट्यरूपेण रहेंगी। मेरे निजानन्दी धर्मप्रचारक दोस्तों! श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त कलियुगी वि.सं. १६७८ में प्रकट हुआ है और श्रीमद्भागवत ग्रन्थ द्वापर युग की रचना है। अतः वेदों से लेकर श्रीमद्भागवत तक के तमाम धर्मग्रन्थ सृष्टि मात्र की मानवात्माओं की जिस कमी को दूर न कर सके, उस कमी को दूर करने के लिए ही श्रीमन्निजानन्द धर्म सिद्धान्त प्रकट हुआ है। इस विषय में श्रीमन्निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी को तारतम प्रदान करते समय स्वयं श्री राजजी ने श्यामजी के मंदिर में क्या कहा था? क्या आप नहीं जानते? अतः आप लोग जरा अपनी अँतड़ियों को टटोलकर[2] ध्यान देकर निम्न प्रामाणिक चौपाई पर विचार-विवेक कर

---

१. नीचों की दुष्टता से भले आदमियों का गुण नहीं छिपता ।

२. भेद या रहस्य का पता लगाना ।

लीजिये, जो स्वयं श्री राजजी-तारतम देनेवाले स्वरूप ने हादी-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से कहे थे। जैसे-

यह भागवत कागद तुम्हारा, ए तुम्हें खुले कलाम ।
और कोई ना खोल सके, ए जो खलक आम ।।

-(श्री लालदास कृत बीतक साहेब, प्र.६/चौ.३२)।

अर्थ :- यह भागवत ग्रन्थ तुम्हारा ही पत्र है। इसमें निहित ब्रह्मज्ञान के शब्द एवम् गूढ़ रहस्य तुम्हें ही स्पष्ट होंगे। चौदह लोकों के भले सभी जन मिलें, किंतु इसके रहस्य एवम् वास्तविकता को वे प्रकट नहीं कर सकेंगे क्योंकि तुम्हारे सिवाय कोई अन्य इसे समझ सकें, तभी तो खोलकर प्रकट कर सकेंगे।

इसलिये उक्त प्रामाणिक चौपाई के रहस्य को समझकर हे मेरे आत्मीय दोस्तों! अभी इस विषय में सचेत हो जाइये, जिससे अन्त काल धाम चलते समय छाती चौड़ी करके चलने[1] के बदले, सिर पकड़कर रोना[2] न पड़े। यसर्थ मैं हाथ जोड़कर आग्रह करता हूँ कि शीघ्रातिशीघ्र आत्मघाती मार्ग छोड़कर अपना सैद्धान्तिक मार्ग अपना लीजिए। मेरे प्रिय मित्रों! श्रीमद्भागवत ग्रन्थ विषय में "शास्त्र श्रवण श्री भागवत"-ऐसा क्यों कहा? इस विषय में गहनतापूर्वक विचार-विमर्श करो। गहनतापूर्वक विचार-विवेक करने पर विवेकशील आत्माएँ अवश्य समझ जायेंगी कि एक तो भागवत में "अद्वैत ब्रह्म नाम" को अविकल्प रूपेण निश्चित कर बताया गया है। जैसे-

अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम्।
यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ।।

-(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध १०/१४-३२)।

अर्थ :- अहो! नन्द आदि व्रजवासी गोपों के धन्य भाग्य हैं। वास्तव में वे ही अहोभाग्यशाली हैं क्योंकि परमानन्द स्वरूप सनातन परिपूर्ण ब्रह्म आप, उनके अपने सगे-सम्बन्धी और सुहृद हैं।

इस ग्रन्थ की दूसरी विशेषता है - मिथ्या स्वप्निक सृष्टि विषय में देवर्षि श्री नारद मुनि द्वारा वेदव्यासजी को दिया हुआ "चतुः श्लोकी

१. निर्भय होकर चलना। २. बड़ा पश्चात्ताप करना ।

भागवत", जिसमें स्वप्निक ब्रह्माण्ड से जागृत ब्रह्माण्ड की ओर तथा नाशवन्त ब्रह्माण्ड से अविनाशी ब्रह्माण्ड बेहद भूमिका की ओर इशारा किया गया है। अतः महामति श्री प्राणनाथजी इस विषय को स्पष्ट रूप से दिखाते हुए कहते हैं कि हे मुमुक्षु आत्माओं!

अस्कंध बीजो मुनिए कह्यो, चत्रसलोकी जांहे।
ब्रह्मांडनी जिहां उतपन, अरथ जुओ तांहे ।।

-(श्री प्रकाश गुजराती, प्र. ३१/चौ.६६)।

तीसरी विशेषता यह है कि वेदव्यासजी को समझाते हुए नैष्ठिक ब्रह्मचारी देवर्षि नारद मुनि कहते हैं कि हे वेदव्यासजी! अद्वैत ब्रह्म श्री कृष्ण नाम बिना के धार्मिक नामधारी थोथे ज्ञानयुक्त साहित्य तो, कौवे का तीर्थरूप हैं। जैसे -

"तद्वायसं तीर्थमुशन्ति मानसाः
न यत्र हंसा निरमन्त्युशिक्षयाः।"

अतः कौवे के तीर्थरूपी थोथे ज्ञान में मानसरोवररूपी पचीस पक्ष में विहार करनेवाली तारतम ज्ञान की समझ प्राप्त परमहंसरूपी ब्रह्मात्माएँ कभी रमण-भ्रमण अथवा क्षणिक जीवन के अमूल्य समय को व्यर्थ बरबाद नहीं करेंगी। उक्त त्रिविध विशेषताओं के कारण ही "शास्त्र श्रवण श्री भागवत, बुद्धि जागृत को ज्ञान" कहा है। परन्तु ब्रह्मनाम मात्र से आत्मा जागृत नहीं होती। यसर्थ अपनी आपबीती लीला से आत्म-जागृत करने हेतु कहते हैं कि -

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग ।।

- (श्री कलश हिन्दी, प्र.२३/चौ.१)।

अर्थ :- हे सुन्दरसाथजी! अब आप लोग जागृत होकर इस जागनी के सुख को देखिये। यह जागनी का सुख सुहागिनियों के लिये ग्रहण करने योग्य है। तीनों लीलाओं-ब्रज, रास तथा जागनी का ब्रज अर्थात् नवतनपुरी में सद्गुरु स्वरूप द्वारा की हुई ३४ साल की आड़ीका लीला एवम् चौथी-परमधाम पचीस पक्ष की लीला को इस जागनी के ब्रह्माण्ड में जानकर-

समझकर अनुभव करना ही आत्म-जागृति का सुख प्राप्त करना है।

अतः हे मेरे धामस्थ एकात्मरूप दोस्तों! ठण्डे दिमाग से विचार-विवेक करो। अपने अन्दर के अक्ल के दुश्मनपना को तिलाञ्जलि देकर आप सब अक्ल के पुतले[1] साबित होना क्यों नहीं चाहते? जरा विचार-विवेकशील दृष्टि से निहारकर धर्म सिद्धान्त की ओर देखिये तो कि महामति स्वरूप ब्रह्मलीला के विषय में ब्रह्मात्माओं को इशारे से क्या कह रहे हैं। जैसे - हे ब्रह्मात्माओं!

व्रजलीला अति मोटी छे, जो जो नरसैयां वचन प्रमाण।
ए पगलां सरवे आपणां, तमे जाणी सको ते जाण ।।

-(श्री रास ग्रन्थ, प्र.४/चौ.११)।

अर्थ :- व्रजलीला हमारी लीला है, जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। नरसैयाँ के वचन इसके साक्षी हैं। हे ब्रह्मात्माओं! यदि आप जानना चाहती हो, तो यह हमारा अपना ही मार्ग है। देखकर सावधानीपूर्वक इसे शिरोधार्य करो।

अतः यह बात विचारणीय है कि यदि भागवत ग्रन्थान्तर्गत वर्णित व्रजलीला मनन करने योग्य थी, तो श्री मुख बानी में *"व्रजलीला अति मोटी छे, जो जो शुकजीनां वचन प्रमाण"* ऐसा क्यों नहीं कहा गया? इसके बदले *"जो जो नरसैयां वचन प्रमाण"* क्यों कहा गया? अहो! वर्तमान समाज के धुरन्धर विद्वानों!! क्या अब भी आप लोगों पर भागवतरूपी सनक सवार होने[2] में कुछ शेष बचा है? ठण्डे दिमाग से विवेचन कर लीजिये, जिससे समाज भी पथभ्रष्ट होने से बचे और आप लोगों के लिए भी अन्तकाल में अंग-अंग मुसकराते[3] हुए श्री राजजी के आगे मुख दिखाने का रास्ता सुरक्षित रहे। पुनश्चः-

रास नरसैए रे नव वरणव्यो, मारे मन उत्कंठा एह ।
चरण पसाए रे वालातणे, तमे सांभलो कहुं हुं तेह ।।

-(श्री रास ग्रंथ, प्र.५/चौ.२)।

अर्थः- भक्त नरसैयाँ ने रासलीला का वर्णन नहीं किया। मेरे मन

---

१. बड़ा बुद्धिमान् पुरुष । २. बुद्धि भ्रष्ट होना । ३. अति प्रसन्न होना ।

में यह इच्छा है कि मैं अपनी उस लीला का वर्णन करूँ। सद्गुरु धनी के चरणों के प्रताप से मैं रास लीला का वर्णन करता हूँ। हे ब्रह्मात्माओं! आप अपनी आपबीती लीला को ध्यानपूर्वक सुनिये क्योंकि हमारी अपनी रास लीला राजा परीक्षित के शंकापूर्ण प्रश्न के कारण शुकदेवजी द्वारा वर्णन नहीं हो पाई। जैसे -

अ) "प्रश्न चूक्यो भयो अजान, रास लीला ना बरनवी परवान।"
ब) "मैं जोगी तें राजा भयो, रास को सुख न जाए कह्यो।"
क) "सो केहेनेवाला उठके गया, मैं अकेला बैठा रह्या।"
ड) "पर ए केहेवाए धनी के जोस, सो उतर गया बचनके रोस।"
इ) अब सुकजीके केती कहूं बान,
सार काढने ग्रह्यो पुरान ।
सबको सार कह्यो ए जो रास,
ए जो इंद्रावती मुख हुओ प्रकास ।।

-(श्री प्रकाश हिन्दी, प्र. ३३/चौ. १२, १३, १८, २२,२५)।

अर्थ :-अ) राजा परीक्षित भूलकर प्रश्न कर देने के कारण रास लीला के आनन्द से वञ्चित रह गया। इस प्रकार रास लीला का वर्णन न हो पाया। ब) अब मैं पहले की भाँति योगी का योगी ही रह गया और तू भी मात्र राजा ही रह गया। इस प्रकार रास लीला के सुखानन्द का वर्णन नहीं किया जा सका। क) हे राजन! मेरी अन्तरात्मा में विराजमान होकर कोई शक्ति मुझसे ये बचन कहला रही थी। अब वह शक्ति चली गई और मैं यहाँ अकेला ही बैठा रह गया। ड) रास लीला का वर्णन तो परब्रह्म परमात्मा के आवेश से हो रहा था। वह आवेश राजा परीक्षित के शंकापूर्ण प्रश्न के कारण शुकदेव मुनि के क्षुब्ध हो जाने पर उतर गया। इ) शुकदेवजी की वाणी की अब मैं कितनी चर्चा करूँ? उसका सार निकालने के लिए ही मैंने श्रीमद्भागवत की चर्चा की है और पूरे भागवत ग्रन्थ का सार यह "रास लीला" है, जिसका प्रकाश (विस्तार) श्री इन्द्रावती के मुख से (श्री रास ग्रन्थ के माध्यम से) हुआ।

अतः वर्तमान युग के श्री निजानन्दी-श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-

प्रचारकों! उपरोक्त चौपाइयों के आधार पर काल कवलित होने[1] से पहले ही शीघ्रातिशीघ्र स्व-आत्म-जागृति के साधन पर विचार-विवेक कर लीजिये। इस तरह न आव देखना न ताव[2] और औंधी खोपड़ी के[3] मनुष्य का-सा जीवन व्यतीत करना जागनी के ब्रह्माण्ड के अहोभाग्यमय जीवन प्राप्त बुद्धिजीवियों के लक्षण नहीं हैं। हे मेरे मित्रगणों! जो धामस्थ आत्माएँ खेल में आकर धाम, धनी और अपने आपको विस्मृत कर बैठीं हैं, उनकी जागनी परमधाम का अंकुर होने के कारण उनकी आपबीती लीलाओं द्वारा ही होगी। आप लोगों की अक्ल पर पत्थर पड़ने[4] के कारण ही आप स्वधर्म प्रचारक-अग्रगण्य होते हुए भी निजानन्दी-श्री कृष्ण प्रणामी समाज को दूसरों की मायागुण ग्रस्त जैसे श्रीमद्भागवत में वर्णित स्वर्ग के देवताओं के (१) गुरु बृहस्पतिजी का अपने भाई उतथ्य की गर्भवती पत्नी ममता द्वारा बलपूर्वक गर्भाधान कराकर भारद्वाज नामक पुत्र उत्पन्न कराना (२) चक्रवर्ती सम्राट राजा ययाति का एक हजार वर्ष तक विषयों को भोगने-कामासक्त रहने पर भी विषय भोगों से अतृप्त रह जाना (३) पुनः चित्ररथ के पुत्र शशबिन्दु का अपनी दस हजार पत्नियों द्वारा प्रत्येक से लाख-लाख सन्तान उत्पन्न कर एक अरब सन्तान का विस्तार करने जैसी कथाओं के मण्डान में जबरदस्ती घसीट रहे हैं। उक्त विषय लम्पट देवगुरुओं, सम्राटों की आपबीती कहानी के माध्यम से आप प्रचारकगण निजानन्दी - श्री कृष्ण प्रणामी समाज को परमधाम ले जा रहे हैं या नर्क में पहुँचा रहे हैं? अरे प्रचारकों! उक्त प्रकार का मायावी विषययुक्त ज्ञान सुनाते हुए आह्वान करना कि "श्रीमद्भागवत श्रवण से ही परमधाम जाते हैं।" अरे बकवादियों !! क्या आप भागवत श्रवण से ही परमधाम (अक्षरातीत धाम) गये किन्हीं एक-दो व्यक्तियों के नाम गिनवा सकते हैं ? यदि नहीं, तो इस तरह कहते हुए गधे की-सी चिल्लाहट करना, यह कैसी विडम्बना है?

आपकी अपनी अक्ल पर पत्थर पड़ने के कारण ही आप थोथे ज्ञान के आधार पर "श्रीमद्भागवत श्रवण से ही परमधाम जाते हैं" इस प्रकार का आह्वान करते फिर रहे हो। अपने सैद्धान्तिक ज्ञान विषय अँतड़ियाँ टटोलने की शक्ति न पहुँच पाने पर दूसरों की आपबीती कहानी लेकर उक्त प्रकार का आह्वान करते फिरने में क्या आपको जरा-सी भी शर्म नहीं

---

१. मृत्यु को प्राप्त होना। २. सोच विचार कुछ भी न करना।
३. परम मूर्ख मनुष्य। ४. भले-बुरे का ज्ञान न होना, मति भ्रष्ट या विवेकरहित होना।

आई? तथापि अन्त काल सामने आने पर खोपड़ी रँगाना[1] न पड़े, ऐसे धर्म मार्ग पर चलने के लिए सप्रेम आग्रह करता हूँ।

अरे जागनी के ब्रह्माण्ड की जागृत आत्माओं! आप सब धर्म-प्रचारकों के दर्जे में हैं। यसर्थ पूछता हूँ कि श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त में प्रणामी धर्म समाज के आत्माओं की जागनी कौन-सी लीलाओं के माध्यम से करने का आह्वान किया गया है? उपरोक्त चौपाई में वर्णित चारों लीलाओं में से ब्रज और रास लीला के विषय में स्पष्ट रूप से क्या इशारा किया गया है? अतः हमारे जागनी कार्य विषय में वशिष्ठ सार और श्रीमद्भागवत ग्रन्थ दृष्टान्त रूप में हैं, जिसमें वर्णन किया गया है कि क्रमशः किस प्रकार भगवान श्री रामचन्द्रजी को गुरु वशिष्ठजी ने रामचन्द्रजी की ही पूर्व आपबीती लीला से और भगवान विष्णु ने ब्राह्मणरूप धारण कर भक्त मारकण्डेय ऋषि को धोबिन रूप में उनकी ही पूर्व आपबीती लीला श्रवण कराकर जागृत किया था। उपरोक्त दोनों तथ्य निजानन्दी-श्री कृष्ण प्रणामी धर्मान्तर्गत आत्माओं के आत्म-जागृति हेतु दृष्टान्त रूप हैं। प्रामाणिक रूप में सिद्धान्त हमारे जागनी क्षेत्र की आत्माएँ हैं। अतः हे प्रणामी धर्मप्रचारकों! अब विचार-विवेक कीजिए कि आप हमारे समाज की आत्माओं को कौन-सी लीला द्वारा, वह भी कहाँ की और किसके द्वारा वर्णित लीलाओं द्वारा जागृत कर रहे हो? निजानन्दीय धर्म प्रचार-प्रसार क्षेत्र के विद्वान महानुभावों! उक्त प्रामाणिक बातों, विषय-वस्तुओं को अपनी निजधामस्थ सखियों को देने के विषय में तो मैं आप सबसे सत के बनजारे बनने का ही आग्रह कर रहा हूँ। यसर्थ आप सब यदि महामतिजी द्वारा प्रदत्त चारों लीलाओं के माध्यम से धर्म प्रचार-प्रसार करते, तो अपने ही पाँव पर कुल्हाड़ी मारने[2] जैसे असोच्य और हानिकारक परिस्थिति से उबर जाते अथवा बच पाते।

अतः हे मेरे धामस्थ एकदिली जमात की प्रियात्माओं! *"तीन लीला चौथी घर की"* में ब्रजलीला देखने के लिए भक्त नरसैयाँ का ग्रन्थ ढूँढ़ने की जरूरत एवम् आवश्यकता नहीं है। नरसैयाँ से भी उत्तम ब्रजलीला का ज्ञान श्री इन्द्रावती के मुखारविन्द से ही प्रकट हुआ है। अतः उसे ही हृदयाङ्गम करना अपेक्षित है। क्योंकि एक तो भक्त नरसैयाँ स्वयं ब्रज लीला में शामिल नहीं था, दूसरे नरसैयाँ का ब्रजलीला वर्णन बिना

१. सिर फोड़कर लोहू बहाना। २. अपने हाथों से अपनी हानि करना।

तारतम का है। पुनः श्री इन्द्रावती आत्मा स्वयं ब्रजलीला में शामिल है तथा उनके श्री मुख से वर्णित ब्रजलीला तारतम द्वारा वर्णित होने के कारण सर्वोपरि उत्तम एवम् ग्राह्य है। श्री इन्द्रावती आत्मा द्वारा वर्णित ब्रजलीला द्वारा हम लोग अपनी आपबीती लीला का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं।

हे मेरे धामस्थ प्यारे सुन्दरसाथजी! श्री इन्द्रावती आत्मा ने ब्रज-लीला का वर्णन तारतम के माध्यम से श्री कुलजम स्वरूप साहेब-तारतम सागर अन्तर्गत श्री रास ग्रन्थ के १) "प्रेम सेवा वाले प्रगट किधी" और २) "एणे पगले आपण चालिए" ३) रास लीला के दौरान अन्तर्ध्यान के समय में स्वयं ब्रजलीला का अनुकरण करते समय के वर्णनवाले प्रकरण में तथा ४) श्री कलश ग्रंथ के गोकुल लीला में ब्रजलीला का अच्छी तरह से बोध कराया है। उक्त चारों स्थानों के वर्णन द्वारा स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है कि उस लीला के दौरान हम लोगों के कौल (कहना), फैल (चलना) और हाल (लक्षण-दशा) कैसे थे! हमारी चित्तवृत्ति निरन्तर कहाँ केन्द्रित थी, जिसके कारण रास लीला में दौड़ते समय वह संसार सागर हमारे लिए गौपदबच्छ भी नाम मात्र के लिए ही रहा। यसर्थ आप सब यदि इसी कौल, फैल और हाल की ओर इशारा करके हमें सावचेत करते हुए कहा है कि, "ए पगला सर्वे आपणा, तमे जाणी सको ते जाण" और "ऐणे पगले चालजो, पगला एह प्रमाण सुन्दरसाथजी"।

प्यारे धामस्थ सुन्दरसाथजी! दूसरी श्री रास लीला श्री कुलजम स्वरूप साहेब-तारतम सागर के प्रथम ग्रन्थ 'श्री रास' के वर्णन द्वारा अनुभव कर लीजिये। तीसरी लीला श्री नवतनपुरी में सद्गुरु स्वरूप द्वारा चौंतीस साल तक की गई आड़ीका आदि लीला है, जिसका अनुभव - जानकारी श्री लालदास कृत बीतक साहेब और श्री कुलजम स्वरूप साहेब के श्री प्रकाश ग्रन्थ द्वारा किया जा सकता है। पुनः चौथी लीला घर - श्री परमधाम की लीला है, जिसे श्री परमधाम पचीस पक्ष की चर्चनी एवम् खिलवत, परिक्रमा, सागर और सिनगार-इन ग्रन्थों द्वारा स्वयं जागृत होकर निजधामस्थ आत्माओं के दिल-दिमाग में भराकर उन्हें जागृत करके जागनी के ब्रह्माण्ड में ही इसका भोग-अनुभव किया जा सकता है। यही श्रीमन्निजानन्दीय - श्री कृष्ण प्रणामी धर्म सिद्धान्त में प्रचार-प्रसार द्वारा आत्म-जागृति की वास्तविक रीत है।

उपरोक्त धर्म सिद्धान्त प्रदत्त मार्ग से स्वयं वंचित रहकर समाज को भी वंचित कराना, यह तो स्वयं को आसमान पर खींचने जैसी बिडम्बना है। निजानन्द स्वामी श्री सद्गुरु और महामति श्री प्राणनाथजी के धर्म सिद्धान्त के समक्ष ऐसी प्रदर्शनी करते क्या आप सबको जरा-सी भी शर्म नहीं आती?

हे कलिकाल गुण ग्रस्त धर्मप्रचारकों! हे मेरे दोस्तों!! आप लोग अभी से आँख-कान खोलकर चलना और सामाजिक आत्माओं को भी चलाना शुरू कर दीजिये, नहीं तो पीछे अवश्यमेव ही सिद्धान्त प्रदत्त उभय महाजनों-श्री सद्गुरु और श्री महामति स्वरूपों के दरबार में सच्चे का बोलबाला, झूठे का मुँह काला[1] प्रत्यक्ष होगा। ऐसी विकट परिस्थिति के सामने आने पर सामाजिक आत्माएँ उन्हें कैसे देख अथवा सहन कर सकेंगी?

अतः धर्मप्रेमी धामस्थ सुन्दरसाथजी और धर्मप्रचारक मेरे दोस्तों! मैं तो एक ओर धर्म सिद्धान्त को देखता हूँ, तो दूसरी ओर धर्मप्रचारकों को!! पुनः सिद्धान्त प्रदत्त दोनों ही "महाजनो येन गतः स पन्थाः" सद्गुरु स्वरूप और महामति श्री प्राणनाथजी के आगे तौबा खींचते हुए यही कहता हूँ कि हे धनी! यह मुहावरा साकार रूप में प्रत्यक्ष हो गया है, जैसे- "कुतिया चोरों मिल गई, पहरा किसको दें[2]" अर्थात् जब कुतिया और चोरों मिल गये, तब पहरा किसको दें ? अर्थात् कुतिया-धर्म सिद्धान्त रक्षक गादीपति हैं, चोर-स्वगुरुज्ञान द्रोही, कुपथगामी, नामधारी विद्वान, धर्म सिद्धान्त भक्षक, सलाहकार मंत्री ही चोर हैं। ये राजा और मंत्री मिल गये, तो धर्म-सिद्धान्त की रक्षा कौन करे ? निम्नोक्त प्रकार से बकवाद करनेवाले सलाहकार, मंत्री की जबान मूल से उखाड़कर उसी की हथेली पर रखने के लिए श्रीमन्निजानन्द धर्म-सिद्धांत हरगिज़ पीछे हटेगा नहीं। इसलिए हे धनी! आपके चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि इन नामधारी धर्मप्रचारकों को थोड़ी-सी सद्बुद्धि प्रदान करने का कष्ट अवश्य करें, जिससे कि सामाजिक आत्माओं का उद्धार-कल्याण हो सके।

---

१. सच्चा सर्वत्र पूजित होता है, झूठे का कोई विश्वास नहीं करता ।
२. रक्षक जब चोरों से मिल जाते हैं तब रखवाली नहीं हो सकती ।

नोट :-

श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्तान्तर्गत वर्तमान तीनों पुरी धाम एवम् द्वादश परमहंस पीठों सहित पन्द्रह गादीपति महाराज अपने-अपने क्षेत्र में धर्म-सैद्धान्तिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार द्वारा जागनी अभियान का विस्तार कर रहे हैं। उक्त गादीपतियों का मुख्यतः कर्तव्य है कि वे स्वधर्म सिद्धान्त के रक्षक बनते हुए सिद्धान्त भक्षकों को भी धर्म सिद्धान्त के प्रति श्रद्धा-विश्वास दिलाएँ और स्व-इष्ट के प्रति प्रेम उत्पन्न कराएँ ।

परन्तु अपने-अपने स्थान से भविष्य के लिए निकले-निकाले हुए सैद्धान्तिक ज्ञान की तालीम से सम्पन्न नामधारी विद्वान प्रचारक ही सैद्धान्तिक "प्राणनाथ साहित्य"-धर्म के उपास्य ग्रन्थ श्री कुलजम स्वरूप साहेब-श्री तारतम सागर और श्री बीतक साहेब, पुनः श्रीमन्निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और महामति श्री प्राणनाथजी - इन उभय स्वरूपों के प्रति चर्म चक्षु - सुकर दृष्टि लेकर बैठे हैं। अतः वे स्वयं उक्त ब्रह्म लीलामय ब्रह्मज्ञान के प्रति अंगुलियाँ उठाते[9] हुए भोले-भाले साधारण धर्मानुयायी समाज को भी बीतक, वाणी और उभय स्वरूपों के प्रति चर्म चक्षु - सुकर दृष्टि वाला ही बना रहे हैं। यसर्थ मैं आग्रह करता हूँ कि ऐसे मात्र नामधारी विद्वान प्रचारक उत्पन्न करने से तो धर्मस्थान छोड़कर अपने प्रचारकों को साथ लेकर अपने गाँव में ही गौशाला - भैंसशाला खड़ा करके घास काटते हुए जीवन गुजारा करना अत्युत्तम है क्योंकि "जघन्य गुण वृत्तिस्थाः" उक्त प्रकार करते, तो स्वयं भी बचते और धर्म-समाज भी बच पाता!!

सुज्ञेषु किं बहुना -

- लेखक
दीनदयाल।

सूचना :- ता. २४ जून २०१९ के दिन शाम ७.३० बजे अपने आत्मीय सुंदरसाथ के साथ मोबाईल फोन में हुए वार्तालाप के दौरान श्री प्राणनाथजी स्वरूप और तारतम सागर-श्री कुलजम स्वरूप साहेब अंतर्गत वाणी-ज्ञान विषय प्रयुक्त किए गए आक्षेप आरोपयुक्त भर्त्सनापूर्ण शब्दों सहित कहे गये १० प्रश्नों की रिकॉर्डिंग सहित सप्रमाण जवाब समय के लिए सुरक्षित है। जरूरत पड़ने पर नाम-स्थान के साथ स्पष्ट किया जायेगा । जहाँ तक मुझे आगे बढ़ना न पड़े, दया करना! सावधान !!!

9. बदनाम करना, अपकीर्ति फैलाना ।

❖ स्वामी श्री लालदास कृत बीतक के सवाल ❖

❖ अथ शास्त्र की साक्षी ❖

(राजाओं के नाम)

स. १- श्रीमन्निजानन्द सम्प्रदाय-श्री कृष्ण प्रणामी धर्मान्तर्गत कुल कितनी बीतकों का वर्णन आता है ?

ज. १- श्रीमन्निजानन्द सम्प्रदाय-श्री कृष्ण प्रणामी धर्मान्तर्गत लगभग कुल सत्रह बीतकों का वर्णन आता है। इन सत्रह बीतकों में से →

स. २- "बीतक" कहने से क्या समझना चाहिए? "बीतक" शब्द का क्या अर्थ है?

स. ३- क्या अन्य बीतक और श्री लालदास कृत बीतक साहेब में कोई अन्तर है ? यदि है, तो क्या?

स. ४- श्री लालदास कृत बीतक साहेब के प्रारंभ तथा अन्य बीतकों के प्रारंभ में अन्तर है या नहीं? यदि है, तो क्या?

ज. ४- जी हाँ! अन्तर है। अन्य सभी बीतकों की शुरूआत बीतककारों ने अपने-अपने इष्ट तथा विद्यादात्री सरस्वती की स्तुति-प्रार्थना के साथ की है। परन्तु श्री लालदास कृत बीतक साहेब का प्रारंभ श्री →

स.५- श्री लालदास कृत बीतक साहेब में सर्वप्रथम चारों युगों के राजाओं की गणना करने का मुख्य कारण क्या है?

ज.५- श्री लालदास कृत बीतक साहेब में बीतक रचना करने से पहले श्री लालदासजी ने, जिन स्वरूपों की बीतक का वर्णन करना है, →

❖ स्वामी श्री लालदास कृत बीतक के जवाब ❖

❖ अथ शास्त्र की साक्षी ❖

(राजाओं के नाम)

→ मुख्य दो बीतकों की विशेष मान्यता है। जैसे - १) श्री लालदास कृत बीतक साहेब २) श्री ब्रजभूषण कृत वृत्तान्त मुक्तावली। इन दोनों बीतकों में से भी श्री लालदास कृत बीतक साहेब मूल और मुख्य भी है। अन्य सभी बीतकों की रचना उक्त बीतक साहेब के आधार पर की गई है।

ज. २- बीतक कहने से किसी महापुरुष की संसार में बीती "इहलीला" का संग्रह अथवा ग्रन्थ समझना चाहिए। "बीतक" शब्द का अर्थ है-साहेब की आपबीती बातों का संग्रह अथवा इतिहास, पुराण अर्थात् भूतकाल में गुजरी बातों का संग्रह।

ज. ३- जी हाँ! अन्तर तो अवश्य है। श्री लालदास कृत बीतक साहेब, साहेब श्री महामतिजी के आशीर्वाद द्वारा रचित तथा स्वयं-सिद्ध बीतक है। अन्य सभी बीतकों की रचना श्री लालदास कृत बीतक साहेब के आधार पर हुई है।

→ लालदासजी ने "शास्त्र की साक्षी" भविष्य पुराण के आधार पर चारों युगों में भारतवर्ष में जिन चक्रवर्ती राजाओं ने राज्य संचालन किया, उन चक्रवर्ती राजाओं के नाम क्रमशः गिनाते हुए किया है तथा साथ ही समय-काल भी निश्चित करा दिया कि "इस राजा के शासनकाल" में साहेब अवतरित होंगे।

→ वे स्वरूप संसार के बीच किस राजा के राज्यकाल में अवतरित होंगे? उस राजा की शासन-पद्धति कैसी होगी? अर्थात् देश की तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत कराने हेतु ही चतुर्युगी राजाओं के नाम सहित गणना की है।

स. ६- सतयुग और कृतयुग में अन्तर है या नहीं ? यदि है, तो क्या ?

ज. ६- सतयुग और कृतयुग में अन्तर है। कृतयुग की प्रजा आपस में चेतन की पूजा करती थी। भक्त और भगवान की दृष्टि उस समय नहीं थी। एक-दूसरे को चेतन की दृष्टि से देखने पर अर्थात् सर्वत्र भगवान ही भगवान दृष्टि में होने से उस समय की प्रजा एक-दूसरे की ही पूजा-आरती किया करती थी। यसर्थ राजा और प्रजा दोनों ही कृतकृत्य थे। अतः युग का नाम भी कृतयुग ही था। इस प्रकार दो राजाओं-कृत और कृतदत्त के राज्यकाल के पश्चात् माया के प्रभाव से धीरे-धीरे कृतयुग पूरा होने लगा और सतयुग शुरू हुआ। कुछ समय तक मायावी दृष्टि रहित चैतन्य दृष्टि के कारण आपस में चेतन की पूजा होती रही। किंतु माया के कारण वह दृष्टि अधिक →

स. ७- श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त-श्री कृष्ण प्रणामी धर्म की मान्यताओं में मुख्य विशेषताएँ क्या-क्या हैं ?

स. ८- कृतयुग के सर्वप्रथम राजा कौन थे? कृतयुग में कितने राजा हुए और कौन-कौनसे तथा वे कैसे थे?

ज. ८- कृतयुग में सर्वप्रथम कृत नामक राजा ने राज्य किया। कृतयुग में कृत और कृतदत्त नामक दो राजा हुए। ये दोनों ही राजा चेतन →

स. ९- सतयुग के सर्वप्रथम राजा का क्या नाम है ?

ज. ९- कृतयुग के उक्त दो राजाओं के शासनकाल के पश्चात् सतयुग →

स. १०- धुम्रऋषि सतयुग के कौन-से क्रमांक के राजा थे?

→ समय तक नहीं रह सकी। प्रजा में परस्पर झूठ बोलना, छल-कपट करना, धोखेबाजी आदि व्यवहार दृष्टि में आने लगे। एक-दूसरे में चेतन की दृष्टि न रह जाने के कारण, न पहले की-सी पूजन-आरती ही रह गई और न चेतन की भावना ही। तब सभी बुद्धिजीवी विद्वानों ने विचार किया कि जब मायावी प्रभाव के कारण अभी सतयुग में ही चेतन भाव तथा पूजनादि लोप हो रहे हैं, तो कलियुग में क्या होगा? इंसान तो मायावी प्रभाव के कारण चल-विचल हो जाता है। अतः अचल-नेहेचल की भावना जनता में बनी रहे, इस ध्येय से उन विद्वानों ने एक पत्थर की मूर्ति का निर्माण कर उन्हें नर के इष्टरूप नारायण नाम से स्थापित कर दिया। तब सभी ज्ञानहीन, अशिक्षित जनता मूर्ति-पूजा में विश्वास करने लगी। किंतु उनमें से भी कुछ समझदार लोगों ने मूर्ति-पूजा नहीं की। इस प्रकार सतयुग से ही मूर्ति-पूजा होते आयी है।

ज. ७- श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त-श्री कृष्ण प्रणामी धर्म की मान्यताओं में मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं। जैसे-हमारे धर्म में चार युगों के बदले पाँच युगों की मान्यता है। वेद के प्रति भी हम पाँच वेदों की मान्यता रखते हैं तथा श्रीमद्भगवत गीता प्रमाण युक्त भक्तों की गणना में भी हम पाँच की विशेषता रखते हैं।

→ प्रजायुक्त तथा चेतन (आत्मा) के पुजारी थे। "जैसा राजा वैसी प्रजा" कथनानुकूल इन दोनों राजाओं के शासनकाल में सारी प्रजा भी चेतन की ही पूजा-आरती किया करती थी। स्वयं-सिद्ध कृतकृत्य अर्थात् "यथा नाम तथा गुणः" होने के कारण युग का नाम भी "कृतयुग" ही कहा जाता था।

→ शुरू हुआ। सतयुग के सर्वप्रथम राजा का नाम था-राजा अन्त। अन्त राजा से लेकर कृतयुग के दो राजाओं को छोड़कर सतयुग में कुल पन्द्रह राजा हुए।

ज. १०- धूम्रऋषि सतयुग के पन्द्रहवें राजा थे। यदि कृतयुग से लेकर गिनें, तो वे सत्रहवें राजा थे।

स. ११-हिरण्यकश्यप किस युग का कैसा राजा था? उसका संहार किस अवतार ने किया था तथा उसके स्थान पर किसे राजा बनाया गया था?

स. १२-कुल सत्रह राजा किस-किस अथवा कितने युगों के गिने गए?

स. १३-त्रेतायुग में कुल कितने राजा हुए तथा सर्वप्रथम राजा कौन हुए?

स. १४-राजा विश्वामित्र के पहले और बाद में कौन-कौनसे राजा हुए ?

स. १५-राजा हरिश्चन्द्र के पहले और बाद में कौन-कौनसे राजा राजगद्दी पर आसीन हुए तथा राजा हरिश्चन्द्र त्रेता युग के कौनसे क्रमांक के राजा थे?

स. १६-राजा रोहिताश त्रेतायुग के कौनसे क्रमांक के राजा थे?

स. १७-राजा मानधाता किस राजा के पश्चात् राजगद्दी पर आसीन हुए ?

स. १८-राजा आशामित्र के पहले और उनके बाद किन-किन राजाओं ने भारतवर्ष पर राज किया?

स. १९-राजा दिलीप से लेकर राजा लव तक कुल कितने राजा हुए तथा कौन-कौन?

स. २०-द्वापरयुग में कुल कितने राजा हुए? सर्वप्रथम राजा का नाम क्या है?

ज. ११- हिरण्यकश्यप सतयुग का आठवाँ राजा था। वह अपने कुकर्मों के कारण सतयुग में अत्यन्त ही कुख्यात था। उसके अत्यधिक अत्याचार के कारण ही नृसिंह अवतार ने उसका संहार कर उसके स्थान पर लोक प्रसिद्ध भक्त प्रह्लाद को भारतवर्ष का राजा बनाया था।

ज. १२- कुल सत्रह राजा कृतयुग और सतयुग अथवा दोनों युगों के गिने गए।

ज. १३- त्रेतायुग में कुल उनतीस राजा हुए तथा सर्वप्रथम ब्रह्मा नामक राजा राजसिंहासन पर बैठे।

ज. १४- राजा विश्वामित्र के पहले सिंहासनासीन हुए राजा का नाम अरण्यभा था और उनके बाद महामंत्र नामक राजा सिंहासनासीन हुए।

ज. १५- राजा हरिश्चन्द्र के पहले त्रिसंख नामक राजा राजगद्दी पर आसीन हुए थे। राजा हरिश्चन्द्र के बाद उस स्थान पर उनके ही सुपुत्र राजा रोहिताश विराजमान हुए। राजा हरिश्चन्द्र त्रेतायुग के तेरहवें राजा थे।

ज. १६- राजा रोहिताश त्रेतायुग के चौदहवें राजा थे।

ज. १७-राजा मानधाता, विश्व प्रसिद्ध सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के सुपुत्र राजा रोहिताश के पश्चात् राजगद्दी पर आसीन हुए ।

ज. १८- राजा आशामित्र के पहले सगर नामक राजा ने और उनके बाद भगीरथ नामक राजा ने भारतवर्ष पर राज किया।

ज. १९- राजा दिलीप से लेकर राजा लव तक कुल छः राजा हुए। जैसे- राजा दिलीप, राजा रघु, राजा अज, राजा दशरथ, राजा रामचन्द्र और राजा लव।

ज. २०- द्वापरयुग में कुल उन्नीस राजा हुए तथा सर्वप्रथम राजा का नाम है-राजा इन्द्र।

स. २१-द्वापरयुग में हुए कितने राजाओं के पश्चात् राजगद्दी पर राजा शान्तनु आसीन हुए?

स. २२-द्वापरयुग के राजा विचित्र के पहले और बाद में कौन-कौनसे राजा हुए?

स. २३-राजा व्यास के पश्चात् पाण्डु राजा हुए, तो राजा पाण्डु के पश्चात् कौनसे राजा हुए?

स. २४-राजा पाण्डु के पुत्र अर्जुन तो राजा के रूप में राजगद्दी पर बैठे ही नहीं थे, तो उनका नाम राजाओं में क्यों आया?

ज. २४- अरे भाई! श्री लालदास कृत बीतक साहेब में मात्र राजसिंहासन पर आसीन हुए राजाओं के नाम ही नहीं गिने गए हैं। अपितु इस बीतक साहेब में तो भविष्य पुराण में वेदव्यासजी द्वारा की गई गणना के अनुसार राजाओं के नाम अंकित किए गए हैं। भविष्य →

स. २५-राजा अर्जुन से लेकर राजा परीक्षित के बीच कितने राजा राजगद्दी पर बैठे और कौन-कौनसे?

स. २६-राजा जन्मेजय कौन थे और वे द्वापरयुग के कौनसे क्रमांक के राजा थे?

स. २७-कलियुग में कुल कितने राजा हुए और सर्वप्रथम कौन राजा हुए? पुनः विक्रमादित्य राजा कलियुग के कौनसे क्रमांक के राजा थे?

स. २८-कलियुग में कुल कितने हिन्दू राजा हुए तथा अन्तिम हिन्दू राजा कौन थे?

ज. २१- द्वापर युग में हुए पाँच राजाओं के पश्चात् राजगद्दी पर राजा शान्तनु आसीन हुए।

ज. २२- द्वापर युग में राजा विचित्र के पहले राजा चित्र और बाद में राजा व्यास हुए।

ज. २३- राजा व्यास के पश्चात् पाण्डु राजा हुए, तो राजा पाण्डु के पश्चात् उनके ही पुत्र नरकेसरी पुरुषार्थी अर्जुन राजा हुए।

→ पुराण में धरती पर प्रसिद्ध उन्हीं पुरुषार्थियों की गणना राजा के रूप में की गई है, जिनका नाम, यश अथवा बोलबाला सारी पृथ्वी पर हो। फिर वे चाहे किसी भी मार्ग के पुरुषार्थी क्यों न हों। जैसे-धूम्रऋषि, व्यासजी और हिरण्यकश्यप आदि। धूम्रऋषि तप के क्षेत्र में प्रसिद्ध थे, तो अर्जुन पृथ्वी की नरात्माओं में अव्वल दर्जे के पुरुषार्थी थे। पुनः ज्ञान गरिमा के क्षेत्र में वेदव्यासजी ख्याति-प्राप्त थे, तो हिरण्यकश्यप कुख्यात अत्याचारी के रूप में संसार प्रसिद्ध था।

ज. २५- राजा अर्जुन से लेकर राजा परीक्षित के बीच कुल छः राजा राजगद्दी पर बैठे, जिनके नाम इस प्रकार हैं। जैसे-अहिवरन कुमार, सेत्रनख, सान्तनु, बलीवान, निरवान और बलीचक्षु।

ज. २६- राजा जन्मेजय राजा परीक्षित के सुपुत्र थे तथा वे द्वापरयुग के उन्नीसवें राजा थे।

ज. २७- कलियुग में कुल २० राजा हुए, जिनमें से प्रथम राजा जदु हुए। यदि राजा जदु से गिनें, तो विक्रमादित्य कलियुग के पाँचवें राजा थे।

ज. २८- कलियुग में कुल सात हिन्दू राजा हुए तथा कलियुग के अन्तिम हिन्दू राजा, राजा भोज थे।

स. २९-कलियुग के कितने राजाओं के राजशासन के पश्चात् भारतवर्ष की इमामत मुसलमान बादशाहों के हाथ में चली गई तथा सर्वप्रथम किस मुसलमान बादशाह की बादशाही शुरू हुई?

स. ३०-यवन बादशाहों में से पहले, दूसरे और तीसरे बादशाहों के नाम क्या-क्या हैं?

स. ३१-बादशाह तैमूरलिंग से लेकर क्रमशः पाँच बादशाहों के नाम क्या-क्या हैं?

स. ३२-शाहजहाँ के कितने लड़के थे और कौन-कौन?

स. ३३-बादशाह औरंगजेब कलियुग का कौनसे क्रमांक का राजा था? उसका दूसरा नाम क्या था और यह नामकरण किसने और क्यों किया था?

ज. ३३- बादशाह औरंगजेब कलियुग के बीस राजाओं में से सबसे अंत का अर्थात् बीसवाँ बादशाह था। उसका दूसरा नाम था- "कलियुग"। यह नामकरण वेदव्यासजी द्वारा श्री राजजी के जोश ने किया था। उसका कारण यह था कि उसी के नसीब में कलियुग का मुख्य कर्तव्य लिख दिया गया था कि "यही बादशाह दूसरे परार्ध के अट्ठाईसवें कलियुग में पूर्व व्यतीत कलियुगों से →

स. ३४-कलियुग के बीसवें राजा (बादशाह) के शासनकाल में क्या होने की भविष्यवाणी हुई थी?

ज. ३४- कलियुग के बीसवें राजा (बादशाह) के शासनकाल के विषय में →

ज. २९- कलियुग के सातवें राजा, राजा भोज के राजशासन के पश्चात् भारतवर्ष की इमामत मुसलमान बादशाहों के हाथ में चली गई। सर्वप्रथम महम्मद गौरी नामक मुसलमान राजा भारतवर्ष की राजगद्दी पर आसीन हुए और तभी से मुसलमान बादशाहों की बादशाही शुरू हुई।

ज. ३०- यवन बादशाहों में से भारतवर्ष की बागडोर थामकर बादशाही करने वाले बादशाहों में से पहले बादशाह का नाम महम्मद गौरी, दूसरे बादशाह का नाम अलाउद्दीन और तीसरे बादशाह का नाम नसीरूद्दीन था।

ज. ३१- बादशाह तैमूरलिंग से लेकर क्रमशः चौथे बादशाह का नाम बाबर, तीसरे बादशाह का नाम हुमायूं, दूसरे बादशाह का नाम अकबर और पहले बादशाह का नाम सलीम शाह था।

ज. ३२- शाहजहाँ के कुल चार लड़के थे। जैसे-दारा, सूजा, औरंगजेब और मुराद।

→ अनाचार, पापाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार आदि की सैकड़ों गुना वृद्धि कराकर "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत" प्रमाणवत् अक्षरातीत ब्रह्मधाम से बुद्ध तथा कल्कि अवतार को भरतखण्ड में उतारेगा और अक्षरातीत अवतार को अक्षरातीत की आत्मा के सिवाय अन्य कोई अवतरित नहीं कर सकता था। अतः कलियुग की वृद्धि कराकर अक्षरातीत "बुद्ध निष्कलंकावतार" को अक्षरातीत धाम से भरतखण्ड में उतारने की जिम्मेदारीरूपी विशेषता के गुणानुकूल ही बादशाह औरंगजेब का नामकरण वेदव्यासजी ने "कलियुग" कर दिया।

→ यह भविष्यवाणी हुई थी कि "द्वै परार्धे अष्टाविंशति कलौयुगे" अर्थात् सतलोक स्थायी ब्रह्माजी के दूसरे परार्ध के अट्ठाईसवें कलियुग में जो बुद्ध-कल्कि अवतार अवतरित होंगे, वे मात्र त्रिगुण (त्रिदेवा) को ही नहीं, बल्कि सारी सृष्टि के जड़-चेतन को गति-मुक्ति प्रदान →

करेंगे। पुनः ये बुद्ध-कल्कि "विजयाभिनन्द-बुद्धनिष्कलंकावतार" के नाम से कलियुग के बीसवें बादशाह औरंगजेब के शासनकाल में प्रकट होंगे और अनर्थकारी औरंगजेब बादशाह के शासनकाल

स. ३५- अरे! कथित बीतक के रचनाकार तो श्री लालदासजी महाराज हैं, तो अन्त में छाप श्री महामति की! ऐसा क्यों?

ज. ३५- श्री लक्ष्मण सेठ, जिनका आध्यात्मिक नाम श्री लालदासजी महाराज था, उन्होंने श्री प्राणनाथजी स्वरूप के आध्यात्मिक धर्म पर्यटन के मजल में, जब श्री महामतिजी दीव बंदर से नबी-पोरबंदर, नलिया, कच्छ-भूजनगर होते हुए ठट्ठा नगर पहुँचे थे, तभी उनके साथ सत्संग किया था और उनके श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त के श्री कृष्ण प्रणामी धर्म में दीक्षित हुए थे। तब से लेकर अंत तक वे श्री प्राणनाथजी के साथ ही रहे। वि. सं. १७५१ में जब महामति श्री प्राणनाथजी के परमधाम लौटने का समय आया, तब श्री लालदासजी महाराज और श्री केशवदासजी श्री प्राणनाथजी से पहले ही धाम में उठने की तैयारी करने लगे। यह देखकर महामति श्री प्राणनाथजी ने दोनों भाइयों को दो अधूरे कार्य सौंपते हुए आज्ञा दी कि आप दोनों में से श्री केशवदासजी को श्री मुख से उतरी हुई वाणी (तारतम सागर) का संबंध मिलाकर जिल्द बाँधने का और

स. ३६- बीतककार श्री लालदासजी ने श्री महामतिजी की ओर से संबोधन में किसे लिया है?

ज. ३६- बीतककार श्री लालदासजी महाराज ने श्री महामतिजी की ओर से "आगे अपनी बीतक" के आधार पर संबोधन में धाम की

स. ३७- "आगे अपनी बीतक" - कहने का क्या तात्पर्य है ? किसकी बीतक लिख रहे हैं?

ज. ३७- *"आगे अपनी बीतक"* कहने का तात्पर्य समझाने हेतु ही बीतककार श्री लालदासजी महाराज कह रहे हैं कि हे धामस्थ

→ का अन्त कर देंगे। ये अवतार आयेंगे तो, बुद्ध-कल्कि के स्थान पर, किंतु वैकुण्ठ से नहीं, बल्कि अक्षर-अक्षरातीत धाम अथवा नूर-नूर तजल्लाह से।

→ श्री लालदासजी को "बीतक साहेब" की रचना करने का कार्य पूरा करके ही धाम लौटना है। यह आज्ञा सुनते ही श्री लालदासजी महाराज ने हाथ जोड़कर श्री प्राणनाथजी के आगे विनती की कि मैं यह विराट कार्य कैसे-किस तरह पूरा कर पाऊँगा क्योंकि मैं तो आपसे ठट्ठा नगर में मिला था? ठट्ठा नगर से लेकर अन्त समय तक आपके साथ-साथ होने के कारण ठट्ठा नगर से लेकर अब तक का वर्णन तो कर सकता हूँ। परन्तु "बीतक" तो महाकारण-अक्षरातीत में हुए "प्रेम-सम्वाद"-"इश्क-रब्द" से शुरू हुई थी, तो वह वर्णन मुझसे कैसे बन सकेगा? यह बात सुनते ही महामति श्री प्राणनाथजी ने श्री लालदासजी महाराज के सिर पर हाथ रखकर तथास्तु कहते हुए यह आशीर्वाद दिया कि अब तुम निःशंक ही सम्पूर्ण बीतक की रचना कर सकोगे। तब से श्री लालदासजी महाराज ने बीतक लिखनी शुरू की और अपने नाम के स्थान पर "श्री महामतिजी" की छाप रख दी। तभी से श्री महामति की छाप होने के कारण जिस तरह "श्री मुख वाणी" को "श्री स्वरूप साहेब" की मान्यता प्राप्त है, ठीक उसी तरह "श्री लालदास कृत बीतक" को भी "श्री बीतक साहेब" के नाम से समाज में मान्यता प्राप्त है।

→ १२,००० ब्रह्मात्माओं को लिया है। उन्हें संबोधित करते हुए वे कह रहे हैं कि हे ब्रह्मात्माओं! हम द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माएँ श्री श्यामाजी का अंग हैं। श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरुजी की बीतक हमारी अपनी ही आपबीती कहानी होने के कारण हमें इन बातों को अपना समझकर चित्त में धारण करना चाहिए और अपने जीवन को सफल, सार्थक एवं कृतकृत्य बनाना चाहिए।

→ ब्रह्मात्माओं! अब इसके आगे मैं अपने स्वरूप श्री श्यामाजी महारानी की आपबीती कहानी का वर्णन करूँगा, जिन्होंने हमारे लिए पंचभौतिक मानव तन धारण किया और यहाँ श्री देवचन्द्रजी अर्थात् सद्गुरु के रूप में आये। इतना ही नहीं, उन्होंने हमारे लिए ही पैंतीस साल तक निरन्तर एकाग्रचित्त द्वारा अपने धनी श्री अक्षरातीत को अति प्रसन्न किया। जैसे - *"पियाजी किये अति*

→

→ *प्रसंन, तीन बेर दिए दरसन"* खोज के क्षेत्र में श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु स्वरूप ने जितने भी दुःख, कष्ट, जितनी भी कसनी सहन कर श्री अक्षरातीत धनी के सम्बन्ध को प्राप्त किया, *"सो* →

स. ३८-श्री लालदास कृत बीतक साहेब में चारों युगों के राजाओं के नाम तो गिने गये, परन्तु कैसे-कैसे राजाओं के नाम गिने गये?

ज. ३८- श्री लालदास कृत बीतक साहेब में जिन-जिन राजाओं के नाम गिने गये हैं, वे सभी नाम मात्र राजगद्दी पर आसीन हुए राजाओं →

❖ महाकारण ❖

स. १-"महाकारण की बीतक" कहने से क्या समझना चाहिए?

ज. १- महाकारण, कारण, सूक्ष्म और स्थूल में से स्थूल-नारायणी स्वप्निक सृष्टि; सूक्ष्म-बेहद्द भूमिका; कारण-स्वप्न एवम् जागृत (हद्द एवम् →

स. २-यहाँ एक प्रश्न यह उठता है कि बीतककार श्री लालदासजी को तो यहाँ (इस भूमिका) की लीला का वर्णन करना था, तो वे राजाओं के नाम की गणना करने के पश्चात् अद्वैत भूमिका-महाकारण में क्यों चले गये ?

ज. २- बीतककार ने बीतक वर्णन में सर्वप्रथम धर्मभूमि भारतवर्ष के चारों युगों के राजाओं के नाम की गणना द्वारा तत्कालीन राजशासन →

स. ३-श्री राजजी ने यह असत्, जड़, दुःखरूपी खेल देखने हेतु दोनों में इच्छा उत्पन्न करा दी। अतः किन दोनों में तथा कौन-कौनसी इच्छाएँ उत्पन्न करा दीं?

→ *कारन हम सब सैयन"* अर्थात् हम बारह हजार सखियों के लिए ही किया है। अतः बीतककार निःसंकोच ही स्पष्टरूपेण कह रहे हैं कि "आगे अपनी बीतक" अर्थात् हमें इसे अपनी ही बीतक समझकर सिर पर लेकर चलना चाहिए।

→ के नहीं हैं। उस गणना में तो उन राजाओं के नाम आए हैं, जो अत्याचारियों, अनाचारियों, धार्मिक महापुरुषों, भक्तों, पुरुषार्थियों, ध्यानियों, तपस्वियों में अव्वल दर्जे के हों अथवा जिनके नाम का बोलबाला सारी पृथ्वी में व्यापक हो। उन राजाओं के शासनकाल में उन्हें प्राप्त हुई प्रसिद्धि के आधार पर अथवा उस प्रसिद्धि को प्रधानता देते हुए इन राजाओं की गणना की गयी है।

-(प्रकरण १, सवाल-जवाब नं. ३८)।

❖ महाकारण ❖

→ बेहद) के कारणभूत सृष्टिकर्ता कूटस्थ अक्षर ब्रह्म का धाम और महाकारण कहने पर अक्षरात्परतः परः अर्थात् अक्षरातीत ब्रह्मधाम की लीला समझनी चाहिए।

→ कालांतर्गत परिस्थितियों को पकड़ाया। पुनः उस शासनकाल में आनेवाले वे बुद्ध-कल्कि अवतार, जिनकी बीतक मैं वर्णन करने जा रहा हूँ, वे आयेंगे कहाँ से? यदि वे अक्षर-अक्षरातीत धाम से आ रहे हैं, तो क्यों? अन्य जितने भी अवतार इस धर्मभूमि पर होते आये थे, वे सभी तो वैकुण्ठ से आते थे! अतः ये अवतार तो अक्षरातीत की ब्रह्म-ईश्वरी आत्माओं के लिए अथवा कार्य-कारणवश आ रहे थे। यसर्थ आनेवाले स्वरूप की बीतक का सम्बन्ध अक्षरातीत महाकारण से होने के कारण बीतककार श्री लालदासजी चारों युगों के राजाओं की गणना करने के पश्चात् महाकारण के वर्णन में चले गए।

ज. ३- श्री राजजी (अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म) ने यह असत्, जड़, दुःखरूपी जगन्नाटक देखने हेतु दोनों अर्थात् एक तो सृष्टिकर्ता कूटस्थ अक्षर-ब्रह्म के और दूसरे अपनी ही अंगभूता द्वादश सहस्त्र सखियों के दिल में इच्छा उत्पन्न करा दी। कूटस्थ अक्षर ब्रह्म, जैसे - *"इन* →

→ *समे भगवानजी इत, दरसन को आवें नित"* अर्थात् जो दैनिक सुबह नौ बजे श्री राजजी के दर्शनार्थ आया करते थे, आज सुबह भी श्री राजजी के दर्शनार्थ ब्रह्मधाम के आगे उपस्थित हुए। किंतु आज तो श्री राजजी ने अपने साथ-साथ श्री श्यामाजी महारानी सहित द्वादश सहस्त्र सखियों के भी दर्शन उन्हें करा दिए। श्री श्यामाजी महारानी सहित सखियों के दर्शन करते ही अक्षर के मन में एक प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई कि इन सब सखियों के साथ श्री रंगमहल में मेरे इष्ट स्वरूप श्री राजजी कैसी लीला करते होंगे? यदि वह अन्तरंग प्रेममयी लीला मुझे देखने मिले तो! इस प्रबल इच्छा सहित अक्षर ब्रह्म अक्षर धाम में लौट आए और श्री राजजी के ध्यान में बैठ गए। दूसरी ओर श्री राजजी ने सदैव अपने साथ →

स. ४- तीन तकरार कौन-कौनसे हुए, जिनसे तीन ब्रह्माण्डों की रचना हुई ? पुनः कौन-कौनसे तीन ब्रह्माण्डों की रचना हुई?

ज. ४- वेद पक्ष का ब्रह्मज्ञान सम्पादन करनेवालों की मान्यतानुसार एक "ब्रह्मरात्रि" हुई। अद्वैत ब्रह्म की उस "ब्रह्मरात्रि" के तीन टुकड़े हुए, जिनसे तीन ब्रह्माण्डों की रचना हुई। वे तीन ब्रह्माण्ड हैं-ब्रज का ब्रह्माण्ड, रास का ब्रह्माण्ड और जागनी का ब्रह्माण्ड। इन तीनों →

स. ५- उक्त तीन तकरार कहाँ हुए? कैसे हुए और तीनों तकरारों की अवधियाँ कितनी-कितनी हैं?

ज. ५- उक्त तीनों में से दो तकरारें अथवा दो ब्रह्माण्डों की लीला नारायणी सृष्टि के स्थूल पाद चौदह लोक ब्रह्माण्ड के मृत्युलोक में हुई और हो रही है तथा महारास लीला योगमाया का ब्रह्माण्ड रचाकर की →

स. ६- अरब (बरारब) में आनेवाले मुहम्मद साहेब अक्षरातीत-ब्रह्म श्री राजजी ही हैं-इसका क्या प्रमाण है?

ज. ६- अरब (बरारब) में आनेवाले मुहम्मद साहेब अक्षरातीत ब्रह्म श्री राजजी ही हैं-इस बात की साक्षी श्री लालदास कृत बीतक साहेब →

→ रहकर लीला करनेवाली द्वादश सहस्त्र सखियों को भी आज अचानक दूसरे पुरुष अक्षर ब्रह्म के दर्शन करा दिए। तब अन्य पुरुष-अक्षर ब्रह्म के दर्शन करते ही सब सखियाँ चौक गईं और सोचने लगीं कि "अरे! यह पुरुष कौन है?" इस तरह अक्षर और सखियों के परस्पर दर्शन तो निरत के समय हुए थे। तीसरी भोम की निरत पूरी होने के बाद ३५ जुत्थ सखियों को पता चला कि "वह तो अक्षर ब्रह्म है। अक्षर धाम में रहता है और नित्य प्रति असत्, जड़, दुःखमय नया-नया नाटक (खेल) बनाता और मिटाता है।" ३५ जुत्थ सखियों के माध्यम से जब प्रेम-सम्वाद में अनुपस्थित ५ जुत्थ सखियों को भी यह बात पता चली, तब यह बात सुनते ही द्वादश सहस्त्र सखियों के दिल में भी यह असत्, जड़, दुःखरूपी नाटक देखने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई।

→ ब्रह्माण्डों में ब्रह्मलीला हुई एवं हो रही है। इसी विषय वस्तु को कुरान और हदीसों में इस प्रकार कहा है कि खुदा द्वारा कुदरत की "लैल तुल कद्र" नामक रात्रि का विस्तार हुआ। उसी लैल की रात्रि के तीन तकरार हुए। उन तीनों तकरारों द्वारा तीन ब्रह्माण्डों की रचना हुई। तीनों ब्रह्माण्डों में खुदा और उनकी रूहों के बीच तीन तूफान हुए। जैसे-हूद तूफान, नूह तूफान और अभी कयामत का तूफान चल रहा है। इस प्रकार उक्त तीनों तूफानों में तीन प्रकार की लीलाएँ हुईं।

→ गई। पहले तकरार की लीला कालमाया के ब्रह्माण्ड में, दूसरे तकरार की लीला योगमाया के ब्रह्मांड में और तीसरे तकरार की लीला भी पहले तकरार की ही भाँति कालमाया के ब्रह्माण्ड में हो रही है। सर्वप्रथम तकरार के लीला की अवधि ११ वर्ष ५२ दिन की थी। दूसरा तकरार बेहद में योगमाया के ब्रह्माण्ड में हुआ। अतः इस अवधि को अपार ब्रह्मरात्रि कहा है। पुनः तीसरे तकरार अर्थात् जागनी (कयामत) के ब्रह्माण्ड की अवधि महाप्रलय तक की है।

→ है, जिसमें उन्होंने कहा है कि "रास लीला खेल के आए बरारब स्याम" अर्थात् महारास में रास रचानेवाले स्वरूप अक्षरातीत स्वरूप ही थे। यह बात शास्त्र प्रमाणयुक्त भी है। श्री मुख वाणी-कुलजम स्वरूप साहेब में भी ऐसा वर्णन आता है कि रास रचाकर सखियों को श्री परमधाम मूल मिलावे में पहुँचाकर, श्री कृष्ण ही →

→मुहम्मद साहेब के रूप में अरबस्तान (बरारब) में अवतरित हुए और उन्होंने चालीस साल की उम्र में नूर परे नूर तजल्लाह-अक्षरातीत धाम में पहुँचकर खुदा (श्री राजजी) से रू-बरू संवाद किया। संवाद के दौरान उन्होंने श्री राजजी के मुख से नब्बे हजार हरफ (वचन) सुने तथा कलमा के आधार पर मुसलमानों के बीच शरीअत का मार्ग चलाया और तेईस साल तक उसी धर्म मार्ग का प्रचार-प्रसार →

स. ७- "छै दिन कुरान में" अर्थात् कुरान धर्मग्रन्थ में जिन छः दिनों का वर्णन आता है, उन्हीं छः दिनों में सारी हकीकत का जाहिर होना लिखा है। अतः वे छः दिन कौन-कौनसे हैं तथा जाहिर होने की बात किसने लिखी है?

ज. ७- तृतीय श्याम स्वरूप मुहम्मद साहेब ने खुदा से रू-बरू (आमने-सामने होकर) बातें करके प्रत्यक्ष कानों द्वारा नब्बे हजार हरफ (वचन) सुनकर कलमा उतारा और अपने धार्मिक सद्ग्रन्थ कुरान शरीफ़ में नूर तजल्लाह के रूहों (मोमिनों) की लीलाओं द्वारा अर्श अजीम (अक्षरातीत धाम) की लीलाओं के जाहिर होने की बातों का खुलासा छः दिन के अन्दर होने का वादा किया है। उन छः दिनों में से पहले दिन-९९ वर्ष ५२ दिन की व्रज (हुद तूफान) की लीला है। दूसरा दिन रास रात्रि (नूह तूफान) की लीला को कहा है। तीसरा दिन-अरब में स्वयं द्वारा प्रत्यक्ष साक्षी अर्थात् →

स. ८- कुरान में लिखे वादे के अनुसार छट्ठे दिन में जाहिर होनेवाली हकीकत कौनसी है और कहाँ की है?

ज. ८- छट्ठे दिन में जाहिर होनेवाली हकीकत में स्वप्निक संसार में अब्रह्म युक्त ब्रह्म के नाम पर किये जानेवाले निन्दित अकर्मों को ब्रह्म साक्षात्कार विषयक पूजित कर्मों में लगाना, अक्षरातीत (नूर- →

स. ९- कहते हैं सखियों ने एक ही रात में विरह और विलास दोनों देखा, तो वह रात कौनसी थी? सखियों ने विरह और विलास कहाँ और कब देखा?

→ किया। श्री मुख वाणी में इसका निम्नलिखित प्रमाण है।
जैसे -

स्याम रास से बरारब, ल्याया साहेब का फुरमान ।
हकीकत अखंड धाम की, तिन बांधी सब जहान ।।
-(खुलासा, प्र.१३/चौ. ३१)।

→ कुरान ग्रन्थ-कलमा द्वारा अक्षरातीत-नूर परे नूर तजल्लाह का लक्ष्य लाने की और शरीअत का मार्ग चलाने की ६३ साल की लीला को कहा है। पुनः चौथा दिन-रूह अल्लाह (सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी) का आना और तारतम अवतरित करना है तथा पाँचवाँ दिन रूह अल्लाह के दूसरे जामे द्वारा सनाखत कुंजी-तारतम मंत्र के ब्रह्मज्ञान का उतरना और उसके प्रचार-प्रसार (धर्म-पर्यटन) की बीस साल की अवधि है। छठाँ दिन पन्ना भूमि में प्रकाशमय ध्वज(नूर झण्डा) की स्थापना होना तथा उसी भूमि पर श्री अक्षर-अक्षरातीत अथवा परमधाम (नूर-नूर तजल्लाह) की वह यावत् दैवत अर्थात खिलवत, परिक्रमा, सागर और सिनगार ग्रंथ के माध्यम से पचीस पक्षादि की लीला और सिंगार आदि का अवतरित होना है। इसी दैवत के आधार पर सृष्टि के जीवों को गति-मुक्ति प्राप्त कराना अर्थात् आवागमन से छुड़ाकर सच्चिदानन्द में कायम (अखण्ड) करना है।

→ तजल्लाह)-एक अद्वैत ब्रह्म (खुदा), ब्रह्मधाम, ब्रह्मस्वरूप एवं ब्रह्मलीला की आदि से लेकर अनादि तक की अखण्डता का अविकल्परूप में जाहिर होना। उक्त छट्ठे दिन में जाहिर होनेवाली सारी हकीकत अक्षर परे अक्षरातीत अथवा नूर परे नूर तजल्लाह की है।

ज. ९- सखियों ने जिस एक रात में विरह और विलास दोनों देखा, उसे महारास रात्रि कहा गया तथा वह हद परे बेहद में केवल ब्रह्म की स्वामिनी के मन अन्तःकरण में योगमाया के ब्रह्मांड में रची गयी →

थी। उस महारास रात्रि में द्वादश सहस्त्र सखियों ने श्री राजजी (श्री कृष्णजी) के अन्तर्ध्यान के समय हृदयविदारक विरह का अनुभव किया था। अन्तर्ध्यान के पहले और प्रकट होने के बाद रामत रमते वक्त जिस सुख-विलास का अनुभव किया था, वह तो अक्षरातीत-रंगमहल के अंत:पुर में की जानेवाली लीला थी, जिसके लिए वाणी में कहा है -

अक्षरातीत के मोहोल में, प्रेम इसक वरतत।
सो सुध अक्षर को नहीं, जो किन विध केल करत।।

-(किरंतन, प्र. ७४/चौ. २९)।

स. १०-तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना करने का क्या कारण था?

ज. १०- तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना करने का एक कारण तो "अरध साथ रह्यो अटकी" अर्थात् ब्रज-रास में छः हजार तामसी सखियों की असत्, जड़, दुःखरूपी खेल देखने की वह इच्छा अधूरी रह गई थी, जो उन्होंने अक्षरातीत रंगमहल की तीसरी भोम में की थी। वह अधूरी इच्छा ही इस ब्रह्माण्ड की रचना करने का एक कारण

स. ११-तीसरे दिन में तन धारण करनेवाले स्वरूप कौन हैं? वे कहाँ से और क्या लेकर आये तथा संसार में कितने समय तक रहे?

ज. ११- तीसरे दिन में तन धारण करनेवाले स्वरूप तृतीय श्याम स्वरूप

स. १२-चौथे स्वरूप कौन हैं? वे कहाँ से और कब आए तथा यह दिन मुख्य क्यों गिना जाता है?

ज. १२- चौथे स्वरूप श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु (रूह अल्लाह) स्वरूप हैं। ये स्वरूप अक्षर परे अक्षरातीत धाम से आये थे, जिस स्थान को चौथा आसमान भी कहते हैं। जब अरबवाले तृतीय श्याम स्वरूप धाम गये, तब उनके नाम से हिजरी सन् अर्थात् नई सदी

→ उक्त चौपाई में वर्णित अक्षरातीत-रंगमहल में हम द्वादश सहस्त्र सखियों के साथ श्री राजजी की अन्तरंग प्रेममयी लीला के ही दर्शन-अनुभव की इच्छा कूटस्थ अक्षर ब्रह्म ने की थी। अक्षर की उसी सुरता ने रासमण्डल के दौरान श्री कृष्णजी (श्री राजजी) के अन्दर होकर बिलास का अनुभव किया था। पुनः उसी (वैसे ही) बिलास का अनुभव सखियों ने ११ वर्ष ५२ दिन की ब्रज की लीला के पश्चात् वंशी की नाद में ब्रज छोड़कर रास में जाकर किया था।

→ बनी। दूसरा कारण श्री राजजी को अपनी अंगभूता सखियों को अपनी पातशाही का ज्ञान कराना, प्रेम-संवाद में कही हुई भविष्य विषयक उन सारी बातों को खेल में मूल से ही याद दिलाकर जागृत करना, प्रेम-संवाद की बातों को कबूल कराना तथा अपनी सखियों की इच्छापूर्ति हेतु उत्पन्न किये गये जीवों को तारतम द्वारा सखियों के हाथ से ही अखण्ड बहिश्त के सच्चिदानन्द सुख का अधिकारी-पात्र बनाना आदि कार्यों का शेष रह जाना था।

→ (मुहम्मद साहेब) हैं। संसार के बीच में चालीस साल की अवस्था में वे नूर (अक्षर धाम) परे नूर तजल्लाह (अक्षरातीत धाम) में पहुँचकर कलमा-कुरान के नब्बे हजार हरफ (वचन) लेकर-सुनकर आए थे। वे संसार में तिरसठ वर्ष रहे।

→ चली। उस सदी के मुताबिक नौवीं सदी के बाद दसवीं सदी पूरी होने में जब सवा नौ साल बाकी थे, तब सद्गुरु स्वरूप संसार में आये। अतः-

साल नव सै नब्बे मास नौ, हुये रसूल को जब ।
रूह अल्लाह मिसल गाजियों, सैयां उतरे तब ।।
-(श्री लालदास कृत बीतक साहेब, प्र.२/चौ.१५)।

→

→अर्थात् मुहम्मद साहेब के संसार से जाने के बाद जब नौ सौ नब्बे साल और नौ माह हुए, तब रूह अल्लाह-श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु स्वरूप अपनी मर्द जमात (धर्म पर न्योछावर होनेवाले) →

स. १३-चौथे स्वरूप के संसार में अर्थात् तीसरे ब्रह्मांड में आने के विषय में निश्चित किए गए अवधि का साक्षीरूपी प्रमाण कहाँ है अथवा कौनसा है?

ज. १३- तीसरे ब्रह्माण्ड में चौथे स्वरूप श्री श्यामाजी अर्थात् रूह अल्लाह →

स. १४-श्री अक्षरातीत परमधाम से ब्रह्मात्माएँ दूसरी बार खेल देखने कब और किसके साथ आयीं?

ज. १४- ब्रज तथा रास लीला कर अक्षरातीत धाम में लौटी ब्रह्मात्माएँ दूसरी बार खेल देखने कलियुग में वि. सं. १६३८ अथवा ई. स. १५८१ में सद्गुरु श्री श्यामाजी अवतार के साथ आयीं। इन →

स. १५-"मोमिन उतरे तब" और "सैयां उतरे तब" में क्या अन्तर है?

ज. १५- *"मोमिन उतरे तब"* और *"सैयां उतरे तब"* में तत्त्व विशेष कुछ अंतर नहीं है। अंतर है, तो मात्र भाषा विषय में । "मोमिन →

स. १६-वि. सं. १६३८ में आसोज सुदी चौदस के दिन कौन, कहाँ और किसके घर में प्रकट हुये?

ज. १६- वि. सं. १६३८ अर्थात् ई. स. १५८१ में आसोज माह के सुदी →

स. १७-उक्त स्वरूप के नाम, देश-गाँव और माता-पिता के नाम के साथ जाति भी समझाओ कि वे किस जाति के थे?

→ मोमिनों को लेकर संसार में दूसरी बार खेल देखने के लिए अवतरित हुए। यह दिन मुख्य इसलिए गिना जाता है क्योंकि इसी दिन की हकीकत का संबंध हम ब्रह्मात्माओं की आत्म-जागृति के साथ है।

→ के आने के अवधिकाल प्रति भविष्य कहते हुए तृतीय श्याम स्वरूप ने कहा था कि ये स्वरूप उनके चले जाने के बाद जब दसवीं सदी पूरी होने में सवा नौ साल शेष रह जायेंगे, तब आयेंगे। इस अवधिकाल का साक्षीरूपी प्रमाण उपरोक्त चौपाई है।

→ स्वरूप को कुरान की भाषा में रूह अल्लाह स्वरूप कहते हैं। शास्त्रों में अट्ठाईसवें कलियुग के बुद्धावतार को, सतलोकवासी देवी-देवताओं को भी पार पहुँचानेवाला बताया गया है। इसकी पुष्टि शुकदेवजी ने भागवत में की है। अतः "न मानो तो जई सुकजीने पूछो, आ बैठा छे मांहे भागवत"।

→ उतरे" कुरान की भाषा है और "सैयां उतरे" वेदों की अथवा हिन्दू भाषा में है। जैसे-वास्तविक तत्त्व सूर्य है। उसे चाहे सूर्य कह लो, मारफत कह लो, सन कह लो या भास्कर अथवा दिनकर कह लो।

→ पक्ष की चौदस तिथि के दिन चौथे आसमान से श्री श्यामाजी अवतार प्रकटे। ये स्वरूप पश्चिम स्थित मारवाड़ देश के उमरकोट गाँव में मतु महेता और कुँवरबाई की कोख को और घर को धन्य-धन्य करते हुए प्रकट हुये।

ज. १७- उक्त स्वरूप का नाम सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी था। वे मारवाड़ देश के उमरकोट गाँव में प्रकट हुये थे और उनके माता-पिता का नाम क्रमशः कुँवरबाई तथा मतु महेता था। वे बारह कायस्थ जातियों में से उत्तम कायस्थ जाति के थे।

स. १८-उक्त स्वरूप के आगमन के समय सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के नर-नारियों का मंगल बधाई देते हुए आनन्दित होने का क्या कारण था?

ज. १८- उक्त स्वरूप के धरती पर आगमन के समय संपूर्ण ब्रह्माण्ड के नर-नारियों का मंगल बधाई देते हुए समस्त वातावरण में आनन्द →

स. १९-उक्त स्वरूप कौन हैं और कैसे हैं ? इनके विषय में श्रीमद्भागवत महापुराण में शुकदेव मुनि ने राजा परीक्षित से क्या और कैसे विचार अभिव्यक्त किए हैं?

ज. १९- ये स्वरूप शास्त्रों द्वारा अक्षर की जागृत बुद्धि के "बुद्धावतार" सिद्ध हैं। महारास रमण के वक्त अन्तर्ध्यान के समय अक्षरातीत- →

स. २०-"विश्व के जीवों की वंदना अक्षर ब्रह्म तक ही पहुँचती है" - ऐसा क्यों कहा है? ये जीव अक्षर पुरुष की वंदना किस तरह करते हैं?

ज. २०- "सारी सृष्टि के मानवात्माओं की वंदना (स्तुति) सृष्टिकर्ता कूटस्थ →

स. २१-श्री लालदास कृत बीतक साहेब में श्रीमद्भागवत के १२वें स्कंध के दूसरे अध्याय के जो ३७वें और ३८वें क्रमांक के श्लोक प्रमाणरूप में दिये गये हैं, वे किस लिए दिये गये हैं, स्पष्ट करो?

ज. २१- श्री लालदास कृत बीतक साहेब में श्रीमद्भागवत के १२ वें स्कंध के दूसरे अध्याय के ३७ वें और ३८ वें क्रमांक के श्लोक श्री सद्गुरु और महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप के कलियुग में →

→ छा जाने का कारण यह था कि वे स्वयं आनन्द स्वरूप के अवतार थे अर्थात् अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप के सत, चिद् और आनन्द अंश में से आनन्द अंश के अवतार थे। अतः सारी सृष्टि की चेतनात्माओं को सच्चिदानन्दमय सुख प्रदान करने हेतु ही इनका आविर्भाव हुआ था। इसीलिये इन स्वरूप के आगमन के समय संपूर्ण ब्रह्माण्ड के नर-नारी इनके स्वागत के रूप में मंगल बधाई गाते हुए आनन्दित हो उठे।

→ स्वरूप ने अपना जोश खींचकर अक्षर की जिस बुद्धि को जागृत किया था, जागृत बुद्धि के वही "बुद्ध अवतार" इस कलिकाल में धरती पर अवतरित होकर सतलोक स्थायी त्रिगुण अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी पार उतारेंगे, पहुँचायेंगे, इस प्रकार शुकदेव मुनि ने श्रीमद्भागवत महापुराण में इशारे से इंगित किया है। अतः श्रीमद्भागवत ग्रन्थ में शुकदेव मुनि द्वारा परीक्षित को इंगित करके दिखाए हुए बुद्धावतार यही स्वरूप हैं।

→ अक्षर ब्रह्म तक ही पहुँचती है, वह भी अन्धाधुन्ध की हुई प्रार्थना" - ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि नारायणी जीवात्माएँ यह मानकर वंदना करते हैं कि सृष्टि संचालन करनेवाले वे नियन्ता अक्षर अविनाशी हैं, भले ही वे कहीं भी हों। इसीलिए सृष्टि की मानवात्माओं द्वारा इस तरह की हुई वंदना अक्षर ब्रह्म तक ही पहुँचती है।

→ अवतरित होने के विषय में कही हुई भविष्यवाणी के प्रमाण के रूप में दिये गये हैं। उस श्लोक के अनुसार इक्ष्वाकु और मरू नामक कुलोत्पन्न देवापि और शान्तनु-ये दोनों भाई कलियुग में प्रकट होंगे तथा कालपी नदी के तट पर स्थित विंध्याचल पर्वत के तटवर्ती स्थान पर आसीन होकर योगबलियों में भी महानातिमहान योगबलशाली सिद्ध होंगे एवम् अपने योगबल के प्रताप द्वारा वे जाति-वर्णादि भेदभाव से रहित पहले का-सा समाज संगठित करेंगे।

स. २२-"सतजुग के बीज भूत" क्या है? ऐसा क्यों कहा गया है तथा "इनो बीच रहे विस्तार" कहने का क्या तात्पर्य है अथवा किसके बीच विस्तार होने को कहा है?

ज. २२- श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने निरन्तर खोज करते-करते ४० साल की अवस्था में जिस तारतम मंत्र को प्राप्त किया, →

स. २३-"संपूर्ण सृष्टि ही अखण्ड होगी" - इस कथन का क्या तात्पर्य है?

ज. २३- *"संपूर्ण सृष्टि ही अखण्ड होगी"* - ऐसा कहने का वास्तविक तात्पर्य यह है कि संसार की समस्त मानवात्माएँ इस तारतम् →

स. २४-वेद और कतेब दोनों पक्षों के सद्ग्रन्थादि में अनेकों प्रकार के संकेतों एवं रहस्यमय शब्दों द्वारा किसकी तथा किस विषय की साक्षियाँ लिखी हैं?

ज. २४- वेद और कतेब दोनों पक्षों के सद्ग्रन्थादि में अनेकों प्रकार के संकेतों एवं रहस्यमय शब्दों द्वारा श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु स्वरूप प्रति साक्षियाँ लिखी हैं। सद्गुरु स्वरूप के प्रति वेद पक्ष →

स. २५-जब से इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है, तब से रचित वेद, कतेबादि संपूर्ण सद्ग्रन्थों में किन स्वरूप की जन्म से लेकर अंत तक सारी हकीकत लिखी है, जिसे सुनते ही मन में पूर्ण विश्वास हो जाता है?

ज. २५- चौथे स्वरूप-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (रूह अल्लाह), जो *"द्वै परार्धे अष्टाविंशति कलौयुगे"* में संसार के बीच आयेंगे, की हिंदू पक्ष के सद्ग्रन्थादि जैसे वेद, शास्त्र, उपनिषद्, गीता- →

→ उसी को अर्थात् *"ए कहे तारतम बीज बचन"* को ही *"सतजुग के बीज भूत"* कहा है। ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि यह बीज तारतम ही १८७५७ चौपाइयों का मूल है। इसी तारतम मंत्राधार ही अक्षरातीत लीला तथा ज्ञान का विस्तार "इनो बीच" अर्थात् श्री सद्गुरु द्वारा होगा, ऐसा कहा गया था और उसी तरह १२० वर्ष के दरमियान हुआ भी।

→ महामंत्र को ग्रहण करके ही अखण्ड मुक्ति को प्राप्त करेंगी। इसके सिवाय अन्य कोई उपाय नहीं है क्योंकि एक अक्षरातीत स्वरूप ही ब्रह्म हैं। उनके सिवाय अन्य सभी मायाजन्य तथा अब्रह्म हैं। चूँकि तारतम महामंत्र अक्षरातीत ब्रह्म के नाम का ही है, यसर्थ ऐसा कहा है।

→ में जागृत बुद्धि के अवतार के रूप में, वाणी पक्ष में श्री श्यामाजी अवतार तथा पश्चिम के कुरान ग्रन्थ में रूह अल्लाह के रूप में आने की साक्षी लिखी है। किंतु इस प्रकार आकर वे क्या करेंगे? तो इस विषय में कहा है कि वे स्वरूप सृष्टि की संपूर्ण आत्माओं को सच्चिदानन्दमय सुख में पहुँचायेंगे। उनके जन्म-जन्मान्तर के पापों को भस्मीभूत करके उन्हें आवागमन के चक्कर से उबारेंगे तथा उनके पूज्य त्रिदेवादि देवों को भी पार पहुँचायेंगे।

→ भागवतादि में मूल से ही, पुनः पश्चिम के सद्ग्रन्थों जैसे कुरान-हदीसों में भी जन्म से लेकर जब तक मोमिन धाम न पहुँचें, तब तक की सारी हकीकत इस तरह लिखी हुई है कि जिसे पढ़ते अथवा सुनते ही मन में उनके प्रति विश्वास आ जाये। परन्तु सद्गुरु स्वरूप के समान संपूर्ण वेद, पुराण, कुरान, हदीसों के जानकार अर्थात् दोनों ओर की साक्षियों तथा प्रमाणों का मिलान कर उसके वास्तविक रहस्य का खुलासा कर देनेवाले मिलें, तो ही चौथे स्वरूप श्री देवचन्द्रजी (रूह अल्लाह) की प्राप्ति हो सकती है।

स. २६-"ए वस्तु पावे तब" कहा है। अतः किस वस्तु को तथा कैसे पा सकेंगे?

ज. २६- यह कथन स्वयं बीतककार श्री लालदासजी महाराज सद्गुरु स्वरूप विषय कह रहे हैं क्योंकि कलिकाल के बीच मानवात्माओं को आत्मोद्धार हेतु दिये हुए चार पदार्थ, जैसे - १) उत्तम मानव जीवन २) वह मानव जीवन भी भारतवर्ष का पुनः ३) उक्त दोनों पदार्थ भी २८वें कलियुग के तथा इन तीनों देवदुर्लभ पदार्थों →

स. २७-"एक मिलाय खोल दीजिए" - क्या मिलाकर खोलने पर क्या मिलने का कहा गया है? पुनः कौन खोल देंगे?

ज. २७- संसार के सभी भविष्यवक्ता, शास्त्रकारों के सद्ग्रन्थादि के वचनों →

स. २८-"एक सौ बीस बरस" का समय निश्चित किया गया है- क्यों ? यह किसकी आयु का समय है?

ज. २८- श्री तारतम-नूर कुंजी (सनाखत कुंजी) के प्रचार-प्रसार काल में से कितना काल हो चुका है और कितना बाकी है, यह जानना- →

स. २९-श्री अक्षरातीत परमधाम की संपूर्ण लीला जाहिर होने का निश्चित किया गया समय कब कहा है?

ज. २९- अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्मधाम की संपूर्ण लीलाओं के जाहिर होने का निश्चित किया गया समय *"द्वे परार्धे अष्टाविंशति* →

स. ३०-चार, पाँच और छट्ठे दिन में कौन-कौनसी लीलाएँ होने को कही हैं-अलग, अलग समझाकर स्पष्ट करो?

ज. ३०- चार, पाँच और छट्ठे दिन की लीलाओं में से चौथे दिन में रूह-अल्लाह (सद्गुरु स्वरूप) के आने की, उनके द्वारा निरन्तर आत्मा →

→ को सार्थक बनानेवाला चौथा पदार्थ ४) सिरदार-गुरुओं में भी अग्रगण्य सद्गुरु स्वरूप एवं उनके तारतम ज्ञान की पहचान मुख्यातिमुख्य है। उक्त चौथे तत्त्व-सद्गुरु स्वरूप की पहचान प्राप्त करने हेतु ही *"ए वस्तु पावे तब"* कहा है तथा यह वस्तु सभी शास्त्रों, पुराणों, कुरान, हदीसों के तथा तारतम और कलमा का मिलानकर शास्त्र प्रमाणों द्वारा खुलासा करके समझानेवाले सद्गुरु द्वारा ही प्राप्त कर सकेंगे।

→ को मिलाने पर वास्तविक अर्थ (तत्त्व) मिलने को कहा है। पुनः यह वास्तविक अर्थ (तत्त्व) भी यदि कुरान, पुरान, वेद, उपनिषदादि का मिलान करने का सामर्थ्य रखनेवाले सद्गुरु मिलें, तो ही प्राप्त कर सकेंगे।

→ समझना जरूरी है। अतः यह जानने-समझाने हेतु ही एक सौ बीस वर्ष का समय निश्चित किया गया है। ये एक सौ बीस वर्ष रूह अल्लाह-सद्गुरु स्वरूप की आयु का समय काल है, ऐसा सद्ग्रन्थ कुरान में कहा है।

→ *कलौयुगे"* अर्थात् वि. सं. १७१५ से लेकर वि. सं. १७४८ तक का है। पुनः कुरान पक्ष से देखा जाय, तो *"छे दिन कुरान में, वाके भये जब"* के अनुसार छट्ठे दिन की अवधिकाल में संपूर्ण लीला जाहिर होने को कहा है। उसी प्रकार उक्त समय में खिलवत, परिक्रमा, सागर और सिनगार जैसे ग्रन्थों के माध्यम से ब्रह्मधाम (खुदा के अर्श) की सारी लीलाएँ प्रकट भी हुईं।

→ के संबंधी परमात्मा (ब्रह्म तत्त्व) स्वरूप के खोज की, इस दुस्तर संसाररूपी अरण्य के बीच एक ब्रह्म तत्त्व का निर्णय करने तथा उस ब्रह्म तत्त्व को प्राप्त करने का साधन-"ब्रह्म मंत्र" अर्थात् तारतम मंत्र प्राप्त करने तथा उस मंत्राधार ३४ साल तक प्रचार-प्रसार की लीला, जिसे आड़ीका लीला अथवा जागनी के ब्रह्माण्ड →

→ की ब्रज लीला कहते हैं।

पाँचवें दिन की लीला में सद्गुरु स्वरूप (रूह अल्लाह) के दूसरे जामे (श्री मेहराज) द्वारा निरन्तर धर्म पर्यटन अर्थात् बीस साल वि. सं. १७२० से लेकर वि. सं. १७४० (ई. स. १६६३ से ई. स. १६८३) तक के जागनी अभियान अर्थात् दीव बंदर से लेकर पन्ना तक की लीला कही है। पुनः- →

स. ३१-कब उन तमाम बातों की सुधि सभी को होगी, जिसका ज्ञान सृष्टिकर्ता कूटस्थ अक्षर ब्रह्म को भी नहीं था? पुनः सभी सृष्टि कहाँ एवं किसे सेजदा करेगी तथा कब?

ज. ३१- जब चार, पाँच और छट्ठे दिन में से छट्ठे दिन की अवधि में चार ग्रन्थों द्वारा अक्षर एवम् अक्षरातीत ब्रह्म और ब्रह्मधाम जाहिर होंगे, तब उस अखण्ड अक्षरातीत ब्रह्मधाम की उन तमाम बातों की सुध, जिसका ज्ञान सृष्टिकर्ता कूटस्थ अक्षर ब्रह्म को भी नहीं था अर्थात् →

स. ३२-ऐसे स्वप्निक जीव जिनका अस्तित्त्व ही नहीं है, उनकी दृष्टि भी नूर पार अखण्ड धाम में कब और कैसे पहुँची?

ज. ३२- वे स्वप्निक नारायणी जीव, जिनकी उत्पत्ति "कुंन" कहते हुई है अर्थात् नारायण के अपने को अकेला देखकर "एकोऽहं बहुस्याम्" कहने पर जो जीव उत्पन्न हुए हैं और जिनका अस्तित्त्व स्वप्नदृष्टा के स्वप्न पर निर्भर करता है अर्थात् स्वप्नदृष्टा के स्वप्न के टूटते ही अपना अस्तित्त्व खो बैठने →

स. ३३-इस मायावी, दुस्तर, स्वप्निक संसार में उस अखण्ड ज्ञान की सुध कौन लेकर आए हैं?

ज. ३३- इस मायावी दुस्तर संसार सागर के बीच उस अखण्ड ज्ञान की सुध वे स्वरूप लेकर आए हैं, जो निजानन्द संप्रदाय में ब्रह्मानन्द →

→ छट्ठे दिन की लीला में पन्ना पहुँचने के पश्चात् नूर झण्डे की स्थापना, मृत्युलोक में मुख्यातिमुख्य अक्षरातीत पचीस पक्ष की लीलाओं के उतरने की लीला, चार ग्रन्थों द्वारा दोनों पक्षों में जागनी (कयामत) का संदेश पहुँचाने की लीला वि. सं. १७४० से लेकर वि. सं. १७५१ तक हृकी स्वरूप द्वारा तथा वि. सं. १७५८ तक महाराजा छत्रसाल द्वारा होने को कही है।

→ उनके स्वरूप, सिंगार और लीला विषयक संपूर्ण बातों की सुध मात्र ब्रह्म और ईश्वरी सृष्टि को ही नहीं, अपितु उन सारे जीवों को भी होगी, जो उक्त चार ग्रन्थों के ज्ञान तले आएँगे। सद्गुरु स्वरूप रूह अल्लाह की दया-कृपा से अस्तित्त्वहीन मायावी जीव भी यह ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। संपूर्ण सृष्टि की ब्रह्म, ईश्वरी और जीव-तीनों ही आत्माएँ जब-जब इस तारतमरूपी ब्रह्मज्ञान के तले आएँगी और जानते-समझते जाएँगी, तब-तब उस समझ द्वारा वे अक्षरातीत ब्रह्म को सेजदा कर उनके चरणों में शरणापन्न होती जायेंगी। जागनी का यह क्रम छट्ठे दिन से शुरू होगा।

→ वाले चेतन जीवों की दृष्टि भी सद्गुरु के दया-कृपारूपी श्री तारतम महामंत्राधार उस तारतम ज्ञान तथा अखण्ड २५ पक्ष की सकल सामग्रीयुक्त चार ग्रंथों, जिसे विज्ञान दर्जे का मारफती ज्ञान कहते हैं, के पठन-पाठन, मनन द्वारा २८वें कलियुग के जागनी रास अर्थात् वि. सं. १७१५ अथवा कयामत के समय की ११वीं सदी से नूर परे नूर तजल्लाह अथवा अक्षर परे अक्षरातीत धाम की लीला में जा पहुँची।

→ अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म के आनन्द अवतार श्री श्यामाजी-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी स्वरूप हैं। पुनः कुरान में जिन्हें मुहम्मद साहेब ने रूह अल्लाह तथा शास्त्रों में शुकदेव मुनि ने जिन्हें २८ वें कलियुग के बुद्धावतार कहकर संकेत किया है।

स. ३४-त्रिगुण द्वारा रचित सृष्टि को भी किसकी पहचान हुई? "सद्गुरु स्वरूप यह ज्ञान चौथे आसमान से लेकर आए हैं"- ऐसा कहा, तो किन-किन स्थानों की गणना चार आसमानों में की गई है तथा क्यों ?

ज. ३४- त्रिगुण द्वारा रचित सृष्टि स्वप्निक है। स्वप्न के अंतर्गत उत्पन्न अस्तित्त्वहीन जीवों के दिल-दिमाग को भी सद्गुरु स्वरूप की पहचान इस तारतम ज्ञान द्वारा ही हुई, जिसे सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी →

स. ३५-"तीन स्वरूपों की बीतक" कहा। अतः किन-किन तीन स्वरूपों की?

ज. ३५- बसरी मलकी और हकी, ए हुकम तीन सूरत ।
तिन दई हैयाती दुनी को, करी सैयन वास्ते सरत।।
-(श्री लालदास कृत बीतक साहेब, प्र. ६२/चौ.१९)।

"तीन स्वरूपों की बीतक" कहा। अतः तीन स्वरूपों में से प्रथम स्वरूप अर्थात् जागनी के ब्रह्माण्ड में अक्षरातीत श्री राजजी से प्रत्यक्ष (रू-बरू) बातचीत कर ब्रह्म और ब्रह्मधाम की प्रत्यक्ष साक्षी लेकर आनेवाले अरब के तृतीय श्याम स्वरूप हैं, जिन्होंने नूर परे नूर तजल्लाह-ब्रह्मधाम का लक्ष्य धरती पर अवतरित →

स. ३६-उक्त तीनों स्वरूपों की बीतक- हकीकत अथवा चर्चा-कथा को सबसे उत्तम चर्चा-कथा अथवा "ए चरचा सब ऊपर" क्यों कहा? इसका क्या कारण है?

ज. ३६- उक्त तीनों स्वरूपों की चर्चा-कथा को सबसे उत्तम अथवा *"ए चरचा सब ऊपर"* कहा। इसका कारण यह है कि इस धरती पर अर्थात् इस स्वप्निक धरातल पर सृष्टि की शुरूआत से लेकर आज तक ऐसे कइयों पैगम्बर, तीर्थंकर और अवतारादि हुए, →

→ (रूह अल्लाह) स्वयं चौथे आसमान, अक्षरातीत ब्रह्मधाम से लेकर आए हैं। उक्त कथित चार आसमानों में से पहला आसमान मृत्युलोक कर्मभूमि होने के कारण है। दूसरा आसमान वैकुण्ठ-सतलोक चौदह लोक की कुर्सी अर्थात् राजधानीरूप होने के कारण है। तीसरा आसमान अक्षर धाम, हद्द-बेहद्द एवं स्वप्न-जागृत के सृष्टिकर्ता अक्षर ब्रह्म का धाम होने के कारण है और चौथा आसमान कार्यरूपी स्वप्निक ब्रह्माण्ड का कारण अर्थात् बेहद्द स्थित कूटस्थ अक्षर धाम से भी परे महाकारणरूपी अक्षरातीत धाम है।

→ किया और दुनिया की सर्वात्माओं को यह लक्ष्य पकड़ा दिया। दूसरे स्वरूप रूह अल्लाह सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी हैं, जिन्होंने निरन्तर ३५ साल मेहनत-परिश्रम कर अक्षरातीत तारतम महामंत्र संसार में अवतरित किया। तीसरे स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप हैं, जिन्होंने पहले स्वरूप की साक्षी सिद्ध करते हुए दूसरे स्वरूप द्वारा अवतरित तारतम महामंत्र द्वारा ब्रह्म, ईश्वरी और जीवात्माओं का आवागमन मिटाकर उन्हें अखण्ड सच्चिदानन्द सुख में पहुँचा दिया। जैसे-जीवों को बेहद्द स्थित आठ प्रकार के मुक्तिस्थानों में, ईश्वरी आत्माओं को अक्षर धाम में एवं ब्रह्मात्माओं को तो उनके ही अक्षरातीत ब्रह्मधाम में उठा दिया। इस प्रकार उक्त बीतक बसरी, मलकी और हकी-इन तीनों स्वरूपों की है।

→ जिन्होंने मानवात्माओं को एक धार्मिक लक्ष्य बताकर उस लक्ष्य द्वारा इंगित धाम और इष्ट को प्राप्त करने की चर्चा-कथा सुनाई। ये सभी पैगम्बर तथा अवतारादि स्वर्ग, वैकुण्ठ अथवा कैलासपुरी आदि से आगे तो गये, किंतु वे मानव मात्र को गोलोक धाम तक का ही लक्ष्य बता सके और उन्होंने वहीं तक की चर्चा-कथा भी सुनाई। वे तो न एक अद्वैत ब्रह्म को प्राप्त कर सके और न ब्रह्मधामरूपी लक्ष्य को ही। अतः उन सभी पैगम्बरों अथवा तीर्थंकरों की चर्चा-कथा अब्रह्म और अब्रह्मधाम की चर्चा-कथा →

→ सिद्ध हुई। वे एक अद्वैत ब्रह्म तो *"ह्यक्षरात्परतः परः"* अर्थात् अक्षर ब्रह्म से भी परे स्थित उस अक्षरातीत ब्रह्मधाम में हैं, जिस धाम के लिए *"सा काष्ठा सा परागतिः"* अर्थात् उसके परे कोई गति ही नहीं है, ऐसा कहा है। अतः हमारा लक्ष्य वही परात्पर →

स. ३७- "मैं कौन कहां थे आइया"-यह जानने की इच्छा के उत्पन्न होने पर उक्त प्रश्न का जवाब सद्गुरु कहाँ, किस-किससे पूछने लगे ?

स. ३८- "मैं कौन कहां थे आइया, कहां मेरो भरतार"-यह विचार किसके मन में और कब उत्पन्न हुआ? इस वक्त वे कहाँ हैं एवम् उक्त प्रश्न किससे पूछ रहे हैं?

ज. ३८- *"मैं कौन कहां थे आइया, कहां मेरो भरतार"* - यह विचार →

स. ३९- "वे परमेश्वर तो घट-घट में व्यापक हैं?"- ऐसा जवाब किसने दिया?

स. ४०- "मूर्ति पिंगल श्याम" की कहाँ पधराई हुई थी ? वहाँ जाकर श्री देवचन्द्रजी क्या करते थे?

स. ४१- श्री देवचन्द्रजी जिस देश में रहते थे, उस देश में साधु-सन्तों का आना-जाना क्यों नहीं था?

ज. ४१- सद्गुरु जिस देश में अर्थात् पश्चिम स्थित मारवाड़ उमरकोट गाँव में रहते थे, वह स्थान बालुकामय था। वहाँ पानी का अकाल रहता था। पानी की कमी के कारण उस प्रान्त में साधु-सन्तों का →

→ अक्षरातीत परमधाम है तथा धरती के विभिन्न मत-मतान्तरों के लक्ष्य से आगे तथा ऊपर होने के कारण ही इस ब्रह्मधाम की चर्चा-कथा को *"ए चरचा सब ऊपर"* कहा है, जो यथातथ्य युक्तियुक्त तथा अविकल्प ही है।

ज. ३७- सद्गुरु स्वरूप के मन में ११ वर्ष की उम्र में ही *"मैं कौन कहां थे आइया"* - यह जानने की प्रबल उत्कण्ठा होने के कारण वे उक्त प्रश्न का जवाब घर में तथा उमरकोट गाँव के आस-पास के विभिन्न स्थानों में जाकर पूछने लगे।

→ अथवा यह जानने की इच्छा सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के मन में ११ साल की उम्र में उत्पन्न हुई। यह जानने की उग्र उत्कण्ठा के कारण ही वे अपने जन्मस्थान उमरकोट को छोड़कर उक्त तत्त्व की खोज में निकल पड़े तथा यही प्रश्न गाँव के विद्वान एवम् राह में मिलनेवाले विभिन्न साधु-सन्तों से पूछने लगे।

ज. ३९- "वे परमेश्वर तो घट-घट में व्यापक हैं "- ऐसा जवाब डिंभधारी संन्यासी मार्गवालों ने दिया ।

ज. ४०- *"मूर्ति पिंगल श्याम"* की सद्गुरु स्वरूप के गाँव उमरकोट में एक मंदिर में ही पधराई हुई थी। वहाँ जाकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी रोज कई घण्टों तक अर्थात् एक प्रहर तक परिक्रमा लगाया करते थे। पुनः भक्ति-भावपूर्ण साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया करते थे।

→ आना-जाना नहीं हो पाता था क्योंकि भजनीय साधु-सन्तों को अधिक मात्रा में पानी की आवश्यकता पड़ती है। स्नान तथा नित्य-कर्मादि के लिए उन्हें प्रचुर मात्रा में पानी की आवश्यकता पड़ती है। अतः पानी की कमी देखकर वहाँ साधु-सन्त आते-जाते नहीं थे।

स. ४२-"तहां जायके खोज करों" अर्थात् श्री देवचन्द्रजी कहाँ जाने का विचार करने लगे? विचार करने पर उन्हें कहाँ-किस घटना की याद आई ?

ज. ४२- *"तहां जायके खोज करों"* अर्थात् श्री देवचन्द्रजी कच्छ-भूजनगर जाकर परमतत्त्व की खोज करने का विचार करने लगे। खोज के प्रति चिंतित होने के कारण विचार करते-करते उन्हें →

स. ४३-"उन्हें देखे लगे आग" अर्थात् किन्हें देखते ही श्री देवचन्द्रजी स्वरूप को अग्नि की दाह-सा अनुभव होने लगता था? क्यों?

ज. ४३- *"उन्हें देखे लगे आग"* अर्थात् अपने माता-पिता कुँवरबाई और मतु महेता का ध्येय और उनकी बातें सुनते तथा उन्हें देखते ही, श्री देवचन्द्रजी को अग्नि की दाह-सा अनुभव होने लगता था। क्योंकि श्री देवचन्द्रजी के माता-पिता उन्हें अपने ही अर्थात् →

स. ४४-"ए फिराए ज्यों फिरे" - इस कथन का क्या तात्पर्य है?

ज. ४४- *"ए फिराए ज्यों फिरे"* - इस कथन का तात्पर्य है कि बचपन में पाँच साल की उम्र से ही सद्गुरु का चलन-व्यवहार निवृत्ति मार्ग-सा देखकर उनके माता-पिता चिन्तित थे। वे अपने पुत्र श्री देवचन्द्र को रात-दिन समझाया तथा रोका-टोका करते थे। ऐसे →

स. ४५-खाँड़ा विवाहने को कौन और कहाँ से जा रहा था तथा किससे?

स. ४६-बारात में कितनी असवारियाँ तथा बग्घी थी? बारात लेकर कच्छ जानेवाले वज़ीर का नाम क्या था?

→ बचपन में लगभग पाँच-सात साल की उम्र में पिताजी के साथ गए कच्छ-भूजनगर की घटना याद आई। बचपन में जब वे वहाँ गए थे, तो उन्होंने देखा था कि वहाँ तो बहुत से मंदिर थे तथा साधु-सन्तों की तो टोली-की-टोली फिरा करती थी। अतः वह दृश्य याद आने पर उन्हें लगा कि यदि वे कच्छ-भूजनगर गुरु हरिदासजी के पास पहुँच जाएँ, तो शायद कोई उनके प्रश्नों का जवाब देकर उनकी इच्छा पूरी कर देगा।

→ सांसारिक मार्ग पर आगे बढ़ाना चाहते थे और श्री देवचन्द्रजी आध्यात्मिक मार्ग की खोज करते-करते संसार से विरक्त होते हुए आगे बढ़ रहे थे। माता-पिता अपनी एक मात्र संतान देवचन्द्र को अपना-सा अर्थात् प्रवृत्ति मार्गी बनाना चाहते थे और सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी अपनी अन्तर इच्छा के कारण निवृत्ति पक्ष में आगे बढ़ रहे थे। अतः माता-पिता को देखते ही उन्हें आग-सा अनुभव होता था और साधु-सन्तों को देखते ही वे आत्म-शान्ति का अनुभव करने लगते थे।

→ अनेकों उपाय किया करते थे, जिससे कि वे प्रवृत्ति मार्ग पर चलकर उनके अनुकूल हो जाएँ। उनके कहने-समझाने पर जब श्री देवचन्द्रजी नहीं समझे, नहीं माने, तो उन्होंने अड़ोस-पड़ोस के लोगों को भी उन्हें समझाने को कहा। अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने भी मिलकर श्री देवचन्द्रजी का वैराग्य छुड़ाकर उनके मन को किसी भी तरह प्रवृत्ति (गृहस्थी) मार्ग में फिराने की कइयों कोशिशें की, किंतु सब कुछ भैंस को पुराण सुनाने जैसा ही हुआ।

ज. ४५- खाँड़ा विवाहने को उमरकोट गाँव का वज़ीर (मंत्री) जा रहा था। उमरकोट गाँव से राजा के लड़के के नाम की तलवार (खाँड़ा) लेकर उमरकोट गाँव का वज़ीर कच्छ देश के राजा की राजकुँवरी को लेने जा रहा था।

ज. ४६- बारात में दो सौ घोड़ों और ऊँट की असवारियों के साथ एक बग्घी थी। बारात लेकर कच्छ जानेवाले वज़ीर का नाम लालदास देसाई था।

स. ४७-जब बारात के साथ कच्छ जाने के विषय में सद्गुरु स्वरूप वज़ीर से मिले, तब उस विषय में वज़ीर ने क्या कहा?

ज. ४७- जब सद्गुरु स्वरूप ने वज़ीर के पास जाकर स्वयं के बारात के साथ कच्छ जाने की इच्छा प्रकट की, तब वज़ीर ने उनसे पूछा, →

स. ४८-वज़ीर ने जब बारात के साथ चलने के लिए मना कर दिया, तब श्री देवचन्द्रजी ने क्या सोचा और क्या किया?

ज. ४८- जब वज़ीर ने बारात के साथ चलने के लिए मना कर दिया, तब →

स. ४९-सफर के लिए सद्गुरु स्वरूप कौन-कौनसी सामग्री जुटाने लगे?

ज. ४९- सफर के लिए सद्गुरु स्वरूप ने थाली, कटोरा, छोटी कढ़ाई, →

स. ५०-कमर बाँधते-बाँधते कुछ देर हो गई अर्थात् क्या हुआ? स्पष्टतः समझाओ।

ज. ५०- कमर बाँधते-बाँधते कुछ देर हो गई अर्थात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने रास्ते की सामग्री तो तैयार कर ली, परन्तु बारात के साथ जाने के लिए घर से निकलें कैसे? क्योंकि राजा के पुत्र की बारात की →

स. ५१-"वे असवार ये प्यादे" - ऐसा कौन कह रहा है? पुनः "क्यों कर पहुँच्यो जाय" कहने का क्या मतलब है?

ज. ५१- *"वे असवार ये प्यादे"* - ऐसा बीतककार कह रहे हैं। *"क्यों* →

स. ५२-जिस रास्ते पर श्री देवचन्द्रजी दौड़ रहे थे, वह रास्ता कैसा था? स्पष्ट करो।

→ "तुम्हारे पास सवारी के लिए क्या है?" तब इस पर सद्गुरु स्वरूप ने जवाब दिया, "मैं पैदल ही चला आऊँगा। मुझे रास्ता मालूम नहीं है। अतः मार्ग के ज्ञान के लिए ही मैं आप लोगों के पदचिन्ह देखकर पीछे-पीछे चला आऊँगा।" तब वज़ीर ने श्री देवचन्द्रजी को नख से लेकर सिर तक देखा और उन्हें रोकते हुए कहा, "तुम हमारे साथ नहीं आ सकते।"

→ श्री देवचन्द्रजी ने सोचा कि मुझे तो मात्र रास्ता दिखानेवाले की ही जरूरत है। इन्हें क्यों कहूँ? वे बारात लेकर आगे-आगे जायेंगे। मैं उनके पीछे-पीछे चला जाऊँगा। यह विचार करते-करते घर लौट आए।

→ पानी पीने के लिए एक लोटा, पहनने के लिए एक-दो जोड़ी कपड़े और कुछ पैसे भी रख लिए। ये सारा सामान उन्होंने एक पोटली में बाँधकर पलंग के नीचे रख दिया और भोजन कर पलंग पर लेट गए।

→ धूमधाम को माता-पिता घर के आँगन से खड़े-खड़े देख रहे हैं। जहाँ तक उनकी नजर पहुँचती थी, वहाँ तक देखते रहे। जब बारात नजर से दूर हो गई, तब माता-पिता भी अपने-अपने काम-धंधे में लग गये। श्री देवचन्द्रजी भागने का मौका ही देख रहे थे। भागने का मौका देखते-देखते बारात दूर निकल गई। अब जिस दिशा की ओर बारात को जाते देखा था, उसी दिशा की ओर दम तोड़कर दौड़ने लगे। तेज गति से दौड़ते-दौड़ते पेट भी दुःखने लगा।

→ *कर पहुँच्यो जाय"* कहने का तात्पर्य है कि वे बाराती तो सवारी के साथ पहले ही निकल गये। वे बाराती असवारियों पर निकले हैं और श्री देवचन्द्रजी पैदल बिना सवारी के ही दौड़-धूप कर रहे हैं, तो वे बारात के पास कैसे पहुँच सकेंगे?

ज. ५२- जिस रास्ते पर श्री देवचन्द्रजी दौड़ रहे थे, वह रास्ता मरुभूमि-सा था। रेत के अतिरिक्त वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था। दूर- →

→दूर तक मात्र जंगल ही दिखाई पड़ते थे। उन घने जंगलों में से निशाचरों की आवाज भी सुनाई पड़ रही थी। ऐसे विकट रास्ते →

स. ५३-"है कौन जागा सरहद" का आशय स्पष्ट करो और समझाओ कि ऐसा किसे लगा ?

ज. ५३- *"है कौन जागा सरहद"* - ऐसा सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को लगा। इस कथन का आशय यह है कि सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी →

स. ५४-"ए चोर मोको मारेगा" - ऐसा कौन कह रहे हैं और क्यों?

ज. ५४- *"ए चोर मोको मारेगा"* - ऐसा सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी कह रहे हैं क्योंकि उक्त कथित विकट मरुभूमि सदृश रास्ते से, जिसके दोनों किनारे जंगल था, दौड़ते-दौड़ते अचानक श्री देवचन्द्रजी को जंगल के बीच से एक व्यक्ति निकलता दिखाई दिया। उसे देखते ही श्री →

स. ५५-"एक सख्स दिया दीदार" अतः दीदार देनेवाला व्यक्ति कौन था और कैसा दिखता था? उसे देखते ही सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी क्या सोचने लगे?

ज. ५५- *"एक सख्स दिया दीदार"* अतः दीदार देनेवाला व्यक्ति कोई अन्य नहीं बल्कि श्री राजजी के जोश का स्वरूप था, परन्तु →

स. ५६-"मुँह मूंदा दहसत से" किसका? उस दीदार देनेवाले व्यक्ति ने क्या कहा और क्या किया?

ज. ५६- उस दीदार देनेवाले व्यक्ति को देखते ही अत्यंत भयभीत हो जाने के कारण श्री देवचन्द्रजी को मुख से कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं पड़ी। इसीलिए कहा *"मुँह मूंदा दहसत से"*। अतः उस समय तो वे चुपचाप उस व्यक्ति को देखते ही रहे। कुछ देर बाद →

→ से श्री देवचन्द्रजी पेट पकड़कर बारात के पास पहुँचने के लिए गुजर रहे थे।

→ यह सोचते-विचारते हुए दौड़ रहे थे कि इस जगह से दूर-दूर तक आगे-पीछे जाने का मार्ग ही दिखाई नहीं देता। मार्ग है भी या नहीं? अथवा इस मरुभूमि की सीमा कहाँ तक है? बाल्यावस्था होने और अंधेरा छा जाने के कारण वे अत्यंत भयभीत होते हुए भी अन्धाधुन्ध दौड़ रहे थे।

→ देवचन्द्रजी ने मन में निश्चय कर लिया कि पहले तो मात्र सुना ही था कि यह रास्ता चोरों और लुटेरों का है तथा इस रास्ते से एक-दो व्यक्ति भी साथ में निकल नहीं सकते। अब देख भी लिया। अतः सामने जंगल से निकलनेवाला व्यक्ति चौकस ही चोर है और वह अवश्य ही अब मुझे मार डालेगा। इतना सोचते-सोचते आगे बढ़ ही रहे थे कि वह व्यक्ति सामने ही आ गया।

→ सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की दृष्टि में तो वह मात्र एक लुटेरा था। वह दिखने में अत्यंत ही भयावह था। उसका भेष सिपाही का-सा था। उसके कमर में एक छोटी तलवार-सी कटारी थी। हाथ में एक लंबी बरछी थी। मुँह पर मूँछ नहीं थी, परंतु दाढ़ी थी। ऐसा अद्भुत स्वरूप था। उसे देखते ही सद्गुरु स्वरूप सोचने लगे कि "यह सख्स चोर है और अवश्य ही मुझे मार डालेगा।"

→ उस व्यक्ति ने श्री देवचन्द्रजी से कहा - "ठहर! तू अपने कमर की तलवार निकालकर नीचे रख दे।" फिर जब उसने गठरी भी छोड़ देने को कहा, तब सद्गुरु को लगा कि अवश्यमेव यह कोई चोर-लुटेरा ही है। यह सोच ही रहे थे कि उसने अपने कमर की पिछौरी खोलकर नीचे बिछा दी और श्री देवचन्द्रजी को उस पर लेट जाने को कहा।

स. ५७-"तब जाना मुझे मारेगा" - ऐसा श्री देवचन्द्रजी को कब लगने लगा?

स. ५८-"बिछाय पिछौड़ी सुवाये" - अर्थात् जब दीदार देनेवाले व्यक्ति ने श्री देवचन्द्रजी को पिछौरी पर लेट जाने को कहा, तब श्री देवचन्द्रजी क्या करने लगे?

स. ५९-जब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी पिछौरी पर लेट गए, तब उन्हें लिटाकर उस व्यक्ति ने क्या किया ?

स. ६०-"एक साथल पर दे पाय" - इस कथन का अर्थ स्पष्ट करो। दीदार देनेवाले व्यक्ति ने ऐसा क्यों किया?

ज. ६०- *"एक साथल पर दे पाय"* कहने का तात्पर्य है कि दीदार →

स. ६१-"दरद भया कछू हलका" - ऐसा किसने, किससे पूछा?

स. ६२-उक्त प्रश्न पूछने पर श्री देवचन्द्रजी स्वरूप ने क्या जवाब दिया और वे क्या सोचने लगे? पुनः उस व्यक्ति ने क्या किया?

ज. ६२- दीदार देनेवाले पुरुष द्वारा उक्त प्रश्न पूछने पर सद्गुरु श्री →

स. ६३-पुनः दूसरी बार भी दर्द के विषय में दीदार देनेवाले पुरुष द्वारा उसी तरह पूछने पर श्री देवचन्द्रजी ने क्या कहा ?

ज. ५७- जब दीदार देनेवाले व्यक्ति ने अपने कमर की पिछौरी बिछाकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को उस पर लेट जाने को कहा, तब उन्हें लगने लगा *"तब जाना मुझे मारेगा"* अर्थात् वे काँपते हुए सोचने लगे कि यह अब अवश्य ही मुझे मार डालेगा।

ज. ५८- *"बिछाय पिछौड़ी सुवाये"* - अर्थात् जब उस दीदार देनेवाले व्यक्ति ने पिछौरी बिछाकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को उस पर लेट जाने को कहा, तब श्री देवचन्द्रजी कुछ भी नहीं बोले। कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं हुई। अतः अत्यंत भयभीत होकर काँपते हुए उस पिछौरी पर लेट गए।

ज. ५९- जब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी काँपते-काँपते उस पिछौरी पर चित होकर लेट गये, तब वह पुरुष हाथ की बरछी को धरती पर टेककर उसके सहारे खड़ा हो गया और उनकी जाँघ की जोड़ पर पाँव रखकर पूरे शरीर के बल द्वारा दबा दिया।

→ देनेवाले पुरुष ने अपना एक पैर श्री देवचन्द्रजी की जाँघ की जोड़ में रखकर अपने शरीर के पूरे बोझ द्वारा दबा दिया। ऐसा उन्होंने इसलिए किया क्योंकि श्री देवचन्द्रजी के पेट में असहनीय दर्द हो रहा था।

ज. ६१- *"दरद भया कछू हलका"* - ऐसा सिपाही भेष में दीदार देनेवाले पुरुष ने श्री देवचन्द्रजी से पूछा।

→ देवचन्द्रजी ने कहा कि दूसरी जाँघ के मूल में कुछ दर्द अभी शेष है और अपने मन में सोचने लगे कि यह पुरुष मुझे मारेगा तो नहीं, किंतु शायद घर ले जाकर कुछ काम करवायेगा। वे ऐसा सोच ही रहे थे कि उस पुरुष ने उनकी दूसरी जाँघ के मूल में चरण रखकर पूरे बल द्वारा दबा दिया।

ज. ६३- पुनः दूसरी बार भी दर्द के विषय में दीदार देनेवाले पुरुष द्वारा उसी तरह पूछने पर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने जवाब दिया कि पेट का वह असहनीय दर्द अब बिलकुल मिट गया है।

स. ६४-"ऐसा किया विचार" अर्थात् श्री देवचन्द्रजी स्वरूप ने क्या विचार किया?

ज. ६४- *"ऐसा किया विचार"* अर्थात् मारने से बचाने के बाद सद्गुरु →

स. ६५-"यह चोर किसी भी हालत में मुझे मारेगा तो नहीं" - ऐसी समझ श्री देवचन्द्रजी को कब आयी ?

ज. ६५- सिपाही भेष में दीदार देनेवाला पुरुष श्री देवचन्द्रजी की दृष्टि में तो चोर-लुटेरा ही था, परन्तु जब वह उनके पेट का दर्द मिटाकर →

स. ६६-वह दीदार देनेवाला पुरुष रास्ते में श्री देवचन्द्रजी से क्या-क्या पूछते-पूछते ले जा रहा था?

स. ६७-"फेर खबर देश की" अर्थात् तत्पश्चात् दीदार देनेवाले पुरुष ने किस विषय की और क्या बातें पूछीं?

ज. ६७- *"फेर खबर देश की"* अर्थात् घर-परिवार विषयक बातें पूछने के पश्चात् दीदार देनेवाले पुरुष ने श्री देवचन्द्रजी से तत्कालीन →

स. ६८-सिपाही भेषवाले व्यक्ति द्वारा घर से भागकर निकलने का कारण पूछने पर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने क्या कहा?

स. ६९-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के विचार जानने के पश्चात् सिपाही भेषवाले पुरुष ने उन्हें समझाते हुए क्या कहा?

ज. ६९- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के विचार जानने के पश्चात् सिपाही भेषवाले पुरुष ने उनसे कहा, "देखो! तुम्हारा विचार तो अच्छा है। परन्तु →

→ श्री देवचन्द्रजी ने दीदार देनेवाले पुरुष के विषय में ऐसा विचार किया कि इसने मुझे मरने से तो बचाया। शायद अब यह मुझे अपने अधीन कैद में रखकर मुझसे दास (नौकर) की भाँति काम करवाएगा और खाएगा।

→ उनकी गठरी स्वयं अपनी पीठ पर लादकर तथा अपनी पिछौरी श्री देवचन्द्रजी के कमर में बाँधकर उन्हें आगे लगाकर चलने लगा, तब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की समझ में आ गया कि *"यह चोर किसी भी हालत में मुझे मारेगा तो नहीं।"*

ज. ६६- वह दीदार देनेवाला पुरुष रास्ते में श्री देवचन्द्रजी से विभिन्न लौकिक बातें पूछते-पूछते ले जा रहा था । जैसे - "तुम्हारे माता-पिता का नाम क्या है? तुम कितने भाई-बहन हो? तुम्हारे पिताजी क्या काम-धंधा करते हैं? अड़ोस-पड़ोस के लोग कैसे हैं? इत्यादि।"

→ राजा तथा देशकाल विषयक वार्तालाप किया। जैसे-"तुम्हारे देश मारवाड़ के राजा कौन हैं और कैसे हैं? वे प्रजा के अनुकूल अर्थात् उन्हें प्रिय हैं अथवा प्रतिकूल हैं ? देश की प्रजा राजा को अच्छा कहती है या बुरा? या क्या करें, राजा बड़ा निर्दयी-कठोर है! ऐसा तो नहीं कहती न?" ऐसी बातें पूछते-पूछते दीदार देनेवाला पुरुष सद्गुरु स्वरूप को रास्ता पार कराते जा रहा था।

ज. ६८- सिपाही भेषवाले व्यक्ति द्वारा घर से भागकर निकलने का कारण पूछने पर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने जवाब दिया, "मुझे मेरे प्रश्नों का जवाब देनेवाले गुरु की तलाश है। मैं गुरु की खोज करने हेतु ही कच्छ-भूजनगर जा रहा था।"

→ यह संसार तो गुरु का ही बाजार है। जैसे -

मंत्र गुरु विद्या गुरु, माता पिता गुरु चारि।
कुल पूज्य प्रोहित जेष्ठ बंधु, षट् गुरु ये निरधारि।।

अर्थात् जन्म से लेकर वेद आदि का मंत्र सुनानेवाले गुरु, भौतिक मार्ग की शिक्षा संबंधी विद्या देनेवाले गुरु, जन्म देनेवाले माता-→

→पिता, पुनः ज्येष्ठ भाई एवम् जनेऊ आदि कर्म करानेवाले कुल के पूज्य-पुरोहित-इन छः गुरुओं को वेदों द्वारा मान्यता प्राप्त है। अपितु ये छः गुरु तो घर-घर में होते हैं। परन्तु- →

स. ७०-"उस जगह पर पहुँचकर खड़े रहे" अर्थात् किस जगह पर तथा क्यों?

ज. ७०- *"उस जगह पर पहुँचकर खड़े रहे"* अर्थात् दीदार देनेवाले →

स. ७१-श्री देवचन्द्रजी स्वरूप को बारात के पास ला खड़ा करने के पश्चात् उस चोर-से दिखनेवाले पुरुष ने क्या किया?

स. ७२-जब उस दीदार देनेवाले पुरुष ने "देख ए तेरो साथ"-ऐसा कहा, तब सद्गुरु स्वरूप क्या करने लगे और वह पुरुष कहाँ चला गया?

ज. ७२- उक्त प्रकार अपनी पिछौरी सद्गुरु स्वरूप से वापस लेने और उनकी गठरी तथा तलवार उन्हें लौटाने के पश्चात् दीदार देनेवाले पुरुष ने बारात की ओर अंगुली से इशारा करते हुए श्री देवचन्द्रजी से कहा कि *"देख ए तेरो साथ"* अर्थात् देख! तेरे बारात के साथी यहाँ हैं। सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी अत्यंत उत्सुकतापूर्वक हर्षित →

स. ७३-"किया विलाप याद कर तेह" अर्थात् किस बात को याद करते-करते श्री देवचन्द्रजी विलाप करने लगे?

ज. ७३- *"किया विलाप याद कर तेह"* अर्थात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी पूर्वघटित बातों को याद करने लगे कि मैं कैसी आपत्ति में फँस →

→ *"सतगुरु जु मत पद भिन्न तिन तें"*
अर्थात् सत्-आत्मा की पहचान कराकर उसे उसके नित्य अविनाशी धाम में पहुँचने का ज्ञान देनेवाले सतगुरु इन छः गुरुओं से भिन्न ही हैं। अतः ऐसे गुरु को ढूँढ़कर गुरु बनाना।

→ पुरुष सहित श्री देवचन्द्रजी उस जगह पर आकर खड़े हुए, जहाँ बारात के लोग असवारी पर सवार होकर रात भर चलकर पहुँचे थे। बाराती लोग असवारियाँ रोककर आराम करने के लिए सामान उतार ही रहे थे कि दीदार देनेवाले पुरुष ने श्री देवचन्द्रजी को उनके पास ला खड़ा कर दिया।

ज. ७9- सद्गुरु स्वरूप को बारात के पास ला खड़ा करने के पश्चात् चोर-से दिखनेवाले पुरुष ने अपनी वह पिछौरी जो उसने सद्गुरु स्वरूप की कमर में बँधवायी थी, माँग ली और सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की गठरी और तलवार उन्हें पुनः लौटा दी।

→ होकर उनकी अंगुली द्वारा दिखाई गई दिशा में स्थित बारात के साथियों को देखने लगे और मन ही मन विचार करने लगे, "अरे! मैं तो बारात के पास आ पहुँचा?" ऐसा विचार करते-करते जब श्री देवचन्द्रजी ने पलटकर उस पुरुष की ओर देखा, तो पाया कि वह पुरुष तो अदृश्य हो चुका था। सद्गुरु स्वरूप विचार में पड़ गए कि अभी-अभी तो वह पुरुष यहीं था। इतनी ही देर में कहाँ चला गया? दूर-दूर तक नजर घुमाई, किंतु कहीं दिखाई नहीं दिया। तब उन्हें खयाल आया कि इंसान इतनी जल्दी तो कहीं नहीं जा सकता। ये तो वही स्वरूप थे, जिन्हें पाने के लिए मैं खोज करते-करते यहाँ आ पहुँचा।

→ गया था। घर से निकलते समय न रास्ता सूझ रहा था और न कोई इंसान ही दिखाई देता था, जिससे रास्ते के विषय में कुछ पूछा जा सके। ऐसी विकट परिस्थिति से उबारकर मुझे रास्ता पार करवाकर बारात के पास पहुँचानेवाले दूसरे कौन हो सकते हैं? अस्तु मैं जिन धनी (भरतार) को ढूँढ़ने निकला हूँ, वे स्वयं ही →

→ मेरे पास आकर मुझे आपत्ति से निकालकर चले गए। अतः उनकी दृष्टि मुझ पर निरन्तर है। अब मैं उन्हें प्राप्त करके ही रहूँगा। इस →

स. ७४- विलाप करने के पश्चात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने क्या विचार किया और क्या सोचकर दृढ़तापूर्वक कमर बाँधकर तैयार हो गए?

ज. ७४- विलाप करने के पश्चात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी विचार करने लगे कि अब तो यदि मैं शेर के मुँह में भी पड़ जाऊँ, तो भी वे परमात्मा →

स. ७५- इस तरह से हिम्मत करने के बाद श्री देवचन्द्रजी ने क्या किया?

स. ७६- "आवत टोके तिन" अर्थात् किसे, किसने तथा क्यों टोका?

ज. ७६- *"आवत टोके तिन"* अर्थात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी बारात की जमात में शामिल होने जा ही रहे थे कि इतने में बारातियों में →

स. ७७- "तुम क्यों आये हमको मिले" - ऐसा किसने, किससे तथा क्यों पूछा?

ज. ७७- *"तुम क्यों आये हमको मिले"* - ऐसा बारात ले जानेवाले वज़ीर लालदास देसाई ने श्री देवचन्द्रजी से पूछा। वह वज़ीर →

स. ७८- उक्त प्रश्न पूछने पर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने क्या जवाब दिया?

ज. ७८- बारात के मुखिया वज़ीर लालदास देसाई द्वारा आश्चर्यचकित होकर →

→ तरह रोते-रोते कुछ समय तक पश्चाताप किया, किंतु पुनः हिम्मत बाँध ली।

→ मुझे बचाने अवश्य आएँगे। अब तक तो मैं उनके विषय में अन्दाज-अटकलों द्वारा खोज करते आया था, किंतु अब प्रत्यक्ष हो गया कि मैं भले ही उन्हें नहीं देख पाता, परंतु वे सदैव मुझे अपनी नजर तले रखे हुए हैं। परमेश्वर-परमात्मा अर्थात् अपनी आत्मा के पति की खोज के विषय में मुझे चार आना सफलता प्राप्त हुई। अब मैं उन्हें अवश्यमेव प्राप्त करके ही छोड़ूँगा।

ज. ७५- उक्त प्रकार से विचार-विवेकवत् निर्णय करने के पश्चात् श्री देवचन्द्रजी ने दूसरी बार अपने आत्मा के धनी परमात्मा को प्राप्त करने हेतु कमर बाँध ली और दृढ़ संकल्प कर बारातियों से जा मिले।

→ से किसी ने श्री देवचन्द्रजी से ऊँची आवाज में पूछा, "यह कौन हमारी जमात में शामिल होने जा रहा है ?" क्योंकि सवेरा होने में कुछ समय अभी बाकी था। अतः सामने खड़ा आदमी स्पष्टतः पहचान में नहीं आ सकता था। इस पर श्री देवचन्द्रजी ने जवाब दिया, "मैं देवचन्द्र हूँ।" तब वह व्यक्ति सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को वज़ीर लालदास देसाई के पास ले गया।

→ उन्हें देखते ही पहचान गया और उन्हें वहाँ खड़े देखकर आश्चर्यचकित रह गया क्योंकि वह सोचने लगा कि असवारी न होने पर भी यह देवचन्द्र हम असवारीयुक्त बारातियों के साथ-साथ ही कैसे आ पहुँचा?

→ उक्त प्रश्न पूछने पर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी साधारण तरीके से जवाब देते हुए बोले कि आप लोगों के पदचिन्हों को देखकर चलते-चलते ही यहाँ आ पहुँचा हूँ। यह सुनकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की हिम्मत को देखकर वज़ीर अत्यंत आश्चर्यचकित रह गया।

स. ७९-जब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी बारातियों के पास पहुँचे, उस समय बाराती क्या कर रहे थे?

ज. ७९- जब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी बारातियों के पास पहुँचे, उस समय उन बारातियों में से कितने ही लोग असवारियों की पीठ पर से →

स. ८०-जब उस कायस्थ मुखिया ने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को रसोई का आग्रह किया, तब श्री देवचन्द्रजी स्वरूप ने उन्हें क्या जवाब दिया?

स. ८१-"हमारे में यह रिवाज़ नहीं है" अर्थात् कायस्थ मुखिया ने यह बात कब और क्यों कही?

ज. ८१- सद्गुरु स्वरूप के उक्त वचन सुनकर वह कायस्थ मुखिया अत्यंत दुःखी हुआ। तब वह सद्गुरु स्वरूप को पुनः आग्रह करते हुए बोला, "हमारे में ऐसा रिवाज़ नहीं है कि बारात में आए हुए बाराती →

स. ८२-कायस्थ मुखिया के आग्रह करने पर सद्गुरु स्वरूप ने उनसे सीधा लेकर क्या किया और कैसा नियम बाँधकर आगे बढ़ने लगे?

ज. ८२- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने कायस्थ मुखिया के आग्रह करने पर →

स. ८३-भोजन तथा आराम करने के पश्चात् जब सभी बाराती पुनः आगे चलने के लिए तैयार हुए, तब बारात के अग्रगण्य उस कायस्थ वज़ीर को क्या याद आया?

स. ८४-तत्पश्चात् उस कायस्थ वज़ीर ने अपने बारातियों से क्या पूछा तथा कितने सवारीयुक्त असवार पर सद्गुरु स्वरूप को शामिल किया एवम् वह असवारी कौनसी थी?

→ सामान आदि उतार रहे थे व कितने चाय-पानी के प्रबंध के लिए आग जलाने की व्यवस्था कर रहे थे। अभी बारातियों को वहाँ पहुँचे पाँच मिनट भी नहीं हुए थे कि सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी भी वहाँ पहुँच गए।

ज. ८०- जब उस कायस्थ मुखिया ने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को रसोई का आग्रह किया, तब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने उनसे कहा कि मैं अपने हाथों से बनी रसोई ही लेता हूँ और रसोई तैयार करने के लिए सीधा-सामान भी मैं अपने साथ ही ले आया हूँ।

→ अपनी सीधा-सामग्री द्वारा स्वयं भोजन तैयार करें। उसमें भी आप और हम तो एक ही जाति के हैं। हम भी कायस्थ हैं और आप भी। अतः आपको हमारे भण्डार से सीधा तो लेना ही पड़ेगा।" पहले बारात के साथ कच्छ आने के लिए सद्गुरु को इसी वज़ीर ने मना कर दिया था, इसीलिए वह इतना दिलगीर होकर सद्गुरु स्वरूप से आग्रह कर रहा था।

→ उनके भण्डार से सीधा-सामान ले लिया और स्वयं अपने ही हाथों से भोजन-प्रसाद तैयार किया। तत्पश्चात् जिस स्वरूप का उन्हें उमरकोट से कच्छ आते रास्ते में दर्शन हुआ था, उसी सिपाही भेषवाले स्वरूप को भोजन-प्रसाद से भरा थाल अर्पण कर उस थाल का प्रसाद नित्य प्रति भोजन के रूप में लेने लगे और यही नियम बाँधकर निरंतर आगे बढ़ने लगे।

ज. ८३- भोजन आदि लेने के पश्चात् कुछ समय आराम कर जब सारे बाराती आगे चलने की तैयारी करने लगे, तब उस कायस्थ वज़ीर को याद आया कि अब बिना सवारीवाले श्री देवचन्द्रजी को भी हमारे जमात की किसी असवारी में शामिल करना होगा।

ज. ८४- तत्पश्चात् उस कायस्थ वज़ीर ने अपने प्रत्येक बारातियों से पूछा कि अरे! किस-किस के ऊँट पर कितने-कितने जन सवार हैं? इस तरह सबसे पूछते-पूछते उन लोगों में से एक ने उत्तर दिया →

कि हमारे असवारी पर चार जन हैं। तब उस कायस्थ मुखिया ने उनसे कहा कि पाँचवें सवार के रूप में इन्हें भी अपने असवारी

स. ८५-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी बारातियों के साथ कितने दिन में कच्छ पहुँचे?

स. ८६-कहाँ पहुँचने पर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी बारात के मुखिया से विदा होकर अलग हो गए और खोज करने लगे ? इस वक्त उनकी उम्र कितनी है?

ज. ८६- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी जब बारात के साथ पाँचवें दिन कच्छ

❖ कच्छ में खोज ❖

स. १-कच्छ देश की सीमा में पहुँचते ही श्री देवचन्द्रजी ने वज़ीर से विदाई लेकर "जिन सबको पैदा किया"-"वह कहाँ है परमेश्वर ?" - इस तत्त्व की खोज सर्वप्रथम कहाँ से शुरू की?

ज. १- कच्छ प्रदेश की सीमा में पहुँचते ही सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी बारात के मुखिया वज़ीर लालदास देसाई से विदा लेकर बारात से अलग

स. २-वे कौन थे? क्या करते थे तथा उनके पास सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी कितने समय तक रहे?

ज. २- वे देवालय के महन्त थे तथा मूर्तिपूजक कर्मकाण्डी ब्राह्मण थे। उनके जीवन में विभिन्न प्रकार के देवियों के प्रतिमारूपी परमेश्वर

स. ३-उस देवी के देवालय में सत्संग करने के पश्चात् सद्गुरु स्वरूप कहाँ गए?

→ पर शामिल कर लो। इस तरह सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ऊँट पर सवार होकर बारात के साथ चल पड़े।

ज. ८५- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी बारातियों के साथ चौथे दिन कच्छ पहुँचे।

→ प्रदेश की सीमा में पहुँच गये, तब उन्होंने कायस्थ मुखिया वज़ीर लालदास देसाई के पास जाकर कच्छ तक का रास्ता दिखाने हेतु आभार प्रकट किया और अपने कार्य हेतु विदा होने की विनती की। बारात से विदा होकर वे अपने कार्य में लग गए। इस वक्त उनकी उम्र सत्रह साल है।

-(प्रकरण २, सवाल-जवाब नं.८६, कुल सं. ३८+८६=१२४)।

❖ कच्छ में खोज ❖

→ हो गए और अपने अनूठे प्रश्न *"जिन सबको पैदा किया"- "वह कहाँ है परमेश्वर ?"* का जवाब प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम कच्छ देश के एक देवालय में पहुँचे। वहाँ के विद्वान महन्त के आगे अपना वह प्रश्न रख दिया। तब उसने अपने मंदिर में पधरायी हुई मूर्ति की ओर इशारा करते हुए कहा कि हम तो इन्हें ही परमात्मा - परमेश्वर मानते हैं। अतः उस तत्त्व को गहनता से जानने के लिए सद्गुरु स्वरूप उनके साथ सत्संग करने लगे।

→ के सिवाय अन्य कोई मुक्तिदायिनी नहीं था। उनका कहना था कि यदि आपको मुक्ति की चाहना है, तो इन्हें पूजो। इस देवालय में श्री देवचन्द्रजी आठ महीने दस दिन रहे। वहाँ कुछ प्राप्त न होने पर वे उन्हें छोड़कर आगे बढ़ गए।

ज. ३- उक्त प्रकार प्रश्नादि सत्संग करने पर जब देवालय के महंत द्वारा कोई उत्तर नहीं मिला, तब अशान्ति महसूस करने के कारण सद्गुरु →

→स्वरूप देवालय का सत्संग छोड़कर आगे बढ़े। तत्पश्चात् उनके सुनने में आया कि गाँव भर में प्रसिद्ध एक डिम्भधारी (आडम्बरी) संन्यासी का उस क्षेत्र में बड़ा सम्मान किया जाता है। वे दत्तात्रय के धर्म का पालन करते थे। उनका कहना था कि वे परमात्मा के बारे में सब कुछ जानते हैं। अतः परमतत्त्व को जानने की जिज्ञासा से →

स. ४-बाह्याभिचारी आडम्बरयुक्त संन्यासी के साथ सत्संग करने के पश्चात् श्री देवचन्द्रजी ब्रह्म तत्त्व की खोज करते-करते कहाँ पहुँचे?

ज. ४- बाह्याभिचारी आडम्बरयुक्त डिम्भधारी संन्यासी के साथ सत्संग →

स. ५-वे कनफटे योगी कैसे थे ? उनके साथ सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने कितने समय तक सत्संग किया और क्या पाया?

ज. ५- वे कनफटे योगी तो राजगुरु थे। सारे कच्छ देश सहित वहाँ का राजा भी उन्हें अपना गुरु मानता था। अतः सद्गुरु स्वरूप उनके साथ सत्संग करने चले गए। उनके आगे भी सद्गुरु स्वरूप ने यही →

स. ६-वैरागी कापड़ी साधुओं के साथ सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी कितने समय तक सत्संग-खोज करते रहे ? ये साधु कैसे थे?

ज. ६- राजगुरु कनफटे योगी से विदा लेकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी वैरागी कापड़ी साधुओं के पास पहुँच गए। वहाँ भी उन्होंने वही प्रश्न रखा →

स. ७-किससे सत्संग करने के पश्चात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी मसजिद में मुल्ला से सत्संग करने पहुँचे?

ज. ७- वैरागी कापड़ी साधुओं की विचित्र लीला देखते हुए, इनमें उस →

→ सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी उस संन्यासी से दीक्षा-मंत्र लेकर उसके साथ सत्संग करने लगे। यहाँ उन्होंने अष्टांग योग भक्ति की साधना भी की। यहाँ सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी तीन महीने रहे। तीन महीने तक सत्संग करने के पश्चात् भी जब उन्हें आत्म-संतोष नहीं हुआ, तब उनसे आशीर्वाद लेकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी आगे बढ़े।

→ करके आशीर्वाद लेने के पश्चात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी जब आगे बढ़े, तो गाँव में ही उन्हें एक बात सुनने को मिली कि यह डिम्भधारी संन्यासी तो मात्र गाँव प्रसिद्ध है। किंतु गाँव में ही एक कनफटे योगी रहते हैं, जो होनहार राजगुरु हैं। यह बात सुनकर श्री देवचन्द्रजी उन राजगुरु कनफटे योगी के पास यह सोचकर पहुँच गए कि इनके पास शायद परमतत्त्व विषय कुछ ज्ञान होगा।

→ प्रश्न रखा कि *"जिन सबको पैदा किया"-"वह कहाँ है परमेश्वर?"* इस तरह राजगुरु कनफटे योगी के साथ सद्गुरु स्वरूप ने चार महीने सत्संग किया और पाया कि ज्ञान के विषय में तो इनके पास डिंभधारी संन्यासी जितना भी नहीं है। अतः चार महीने उनके साथ सत्संग करने के बाद सद्गुरु स्वरूप उन्हें छोड़कर और आगे निकल पड़े ।

→ और सत्संग करने लगे। कुछ दिनों में सद्गुरु स्वरूप ने जाना कि इन वैरागी कापड़ी साधुओं की दिन भर की लीला तो एक है, किंतु रात की लीला तो दूसरी ही है। ये साधु तो स्वतः ही इन्द्रियों के प्रति मोहित थे, तो वे इन्द्रियों को अपने वश में कैसे कर सकते थे। अतः सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी इन साधुओं के पास मात्र पाँच दिन रहे और इनकी लीला की जानकारी पाते ही वहाँ से निकल पड़े ।

→ परमतत्त्व विषय कुछ नहीं है, ऐसा सोचकर उस जगह को छोड़कर सद्गुरु स्वरूप आगे बढ़ ही रहे थे कि रास्ते में उनकी नजर पड़ी, एक देवालय की ओर, जहाँ बहुत ही भीड़ लगी हुई थी। वहाँ जाकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने देखा और पूछा कि यह किसका मंदिर है? →

→तब उन्हें उत्तर मिला - "यह देवालय हिंगलाज देवी का है। संसार में मानवात्माओं को चार पदार्थों द्वारा रिद्धि-सिद्धिरूपी मुक्ति देनेवाली यही एक मात्र देवी हैं। यदि तुम्हें मुक्ति चाहिए, तो इनको →

स. ८-मसजिद में जाकर श्री देवचन्द्रजी ने मुल्ला के साथ कितने समय तक सत्संग किया और क्या प्राप्त किया?

ज. ८- हिंगलाज देवी के देवालय से निकलकर सद्गुरु आगे बढ़ ही रहे थे, कि उन्हें कान में "ला इलाह इल्लुल्लाह" इस तरह मुसलमानों के →

स. ९-अनेक भेषों में सुसज्जित ब्राह्मणों के "वेदभवन" में पहुँचकर सद्गुरु स्वरूप ने क्या सोचा और कितने समय तक वेदों का अध्ययन किया?

ज. ९- अनेक भेषों में सुसज्जित ब्राह्मणों के "वेदभवन" में पहुँचकर सद्गुरु स्वरूप को लगा कि जितने भी धर्म एवम् संप्रदाय हैं, वे सब अपने- →

स. १०- अभी इस वक्त सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को बारात से विदा होकर खोज के लिए निकले कितने साल हो चुके हैं?

स. ११- कच्छ देश में खोज करते-करते अंत में "वेदभवन" से वेद अध्ययन करके निकलने के पश्चात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को क्या होने लगा? पुनः वे राजधानी भूजनगर कब आ पहुँचे? इस समय उनकी उम्र कितनी है?

ज. ११- उक्त प्रकार सात-सात स्थानों में जाकर उन परमेश्वर-परमात्मा →

स. १२- कच्छ देश की राजधानी भूजनगर में कौन रहते थे? वे किस धर्म के और कैसे अनुयायी थे?

→ भजो।" तब इस देवी के देवालय में सद्गुरु स्वरूप ने पन्द्रह दिनों तक सत्संग किया। तत्पश्चात् वे मसजिद में मुल्ला के साथ सत्संग करने लगे।

→ कलमारूपी बाँग की आवाज सुनाई दी। तब "इनके पास क्या है?"-यह जानने के लिए सद्गुरु स्वरूप मसजिद में मुल्ला से सोहबत (सत्संग) करने पहुँच गए। उनके साथ एक महीने तक सत्संग करने पर भी कुछ प्राप्त न होने पर उनका चित्त और उदास हो गया और वे उस परमतत्त्व की खोज के लिए और आगे बढ़ने लगे।

→ अपने धर्म को वेदों के प्रमाणों की साक्षी देकर श्रेष्ठ बताते हैं, तो क्यों न जाना जाय कि वेदों में क्या है? अतः उन्होंने सोचा कि क्यों न मैं भी वेद अध्ययन करूँ? यह निश्चित करके वे वेदों के अध्ययन द्वारा परमात्मा तत्त्व की खोज में जुट गए। इस प्रकार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने "वेदभवन" में रहकर करीब दो साल सात महीने तक वेद-शास्त्र, पुराणों का अध्ययन किया।

ज. १०-अभी इस वक्त सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को बारात से विदा लेकर खोज के लिए निकले पूरे चार साल हो चुके हैं।

→ अथवा ब्रह्म तत्त्व विषयक विभिन्न मत-मतान्तरों की मान्यताओं को सुनकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की आत्मा में शान्ति के बदले और क्रान्ति मच गई। तब उन्हें चार साल बाद कच्छ देश की राजधानी भूजनगर में विराजमान गुरु श्री हरिदासजी की याद आई, जिनके पास वे बचपन में एक बार पिताजी के साथ गए थे। इस समय उनकी उम्र इक्कीस वर्ष है।

ज. १२-कच्छ देश की राजधानी भूजनगर में गुरु श्री हरिदासजी रहते थे। वे गृहस्थी थे तथा राधावल्लभ सम्प्रदाय के सच्चे अनुयायी थे। वे बड़े विद्वान भी थे तथा आतिथ्य सत्कार में हमेशा तत्पर रहते थे।

स. १३-गुरु हरिदासजी किस भाव से तथा किस मूर्ति की सेवा करते थे?

स. १४-उनमें बाँकेबिहारी और बालमुकुन्द की मूर्ति की सेवा को लेकर कैसा भाव और लगन थी?

ज. १४- गुरु हरिदासजी में अपने इष्ट की मूर्तियों-बाँकेबिहारी और बालमुकुन्द के प्रति पत्थर के मूर्ति की भावना नहीं थी। वे तो →

स. १५-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी गुरु हरिदासजी से कब और कैसे मिले?

ज. १५- सद्गुरु स्वरूप की कच्छ की चार साल की खोज समाप्त होने के बाद भी उनके दिल-दिमाग में शांति के बदले क्रांति ही उमड़ रही थी। अतः अपने क्रान्तिमय दिल-दिमाग सहित सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी भूजनगर स्थित गुरु हरिदासजी के घर आ पहुँचे और ये दोनों चन्द्र-चकोर की तरह एक-दूसरे को देखते रह गए। तत्पश्चात् →

स. १६-गुरु हरिदासजी सचवटीपूर्वक श्री बाँकेबिहारी और बालमुकुन्दजी की सेवा ऋतु मुताबिक किस तरह करते थे?

ज. १६- गुरु हरिदासजी श्री बाँकेबिहारी और बालमुकुन्दजी में मूर्ति का भाव नहीं रखते थे। वे तो इन स्वरूपों को साक्षात् सशरीर चेतनयुक्त मानकर अपने आत्मकल्याणार्थ सखी भाव से उनकी सेवा करते थे। तीन साल के बच्चे को किस समय में क्या चाहिए, इसका ध्यान जिस प्रकार एक माँ रखती है, उसी प्रकार दोनों स्वरूपों को तीन साल के बच्चे के स्थान में रखकर स्वयं माँ के →

स. १७-"यह सचवटी देख के" अर्थात् किसकी सचवटी, किसने देखी और क्या विचार किया?

ज. १३- गुरु हरिदासजी सख्री भाव से कृष्ण के बाल और किशोर स्वरूप (जो बाँकेबिहारी नाम से लोकप्रिय हैं) की सेवा करते थे।

→ नित्य-निरन्तर उन मूर्तियों की साक्षात् अपना-सा चेतन स्वरूप जानकर सच्चे आत्मीय भाव और लगन के साथ सेवा करते थे। शरीर को भले ही किसी भी तरह की कसौटी क्यों न हो, किंतु वे सेवा-पूजा बहुत ही पवित्रता से किया करते थे।

→ गुरु हरिदासजी ने श्री देवचन्द्रजी से पूछा, *"तुम इतने समय तक कहाँ भटक रहे थे?* बारात के साथ घर से भागे तुम्हें कितने साल हो चुके हैं ? क्या तुमने घर में कोई खबर दी अथवा चिट्ठी लिखी ?" तब सद्गुरु ने कहा, "घर की कभी मुझे याद आती, तब न मैं घर पर खबर देता अथवा चिट्ठी लिखता। मुझे तो कभी उनकी याद ही नहीं आई। मुझसे बड़ी भूल हुई।" तब तुरन्त हरिदासजी ने उनसे चिट्ठी लिखवाकर उमरकोट स्थित उनके माता-पिता कुँवरबाई और मतु महेता के पास भिजवा दी। अब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी हरिदासजी के साथ सत्संग करने लगे।

→ स्थान में होकर सेवा करते थे। पुनः जब गर्मी की ऋतु हो, तो हर प्रकार से ठंडक पहुँचाना और जाड़े की ऋतु में वस्त्र, कपड़ा, जल आदि गरम करके गरमी पहुँचाने का इलाज करते थे। ऋतु पलटने के पहले ही अनुमान लगाकर सावचेत होकर बड़े प्रेम से अब आनेवाली ऋतु में क्या-क्या वस्तुएँ लगेंगी, यह ध्यान में लेकर पहले से ही मिलाकर रखने की सेवा तत्पर होकर करते थे। शारीरिक पवित्रता के लिए भले दिन में दो-चार बार नहाना पड़े, किंतु नियम भंग होने नहीं देते थे।

ज. १७- गुरु हरिदासजी की बालमुकुन्द और बाँकेबिहारी की मूर्ति की सेवा देखकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को मन में अत्यंत शान्ति महसूस हुई और वे सोचने लगे कि गुरुजी जिस भावना तथा →

→ श्रद्धा-विश्वास से अत्यंत लगनपूर्वक ऐसी सच्ची सेवा कर रहे हैं, ऐसी सेवा करनेवाले तो दुनिया में लाखों-करोड़ों में से एकाध →

स. १८-"इनकी मैं सेवा करूं" - ऐसा किसने और किसकी सेवा करने के प्रति सोचा तथा क्यों? स्पष्ट करो।

ज. १८- *"इनकी मैं सेवा करूं"* - ऐसा सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने गुरु हरिदासजी की सेवा करने के प्रति सोचा क्योंकि गुरु हरिदासजी →

स. १९-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी तो यहाँ गुरु हरिदासजी की सेवा में डट गए, परंतु वहाँ मतु महेता की क्या दशा है?

ज. १९- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी तो यहाँ ब्रह्म तत्त्व की प्राप्ति हेतु गुरु हरिदासजी की सेवा में डट गए, किंतु वहाँ उमरकोट में जब श्री देवचन्द्रजी की हस्ताक्षरयुक्त चिट्ठी पहुँची, तब पिता मतु महेता ने कुँवरबाई को पहले बोले हुए झूठ का खुलासा करते हुए बताया →

स. २०-"बेजार हुए तब" अर्थात् कौन बेजार हुए और क्यों?

ज. २०- *"बेजार हुए तब"* अर्थात् पिता मतु महेता अपने पुत्र सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को घर ले जाने के लिए उमरकोट से कच्छ-भूजनगर गुरु हरिदासजी के पास दौड़कर पहुँच गए। परन्तु देवचन्द्र →

स. २१-जब मतु महेता श्री देवचन्द्रजी के प्रति बेजार होकर गुरु हरिदासजी की शरण में आए, तब गुरु हरिदासजी ने उन्हें क्या सलाह दी?

ज. २१- जब पिता मतु महेता श्री देवचन्द्रजी को समझाकर अपना बनाने की कोशिश करने लगे, किंतु वे हाथ ही नहीं आए, तब बेजार होकर पिता मतु महेता गुरु हरिदासजी के पास आए और चरण पकड़कर रोते-रोते उन्होंने अपने दिल का दर्द गुरुजी के आगे →

→ यदा-कदा ही मिलते हैं। अतः गुरु हरिदासजी की मूर्ति सेवा की ऐसी सचवटी देखकर सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी मन ही मन गुरु हरिदासजी की सेवा करने का विचार करने लगे।

→ की सेवा की सचवटी देखकर सद्गुरु स्वरूप को यह विश्वास हो गया था कि उन्हें आत्मा-परमात्मा संबंधी जितना भी ज्ञान-समझ, दर्शन-पर्शन मिलना है, वह सब इन्हीं से मिलना है। अतः इनकी सेवा मुझे जरूर करनी है।

→ -"वास्तव में श्री देवचन्द्र तो अब चार साल बाद गुरु हरिदासजी के यहाँ आ पहुँचे हैं। अतः मैं उन्हें घर वापस ले आने कच्छ-भूजनगर जा रहा हूँ।" ऐसा कहकर पिता मतु महेता श्री देवचन्द्र को घर वापस ले आने के लिए अत्यंत हर्ष-आनन्दपूर्वक उमरकोट से कच्छ-भूजनगर गुरु हरिदासजी के पास दौड़ पड़े तथा पाँचवें दिन भूजनगर आ पहुँचे।

→ तो पिता मतु महेता के पास आने को भी तैयार नहीं थे। दूर-दूर ही भागते थे। उनके इस व्यवहार को देखकर पिता मतु महेता को लगा कि "अब तो इनमें पहले से भी बहुत परिवर्तन आ गया है। ये तो वैराग्य मार्ग में बहुत आगे बढ़ चुके हैं। अब ये हमारे हाथ में कैसे आयेंगे?" यह सोचकर मतु महेता बेजार हो गए।

→ रखा और पूछा "गुरुजी! अब मैं क्या करूँ?" उनकी सारी बातें सुनने के पश्चात् गुरु हरिदासजी उन्हें समझाते हुए बोले, "देखिए! मैं आपके साथ घर जाने के लिए यदि उन्हें मना भी लूँ और वे मेरे वचन का पालन करने के लिए अभी आपके साथ घर चले भी जाएँ, किन्तु घर पहुँचकर पहले की ही तरह यदि वे फिर भाग जाएँगे, तो वे न तुम्हारे हाथ में आ पाएँगे और न मेरे ही। अतः ऐसा करने से अच्छा तो, मैं आपको एक सलाह देता हूँ। आप दोनों पति-पत्नी उमरकोट के बदले यहाँ भूजनगर आकर बस →

→जाइये। आप का धन्धा वही का वही रहेगा। अभी आप सौदागरी के जानवर यहाँ से वहाँ ले जाकर बेचते हैं। उसके बदले आप वही जानवर यहाँ से वहाँ ले जाकर बेचना। यहाँ रहने के स्थान की भी फिक्र करने की जरूरत नहीं है। मेरा एक मकान खाली →

स. २२-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने गुरु हरिदासजी की कौन-कौन-सी सेवा की?

ज. २२- सर्वप्रथम सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने बालमुकुन्द और बाँकेबिहारीजी की सेवा में लगनेवाले पात्रों को साफ करने की, उन्हें सजाकर रखने की तथा फूलों के हार गुँथने की सेवा हाथ में ली, जो गुरुजी श्री हरिदासजी करते थे। गुरु श्री हरिदासजी को जब इस बात का पता चला, तो उन्होंने तुरन्त ही वे सेवाएँ छुड़वा दीं और उनसे कहा, "हे देवचन्द्र! तुम अपने अध्ययन, पढ़ाई-लिखाई में ही समय दो। ऐसी सेवाएँ तो सभी कर सकते हैं।" गुरुजी के मना करने पर देवचन्द्रजी ने वे सेवाएँ छोड़ दीं और गुरु श्री हरिदासजी दिन भर →

स. २३-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की सच्ची सेवा और भाव तथा अध्ययन की लगन को देखकर गुरु हरिदासजी ने उन्हें क्या देने का निश्चय किया?

स. २४-इस समय पिता मतु महेता और माता कुँवरबाई कहाँ हैं और क्या विचार कर रहे हैं?

ज. २४- माता-पिता कुँवरबाई और मतु महेता गुरु हरिदासजी की आज्ञा शिरोधार्य करके उमरकोट छोड़कर भूजनगर आ गये और हरिदासजी द्वारा दिए हुए घर में मेहमान के रूप में रहने लगे। तब →

स. २५-"एक दिल में लिया दिन" अर्थात् शुभ मुहूर्त निश्चित करके किस-किस ने क्या-क्या विचार करके कौन-कौनसे कार्य करने के लिए कमर बाँधी?

→ पड़ा है। उसी में आकर रहिए। ऐसा करेंगे, तो आप तीनों ही जन एक साथ रह सकेंगे। अन्य तो कोई उपाय दिखाई नहीं देता।" गुरु हरिदासजी द्वारा दी गई सलाह मतु महेता को जँची और गुरुजी की आज्ञा शिरोधार्य करके वे उमरकोट लौट चले।

→ जहाँ-जहाँ चलते-फिरते थे, उन रास्तों पर झाड़ू लगाने की सेवा पकड़ ली, जिससे कि चलते-फिरते समय गुरुजी के चरणों में कंकड़ आदि न चुभे। यह सेवा भी कुछ ही दिन कर पाए थे कि अचानक एक दिन गुरु हरिदासजी को पता चल गया। तब पता चलते ही उन्होंने यह सेवा भी छुड़वा दी और मना करते हुए समझाने लगे, "हे देवचन्द्र! तुम रात-दिन अध्ययन में ही मन लगाओ। तुम्हें अन्य कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। तुम केवल मेहनत और लगन से ध्यान देकर अध्ययन करो। यही मेरी सच्ची सेवा है।" किंतु सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी सोचने लगे, "यह तो मेरा स्वार्थ है। इससे गुरुजी की सेवा कैसे हो सकती है?" अतः यह विचार करके गुरु-मंदिर की परिक्रमा करने की सेवा पकड़ ली।

ज. २३- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की सच्ची सेवा और भाव तथा कथा-चर्चा के श्रवण, मनन तथा अध्ययन की लगन को देखकर गुरु हरिदासजी ने उन्हें "नाम सुमिरन" देने का और अपना शिष्य बनाने का निश्चय किया।

→ से श्री देवचन्द्रजी गुरु हरिदासजी के घर का दाना न खाकर अपने घर का दाना खाते हुए गुरु हरिदासजी के घर आने लगे और अध्ययन मनन करने लगे। परंतु पुत्र को संसार के प्रति प्रतिदिन विरक्त होता देखकर पिता मतु महेता और माता कुँवरबाई उन्हें सांसारिक कर्म बन्धन में बाँध देने का विचार करने लगे।

ज. २५- *"एक दिल में लिया दिन"* अर्थात् गुरु हरिदासजी ने श्री देवचन्द्रजी को आध्यात्मिक मार्ग का "नाम सुमिरन" देकर आत्मीय संबंध में बाँधने के लिए जो शुभ दिन निश्चित किया था, उनके →

→ माता-पिता भी उन्हें भौतिक मार्ग के शारीरिक बंधन में बाँधने के लिए वही दिन निश्चित कर तत्पर होकर बैठे थे। इस प्रकार गुरु →

स. २६-गुरु हरिदासजी ने आत्मीय कार्य हेतु शुभ मुहूर्त के दिन श्री देवचन्द्रजी से क्या करके आने को कहा?

स. २७-नाम सुमिरन देने से पहले श्री देवचन्द्रजी से गुरु हरिदासजी ने क्या पूछा?

ज. २७- नाम सुमिरन देने से पहले गुरु श्री हरिदासजी ने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से पूछा, "क्या आपने इससे पहले किसी से मंत्र लिया है?" सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी उत्तर देते हुए बोले, "हाँ! मैंने इससे पहले एक संन्यासी से मंत्र लिया था।" तब गुरु हरिदासजी ने उनसे कहा, "यदि ऐसा है, तो वह मंत्र एक कागज में लिखकर वह कागज रोटी में चिपकाकर उसी संप्रदाय के किसी भक्त को दे देना।" गुरु हरिदासजी की बातें सुनकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी →

स. २८ श्री देवचन्द्रजी द्वारा मंत्र विषयक कहे गए उक्त विवेचन को सुनकर गुरु हरिदासजी ने क्या कहा?

ज. २८- उक्त प्रकार मंत्र की शक्ति के विषय में श्री देवचन्द्रजी के महत्त्वपूर्ण विवेचन को सुनकर गुरु हरिदासजी श्री देवचन्द्रजी के प्रति अत्यंत प्रसन्न हुए और श्री देवचन्द्रजी को प्राप्त वस्तु विषयक विवेचन →

स. २९-श्री बालमुकुन्द तथा बाँकेबिहारी की मूर्तियों के समक्ष दीक्षा देने बैठे गुरु हरिदासजी ने उक्त स्वरूपों को दिखाते हुए श्री देवचन्द्रजी से क्या कहा अर्थात् उक्त स्वरूपों को किस तरह तथा किस प्रकार की भावना से भजने और ध्यान धरने को कहा?

➞ एवम् माता-पिता दोनों ही श्री देवचन्द्रजी को अपने-अपने मार्ग में प्रवृत्त करने हेतु एक ही दिन निश्चित कर कमर बाँधकर तैयार थे। अतः दोनों ही पक्षों का शुभ मुहूर्त एक ही दिन था।

ज. २६- गुरु हरिदासजी ने आत्मीय कार्य हेतु शुभ मुहूर्त के दिन आते वक्त श्री देवचन्द्रजी से भद्रवेश धारण करके आने को कहा क्योंकि वे उन्हें "नाम सुमिरन" देना चाहते थे।

➞ ने उनसे कहा, "हे गुरुदेव! आपकी यह बात तो बच्चों के खिलवाड़-सी प्रतीत होती है क्योंकि मंत्र में तो इष्ट की शक्ति समाविष्ट रहती है। अतः आप जो मंत्र मुझे देने जा रहे हैं, यदि उसमें संन्यासी द्वारा दिए गए मंत्र की अपेक्षा ज्यादा शक्ति है, तो संन्यासी द्वारा दिया हुआ मंत्र अपने-आप ही मेरे अंदर से भाग जाएगा। यदि नहीं, आपके मंत्र में संन्यासी द्वारा दिए गए मंत्र की अपेक्षा कम शक्ति है, तो रोटी में चिपका देने से तो क्या, अन्य कुछ भी कर लेने पर मेरे अंदर से वह मंत्र कदापि नहीं हट सकेगा।" श्री देवचन्द्रजी के इस प्रकार के विवेचन को सुनकर गुरु हरिदासजी अत्यंत प्रसन्न हुए।

➞ की शक्ति को प्रभु परमात्मा की ही देन समझकर श्री देवचन्द्रजी से बोले, "हे देवचन्द्र! आपके तरह किसी भी विषय में विवेचन करने की शक्ति हमें प्राप्त नहीं है। आप तो धन्य-धन्य हैं। आपके माध्यम से परमात्मा को शायद आगे कुछ करवाना होगा। ऐसी शक्ति परमात्मा की देन से ही प्राप्त होती है।"

ज. २९- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की विवेचन शक्ति की सराहना करने के पश्चात् गुरु हरिदासजी ने श्री देवचन्द्रजी को श्री बालमुकुन्द तथा बाँकेबिहारी स्वरूप की मूर्ति के आगे रखे आसन पर बैठ जाने को कहा। जब वे बैठ गए, तब गुरु हरिदासजी ने श्री बालमुकुन्द तथा बाँकेबिहारी की मूर्तियों को दिखाते हुए कहा, "ये बाँकेबिहारी स्वरूप वृन्दावन के कुंज-निकुंज वन में विहार करनेवाले स्वरूप ➞

→हैं। इन्हें अपनी आत्मा का पति मानकर सखी भाव से भजना।

स. ३०-गुरु हरिदासजी ने श्री देवचन्द्रजी को नाम सुमिरन के रूप में कौनसा मंत्र दिया?

स. ३१-जब श्री देवचन्द्रजी भद्रवेश धारण कर मंत्र-दीक्षा लेने के पश्चात् घर आये, तब उनके पिता मतु महेता ने क्या कहा और पिताजी की बातें सुनकर श्री देवचन्द्रजी ने पिताजी को क्या जवाब दिया?

ज. ३१- जब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी भद्रवेश से सुसज्जित होकर दीक्षा-मंत्र लेने के पश्चात् अपने घर आए, तब उनका वह वेश देखकर पिताश्री मतु महेता अत्यंत क्रोधित और दुखी होकर बोले, "अरे!

→

स. ३२-श्री देवचन्द्रजी का शारीरिक विवाह हुआ या नहीं? यदि हुआ, तो किससे?

स. ३३-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी प्रतिदिन गुरु हरिदासजी के साथ चौबीस घण्टों में से कितना समय व्यतीत करते थे और घर में कितने समय रहते थे?

स. ३४-रात को तीन बजे उठकर श्री देवचन्द्रजी कहाँ जाते थे और क्या करते थे?

स. ३५-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी द्वारा गुरु मंदिर की परिक्रमा लगाने के विषय की बात गुरु हरिदासजी को कैसे पता चली?

→ इन्हें प्रत्यक्ष धनी समझकर ही इनका मनन-चिन्तन करना और ध्यान धरना।"

ज. ३०- गुरु हरिदासजी द्वारा सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को नाम सुमिरन के रूप में दिया हुआ मंत्र निम्नलिखित है। जैसे-"भजमन श्री वृन्दावन, कुञ्जबिहारी नित बिलास।"

→ देवचन्द्र!! तू आज यह कैसा वेश बनाकर आया है? आज तो तेरा सोलह सिंगार से सुसज्जित होने का दिन है। तेरी बुद्धि तो १४ लोक से निराली ही है।" इस तरह उनके भद्रवेश को देखकर पिता मतु महेता बहुत रोये-धोये। उन्हें कइयों फटकार दी। तब श्री देवचन्द्रजी ने कहा, "आप लोग आज क्या करना चाहते हैं? मैं बार-बार जिस बात के लिए मना करता आया हूँ, आप लोग वही करने के लिए कमर कसकर पीछे पड़े हैं। *"मैं ब्याह करना था जिनसों, किया है तिन सों"* अर्थात् मुझे जिनसे विवाह करना था, मैं उनसे कर आया हूँ।"

ज. ३२- उक्त प्रकार से माता-पिता के रोने-धोने और अनेकों फटकारने के बाद उसी दिन संध्या के समय खट-पट में ही सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी का शारीरिक विवाह धाम की ही एक सुशील आत्मा लीलबाई के साथ विधिवत् संपन्न हुआ।

ज. ३३- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी प्रतिदिन चौबीस घण्टों में से गुरु हरिदासजी के साथ मनन, चिंतन, अध्ययन तथा सेवादि कार्यों में इक्कीस घण्टे अर्थात् सात पहर व्यतीत करते थे और रात के बारह बजे से सुबह तीन बजे तक अर्थात् एक पहर घर में रहते थे।

ज. ३४- ब्राह्ममुहूर्त अर्थात् रात के तीन बजे उठकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी गुरु हरिदासजी के मंदिर जाते थे और वहाँ जाकर आत्म-साधन हेतु एक पहर तक मंदिर की परिक्रमा लगाते थे।

ज. ३५- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी अपने आत्म-साधन हेतु प्रतिदिन रात के ३ बजे से सुबह ६ बजे अर्थात् एक पहर तक गुरु-मंदिर की परिक्रमा →

→ लगाते आए थे। एक दिन रात को अचानक गुरु हरिदासजी की नींद खुली और वे लघु-शंका के लिए उठे, तो उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति घर के चारों ओर गोल-गोल फिर रहा है। उन्हें लगा कि कहीं यह चोर-डाकू तो नहीं तथा चोरी करने के लिए घर में घुसने का रास्ता तो नहीं ढूँढ़ रहा है? कुछ समय तक गुरु हरिदासजी उसके ठहरने का इंतजार करते खड़े रहे। फिर देखते-देखते आश्चर्य हुआ कि यह तो घूमते ही रहता है। घर में तो घुसता ही नहीं। तब गुरु हरिदासजी ने आवाज देकर पूछा, "अरे! तुम कौन हो और →

स. ३६- एक दिन जब गुरु हरिदासजी और श्री देवचन्द्रजी सुनने-सुनाने की सेवा में निमग्न थे, उस वक्त "हरिदासजी..... हरिदासजी.... हरिदासजी"- ऐसी आवाज आई, वह आवाज देनेवाले कौन थे और आवाज क्यों दे रहे थे?

ज. ३६- एक दिन जब हमेशा की तरह गुरु हरिदासजी और श्री देवचन्द्रजी भागवत की चर्चा-कथा सुनने और सुनाने के रस में निमग्न थे, उसी वक्त अचानक उन्हें, "हरिदासजी .....! ओ हरिदासजी .....!! ऐसे उतावले स्वर में एक कड़ी आवाज सुनाई दी। दोनों ने कथा से उठकर बाहर आकर देखा, तो पाया कि एक आदमी उनके घर के प्रांगण में अचेत अवस्था में पड़ा हुआ है। उस अचेत अवस्था में पड़े आदमी को घेरकर अन्य चार जन खड़े हैं। गुरु →

स. ३७- "देवचन्द्रजी बड़ो मंत्र है, ए राखों तुम्हारे तन" - ऐसा कब, किसने, किससे और क्यों कहा?

ज. ३७- *"देवचन्द्रजी बड़ो मंत्र है, ए राखों तुम्हारे तन"* - यह बात गुरु हरिदासजी ने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से तब कही, जब बिच्छू के डंक का विष उतरवाने आए वे पाँचों भाई गुरु हरिदासजी के →

→ क्यों चक्कर लगा रहे हो?" तब सामने से आवाज आई, "मैं देवचन्द्र हूँ।" तब गुरु हरिदासजी ने दरवाजा खोला और पूछा, "अरे देवचन्द्र! आज इतनी जल्दी क्यों आ गए?" तब श्री देवचन्द्रजी ने जवाब दिया, "आज समय का ज्ञान नहीं हुआ।" तब गुरु हरिदासजी ने कहा, "हाँ! कभी-कभी ऐसा हो जाता है। हम समझते हैं कि सबेरा हो चुका है और उठ जाते हैं। किंतु रात बहुत शेष रहती है।" दोनों में मात्र इतनी ही बात हुई।

→ हरिदासजी के पूछने पर वे कहने लगे, "इसे बिच्छू ने डंक मार दिया है। अतः इनका कुछ इलाज कर दीजिए।" हरिदासजी ने जब अपनी मूँछ में हाथ से ताव दिया, तब उन्हें पता चला कि इस व्यक्ति के सर्वांग में विष भर गया है। मंत्र पढ़कर दूसरी बार जब उन्होंने अपनी मूँछ में ताव दिया, तब आधा विष उतर गया। उसी प्रकार तीसरी बार पुनः मूँछ में ताव देते ही जहर पूरी तरह उतर गया और वह भाई उठकर बैठ गया। साथ आए चारों भाइयों ने गुरु हरिदासजी को साष्टांग प्रणाम किया और उनके गुण गाते हुए बोले, "आज आपने मात्र इस भाई की ही नहीं, बल्कि पाँच लोगों की आत्म-रक्षा की है। यदि यह आज मर जाता, तो इसके तीन बच्चों सहित इसकी पत्नी भी मर जाती थी। आप तो धन्य-धन्य हैं।" इस तरह गुरु हरिदासजी के गुणगान करते-करते वे लोग चले गए। बिच्छू के डंक मारने से जो व्यक्ति मृतकतुल्य होकर जमीन पर पड़ा हुआ था, वह एक मुसलिम भाई था।

→ गुणगान गाते-गाते अपने घर लौट गये। गुरु हरिदासजी ने श्री देवचन्द्रजी से यह बात इसलिए कही थी क्योंकि श्री देवचन्द्रजी उनके अति प्रिय शिष्य थे और गुरु हरिदासजी चाहते थे कि श्री देवचन्द्रजी भी उस मंत्र द्वारा उन्हीं की तरह भविष्य में परमार्थ का कार्य करते रहें।

स. ३८-गुरु हरिदासजी की उक्त बातें सुनकर श्री देवचन्द्रजी ने क्या जवाब दिया? पुनः श्री देवचन्द्रजी द्वारा कहे विवेचन के प्रति गुरु हरिदासजी ने श्री देवचन्द्रजी से क्या कहा?

ज. ३८- गुरु हरिदासजी की बिच्छू का विष उतारने का मंत्र देने की इच्छा के विषय में सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा, "हे गुरुदेव! आपने कुछ दिन पहले ही मुझे जो मंत्र दिया था, वह मंत्र कैसा है? वह मंत्र तो जन्मते समय और मरते समय →

स. ३९-"मैं जान्या तुम एक दिन, भूल के रात को आये"- ऐसा किसने, किससे, कब और क्यों कहा? स्पष्ट करो।

ज. ३९- *"मैं जान्या तुम एक दिन, भूल के रात को आये"*- ऐसा गुरु हरिदासजी ने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से कहा। एक दिन जब श्री देवचन्द्रजी प्रतिदिन की तरह रात को गुरु हरिदासजी के मंदिर की परिक्रमा लगा रहे थे और पहले की ही तरह गुरु हरिदासजी द्वारा पकड़े गए, उस वक्त गुरु हरिदासजी ने उक्त वचन कहे। →

स. ४०-"मैं तुम्हें देऊँ बालमुकुन्द" अर्थात् गुरु हरिदासजी ने श्री बालमुकुन्दजी की मूर्ति श्री देवचन्द्रजी को देने का निश्चय क्यों किया? इसके पीछे क्या रहस्य छिपा था? स्पष्ट करो।

ज. ४०- गुरु हरिदासजी श्री देवचन्द्रजी की परिक्रमा की सेवा सहन नहीं कर सकते थे। अतः बहुत विचार-विवेक करने के पश्चात् गुरु हरिदासजी ने श्री बालमुकुन्दजी की मूर्ति सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के ही घर में →

स. ४१-जब श्री बालमुकुन्दजी को अपने ही घर में पधराने की बात श्री देवचन्द्रजी ने सुनी, तब उन्होंने क्या कहा?

ज. ४१- जब गुरु हरिदासजी ने श्री बालमुकुन्दजी को श्री देवचन्द्रजी के →

→ होनेवाली लाख बिच्छू के डंक सदृश पीड़ा को निर्मूल कर उससे बचाकर हमें अखण्ड सच्चिदानन्दमय सुख देनेवाला है और वही मंत्र मेरे रोम-रोम में व्यापक है। अब इस एक बिच्छू के डंक के दर्द से बचानेवाले मंत्र को मैं कहाँ रखूँ?" श्री देवचन्द्रजी द्वारा मंत्र विषयक ऐसा विवेचन सुनकर गुरु हरिदासजी कहने लगे, "हे देवचन्द्र! तुम्हारे जैसी विवेचन शक्ति और मंत्र के महत्त्व की विशेषता हमें कहाँ प्राप्त है? तुम पर परमात्मा की बड़ी कृपा है, जिसके द्वारा तुम वस्तु का यथायोग्य विवेचन कर उसके महत्त्व को परख सकते हो। मुझे क्षमा करना।"

→ क्योंकि श्री देवचन्द्रजी की परिक्रमा लगाने की यह सेवा गुरु हरिदासजी सहन नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्हें इस चिन्ता ने चारों ओर से घेर लिया और वे सोचने लगे कि देवचन्द्रजी की यह परिक्रमा किसी भी तरह छूड़ा दूँ। किंतु कैसे? क्योंकि श्री बालमुकुन्द और बाँकेबिहारीजी की परिक्रमा बंद कराना तो अपराध है और यदि उनकी यह परिक्रमा न रोकूँ, तो साथ-साथ मेरी भी परिक्रमा हो रही है क्योंकि मैं भी उसी मंदिर में हूँ। अतः "आगे कूप, तो पीछे खाड़" की स्थिति आ गई।

→ पधरा देने और उनके द्वारा घर में ही परिक्रमा करवाने का निश्चय किया, जिससे कि वे तो बच जाएँगे। अतः यह विचार कर वे श्री देवचन्द्रजी से बोले, *"मैं तुम्हें देऊँ बालमुकुन्द* अर्थात् मैंने श्री बालमुकुन्दजी की मूर्ति तुम्हारे घर में ही पधरा देने का निश्चय किया है, जिससे कि तुम घर में ही जितनी चाहो परिक्रमा लगा सको।" श्री बालमुकुन्दजी की मूर्ति श्री देवचन्द्रजी के घर में ही पधरा देने से श्री देवचन्द्रजी वहीं घर में रहकर परिक्रमा करेंगे और गुरु हरिदासजी बच जायेंगे। इस कार्य के पीछे यही रहस्य था।

→ घर में पधराने की इच्छा प्रकट की, तब उनकी यह इच्छा सुनकर श्री देवचन्द्रजी ने कहा "आपकी जैसी इच्छा क्योंकि मैं तो "गुरोराज्ञा गरीयसी" में ही पूर्ण विश्वास रखता हूँ। आपकी इच्छा मुझे शिरोधार्य है।"

स. ४२- "जो आज्ञा तुम्हारी होय" - ऐसा किसने, किससे कहा?

स. ४३- "जो बीतक पहिचान पर" - चौपाई का यह चरण किस बात को इंगित कर रहा है? किसके द्वारा, किसे और किसकी पहचान होगी?

ज. ४३- *"जो बीतक पहिचान पर"* - चौपाई का यह चरण श्री →

❖ श्री देवचन्द्र स्वरूप की पहचान ❖

स. १- गुरु हरिदासजी ने श्री बालमुकुन्दजी को श्री देवचन्द्रजी के घर में पधराने का निश्चय कर जिस दिन रात को अन्तिम पौढ़ावनी की, उसी के दूसरे दिन सुबह क्या हुआ?

ज. १- गुरु हरिदासजी अपने मंदिर में श्री बालमुकुन्द एवम् श्री बाँकेबिहारीजी के मूर्ति की पौढ़ावनी करते समय मन में सोच रहे थे, "श्री बालमुकुन्दजी की पौढ़ावनी करने का आज मेरा →

स. २- दूसरे दिन सुबह जब श्री देवचन्द्रजी गुरु हरिदासजी के घर पहुँचे, तब वहाँ श्री बालमुकुन्दजी की मूर्ति के अदृश्य होने को लेकर क्या हलचल मची हुई थी?

ज. २- दूसरे दिन सुबह जब रात को मंदिर में पौढ़ाए हुए स्थान पर श्री बालमुकुन्दजी नहीं मिले, तब गुरु हरिदासजी ने घर के सभी स्थानों में उन्हें ढूँढ़ डाला, घर के जन-जन से उनके प्रति पूछ-ताछ की, किंतु कहीं भी किसी को भी उनका पता नहीं। ऐसी →

ज. ४२- *"जो आज्ञा तुम्हारी होय"* - ऐसा श्री देवचन्द्रजी ने अपने गुरु हरिदासजी से कहा।

→ बालमुकुन्दजी के दर्शन द्वारा गुरु हरिदासजी को प्राप्त होनेवाली श्री देवचन्द्रजी की पहचान की ओर इंगित कर रहा है क्योंकि आगे के प्रकरण में श्री बालमुकुन्दजी की मूर्ति द्वारा गुरु हरिदासजी को सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के वास्तविक स्वरूप की पहचान कराने का प्रसंग आएगा।

-(प्रकरण ३, सवाल-जवाब नं. ४३, कुल सं. १२४+४३ =१६७)।

❖ श्री देवचन्द्र स्वरूप की पहचान ❖

→ अन्तिम दिन है।" मन में इस प्रकार सोचते, विचार करते-करते उन्होंने पौढ़ावनी की और मंदिर का दरवाजा बंद कर बाहर से ताला लगा दिया तथा चाबी अपनी जेब में रख ली। तत्पश्चात् वे अपने शयन कक्ष में चले गए। जब गुरु हरिदासजी भी सोने की तैयारी करने लगे, तब गुरु हरिदासजी को प्रणाम कर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी भी शयनार्थ अपने घर जाने को विदा हुए। रात व्यतीत होने पर दूसरे दिन सुबह पूजा के लिए जब गुरु हरिदासजी ने मंदिर का दरवाजा खोला, तो देखते हैं कि मात्र श्री बाँकेबिहारीजी ही हैं। श्री बालमुकुन्दजी गायब हैं।

→ आश्चर्यपूर्ण घटना को लेकर घर के प्रत्येक सदस्य के दिल में हलचल मच रही थी। ऐसे में श्री देवचन्द्रजी भी वहाँ आ पहुँचे और देखा कि विशेषकर गुरु हरिदासजी अत्यंत ही दुःखी हैं। श्री बालमुकुन्दजी की मूर्ति को लेकर घर के सभी लोग बड़े चिंतित हैं। उसमें भी गुरु हरिदासजी को दुःखी देखकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने उनसे कहा, "मेरे ही कारण श्री बालमुकुन्दजी अदृश्य हुए हैं। शायद वे मेरे पास आना नहीं चाहते थे। श्री बालमुकुन्दजी के अदृश्य हो जाने का असली कारण मैं ही हूँ क्योंकि आप तो उन्हें मेरे सुपुर्द कर चुके थे।"

स. ३- श्री बालमुकुन्दजी की मूर्ति के अदृश्य हो जाने की हकीकत के विषय में श्री देवचन्द्रजी और गुरु हरिदासजी के बीच कैसा विवाद हुआ?

ज. ३- श्री बालमुकुन्दजी की मूर्ति के अदृश्य हो जाने के विषय में गुरु हरिदासजी और श्री देवचन्द्रजी के बीच उसके कारण को लेकर विवाद शुरू हुआ। एक ओर गुरु हरिदासजी श्री बालमुकुन्दजी के →

स. ४- उक्त वाद-विवाद के चलते जब गुरु हरिदासजी ने श्री बालमुकुन्दजी के न मिलने तक अन्न-जल ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा ली, तब उसके पश्चात् उनके घर में क्या सिलसिला शुरू हुआ?

ज. ४- उक्त वाद-विवाद के चलते जब गुरु हरिदासजी ने अत्यंत दुःखी →

स. ५- सभी को क्रमशः एकादशी करने की प्रतिज्ञा करते देखकर श्री देवचन्द्रजी ने क्या किया?

ज. ५- उक्त सभी की प्रतिज्ञा सुनकर श्री देवचन्द्रजी ने भी प्रतिज्ञा की कि →

स. ६- *"साक्षात् दियो दर्शन"* अर्थात् किसने, किसको और कब दर्शन दिया? उस समय गुरु हरिदासजी किस अवस्था में थे?

ज. ६- "साक्षात् दियो दर्शन" अर्थात् सुबह ब्राह्ममुहूर्त के समय श्री →

स. ७- दर्शन देकर श्री बालमुकुन्दजी ने गुरु हरिदासजी से क्या कहा? स्पष्टतः समझाओ।

ज. ७- दर्शन देकर श्री बालमुकुन्दजी ने गुरु हरिदासजी से कहा, →

→ अदृश्य होने का कारण अपने सिर पर लेते हुए कहने लगे, "मेरे ही कारण श्री बालमुकुन्दजी अदृश्य हो गए हैं। मैं आपको वचन तो दे चुका था, परंतु पूरा नहीं कर पाया। आज ही के दिन शुभ मुहूर्त में उन्हें आपके घर सिंहासन में पधराना था।" दूसरी ओर श्री देवचन्द्रजी कहने लगे, "आप तो श्री बालमुकुन्दजी को मेरे सुपुर्द कर चुके थे। केवल पधराना ही बाकी था। वे शायद मेरे घर जाना नहीं चाहते होंगे। इसलिये वे अदृश्य हो गए। अतः वे मेरे कारण ही अदृश्य हुए हैं, आपके कारण नहीं।"

→ होकर श्री बालमुकुन्दजी के न मिलने तक अन्न-जल ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा की, तब पतिदेव की उक्त प्रतिज्ञा सुनकर गुरु हरिदासजी की धर्मपत्नी-गुरु माँ ने भी जब तक पतिदेव अन्न-जल ग्रहण न करें, तब तक अन्न-जल ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा की। तत्पश्चात् माता-पिता की उक्त प्रतिज्ञा सुनकर बड़े लड़के वृन्दावन ने भी जब तक माता-पिता अन्न-जल ग्रहण न करें, तब तक अन्न-जल ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा की।

→ जब तक गुरुजी अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे, तब तक वे भी अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। इस तरह चारों ने प्रतिज्ञा कर राजभोग और बालभोग दोनों ही बाँकेबिहारीजी को धराकर प्रसाद घर के बच्चों में बाँट दिया तथा वे सबके सब श्री बालमुकुन्दजी की चिंता में रहे।

→ बालमुकुन्दजी ने गुरु हरिदासजी को दर्शन दिया। उस समय सुबह के साढ़े चार बज रहे थे और गुरु हरिदासजी सुबह की ठण्डी-ठण्डी हवा में "कछू आंख मिली के ना मिली" ऐसी अवस्था में नींद के झोके ले रहे थे। इतने में ही उन्हें श्री बालमुकुन्दजी ने दर्शन दिये।

→ "हरिदासजी! तुम अभी श्री देवचन्द्रजी के वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचानते। अभी जो तुम्हारा शिष्य बना हुआ है, वह देवचन्द्र तो अपनी संगी-सहेलियों को परमधाम ले जाने आया है। तुम मुझे श्री देवचन्द्रजी के घर में पधराने जा रहे थे। इसलिए मुझे →

→ अंतर्ध्यान होना पड़ा। क्योंकि श्री देवचन्द्रजी के हाथों द्वारा होनेवाली सेवा मैं सहन नहीं कर सकता। लेकिन यह बात सुनकर श्री देवचन्द्रजी दुःखी हों, यह भी मैं सहन नहीं कर सकता। यसर्थ आपके पूजा-कोठा में स्थित श्री बाँकेबिहारीजी स्वरूप के पास आपको एक नया वस्त्र दृश्यमान् होगा। मेरी जगह उस वस्त्र को →

स. ८- श्री बालमुकुन्द स्वरूप की उक्त बातें सुनकर चौंक उठने के पश्चात् गुरु हरिदासजी ने क्या किया?

स. ९- सुबह जब गुरु हरिदासजी श्री बालमुकुन्दजी के मिल जाने की खुशखबरी श्री देवचन्द्रजी को सुनाने घर से निकले, तब बाजार के बीच श्री देवचन्द्रजी से मिलते ही उन्होंने क्या किया?

ज. ९- सुबह जब गुरु हरिदासजी श्री बालमुकुन्दजी के मिल जाने की →

स. १०-जब श्री देवचन्द्रजी ने प्रणाम करने के विषय में गुरु हरिदासजी से पूछा कि हे गुरुदेव! आप ऐसा क्यों कर रहे हैं, तब हरिदासजी ने जवाब देते हुए क्या कहा?

ज. १०- अचानक चरणों में साष्टांग प्रणाम करने के विषय में श्री देवचन्द्रजी →

स. ११-"तो दीजो वस्तर सेवन" - ऐसा कौन, किससे और क्यों कह रहे हैं?

स. १२-"चलो दर्शन करावे हम"- ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा?

ज. १२- *"चलो दर्शन करावे हम"* - ऐसा गुरु हरिदासजी ने श्री →

→ आप श्री देवचन्द्रजी के घर पधरा देना।" यह सुनकर गुरु हरिदासजी ने उनसे पूछा, "हे प्रभु आप कहाँ हैं?" इस पर श्री बालमुकुन्दजी ने जवाब दिया, "कल रात्रि में तुमने मुझे जहाँ पौढ़ाया था, मैं वहीं हूँ।" तत्पश्चात् श्री बालमुकुन्दजी स्वरूप अन्तर्ध्यान हो गए और गुरु हरिदासजी चौंक उठे।

ज. ८- श्री बालमुकुन्द स्वरूप की उक्त बातें सुनकर चौंक उठने के पश्चात् गुरु हरिदासजी ने श्री बालमुकुन्दजी के अन्तर्ध्यान होते ही दौड़कर अपने पूजा-कोठा का दरवाजा खोला और पाया कि श्री बालमुकुन्दजी पौढ़ाए हुए स्थान पर ही पौढ़े हुए हैं।

→ खुशखबरी श्री देवचन्द्रजी को सुनाने घर से चले, तब श्री देवचन्द्रजी भी रोज की तरह ही मंदिर आ रहे थे। अतः वे दोनों परस्पर बीच बाजार में मिल गए। श्री देवचन्द्रजी से मिलते ही गुरु हरिदासजी ने दौड़कर उनके चरणों में साष्टांग प्रणाम किया। यह देखकर श्री देवचन्द्रजी चौंक उठे और कहने लगे, "हे गुरुदेव! आप यह क्या कर रहे हैं?"

→ ने जब गुरु हरिदासजी से पूछा, "हे गुरुदेव! आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?" तब गुरु हरिदासजी ने जवाब देते हुए कहा, "अरे देवचन्द्रजी! आपके स्वरूप का यथार्थ परिचय कराते हुए बालमुकुन्दजी ने मुझसे कहा है कि जिस स्वरूप की सेवा तक मैं सहन नहीं कर सकता, उन्हें तुमने अपना शिष्य बना रखा है।"

ज. ११- *"तो दीजो वस्तर सेवन"* - ऐसा श्री बालमुकुन्दजी गुरु हरिदासजी से कह रहे हैं क्योंकि श्री बाँकेबिहारीजी के वस्त्र उन स्वरूप की सेवा सहन कर सकते थे।

→ देवचन्द्रजी से कहा क्योंकि श्री बालमुकुन्दजी के अदृश्य हो जाने पर जिस तरह गुरु हरिदासजी ने जब तक वे न मिल जायें, तब तक अन्न-जल ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा ली थी, उसी तरह श्री देवचन्द्रजी ने भी प्रतिज्ञा ली थी। वे भी गुरु हरिदासजी की तरह एकादशी व्रत में थे।

स. १३-श्री देवचन्द्रजी के घर पधराने के लिए श्री बालमुकुन्दजी ने श्री बाँकेबिहारीजी के वस्त्र ही क्यों दिए? ये वस्त्र कौन से थे? मूर्ति और वस्त्र (जामा) में क्या अन्तर है? स्पष्ट करो।

ज. १३- श्री बाँकेबिहारी किशोर स्वरूप हैं और अक्षरातीत सम्बन्धी हैं। अतः किशोर स्वरूप के वस्त्र (जामा) श्री देवचन्द्रजी की सेवा →

स. १४-"देह पछाड़े इन मों" अर्थात् कौन, किसमें और किस तरह देह पछाड़ रहे हैं?

ज. १४- *"देह पछाड़े इन मों"* अर्थात् अब श्री देवचन्द्रजी पधराए हुए श्री रासमण्डलवाले किशोर स्वरूप के वस्त्रों (जामा) की सेवा में →

स. १५-श्री देवचन्द्रजी को इस तरह सेवा करते देखकर कौन लीलबाई को ताने देने लगे?

ज. १५- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को घर में पधराए हुए वस्त्रों (जामा) की सेवा अपने हाथों से वह भी ध्यानपूर्वक पवित्रता सहित करते देखकर अड़ोस-पड़ोस के लोग बार-बार आते हैं और श्री देवचन्द्रजी को कभी चोखा-चावल, खाँड़, गेहूँ आदि साफ करता हुआ पाते हैं, तो कभी फूलों के हार आदि गुँथने में मग्न पाते हैं। ऐसा आश्चर्य देखकर वे लोग लीलबाई को ताना कसते हुए कहते हैं, "अरे! लीलबाई!! तेरे होते हुए भी तेरे पतिदेव घर के सभी काम अपने →

स. १६-लीलबाई को किस-किस के और कैसे-कैसे ताने सहन करने पड़े?

ज. १६- लीलबाई को ताने कसनेवालों में तीन प्रकार की स्त्रियाँ हैं। जैसे - जो अविवाहिता लड़कियाँ थीं, वे लीलबाई के पूर्व जन्म में →

→ सहन कर सकते थे। इसलिए श्री बालमुकुन्दजी ने श्री देवचन्द्रजी के घर में पधराने के लिए श्री बाँकेबिहारी स्वरूप के ही वस्त्र दिए। ये वस्त्र अखण्ड रासमण्डल से उतरे हुए वस्त्र थे। मूर्ति श्री बालमुकुन्द स्वरूप की थी अर्थात् बालस्वरूप संबंधी थी और वस्त्र (जामा) तो अखण्ड रासमण्डलवाले किशोर स्वरूप के थे। पुनः सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी का वास्तविक स्वरूप भी किशोर स्वरूप सम्बन्धी ही है, न कि बालस्वरूप संबंधी।

→ शरीर को कष्ट देकर कसौटी में उतर रहे हैं। पधराए हुए वस्त्रों (जामा) की सेवा वे निर्मल और पूर्ण पवित्र भाव से कर रहे हैं। अपनी ही साँस अथवा अन्य किसी की छाया-परछाई पड़ने से भी उनकी पवित्रता भंग हो जाती है। इस प्रकार पवित्रता का ध्यान रखते हुए वे होशियारी के साथ मेहनत करके कसौटी करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

→ हाथों से कर रहे हैं। तुझे शर्म नहीं आती। अरे! तू कैसी स्त्री है? तेरा नसीब तो ऊपरवाले ने बहुत अच्छा बनाया है। तू तो राजरानी ठहरी। पति मिले, तो तेरे जैसा। घर के सभी काम पतिदेव करें और पत्नीदेवी आराम से कुर्सी पर बैठकर देखती रहे। वाह ! ये मध्य कलियुग के लक्षण ही तो हैं।" अड़ोस-पड़ोस एवं आस-पास के गाँव के लोगों के ऐसे ताने सुनकर लीलबाई का तो घर से बाहर निकलना ही भारी हो गया। बाहर निकलते ही दसों दिशा से अंगुली दिखाकर लोग आपस में लीलबाई का परिचय कराने लगे।

→ किये हुए शुभ कर्मों की सराहना करते हुए कहती हैं, "अरे! यह लीलबाई तो बड़ी भाग्यशाली है। पूर्व जन्म में इसने कैसे पुण्य कर्म किए थे कि इसे ऐसे पतिदेव मिले। हे भगवान! मुझे भी आगे ऐसे ही पतिदेव देना।" पुनः जो लीलबाई की हमउम्र विवाहिता स्त्रियाँ हैं, वे कहती हैं, "मेरा तो नसीब ही फूटा हुआ है, जो मुझे →

ऐसे पति मिले। ऐसे पति को कौन देव समझे, जिसमें देवताओं के तो एक भी लक्षण नहीं हैं। राक्षसों के लक्षण हैं, राक्षसों के। यह लीलबाई तो बड़ी बड़भागी है। मैं तो हतभागिनी हूँ। अब तो उम्र पहुँचकर बूढ़ी होने लगी हूँ, किंतु पतिदेव का कोई सहारा नहीं है। हाय .... रे .... हाय! कलियुग का मध्याह्न यही तो है।" पुनः जो गाँव की बड़ी-बूढ़ी बुजुर्ग वृद्धा थीं, वे लीलबाई को देखकर उनके पाप और पुण्य कर्मों का माप-तौल करते हुए कहने लगीं, "ऐसी स्त्रियाँ तो कलियुग में पाप वृद्धि करनेवाली साबित

स. १७-उक्त प्रकार से तरह-तरह के असहनीय ताने सुनकर लीलबाई ने श्री देवचन्द्रजी से अपनी इज्जत बचाने की खातिर क्या कहा और उसके जवाब में श्री देवचन्द्रजी ने उन्हें समझाते हुए क्या कहा?

ज. १७- उक्त प्रकार से तरह-तरह के असहनीय ताने सुनकर जब लीलबाई हैरान हो गईं, तब वे श्री देवचन्द्रजी के पास आकर बोलीं, "हे

स. १८-प्रतिदिन की तरह चितवन करते समय एक दिन अचानक ध्यान में श्री देवचन्द्रजी कहाँ पहुँच गये और वहाँ उन्होंने क्या-क्या देखा? स्पष्टतः समझाओ।

ज. १८- प्रतिदिन की तरह चितवन करते समय एक दिन अचानक श्री देवचन्द्रजी अखण्ड ब्रजमण्डल में पहुँच गये और वहाँ पहुँचते ही देखते हैं कि नन्द के द्वार पर आईजी (यशोदा मैया) मचिया के ऊपर बैठकर दूध गरम कर रहीं हैं और चारों ओर से उन्हें सखियाँ घेरे खड़ी हैं। यशोदाजी दूध उबालते हुए बीच-बीच में सखियों से कुछ आवश्यक चीजें माँग रही हैं। इतने में ही यशोदाजी ने श्री देवचन्द्रजी को देखा और कहा, "आओ, देवचन्द्रजी! बड़ी दूर से

स. १९-"हैं कहाँ श्री कृष्णजी, मैं करों दरसन"- ऐसा किसने, किससे और कहाँ कहा था?

→ होती हैं, जो पतिदेव को नौकरों की तरह काम में लगाकर स्वयं राजरानी बने बैठी रहती हैं। कुलक्षणाओं के लक्षण ऐसे ही होते हैं, लीलबाई-राजरानी के जैसे।" वृद्धावस्था में पहुँच चुकी वृद्धाएँ पति-पत्नी के संबंध को लोक, वेद और कुल मर्यादा के बंधन में बँधा हुआ ही शोभित मानकर लीलबाई को वेद, कुल और लोक मर्यादा के प्रतिकूल चलता देखकर बिना विचारे ही उन पर बरस पड़तीं थीं। इस प्रकार लीलबाई को तरह-तरह के लोगों के तरह-तरह के ताने सुनने पड़े।

→ पतिदेव! अड़ोस-पड़ोस, गाँव-घर के सभी लोग मुझे विभिन्न प्रकार के ताने मारते हैं, जिससे मैं घर के बाहर भी नहीं निकल पाती। कम से कम इनके मुख बन्द करने के लिए तो आप मुझे कुछ सेवा दें।" तब श्री देवचन्द्रजी ने लीलबाई को समझाते हुए कहा, "देखो! सेवा की ये गहन बातें तुम नहीं समझ सकती। तुमसे यह सेवा नहीं हो पाएगी क्योंकि तुम्हें सेवा की विशेषताएँ मालूम नहीं हैं। दुनिया जाए भाड़ में। तुम उनकी नहीं, तुम मेरी हो। अतः वे जो कहें, उन्हें कहने दो।"

→ आए हो। अतः भूख लगी होगी।" ऐसा कहते हुए उन्होंने एक सखी से छाबड़ी (छाब) में रखे मोदक ले आने को कहा और श्री देवचन्द्रजी को देते हुए बोली, "हे देवचन्द्र! इस मोदक का नाश्ता कर लो। भूख लगी होगी। बड़ी दूर से आए हो न!" तब श्री देवचन्द्रजी ने उनसे पूछा, "वे कहाँ हैं? मैं पहले उनके दर्शन करना चाहता हूँ।" तब यशोदाजी ने कहा, "वह तो बाल-गोपालों के साथ गौ चराने वन की ओर गया है। तुम उसके दर्शन करना ही चाहते हो, तो लो। यह मोदक भी ले जाओ और वहीं दोनों मिलकर खा लेना।" श्री देवचन्द्रजी मोदक की छाबड़ी (छाब) लेकर उसी ओर चल पड़े, जिस ओर यशोदा मैया ने इंगित किया था।

ज. १९- ***"हैं कहाँ श्री कृष्णजी, मैं करों दरसन"*** - ऐसा श्री देवचन्द्रजी ने यशोदा मैया से अखण्ड ब्रज में स्थित नन्दजी के घर में कहा था।

स. २०- "दोऊ मिलके साथ" - ऐसा किसने, किससे और किन दोनों के प्रति तथा कब-किस वक्त कहा?

ज. २०- *"दोऊ मिलके साथ"*- ऐसा यशोदा मैया ने श्री देवचन्द्रजी से मोदक के नाश्ते के विषय में स्वयं उनके तथा श्री कृष्णजी के →

स. २१- श्री देवचन्द्रजी द्वारा वन में जाकर बाल-गोपालों से श्री कृष्णजी के विषय में पूछने पर बाल-गोपालों ने उन्हें क्या जवाब दिया?

ज. २१- जब यशोदा मैया से विदा होकर श्री देवचन्द्रजी वन में चले, तो उन्होंने दूर से ही देखा कि मैदान में गौवें चर रहीं हैं और बाल- →

स. २२- अंत में देवचन्द्रजी ने उन बाल-गोपालों को क्या जवाब दिया, जिसे सुनते ही बाल-गोपालों ने तुरन्त अंगुली द्वारा उस टोली की ओर इशारा किया, जिसमें श्री कृष्णजी खेल रहे थे?

स. २३- जब श्री देवचन्द्रजी बाल-गोपालों द्वारा दिखाई हुई टोली की ओर चल पड़े, तब क्या हुआ?

स. २४- श्री देवचन्द्रजी से मिलते ही श्री कृष्णजी ने सर्वप्रथम क्या पूछा? तत्पश्चात् श्री देवचन्द्रजी मन ही मन क्या विचार करने लगे?

ज. २४- श्री देवचन्द्रजी से मिलते ही श्री कृष्णजी ने सर्वप्रथम पूछा, "अरे! →

स. २५- "बातें लगे करने" अर्थात् जब श्री देवचन्द्रजी तथा श्री कृष्णजी बैठकर बातें करने लगे, तब वहाँ उपस्थित बाल-गोपाल क्या कर रहे थे?

→ प्रति कहा। जब अखण्ड व्रज में यशोदा मैया ने श्री देवचन्द्रजी से मोदक का नाश्ता करने का आग्रह किया और श्री देवचन्द्रजी ने सर्वप्रथम श्री कृष्णजी के दर्शन करने की चाहना की, तब यशोदा मैया ने उनसे कहा, "यदि आप ये मोदक यहाँ नहीं खाना चाहते, उनके दर्शन के पश्चात् ही खाना चाहते हो, तो ले जाओ और आप दोनों ये मोदक वहाँ वन में इकट्ठे ही खा लेना।"

→ गोपाल टोलियों में खेल रहे हैं। वहाँ पहुँचकर श्री देवचन्द्रजी ने श्री कृष्णजी के विषय में पूछा। तब उन बाल-गोपालों ने उनसे पूछा, "आप कौनसे कृष्ण के विषय में पूछ रहे हैं क्योंकि यहाँ तो अनेकों कृष्णजी हैं।" तब श्री देवचन्द्रजी ने उत्तर दिया, "मुझे नन्द के नन्दन श्री कृष्णजी से मिलना है।" तब उन बाल-गोपालों ने उनसे पुनः प्रश्न किया, "यहाँ नन्द के लड़के कृष्ण भी अनगिनत हैं। अतः आपको हम किस कृष्ण से मिलवाएँ?"

ज. २२- अंत में श्री देवचन्द्रजी ने उन बाल-गोपालों से यशोदा मैया के लाड़ले श्री कृष्णजी से मिलवाने को कहा। यशोदा मैया के लाड़ले श्री कृष्ण का नाम सुनते ही उन बाल-गोपालों ने तुरन्त अंगुली द्वारा श्री देवचन्द्रजी को उस टोली की ओर इशारा कर दिखाया, जिसमें श्री कृष्णजी खेल रहे थे।

ज. २३- जब श्री देवचन्द्रजी बाल-गोपालों द्वारा दिखाई हुई टोली की ओर चल पड़े, तब तुरन्त श्री कृष्णजी टोली से निकलकर बाहर आ गए।

→ आप इतने दिनों तक कहाँ थे ? बहुत समय बाद मिले। एक बार कच्छ की बालूयुक्त भूमि में सफर करते मिले थे।" यह सुनकर श्री देवचन्द्रजी मन ही मन विचार करने लगे, *"उहि दिन दरस इनहीं दीन्ह"* अर्थात् क्या कच्छ के रण में भी इन्होंने ही दर्शन दिया था?"

ज. २५- *"बातें लगे करने"* अर्थात् जब श्री देवचन्द्रजी और श्री कृष्णजी दोनों बैठकर बातें कर रहे थे, तब वहाँ उपस्थित बाल-गोपाल कलेवा (नाश्ता) के लिये घुँघरी बनाने हेतु उबाले हुए गेहूँ के पानी को एक कपड़े में डालकर कपड़े को दोनों छोर से पकड़कर छान रहे थे।

स. २६-"दोय भाग जो इनके" अर्थात् श्री कृष्णजी ने बाल-गोपालों से किसके दो भाग करने को कहा? खुलस्त करो।

ज. २६- *"दोय भाग जो इनके"* अर्थात् जब नन्दजी के घर में यशोदा मैया ने श्री देवचन्द्रजी को मोदक की एक छाबड़ी (छाब) नाश्ते के लिए दी थी और श्री देवचन्द्रजी ने पहले श्री कृष्णजी के दर्शन की इच्छा रखी, तब यशोदा मैया ने श्री देवचन्द्रजी से बाल-गोपालों के साथ वन में गए श्री कृष्णजी के साथ वन में ही नाश्ता →

स. २७-"श्री देवचन्द्रजी आप आरोगो" - ऐसा किसने, किससे, कब और कहाँ कहा?

ज. २७- *"श्री देवचन्द्रजी आप आरोगो"*- ऐसा श्री कृष्णजी ने श्री देवचन्द्रजी से जब वे ध्यान के समय अखण्ड ब्रज में पहुँचकर श्री कृष्णजी से मिले थे और जब बाल-गोपालों ने यशोदा मैया →

स. २८-जब श्री देवचन्द्रजी ध्यान में से चौंक उठे और ध्यान टूट गया, तब उन्होंने अपने सामने क्या देखा?

ज. २८- जब श्री कृष्णजी ने श्री देवचन्द्रजी से आरोगने की अर्ज की, तब श्री देवचन्द्रजी ने उनसे कहा, "पहले आप आरोगिए, उसके बाद मेरी बारी आएगी।" इस पर श्री कृष्णजी ने उनसे कहा, "नहीं! →

स. २९-"आरोगावनें लगे इनको" - इस कथन का क्या तात्पर्य है अर्थात् कौन आरोगावने लगे किनको? स्पष्टतः समझाइये।

ज. २९- श्री देवचन्द्रजी निरंतर आठ साल से भोजन-प्रसाद की थाल तैयार कर प्रथम दर्शन देनेवाले स्वरूप को ही धराते आए थे और उन्हीं का चितवन करते आए थे। अब आज से श्री देवचन्द्रजी वह →

स. ३०-दूसरा दर्शन प्राप्त होने के पश्चात् श्री देवचन्द्रजी के दिल-दिमाग में कौनसी बातें अविकल्प हो गईं?

→ कर लेने को कहा था। मोदक की वह छाबड़ी (छाब) श्री देवचन्द्रजी ने यशोदा मैया से मिलने की हकीकत बताकर श्री कृष्णजी को पकड़ा दी। अतः मोदक की वह छाबड़ी(छाब) बाल-गोपालों को देते हुए श्री कृष्णजी ने कहा, "यह मिठाई (मोदक) भी ले जाओ और घुँघरी के साथ इसका भी हिस्सा लगाकर सबको देना और दो भाग हमारे लिए भी ले आना। तुम लोग ही सब मत खा जाना, हँ।" इस तरह कहते हुए बाल-गोपालों को वह मोदक सौंप दिया।

→ द्वारा भेजी मिठाई के साथ घुँघरी का भी एक-एक भाग श्री देवचन्द्रजी और श्री कृष्णजी के आगे आरोगने के लिए रख दिया, तब श्री कृष्णजी ने श्री देवचन्द्रजी से आरोगने की अर्ज करते हुए कहा, "पहले आप आरोगो।" तब श्री देवचन्द्रजी ने उनसे कहा, "नहीं! नहीं!! पहले आप आरोगिए न।" तब पुनः श्री कृष्णजी ने कहा, "नहीं! पहले आप प्रसाद लीजिये।"

→ पहले आप लीजिये। मैं बाद में लूँगा। अब तक मैं बहुत बार आगे रहा। अब आगे होने की बारी आपकी है।" ऐसे वाद-विवाद के चलते श्री देवचन्द्रजी का ध्यान टूट गया और वे चौंक उठे। आँख खोलने के पश्चात् देखा, तो पाया कि घुँघरी का वह भाग प्रत्यक्ष सामने ही है, जिसे आरोगने के लिए श्री कृष्णजी उनसे अर्ज कर रहे थे।

→ थाल दूसरा दर्शन देनेवाले मयूरपिच्छयुक्त अखण्ड व्रज के स्वरूप को धराने लगे और उन्हीं का चिंतन करने लगे। इस दर्शन द्वारा श्री देवचन्द्रजी को "ब्रह्म तत्त्व" की खोज के विषय में सोलह आने में से आठ आना सफलता प्राप्त हुई। अब उनका मन, चित्त और बुद्धि श्री कृष्णजी में सर्वभावेन केंद्रित हो गया। अब उन्हें श्री कृष्ण कथा श्रवण की धुन लग गई।

ज. ३०- दूसरा दर्शन प्राप्त होने के पश्चात् श्री देवचन्द्रजी के हृदय में अविकल्परूप से स्पष्ट हो गया कि पहले दर्शन में मुझे रास्ता पार →

→ कराकर भयंकर आपत्ति से बचानेवाले स्वरूप भी ये ही थे। पुनः इन्हीं स्वरूप का दर्शन दूसरी बार भी हुआ। अब आगे भी मेरा संबंध इन्हीं के साथ है। यसर्थ मैं इन स्वरूप (श्री कृष्ण) की लीला और कथा-चर्चा का आद्योपान्त मनन, ध्यान, चिन्तन न करूँ, →

स. ३१-दूसरा दर्शन प्राप्त होते समय श्री देवचन्द्रजी की उम्र कितनी थी?

स. ३२-किस अथवा कौनसे स्वरूप के साथ श्री देवचन्द्रजी का चित्त बँध गया?

स. ३३-भूजनगर में श्री देवचन्द्रजी कितने समय रहे? तत्पश्चात् कहाँ चले?

ज. ३३- मारवाड़ देश उमरकोट गाँव में श्री देवचन्द्रजी १७ साल रहे। →

❖ नवतनपुरी लीला ❖

स. १-श्री देवचन्द्रजी किस वि. सं. में कच्छ-भूजनगर छोड़कर हल्लार देश नवानगर (जामनगर) आये?

स. २-हल्लार देश नवतनपुरी आते समय श्री देवचन्द्रजी के परिवार में कुल कितने सदस्य थे?

स. ३-जामनगर आकर श्री देवचन्द्रजी किस वस्तु की खोज करने लगे?

→ तो दूसरा कौन करेगा? श्री कृष्ण लीला श्रवण और मनन करने का सुनहरा अवसर पुनः कहाँ मिलेगा? अतः उनके दिल-दिमाग में कृष्ण लीला को आद्योपान्त श्रवण करने की अविकल्प धुन सवार हो गई और वे श्री कृष्ण लीला की चर्चा-कथा का मण्डान खोजने के लिए ही अब भूजनगर से निकलने का सोचने लगे।

ज. ३१- दूसरा दर्शन प्राप्त होते समय श्री देवचन्द्रजी की उम्र पचीस वर्ष थी।

ज. ३२- विभिन्न अवतारों में से अब श्री देवचन्द्रजी का चित्त अखण्ड ब्रज में घुँघरी खिलानेवाले स्वरूप के साथ बँध गया। अब उन्हें रात-दिन उन्हीं का चिन्तन-मनन करने और उन्हीं की कथा-चर्चा सुनने की रट लग गई।

→ कच्छ देश की राजधानी भूजनगर में वे केवल ८ साल ही रहे। तत्पश्चात् मूलस्वरूप की प्रेरणा से वे हल्लार देश गुजरात स्थित जामनगर (नवानगर) की ओर चल पड़े ।

-(प्रकरण ४, सवाल-जवाब नं. ३३, कुल सं. १६७+३३=२००)।

❖ नवतनपुरी लीला ❖

ज. १- श्री देवचन्द्रजी सपरिवार वि. सं. १६६३ में कच्छ-भूजनगर से हल्लार देश-जामनगर आये।

ज. २- कच्छ देश भूजनगर से नवानगर-नबतनपुरी आते समय श्री देवचन्द्रजी के परिवार में कुल चार सदस्य थे।

ज. ३- जामनगर आकर श्री देवचन्द्रजी माता-पिता सहित राज मंदिर में रहने लगे और कृष्ण-कथा का निरंतर पेट भरकर पान कहाँ करने को मिले, इस बात की खोज करने लगे। निरंतर खोज करते-करते एक साल लग गया।

स. ४- जामनगर-नवतनपुरी में श्री देवचन्द्रजी ने सर्वप्रथम सपरिवार जहाँ डेरा डाला, उस स्थान को अभी हम किस नाम से जानते हैं?

स. ५- उस वक्त जामनगर में किस धर्म का बोलबाला था?

ज. ५- उस वक्त जामनगर में विभिन्न धर्म मार्गों में से विशेषकर हिन्दू →

स. ६- उस वक्त जामनगर में अन्य धर्म, संप्रदायों की अपेक्षा किस धर्म-संप्रदाय का अधिक प्रभाव था?

स. ७- क्या श्री देवचन्द्रजी जामनगर आकर तुरन्त ही कृष्ण-कथा श्रीमद्भागवत श्रवण करने बैठ गये?

ज. ७- नहीं! श्री देवचन्द्रजी ने जामनगर आकर सर्वप्रथम एक साल तक →

स. ८- श्री देवचन्द्रजी ने किस वि. सं. में श्यामजी के मंदिर में "कृष्ण-कथा श्रीमद्भागवत श्रवण" करने के लिए आसन लगाया?

स. ९- श्री देवचन्द्रजी ने श्रीमद्भागवत श्रवण करने से पहले कौनसा नियम लिया था?

ज. ९- श्री श्यामजी के मंदिर में कथा-चर्चा श्रवण करनेवालों में तीन प्रकार के श्रोता थे। जैसे प्रवाही होकर कथा-चर्चा सुननेवाले, मर्यादा पालन करने हेतु कथा-चर्चा सुननेवाले तथा पुष्ट मार्ग पर चलकर कथा-चर्चा सुननेवाले। उक्त तीन प्रकार के श्रोताओं में से श्री →

स. १०- नवानगर स्थित श्यामजी के मंदिर में भागवत कथा श्रवण करनेवाले श्रोताओं में कैसे-कैसे लोग थे?

ज. १०- नवानगर-जामनगर (छोटा काशी) स्थित श्यामजी के मंदिर में →

ज. ४- हल्लार देश-नवानगर (जामनगर) में श्री देवचन्द्रजी ने सर्वप्रथम सपरिवार जहाँ वास किया, उस स्थान को अभी हम राज मंदिर के नाम से पहचानते हैं।

→ धर्म-वैष्णव संप्रदाय का बोलबाला था। जहाँ-तहाँ वेद, पुराण, गीता, भागवत, रामायणादि ग्रन्थों की चर्चा-कथा होते रहने के कारण जामनगर को छोटा काशी भी कहते थे।

ज. ६- उस वक्त जामनगर में अन्य धर्म, संप्रदायों की अपेक्षा विशेषकर वैष्णव सम्प्रदाय का अधिक प्रभाव था।

→ (वि. सं. १६६३) तो अखण्डरूप से जब तक इच्छा पूरी न हो, तब तक "कृष्ण-कथा श्रीमद्भागवत" श्रवण करने मिले, ऐसे योग्य स्थान की तलाश की। अन्त में उन्हें श्यामजी के मंदिर की कथा-चर्चा सुनाने की पद्धति पसन्द आई।

ज. ८- श्री देवचन्द्रजी ने वि. सं. १६६४ (ई. स. १६०७) में जामनगर स्थित श्यामजी के मंदिर में "कृष्ण-कथा श्रीमद्भागवत श्रवण" करने के लिए आसन लगाया।

→ देवचन्द्रजी पुष्टिमार्गी श्रोता थे। उसमें भी उनकी यह निष्ठा थी कि जब तक आत्मा को श्रीमद्भागवत कथामृतरूपी खुराक न मिले, तब तक शरीर को भी भोजनरूपी खुराक नहीं देना और जिस दिन आत्मा को श्रीमद्भागवत कथामृतरूपी खुराक मिल जाय, उस दिन शरीर को भोजनरूपी खुराक देने में कोई कमी नहीं करना। भरपेट भोजन खाना। इस प्रकार श्री देवचन्द्रजी निष्ठापूर्वक कथा श्रवण करने जाया करते थे।

→ कान्हजी भट्ट के श्री मुख से श्रीमद्भागवत कथा श्रवण करनेवाले श्रोताओं में वल्लभमार्गी नगरचौधरी तथा बड़े धनाढ्य सेठ आदि अग्रगण्य लोगों का मण्डान था, जो धन के अभिमान में फूले नहीं समाते थे।

स. ११-श्री देवचन्द्रजी तथा भागवत कथा श्रवण करनेवाले वल्लभमार्गी श्रोताओं के बीच होनेवाली खटपट का क्या कारण था?

स. १२-श्री देवचन्द्रजी भागवत कथाकार भट्टजी की नजर में कैसे जँच गए, जिससे स्वयं वक्ता अर्थात् भट्टजी ही श्रोता-श्री देवचन्द्रजी का इंतजार करने लगे?

ज. १२- श्री देवचन्द्रजी आत्मनिष्ठ होकर कथा श्रवण किया करते थे, जब कि वल्लभमार्गी नगर चौधरी, सेठ आदि श्रोता प्रवाही अथवा मर्यादीमार्गी होकर कथा सुना करते थे। कथाकार कान्हजी भट्ट नित्य प्रति नियमबद्ध श्यामजी के मंदिर में श्रीमद्भागवत कथा किया करते थे। कई महीनों बाद एक दिन श्री देवचन्द्रजी को कथा श्रवण हेतु श्यामजी के मंदिर में पहुँचने में पाँच मिनट देर हो गई और दो श्लोकों की चर्चा छूट गई। उन्होंने कथा-मण्डान में पहुँचकर आगे की कथा श्रवण की, किंतु जब भट्टजी उस दिन →

स. १३-"तुमारा क्या इनसे रुजगार" - ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा?

ज. १३- *"तुमारा क्या इनसे रुजगार"* - ऐसा कथाकार कान्हजी भट्ट के कथा-मण्डान के श्रोताओं में से नगर चौधरी वल्लभियों ने कथाकार कान्हजी भट्ट से पूछा क्योंकि ये धनाढ्य श्रोतागण धन के मद में मस्त हो चुके थे। उन्हें कथा-चर्चा के रहस्य से कोई →

स. १४-उक्त प्रश्न का जवाब कान्हजी भट्ट ने किस तरह दिया?

ज. १४- उक्त प्रकार वल्लभी श्रोताओं की द्वेषपूर्ण बातें सुनते ही कान्हजी भट्ट तिलमिला गए और वल्लभी श्रोताओं से बोले, "अच्छा! आप लोग मेरे बारे में ऐसा सोचते हैं? मैं आज तक श्यामजी की मूर्ति के आगे कथा करते-करते इस अवस्था में पहुँचा हूँ। मेरी जीविका →

ज. ११- कथावक्ता कान्हजी भट्ट भागवत कथा शुरू करने हेतु श्री देवचन्द्रजी का इंतजार किया करते थे। यह बात वल्लभमार्गी श्रोताओं को सहन नहीं होती थी। अतः इसी बात को लेकर उनके तथा श्री देवचन्द्रजी के बीच खटपट होती रहती थी।

→ की कथा समाप्त कर घर जाने लगे, तब श्री देवचन्द्रजी ने पीछे-पीछे जाकर उनके घर पहुँचकर हाथ जोड़कर छूटे हुए दो श्लोकों का संबंध जोड़ देने की बिनती की। उनकी प्रार्थना सुनकर कान्हजी भट्ट ने छूटे हुए दो श्लोकों का संबंध जोड़ दिया और श्री देवचन्द्रजी अपने घर गए। ऐसी ही घटना कुछ महीनों बाद पुनः दूसरी बार भी हुई। तब भट्टजी ने श्रोता श्री देवचन्द्रजी की परीक्षा लेने हेतु पंद्रह दिन तक की चर्चा का संबंध पूछा। श्री देवचन्द्रजी ने १५ दिन का संबंध क्रमशः बता दिया। तब से श्री देवचन्द्रजी कथा श्रवण करने के विषय में कान्हजी भट्ट की नजर में जँच गए। उसी दिन से जब तक श्री देवचन्द्रजी कथा श्रवण करने हेतु आसन पर नहीं आ विराजते, तब तक कान्हजी भट्ट नयी कथा शुरू नहीं करते थे।

→ मतलब नहीं था। अतः अपना प्रभुत्व समाप्त होता देखकर उन्हें लगने लगा कि आज तक तो कान्हजी भट्ट ने चर्चा-कथा हेतु किसी का इंतजार नहीं किया। लगता है इस नए श्रोता देवचन्द्र ने हमारे कथाकार कान्हजी भट्ट को खरीद लिया है। भट्टजी देवचन्द्र के बन चुके हैं। इसीलिए उसे कथा-चर्चा सुनाने हेतु उसके इंतजार में रहते हैं, हमारे इंतजार में नहीं। इस तरह भट्टजी और श्री देवचन्द्रजी के प्रति ये वल्लभी श्रोता ईर्ष्या-द्वेष करने लगे।

→ तो आप लोगों से चलती है। वह बिचारा देवचन्द्र मुझे क्या देगा? पर मैं एक बात दावे के साथ कह सकता हूँ कि मेरी चर्चा-कथा सुननेवाला सच्चा श्रोता तो देवचन्द्र ही है, आप लोगों में से कोई नहीं। क्योंकि आप लोग कोई नियम लेकर चर्चा-कथा नहीं सुन रहे हैं। आप लोगों को तो चर्चा-कथा सुनने मिले, तो भी ठीक है और न मिले, तो भी कोई हर्ज नहीं। क्या आज तक आप →

→ लोगों में से किसी ने भी मेरे आगे एक बार भी छूटे हुए संबंध को जोड़ देने की इच्छा प्रकट की है? नहीं! जितने श्लोक छूटें, जितने सुनने मिलें। ठीक ही है। चिन्ता-फिक्र की कोई बात नहीं। किंतु श्री देवचन्द्रजी को तो यदि एक श्लोक भी छूट जाय, तो जब तक मेरे घर आकर वे मुझसे पुस्तक खुलवाकर छूटा हुआ संबंध जोड़ नहीं लेते, तब तक चैन नहीं पड़ता। फिर वे बिना वजह देर →

स. १५-कथाकार कान्हजी भट्ट का जवाब सुनकर क्या वे वल्लभी श्रोतागण संतुष्ट हो गए अथवा और नाराज हो गए?

ज. १५- जब कान्हजी भट्ट ने उक्त प्रकार से सारी सच्चाई उन द्वेष करनेवाले वल्लभी श्रोताओं के आगे रख दी, तो "सच्चाई हमेशा कड़वी होती है" - इस कहावत के अनुसार उन वल्लभी श्रोताओं को भी →

स. १६-सभी चौधरी, नगरसेठ, वैष्णव आदि मिलकर कान्हजी भट्ट और श्री देवचन्द्रजी के खिलाफ छिद्र क्यों ढूँढ़ने लगे?

स. १७-इन छिद्र ढूँढ़नेवाले वल्लभियों को कौनसा मजबूत छिद्र मिला और किस विषय से संबंधित-स्पष्टतः समझाओ?

ज. १७- इन छिद्र ढूँढ़नेवाले नगर चौधरी वल्लभियों के हाथ जो एक मजबूत छिद्र लगा, वह यह था कि उनका मानना था कि श्री देवचन्द्रजी धर्मविरुद्ध चल रहे थे क्योंकि सभी वल्लभी श्रोता →

स. १८-श्यामजी के मंदिर में श्रीमद्भागवत कथा का क्या नियम था और श्री देवचन्द्रजी का कथा श्रवण करने का नियम कैसा था?

→ करनेवालों में से भी नहीं हैं। कार्य-कारणवश कभी साल-दो-साल में शायद एकाध बार ही उन्हें कथा में आने में देर हो जाती है। नहीं तो, वे सबसे पहले उपस्थित हो जाते हैं और सबसे अंत में कथा-मण्डान से जाते हैं। इसी कारण से मैं पाँच-दस मिनट उनका इंतजार कर दुबारा पुस्तक खोलने के बदले एक ही बार में कार्य समाप्त करना चाहता हूँ।" इस प्रकार भट्टजी ने उन द्वेष करनेवाले वल्लभियों को स्पष्ट जवाब दे दिया।

→ वे बातें बड़ी ही असह्य तथा कड़वी लगीं। उस समय उन सभी ने कान्हजी भट्ट की हाँ में हाँ तो मिलाई, किंतु अन्दर से वे बेहद नाराज हुये। अब तो उन वल्लभियों ने इस बात का बदला लेने के लिए एक मजबूत संगठन बना लिया और निश्चय कर लिया कि अब ऐसी गलती ढूँढ़ निकालेंगे, जिससे कथाकार और श्रोता दोनों का मुखमर्दन हो सके। इस तरह वे श्री देवचन्द्र और कान्हजी भट्ट का मुखमर्दन करने हेतु छिद्र ढूँढ़ने लगे।

ज. १६- सच्चाई हजम न कर सकने के कारण कथाकार कान्हजी भट्ट और श्रोता श्री देवचन्द्रजी दोनों से बदला लेने हेतु ये नगर चौधरी, सेठ आदि वल्लभी श्रोता मिलकर छिद्र ढूँढ़ने लगे।

→ एकादशी तिथि के दिन उपवास करते थे और बारस तिथि के दिन भोजन करते थे, परन्तु श्री देवचन्द्रजी तो एकादशी तिथि के दिन भोजन करते थे और बारस तिथि के दिन उपवास रहते थे। इन वल्लभियों के लिए यह उलटी गंगा तो एक बहुत बड़ा छिद्र था। अतः उन्होंने सोचा कि अब इस मुद्दे से हम इन दोनों को ठीक कर देंगे।

ज. १८- जामनगर श्यामजी के मंदिर के श्रीमद्भागवत की कथा अखण्ड रूप से चलती आयी थी। हर महीने में दो दिन अर्थात् महीने की द्वादशी तिथि को श्रीमद्भागवत कथा बन्द रहती थी। इसका कारण यह था कि द्वादशी तिथि के दिन ही श्री वेदव्यासजी का →

→ परलोकगमन हुआ था। पुनः सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की भागवत श्रवण करने की निष्ठा ऐसी थी कि जिस दिन आत्मा को भागवतामृतरूपी खुराक न मिले, उस दिन शरीर को भी →

स. १९-"अब दाव हमारा आइया" - ऐसा कौन और किससे कह रहे हैं? पुनः इन वल्लभी श्रोताओं ने कथाकार कान्हजी भट्ट से क्या कहा?

ज. १९- *"अब दाव हमारा आइया"* - ऐसा कान्हजी भट्ट के कथा मण्डान के बड़े-बड़े धनाढ्य नगर चौधरी, सेठ आदि वल्लभी श्रोतागण उनकी हाँ में हाँ मिलाकर छिद्र ढूँढ़नेवाले सरौतागणों के साथ मिलकर कथाकार कान्हजी भट्ट से कह रहे हैं। जब इन वल्लभी श्रोताओं को श्री देवचन्द्रजी के खिलाफ एक बड़ा छिद्र →

स. २०-इन फरियाद लेकर आनेवाले वल्लभियों की बातें सुनकर कथाकार कान्हजी भट्ट ने उन्हें सांत्वना देते हुए क्या कहा?

ज. २०- इन फरियाद लेकर आनेवाले वल्लभियों की बातें सुनकर कान्हजी →

स. २१-"जो वे करें सो समझ के" - ऐसा किसने, किससे कहा?

स. २२-जब श्री देवचन्द्रजी कथा-मण्डान में आ पहुँचे, तब कथाकार कान्हजी भट्ट ने सबके सामने ही उनसे क्या पूछा?

ज. २२- जब श्री देवचन्द्रजी कथा-मण्डान में आ पहुँचे, तब रोज की ही तरह चर्चा-कथा शुरू हुई। चर्चा-कथा के समाप्त होते ही कान्हजी भट्ट ने श्री देवचन्द्रजी से कहा, " देवचन्द्र ! आपके प्रति एक →

→ आहाररूपी खुराक नहीं देना और जिस दिन आत्मा को कथा श्रवणरूपी खुराक मिल जाय, उस दिन शरीर को भी आहाररूपी खुराक देने में कोई कमी नहीं करना।

→ मिल गया, तब उसकी फरियाद करने वे एक दिन कथा-मण्डान में श्री देवचन्द्रजी के आने से पहले ही पहुँच गए और कान्हजी भट्ट से कहने लगे, "अरे, भट्टजी! आपकी कथा-चर्चा सुनने और समझनेवाले श्रोता देवचन्द्र को आपने कैसे-कैसे गुह्य भेद बताए और समझाए हैं। वे गुह्य भेद आपने हमें क्यों नहीं बताए? वह आपका समझदार श्रोता देवचन्द्र तो एकादशी के दिन पेट भरकर भोजन करता है और द्वादशी के दिन एकादशी व्रत करता है। ऐसी उलटी गंगा बहाने का कार्य वह देवचन्द्र आपके द्वारा बताए गए ज्ञान-रहस्य के आधार बिना थोड़े ही करता होगा!"

→ भट्ट ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा, "देखिए! ऐसी बातें न कहीं लिखी हैं और न मैंने देवचन्द्रजी से कही हैं। आप सब हड़बड़ाइए नहीं। अभी कुछ ही देर में देवचन्द्रजी आ जायेंगे। आप सबके सामने ही मैं उनसे आपकी कही बातें पूछ लूँगा। किंतु मैं इतना तो निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि देवचन्द्रजी जो कुछ भी करेंगे, सोच समझ कर ही करेंगे।"

ज. २१- *"जो वे करें सो समझ के"*- ऐसा कथाकार कान्हजी भट्ट ने उन वल्लभी श्रोताओं से कहा, जो उनके पास देवचन्द्रजी की उलटी गंगा के विषय में फरियाद करने आये थे।

→ फरियाद आई है। इन सबका कहना है कि आप एकादशी तिथि के दिन पेट भरकर भोजन करते हैं और द्वादशी तिथि के दिन एकादशी का व्रत करते हैं। क्या ये बातें सच हैं? क्या आप सचमुच ऐसी उलटी गंगा बहाते हैं? यदि आप ऐसा ही करते हैं, तो कृपया इनके आगे स्पष्ट कर दीजिए कि आप ऐसा क्यों करते हैं? और यदि आप ऐसा नहीं करते, तो भी इन्हें स्पष्ट जवाब दे दीजिए। इनके कहने पर मेरा मन तो नहीं माना कि आप ऐसा करते होंगे। →

→ अब आप ऐसा करते हैं या नहीं, ये आप जानें। किंतु इन सबको →

स. २३-कथाकार कान्हजी भट्ट के श्री मुख से अन्य श्रोताओं की फरियाद सुनकर श्री देवचन्द्रजी ने क्या कहा?

स. २४- श्री देवचन्द्रजी ने जब कान्हजी भट्ट के सामने वल्लभियों द्वारा की हुई फरियाद को कबूल कर लिया, तब विरोधी पक्ष के श्रोता क्या कहने लगे?

स. २५-विरोधी पक्ष के श्रोतागणों ने व्यंगार्थरूप में क्या कहा? उनके द्वारा कही हुई बातों को प्रमाणित करनेवाली क्या कोई चौपाई है? यदि है, तो पेश करके स्पष्ट करो?

ज. २५- श्री देवचन्द्रजी द्वारा फरियाद की बातों को कबूल करते ही विरोधी पक्ष के वल्लभी श्रोता व्यंगार्थरूप में कहने लगे, "अरे! आप दोनों तो श्रीमद्भागवत ग्रन्थ की डाली-डाली, शाखा-प्रशाखा तथा पत्ते-पत्ते अर्थात् रग-रग में पहुँचे हुए हो। हम लोग तो कुछ नहीं →

स. २६ उन वल्लभियों के व्यंगपूर्ण प्रश्नों के उत्तर में कथाकार कान्हजी भट्ट ने क्या कहा?

स. २७-पुनः सबके सामने श्री देवचन्द्रजी से कान्हजी भट्ट ने क्या कहा?

ज. २७- पुनः सबके सामने कथाकार कान्हजी भट्ट ने श्री देवचन्द्रजी की →

→ शान्त करने का जिम्मा आपका ही है।" इस प्रकार कथाकार कान्हजी भट्ट ने श्री देवचन्द्रजी से सबके सामने ही पूछ लिया।

ज. २३- कथाकार कान्हजी भट्ट के श्रीमुख से अन्य श्रोताओं की फरियाद सुनकर श्री देवचन्द्रजी ने कहा, "हे भट्टजी! ये श्रोतागण झूठ थोड़े ही कह रहे हैं। सच ही तो कह रहे हैं। मैं ऐसा ही करता हूँ।"

ज. २४- श्री देवचन्द्रजी ने जब वल्लभियों द्वारा कथाकार कान्हजी भट्ट के सामने लायी हुई फरियाद का समर्थन किया, तब विरोधी पक्ष के श्रोतागण एक ही स्वर में कहने लगे, "अरे! ऐसा उलटा धर्म करने का कहाँ लिखा है, हमें भी बताओ? किस शास्त्र में लिखा है, ऐसी उलटी गंगा बहाने का धर्म हमें भी दिखाओ !"

→ समझते।" उक्त बातों को प्रमाणित करनेवाली चौपाइयाँ निम्नलिखित हैं। जैसे -

पर इतना हम समझत हैं, जो श्री भागवत दरखत।
ताकी एक डारी को, कोई बिरला पहुँचत।।

पुनः

पर तुम पात पात की रग में, है दरखत विस्तार।
तहाँ तुम सब में फिरवले, ऐसो औरन को नहीं विचार।।

-(श्री लालदास कृत बीतक साहेब, प्र. ५/चौ. २५,२६)।

ज. २६- उन वल्लभियों के व्यंगपूर्ण प्रश्नों के उत्तर में कथाकार कान्हजी भट्ट ने कहा, "अरे श्रोताओं! आप लोगों द्वारा कही हुई बातें, शास्त्रों में लिखी हुई हैं। मैंने स्वयं ही कई बार ये बातें आप लोगों को बताई-रटाई हैं। ये कोई नई बातें नहीं हैं।"

→ ओर इंगित करते हुए कहा, "अब आप द्वादशी के दिन एकादशी क्यों करते हैं और एकादशी के दिन पेट भरकर भोजन क्यों करते हैं, इन शंका-उपशंकाओं का समाधान इन श्रोताओं के आगे कर दीजिए।"

स. २८-कान्हजी भट्ट की आज्ञा पाते ही श्री देवचन्द्रजी ने अन्य श्रोताओं की शंका-उपशंकाओं का समाधान किस प्रकार कर दिया? स्पष्ट करो।

ज. २८- कान्हजी भट्ट की आज्ञा पाते ही नगर चौधरी, सेठ, वैष्णवी, वल्लभमार्गी श्रोताओं के आगे उनकी शंका-उपशंकाओं का समाधान करते हुए श्री देवचन्द्रजी ने कहा, "हे श्रोताओं! मैं →

स. २९-श्री देवचन्द्रजी ने एकादशी का व्रत न करने और उस दिन भोजन लेने के कारण के विषय में क्या कहा?

ज. २९- श्री देवचन्द्रजी ने एकादशी का व्रत न करने और उस दिन भोजन लेने के विषय में श्रोतागणों को समझाते हुए कहा, "हे मेरे प्यारे श्रोतागणों! आप लोग मुझसे यही जानना चाहते हैं न कि मैं एकादशी के दिन आहार क्यों लेता हूँ अर्थात् मैं एकादशी व्रत क्यों नहीं करता? अतः इसका कारण यह है कि आप सबके साथ मैंने भी भट्टजी के श्रीमुख से कुछ दिनों पहले ही श्रीमद्भागवत के नवम स्कन्ध के चौथे अध्याय में ब्राह्मण राजा अम्बरीस और दुर्वासा ऋषि के बीच हुए एकादशी व्रत के "पारण" विषय का संवाद सुना था। उस प्रसंग में भट्टजी ने हमें स्पष्टरूपेण सप्रमाण खुलासा करके समझाया था कि ब्राह्मण राजा अम्बरीस ने एकादशी व्रत स्वर्ग के सुख भोगने अथवा एकादशी देवी के चरण की प्राप्ति के लिए नहीं किया था, बल्कि श्रीकृष्ण की आराधना अथवा कृष्णभक्ति प्राप्त करने के लिए किया था। अतः उक्त प्रसंग द्वारा स्वतः ही यह सिद्ध हो जाता है कि एकादशी व्रत के पारण द्वारा स्वर्गीय सुख की प्राप्ति होती है और श्रीमद्भागवत कथामृत श्रवण द्वारा श्री कृष्ण परमात्मा के चरण-धाम की प्राप्ति होती है। एक ओर श्रीमद्भागवत श्रवण करना तथा दूसरी ओर एकादशी व्रत करना, तो दो नावों में पैर रखने जैसा है। यसर्थ मैं एकादशी व्रत नहीं करता क्योंकि मुझे स्वर्ग जाना ही नहीं है। मुझे तो श्री कृष्ण के धाम में जाना है।

उक्त प्रसंग हेतु कथाकार कान्हजी भट्ट ने हमें निम्नोक्त प्रमाण →

→ श्रीमद्भागवत कथारूपी अमृत को आत्मा की खुराक समझकर निष्ठापूर्वक प्रण लेकर सुन रहा हूँ। अतः मेरा ऐसा प्रण है कि जब तक आत्मा को भागवत कथामृतरूपी खुराक न मिल जाय, तब तक शरीर को आहाररूपी खुराक तो क्या पानी भी नहीं दूँगा। अपने इस प्रण के कारण ही मैं द्वादशी के दिन पानी तक ग्रहण नहीं करता। न कि मैं एकादशी व्रत करता हूँ क्योंकि उस दिन व्यासजी के परलोकगमन के कारण कथा बन्द रहती है।"

→ द्वारा समझाया था कि स्वयं एकादशी देवी का क्या कहना है। जैसे -

मद्व्रतं ये प्रकुर्वन्ति तेऽपि कालान्तरेषु च ।
हरि प्रसाद महात्माद् हरिं यास्यन्ति नान्यथा ।।

अर्थ :- जो नरात्माएँ मेरे नाम का व्रत करती हैं, उन्हें भी कालान्तर में अथवा अन्त समय में श्री कृष्ण के चरणों अथवा धाम की प्राप्ति के लिए श्री कृष्ण के प्रसाद के महत्त्व को जानना और उनका प्रसाद ग्रहण करना ही पड़ता है। दूसरा कोई रास्ता नहीं है।-

पुनश्च -

प्रत्यहं हरिदत्तान्नं ये भुञ्जन्ति नरोत्तमा ।
तानालोक्य पवित्राहं स्यामेकादश्यपि द्विजः ।।

-(नारद पंचरात्र)।

अर्थः- जो उत्तम नरात्माएँ (मनुष्यात्माओं में उत्तम) श्री कृष्ण चरणों के प्रति श्रद्धा, भाव, भक्ति रखते हुए श्री कृष्ण को चढ़ाए हुए अन्न (प्रसाद) का दैनिक उपभोग करतीं हैं, हे ब्राह्मण! श्री कृष्ण के उस अनन्य भक्त के दर्शन द्वारा ही मैं स्वयं एकादशी देवी पवित्र होती हूँ।

अतः उक्त कार्य-कारणवश ही मैं एकादशी व्रत नहीं करता। आप लोगों ने बिना सोचे-समझे मुझ पर यह आरोप लगाया था कि मैं एकादशी का व्रत द्वादशी के दिन करता हूँ। किंतु श्रीमद्भागवत श्रवण करने के लिए मैंने एक प्रण लिया था। वह →

→प्रण यह था कि श्री कृष्ण लीला कथामृत आत्मा की खुराक है। अतः जब तक मेरी आत्मा को खुराक न मिले, तब तक मैं अपने शरीर को भी आहार नहीं दूँगा। पुनः आत्मा को खुराक मिल जाने के बाद मैं शरीर को खुराक देने में भी कोई कमी नहीं रखूँगा। इसलिए जब द्वादशी तिथि के दिन मेरी आत्मा को श्रीमद्भागवत कथामृतरूपी खुराक नहीं मिलती, तब मैं शरीर को भी आहार नहीं देता, न कि मैं द्वादशी तिथि के दिन एकादशी तिथि का व्रत करता हूँ। पुनः एकादशी तिथि के दिन मेरी आत्मा को श्रीमद्भागवत कथामृतरूपी खुराक मिल जाने पर मैं शरीर को भी पूरी खुराक देता हूँ। एकादशी व्रत तो मैं कभी करता ही नहीं। मुझे थोड़े ही स्वर्ग जाना है। मुझे तो श्री कृष्ण के धाम में जाना →

स. ३०-"तिनको सुनके स्वर्ग का, ए सब साधना करत"- ऐसा किसने, किससे कहा?

ज. ३०- *"तिनको सुनके स्वर्ग का, ए सब साधना करत"*- ऐसा →

स. ३१-श्री देवचन्द्रजी का एकादशी व्रत विषयक विवेचनात्मक उत्तर सुनकर कथाकार कान्हजी भट्ट ने क्या कहा?

ज. ३१- श्री देवचन्द्रजी का उक्त प्रकार का एकादशी व्रत विषयक विवेचनात्मक निर्णय सुनकर सभी श्रोताओं के सामने कान्हजी भट्ट ने कहा, "हे देवचन्द्रजी! इन बिचारे श्रोताओं को आप क्या कह रहे →

स. ३२-"धन्य धन्य कह्या योंकर" अर्थात् किसने और किसे धन्य-धन्य कहा?

स. ३३-"नीर नयनों झरत है" अर्थात् कब और किसके नयनों से आँसू बहा करते थे और क्यों?

→ है। पुनः दो नावों में पैर रखने पर तो "न घर के, न घाट के" जैसी हालत हो जाती है। जिस साधन द्वारा श्री कृष्ण के आवागमनरहित धाम का दरवाजा तो क्या स्वर्ग का दरवाजा भी न खुले, वह साधन मैं क्यों करूँ? मेरी आन्तरिक समझ निम्न प्रकार है-

महाप्रसाद प्रभाव को, एक सीथ है जोइ ।
कोटि कोटि एकादशी, ताहि न पहुँचे सोइ ।।

अर्थात् श्रीकृष्ण प्रसाद के एक सीथ के पुण्य के तुल्य करोड़ों एकादशी व्रत के पुण्य भी नहीं पहुँच सकते, तो दैनिक श्री कृष्ण-अर्पण प्रसाद को ग्रहण करनेवाले क्या एकादशी व्रत के पुण्य का आसरा लेंगे? कदापि नहीं!!"

→ श्री देवचन्द्रजी ने कथाकार कान्हजी भट्ट के सामने उन श्रोताओं से कहा, जो परब्रह्म श्री कृष्ण के धाम में पहुँचानेवाली भागवत कथा सुनते हुए स्वर्ग पहुँचानेवाली एकादशी देवी के व्रत का साधन करते हैं।

→ हैं ? मैं स्वयं श्रीमद्भागवत कथा सुनानेवाला कथाकार भी एकादशी व्रत करते आया हूँ। यह विवेचन जब मुझमें ही नहीं है, तो इनमें कैसे आता भला? आज से मैं स्वयं कान पकड़कर एकादशी व्रत छोड़ रहा हूँ क्योंकि मुझे परब्रह्म श्री कृष्ण के धाम में जाना है, न कि स्वर्ग में। तो फिर मैं एकादशी व्रत क्यों करूँ? दो नावों में पैर रखनेवाला एक दिन अवश्य ही मोहरूपी सागर में डूब जाता है।"

ज. ३२- *"धन्य धन्य कह्या योंकर"* अर्थात् श्री देवचन्द्रजी का एकादशी व्रत विषयक विवेचनात्मक निर्णय सुनकर कथाकार कान्हजी भट्ट सहित नगर चौधरी एवं समस्त वल्लभी श्रोतागणों ने देवचन्द्रजी को धन्य-धन्य कहा।

ज. ३३- *"नीर नयनों झरत है"* अर्थात् श्री कृष्ण-कथा श्रीमद्भागवत श्रवण करते समय कथा-चर्चा में जब-जब व्रज-रास का प्रसंग आता था, तब-तब श्री देवचन्द्रजी के दिल में प्रेम उमड़ आता था और अचानक ही अश्रु बहने लगते थे।

स. ३४-श्री देवचन्द्रजी द्वारा निष्ठापूर्वक भागवत श्रवण करते-करते १४ वर्ष पूरे होने में कितने साल शेष रहे हैं?

❖ तारतम प्रकाश ❖

स. १-तीसरा दर्शन होने के कुछ समय पहले श्री देवचन्द्रजी पर माया ने किस रूप में आक्रमण किया?

स. २-श्री देवचन्द्रजी के ऊपर माया के आक्रमण के कितने लंघनों के पश्चात् पिता मतु महेता को वैद्य ढूँढ़कर लाना पड़ा?

स. ३-तीव्र ज्वर आने के कारण श्री देवचन्द्रजी के सारे कार्य छूट गये, किंतु एक ही कार्य नहीं छूट सका। अतः वह कौनसा कार्य था?

ज. ३- तीव्रातितीव्र ज्वर आने के कारण श्री देवचन्द्रजी के सारे कार्य छूट →

स. ४-ज्वर की औषधि देते हुए वैद्यजी ने पिता मतु महेता से क्या कहा?

ज. ४- वैद्यजी ने नाड़ी देखकर ज्वर की औषधि देते हुए पिता मतु महेता से कहा, "देखिए! मैं दवा तो दे रहा हूँ, किंतु यह दवा पिलाने के →

स. ५-वैद्य की बातें सुनकर माता कुँवरबाई ने क्या कहा?

ज. ५- वैद्य की उक्त प्रकार की बातें सुनकर माता कुँवरबाई से रहा नहीं →

ज. ३४- श्री देवचन्द्रजी द्वारा निष्ठापूर्वक श्री कृष्ण-कथा श्रीमद्भागवत श्रवण करते-करते चौदह वर्ष पूरे होने में अब केवल तीन साल ही शेष रहे हैं।

-(प्रकरण ५, सवाल-जवाब नं. ३४, कुल सं. २००+३४=२३४)।

❖ तारतम प्रकाश ❖

ज. १- श्री देवचन्द्रजी को अपने साधन पथ के लक्ष्य तक पहुँचने में अर्थात् तीसरा दर्शन प्राप्त करने में अभी कुछ ही समय शेष था कि उसी बीच उन्हें "पथ-च्युत" कराने के लिए उग्रातिउग्र माया ने ज्वर के रूप में उन पर आक्रमण किया।

ज. २- श्री देवचन्द्रजी के ऊपर आए मायावी आक्रमणरूपी ज्वर ने एक, दो, तीन, चार करते-करते दस-बारह ही नहीं बाईस लंघनों (उपवास) के बाद भी जब पीछा नहीं छोड़ा, तब मतु महेता को एक वैद्य ढूँढ़कर लाना पड़ा।

→ गये, किंतु इनमें से एक ही कार्य नहीं छूट सका, जिसे छुड़ाने के लिए माया ज्वर के रूप में टूट पड़ी। वह कार्य यह था कि जो भी हो जाय, किंतु श्यामजी के मंदिर जाकर श्रीमद्भागवत कथा श्रवण करने की निष्ठा नहीं छोड़ना।

→ पश्चात् इन्हें बिलकुल भी बाहरी हवा लगने नहीं देना क्योंकि बाहरी हवा लगते ही इन्हें तुरन्त सन्निपात हो जायेगा। उसके बाद तो इनके बचने की कोई उम्मीद नहीं रहेगी। अतः आपको इनका बहुत ही जतन करना होगा।"

→ गया और वे तुरन्त बोल उठीं, "अरे! हम इसका जतन कैसे करें? यह तो अभी का अभी श्रीमद्भागवत श्रवण करने जायेगा। मानेगा ही नहीं। हमारी बात माने, तो न इसका जतन करें।"

स. ६-माता कुँवरबाई की बात सुनते ही वैद्य ने क्या किया और क्यों?

ज. ६- माता कुँवरबाई की हलकी बातें सुनते ही वैद्य ने तुरन्त ही दी हुई दवाई की पुड़िया वापस ले ली और कहा, "तुम लोगों को मज़ाक सूझ रहा है? यह दवा लेने के बाद यदि इन्हें बाहर की तनिक-सी →

स. ७-पिताश्री मतु महेता ने श्री देवचन्द्रजी के विषय में वैद्यजी से क्या कहकर दवा वापस ले ली और क्यों?

ज. ७- वैद्यजी को दवा वापस लेकर जाते देखकर पिता मतु महेता ने आगे बढ़कर उन्हें रोका और विश्वास दिलाते हुए कहा, "मुझे इसे मरने →

स. ८-"देह राखे होय धरम" और "धर्म राखे ते देह है"- इन दोनों कथनों में से कौन-कौनसे कथन किस-किस के द्वारा कहे गए हैं? दोनों में से किसकी बात ठीक जँचती है और क्यों?

ज. ८- *"देह राखे होय धरम"*, और *"धर्म राखे ते देह है"*- उक्त →

स. ९-जब श्री देवचन्द्रजी ने काढ़ा (दवा) पी कर कान बाँधा और लाठी के सहारे चलने को तैयार हुये, तब उन्हें क्या पता चला?

ज. ९- श्री देवचन्द्रजी ने वैद्यजी के कहे प्रमाण काढ़ा पी लिया और थोड़ी →

स. १०- " रे मूरखों मैं मरने का नहीं" - ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा?

ज. १०-*" रे मूरखों मैं मरने का नहीं* अर्थात् कथा-चर्चा में जाने से मैं मरूँगा नहीं। अतः यह मूर्खपना छोड़ दीजिए और मुझे जाने →

→ भी हवा लगी न, तो तुरंत ही इन्हें सन्निपात हो जायेगा और ये मर जायेंगे। इनके मर जाने पर तुम्हीं लोग मुझसे कहने लगोगे कि औषधि दी थी या जहर दिया था, जिसे पिलाते ही यह मर गया। मैं अपनी बदनामी कराने के लिए तुम्हें यह दवा नहीं दूँगा।" ऐसा कहकर वैद्यजी वापस जाने लगे।

→ से बचाना है। आप यह औषधि मुझे दे दीजिए। मैं इसका पूरा ख्याल रखूँगा। अपने से पहले मैं इसे मरने नहीं दूँगा क्योंकि यह मेरा एक मात्र पुत्र है। ये चला जायेगा, तो मुझे स्वर्ग कौन उतारेगा? अतः आज मैं इन्हें भागवत श्रवण करने हेतु जाने नहीं दूँगा। देह रहेगी, तो धर्म तो होता रहेगा।" इस तरह कहते हुए पिता मतु महेता ने वैद्यजी के हाथ से औषधि वापस ले ली।

→ दोनों कथनों में से "देह राखे होय धरम"-यह कथन मतु महेता का है। उनके अनुसार यदि श्री देवचन्द्रजी शरीर की रक्षा करेंगे, तो उस शरीर द्वारा भागवत श्रवणरूपी धर्म तो कई बार हो सकता है। पुनः "धर्म राखे ते देह है"-यह कथन श्री देवचन्द्रजी का था। उनके अनुसार धर्म की रक्षा करने पर देह अपने-आप ही सुरक्षित हो जाती है। अतः श्री देवचन्द्रजी का कथन ही सही जँचता है क्योंकि धर्म ही मुख्य है, न कि देह।

→ देर सो भी गए। परन्तु जैसे ही श्रीमद्भागवत कथा श्रवण करने जाने का समय हुआ, वैसे ही वे उठकर बैठ गए और कथा में जाने के लिए कान बाँधकर लाठी लेकर उठ खड़े हुए। किंतु जैसे ही वे दरवाजा खोलने गए, उन्हें पता चला कि बाहर से दरवाजा बन्द कर दिया गया है।

→ दीजिए।" - ऐसा श्री देवचन्द्रजी ने अपने ही माता-पिता से कहा क्योंकि उनके माता-पिता ज्वर आने के कारण नहीं चाहते थे कि श्री देवचन्द्रजी आज के दिन कहीं जाएँ और यदि श्री देवचन्द्रजी श्यामजी के मंदिर कथा श्रवण में नहीं पहुँचते, तो उनकी चौदह साल निष्ठापूर्ण की हुई मेहनत पर पानी फिर जाता।

स. ११-जब श्री देवचन्द्रजी भँवरी खाकर जमीन पर गिर पड़े, तब माता कुँवरबाई क्या कहने लगी?

ज. ११- जब कई बार पुकारने पर भी माता-पिता नहीं माने, तब अपने माता-पिता के प्रति श्री देवचन्द्रजी के मन में बैर उमड़ आया और →

स. १२-"कठिन कह खुलाए द्वार" अर्थात् किसने और कैसे कठिन वचन कहे?

ज. १२- "कठिन कह खुलाए द्वार" अर्थात् माता कुँवरबाई ने ऐसे-ऐसे कठिन वचन कहकर द्वार खुलाए कि "जिसे सुनते ही सुननेवाला →

स. १३-"यों पुकार सुनावें कान" अर्थात् पिता मतु महेता ने श्री देवचन्द्रजी को कान में पुकार-पुकार कर क्या सुनाया?

ज. १३- *"यों पुकार सुनावें कान"* अर्थात् जब दरवाजा खोलकर मतु महेता अंदर आए, तो उन्होंने देखा कि श्री देवचन्द्रजी की नाड़ी बन्द है। आँख में का सफेद भाग बाहर है और काला भाग अन्दर। →

स. १४-जब श्री देवचन्द्रजी होश में आ गये और उठने की कोशिश करने लगे, तब पिता मतु महेता ने उनसे क्या कहा?

स. १५-पिता मतु महेता श्री देवचन्द्रजी को भागवत कथा-मण्डान में पहुँचाने गए या नहीं ? या श्री देवचन्द्रजी अकेले ही गए? तब श्री देवचन्द्रजी ने क्या सोचा ?

स. १६-श्यामजी के मंदिर में पहुँचते ही पिता मतु महेता ने कान्हजी भट्ट से क्या कहा?

→ श्रीमद्भागवत श्रवण के प्रति प्रेम। जैसे - "व्रह तामस रे भेलां थयां, त्यारे अंगडां थयां रे पतन" इस चौपाई को चरितार्थ करते हुए श्री देवचन्द्रजी भँवरी खाकर जमीन पर गिर पड़े। तब कुँवरबाई ऊपरवाले को पुकारती हुई "मेहेर करो, क्षमा करो" इस तरह प्रार्थना करने लगी।

→ समझ जाय कि काम तमाम हो गया। उस समय माता कुँवरबाई ने कठिन शब्दों का प्रयोग करते हुए कहा, "अरे! क्या देख रहे हो? अब तो काम हो गया। अब जाकर कफन ले आओ।" कफन शब्द सुनते ही मतु महेता दरवाजा खोलकर अन्दर आ गए।

→ वे सोच में पड़ गए कि अब क्या करूँ? भागवत श्रवण करने जाने से रोकने पर ही यह सब हुआ। कदाच भट्टजी का नाम कान में सुनाएँ, तो शायद इन्हें होश आ जाए। ऐसा विचार कर वे श्री देवचन्द्रजी के कान में जोर-जोर से पुकारने लगे, "हे देवचन्द्र! भट्ट को बुलावा आए, भट्ट को बुलावा आए!!" जब इस तरह पाँच-सात बार उनके कान में पुकारा, तब दस मिनट बाद श्री देवचन्द्रजी को होश आ गया और वे तुरंत उठकर भागवत श्रवण में जाने के लिए लाठी पकड़कर तैयार हो गए।

ज. १४- जब श्री देवचन्द्रजी होश में आ गये और उठने की कोशिश करने लगे, तब पिता मतु महेता ने उनसे कहा, "क्या भागवत श्रवण में जाना है ? मैं पहुँचा दूँ ?"

ज. १५- पिता मतु महेता श्री देवचन्द्रजी को भागवत कथा-मण्डान में पहुँचाने हेतु स्वयं गए। तब श्री देवचन्द्रजी मन ही मन में सोचने लगे, "पहले का पवन क्या अब पवन लोक में आराम करने चला गया?"

ज. १६- श्यामजी के मंदिर में पहुँचते ही पिता मतु महेता ने कान्हजी भट्ट से कहा, "भगवान श्री कृष्णजी ने मुझे एक ही पुत्र दिया था, वह भी आज मैं उन्हें सौंप देने आया हूँ।" इस प्रकार कहते हुए उन्हें सौंप दिया।

स. १७-मतु महेता की बातें सुनते ही कान्हजी भट्ट ने क्या कहा?

ज. १७- मतु महेता की उक्त बातें सुनते ही कान्हजी भट्ट ने उनसे पूछा, →

स. १८-कान्हजी भट्ट द्वारा पिता मतु महेता से कही हुई बातें सुनकर श्री देवचन्द्रजी ने उसके जवाब में क्या कहा?

स. १९-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के समक्ष आई उग्र ज्वररूपी माया कब दूर चली गई?

ज. १९- आज सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के माया के साथ चल रहे महायुद्ध →

स. २०-"यही कसनी की हद" अर्थात् सद्गुरु की खोज के दौरान किस कसौटी को कठिन सीमा कहा है?

स. २१-सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी ज्वर उतरने के पश्चात् कब-किस दिन से पथ्य (आहार) लेने लगे?

स. २२-कब से अर्थात् किस दिन से गिनती की जाय, तो "दिन दस पंद्रह हुए" - इस कथन के हिसाब से सद्गुरु स्वरूप को श्री राजजी स्वरूप के प्रत्यक्ष दर्शन हुये?

ज. २२- जिस दिन सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी का माया के साथ अन्तिम →

स. २३-"तुमको मेरी है पहिचान?"- ऐसा किसने, किससे, कब और कहाँ पूछा तथा वे स्वरूप कौन थे और किस अवस्था में थे? उन स्वरूप द्वारा पूछे गए प्रश्न का जवाब सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी ने किस तरह दिया?

→ "क्या तबीयत ठीक नहीं है? यदि ऐसा था, तो आप मुझसे कह देते। मैं आपके घर आकर ही श्रीमद्भागवत की कथा आपको श्रवण करा देता!"

ज. १८- कान्हजी भट्ट द्वारा पिता मतु महेता से कही हुई बातें सुनते ही श्री देवचन्द्रजी बोले, "यदि आप मेरे घर आ जाते, तो मेरी चौदह वर्ष की तपस्या बरबाद हो जाती।"

→ की अन्तिम चढ़ाई थी। अतः जब वे श्रीमद्भागवत सुनने के आसन पर बैठकर कथामृत का पान करने लगे, तब से ज्वररूपी माया धीरे-धीरे उतरते-उतरते निर्मूल हो गई। कथा श्रवण करके जब वे आसन से उठे, तब ज्वर बिलकुल निर्मूल हो गया।

ज. २०- *"यही कसनी की हद"* अर्थात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की खोज के दौरान ज्वर के रूप में उन्हें साधनारूपी पथ से च्युत करने आई माया को ही कठिनातिकठिन कसौटी की सीमा कहा है। परन्तु यहाँ माया परास्त होकर अपने क्षेत्र में चली गई।

ज. २१- सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी जब माया को परास्त कर कथा श्रवण कर घर वापस लौटे, तभी से पथ्य के रूप में भाजी, मूँग की दाल का पानी इस तरह का हलका आहार लेने लगे।

→ महायुद्ध था तथा उनसे परास्त होकर माया अपने क्षेत्र में चली गई, उस दिन से यदि गिनती की जाय तो *"दिन दस पंद्रह हुए"* - इस कथन के हिसाब से पूरे चौबीस दिन बीतने के पश्चात् पचीसवें दिन श्री देवचन्द्रजी स्वरूप को अक्षरातीत श्री राजजी के प्रत्यक्ष तीसरे दर्शन रासमण्डलवाले वेश में हुए।

ज. २३- *"तुमको मेरी है पहिचान?"*- यह प्रश्न अक्षरातीत श्री कृष्णजी ने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से जामनगर स्थित श्यामजी के मंदिर में श्रीमद्भागवत कथामृत श्रवण करते समय योगमाया समावृत करके दर्शन देकर पूछा। वे दर्शन देनेवाले स्वरूप अक्षरातीत के श्याम स्वरूप थे और किशोरावस्था में प्रकट हुये थे। उनके द्वारा →

→ पूछे गए प्रश्न का जवाब देते हुए सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने कहा, →

स. २४-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी का जवाब सुनने के पश्चात् दर्शन देनेवाले स्वरूप ने उनसे क्या-क्या पूछा?

ज. २४- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी का जवाब सुनने के पश्चात् दर्शन देनेवाले अक्षरातीत स्वरूप ने उनसे पाँच अनादि प्रश्न पूछे, जो निम्नलिखित हैं। जैसे - →

स. २५-उक्त कथित पाँच प्रश्नों में से एक ही प्रश्न का जवाब देते हुए सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने क्या कहा?

स. २६-"अब बतावें हम" - ऐसा कौन और किससे कह रहे हैं? उक्त प्रश्नों के जवाब के माध्यम से श्री राजजी ने किन चार विषयों का खुलासा किया? क्रमशः स्पष्ट करो।

ज. २६- *"अब बतावें हम"* - ऐसा दर्शन देनेवाले अक्षरातीत स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से कह रहे हैं। उक्त पाँच प्रश्नों के माध्यम से अक्षरातीत स्वरूप ने निम्नलिखित चार विषयों का खुलासा किया है। जैसे- →

स. २७-उक्त बातें सुनकर सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी ने क्या कहा?

ज. २७- उक्त बातें सुनकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने उन स्वरूप से आश्चर्यचकित होकर पूछा, "हे धनी! वे साथ कहाँ हैं ?" तब →

स. २८-सद्गुरु स्वरूप ने दर्शन देनेवाले अक्षरातीत स्वरूप से आश्चर्यचकित होकर क्या पूछा और उसका उन्हें क्या जवाब मिला?

→ "आप मेरे धनी हैं। मेरी आत्मा ऐसी ही साक्षी देती है।"

→ १) तू कौन है?
२) यहाँ-इस संसार में क्यों आई है?
३) तेरा मूल घर कहाँ है?
४) तू किन स्वरूप की अर्धांग है?
५) तू जिस संसार को देख रही है, वह तुझे स्वप्नवत् प्रतीत होता है या जागृत-सा अर्थात् झूठा प्रतीत होता है या सच्चा ?

ज. २५- उक्त कथित पाँच प्रश्नों में से पाँचवें प्रश्न का जवाब देते हुए सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने कहा, "हे धनी! यह दृश्यमान् जगत् नश्वर एवम् स्वप्नवत् है। किंतु सच्चा-सा भास होता है। मैं केवल इतना ही जानता हूँ अर्थात् ऐसा अनुभव कर रहा हूँ।"

→ १) तुम अक्षरातीत धाम की श्री श्यामाजी का अवतार हो।
२) तुम अकेली नहीं हो। तुम यहाँ संसार में अपने धाम की सखियों के साथ झूठा प्रपंचरूपी खेल देखने आई हो। अब उन्हें जगाकर धाम लेकर आना।
३) तुम्हारा अनादि अखण्ड घर अक्षरातीत धाम है।
४) चौदह लोक ब्रह्माण्ड में तुम्हारा संबंधी, कोई नहीं है। तुम मेरी हो।

→ उन्हें जवाब मिला, *"कह्या मैं भेजों तमाम"* अर्थात् वे साथ कहाँ हैं, मुझे मालूम है। मैं उन्हें तुम्हारे पास भेज दूँगा। तुम इस बात की चिंता मत करना। तुम्हारे पास जो आयें, उन्हें तुम अच्छी तरह सँभालना और समझाना।"

ज. २८- जब दर्शन देनेवाले अक्षरातीत स्वरूप ने सद्गुरु से कहा, "अब तुम्हें जो कुछ पूछना है, पूछ लो। इस तरह से मैं तुम्हें फिर दर्शन नहीं दूँगा।" तब सद्गुरु स्वरूप ने आश्चर्यचकित होकर उनसे →

→पूछा, "हे धनी! आप मुझसे पुनः इस तरह नहीं मिलेंगे, दर्शन नहीं देंगे, तो जाएँगे कहाँ?" तब जवाब में दर्शन देनेवाले स्वरूप →

स. २९-उक्त बातों के पश्चात् दर्शन देनेवाले स्वरूप ने श्रीमद्भागवत के विषय में सद्गुरु स्वरूप से क्या कहा?

ज. २९- श्रीमद्भागवत के विषय में दर्शन देनेवाले स्वरूप ने सद्गुरु स्वरूप से कहा, "यह भागवत ग्रन्थ तुम्हारी ही चिट्ठी है और तुम्हारे ही घर से आई हुई है। अतः इसका अर्थ तुम्हारे द्वारा ही खुल सकेगा, अन्य किसी से नहीं क्योंकि तेरे घर की बातें अन्य कोई कैसे →

स. ३०-दर्शन देनेवाले स्वरूप ने अन्त में सद्गुरु स्वरूप से क्या कहा?

ज. ३०- तीसरी बार के दर्शन में जामनगर स्थित श्यामजी के मंदिर में दर्शन देनेवाले स्वरूप ने श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु स्वरूप को अन्य संपूर्ण बातों की जानकारी कराने के पश्चात् अन्त में, →

स. ३१-तारतम देनेवाले स्वरूप के क्या कहने पर सद्गुरु स्वरूप ने जवाब में उनसे, "तब मोको कहा पूछना" - ऐसा कहा?

स. ३२-तीसरा दर्शन देनेवाले स्वरूप ने सद्गुरु स्वरूप को "ए कहे तारतम बीज बचन" अर्थात् तारतम महामंत्र कब-किस वक्त सुनाया?

स. ३३-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी का मन पहले प्रफुल्लित हुआ या श्री राजजी पहले अदृश्य हुए? दोनों में से कौनसी घटना पहले हुई?

→ ने उनसे कहा, "अरे! मैं अन्यत्र कहीं नहीं जाऊँगा। तुम्हारे अन्दर हृदयधाम (मन मंदिर) में आकर विराजमान होऊँगा।"

→ समझ सकेगा? जो उस घर का न हो, वह उन बातों को पढ़कर भी समझ नहीं पायेगा और बिना समझे उसी में फिरता रहेगा। जैसे -

यह भागवत कागद तुम्हारा, ए तुम्हें खुले कलाम ।
और कोई ना खोल सके, ए जो खलक आम ।।
- (श्री लालदास कृत बीतक साहेब, प्र. ६./चौ. ३२)।

→ *"ए कहे तारतम बीज बचन"* सोलह अक्षरवाला चिंतामणीरूप बीज तारतम-ब्रह्मतारक तारतम मंत्र प्रदान किया। जैसे -

मन्त्रश्चिन्तामणिः प्रोक्तः षोडशार्णो महामनुः।
ब्रह्मप्रियाणां सान्निध्यं ददात्येव न संशयः ।।
-(पद्मपुराणे)।

ज. ३१- श्री राजजी अर्थात् तारतम देनेवाले स्वरूप ने जब सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी से कहा कि वे अन्यत्र कहीं नहीं जाएँगे, किंतु उनके अन्दर-हृदयधाम में आकर विराजेंगे, तब ऐसा सुनते ही सद्गुरु स्वरूप ने जवाब दिया, *"तब मोको कहा पूछना।"*

ज. ३२- तीसरा दर्शन देनेवाले स्वरूप ने सद्गुरु स्वरूप को श्यामजी के मंदिर में चर्चा-कथा सुनते वक्त अन्य सम्पूर्ण हकीकत समझाने के बाद अन्त में *"ए कहे तारतम बीज बचन"* अर्थात् बीज तारतम सुनाया।

ज. ३३- जब श्री राजजी अदृश्य होकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के हृदयधाम में विराजमान हुए, तब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी का मन प्रफुल्लित हो उठा। अतः श्री राजजी पहले अदृश्य हुए और सद्गुरु स्वरूप का मन बाद में प्रफुल्लित हुआ।

स. ३४-दर्शन देनेवाले स्वरूप के अदृश्य होते ही सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी को क्या होने लगा? उनकी दिव्य दृष्टि के खुल जाने से क्या परिवर्तन हुआ?

स. ३५-दिव्य दृष्टि खुलते ही सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी को भागवत शास्त्र के विषय में क्या अनुभव होने लगा?

स. ३६-दर्शन प्राप्त करने के पश्चात् सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी ने श्यामजी के मंदिर में श्री कान्हजी भट्ट के पास जाकर कथा श्रवण के विषय में क्या कहा?

ज.३६- दर्शन प्राप्त करने के पश्चात् दूसरे दिन सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी पूजन विधि की सम्पूर्ण सामग्रियाँ जैसे फल, फूल, वस्त्रादि लेकर कान्हजी भट्ट के पास गये और उनके आगे हाथ →

स. ३७-अब सद्गुरु स्वरूप के दिल में क्षण-प्रतिक्षण क्या होने लगा?

ज. ३७- जब से दर्शन देकर अपने संबंध का परिचय कराने के बाद दर्शन देनेवाले अक्षरातीत स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के हृदयधाम में विराजमान हुए, तभी अर्थात् उसी क्षण से सद्गुरु स्वरूप को →

स. ३८-सद्गुरु स्वरूप ने अपने दिल के अलौकिक अनुभव को सुनाने हेतु सर्वप्रथम किसे याद किया और क्यों?

ज. ३८- चिंताजनक एवं उत्सुक दशा में सद्गुरु स्वरूप को सेन वंश का एक हजाम मिला। सद्गुरु स्वरूप उसे उसकी दिन भर की कमाई देकर चर्चा-कथा सुनाने लगे, किंतु उनकी मेहनत व्यर्थ गई। →

ज. ३४- दर्शन देनेवाले स्वरूप के अदृश्य होते ही सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी की दिव्य दृष्टि खुल गई और दिव्य दृष्टि के खुलते ही उनकी नजर सत वस्तु-अखण्ड व्रज और रास लीला को देखते-देखते श्री परमधाम की लीला में पहुँच गई।

ज. ३५- दिव्य दृष्टि के खुलते ही सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी के अंदर के श्रीमद्भागवत ग्रन्थ के गूढ़ातिगूढ़ सम्पूर्ण रहस्य अपने-आप खुलने लगे। ऐसे-ऐसे विषय जो अब तक रहस्यमयरूप में गुँथे हुए थे, वे सब अब सरल-सुगम हो गए।

→ जोड़कर नम्रतापूर्वक अर्ज की, "हे भट्टजी! आप धन्य-धन्य हैं। आपकी दया-कृपा से मुझे जो तत्त्व (वस्तु) प्राप्त होना था, सो हो गया। अब मैं आपका पूजन कर यहाँ से विदा होने आया हूँ। मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। अब कल से आप उसी तरह से कथा-चर्चा सुनाते जाइयेगा, जिस तरह आप मेरे आने से पहले सुनाते आए थे। कल से मैं आऊँ या न आऊँ, आप मेरे इंतजार में चर्चा-कथा बन्द न करिएगा।" इस तरह सद्गुरु स्वरूप कान्हजी भट्ट का विधिपूर्वक पूजन आदि कर उनसे विदा लेकर घर लौट आए।

→ अपनी उस जमात की चिंता होने लगी। आत्म-परिचय करानेवाला जो ज्ञान तथा जो आत्म-परिचय प्राप्त हुआ, जिसे धनी ने सभी सखियों तक पहुँचाने और उन्हें जागृत कर पुनः अपने धाम ले आने के लिए दिया है, वह सखियों तक कैसे पहुँचाया जाय, इस बात की चिंता क्षण-प्रतिक्षण बढ़ने लगी। हर पल यह चर्चा किसे बताऊँ, किसे सुनाऊँ, वह कौन होगा, जिसे धनी भेजेंगे? - ऐसी चिंता में वे उत्सुकतापूर्वक विभोर होने लगे।

→ वह हजाम तीसरे ही दिन चर्चा से उठकर भाग गया। तत्पश्चात् सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजी ने सर्वप्रथम नगरसेठ गांगजी भाई शाह को याद किया। वे उन्हें इस अलौकिक ज्ञान के सच्चे एवम् पक्के पात्र लगे क्योंकि सद्गुरु स्वरूप श्यामजी के मंदिर में भागवत श्रवण करते समय से ही उनके संस्कारों एवं सुविचारों से भली-भाँति परिचित थे।

स. ३९-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी का नगरसेठ गांगजी भाई के साथ कब से परिचय था?

ज. ३९- सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी द्वारा निष्ठापूर्वक श्रीमद्भागवत श्रवण करते समय जिस दिन से एकादशी व्रत के विवेचन के विषय में गांगजी भाई ने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के ऊपर ऊपरवाले →

स. ४०-श्यामजी के मंदिर में भागवत सुनते समय भागवत की चर्चा-कथा के विषय में सद्गुरु स्वरूप और गांगजी भाई के बीच कैसी लगन थी?

ज. ४०- अरे! भला यह भी कोई पूछने की बात है? इन दोनों-सद्गुरु स्वरूप →

स. ४१-"हम तुम भागवत सुनते दोय"- ऐसा किसने, किससे कहा?

स. ४२-जब गांगजी भाई को सद्गुरु स्वरूप ने अखण्ड ज्ञान-सत वस्तु प्राप्त करने का सच्चा पात्र देखा, तब क्या किया?

ज. ४२- गांगजी भाई शाह ने हाथ जोड़ते हुए एक दिन सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी के आगे अपने दिल की बात रखते हुए कहा, "हे देवचन्द्रजी! श्यामजी के मंदिर में कान्हजी भट्ट के श्रीमुख से एक ही कथा-मण्डान में आपके साथ मैं भी श्रीमद्भागवत की कथा-चर्चा सुनते आया हूँ। उसी चर्चा में से आपको ऐसी-ऐसी विवेचनवत् समझ कहाँ से और कैसे प्राप्त होती है ? आपके एकादशी व्रत के विवेचन ने तो स्वयं कथाकार कान्हजी भट्ट को →

स. ४३-जब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने गांगजी भाई को योग्य पात्र समझकर याद करके बुलावा भेजा, तब गांगजी भाई कहाँ थे?

→ की दया महसूस की थी, तभी से वे सद्गुरु के साथ श्रीमद्भागवत कथा की चर्चा-की-चर्चा बीच रास्ते पर खड़े होकर करते आए थे। दोनों आपस में चर्चा-की-चर्चा द्वारा नजदीक आकर परस्पर विश्वास के पात्र बन गए थे। इस प्रकार दोनों में एक दूसरे के प्रति गाढ़ प्रेम उत्पन्न हो गया था।

→ और गांगजी भाई के भागवत श्रवण की चर्चा-की-चर्चा की लगन को तो उस वक्त जिस पनिहारी ने देखी होगी, उसी ने अनुभव कर सकी होगी। इन दोनों को रास्ते के बीच खड़े-खड़े चर्चा करते देखकर उस पनिहारी के पैर थक जाया करते थे और वह कई बार चिल्ला उठती थी, किंतु दोनों के पैर तो थकते ही नहीं थे।

ज. ४१- *"हम तुम भागवत सुनते दोय"*- यह कथन नगरसेठ गांगजी भाई शाह ने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से कहा।

→ भी कान पकड़वाकर कबूल करवा दिया कि " ऐसी विवेचन शक्ति तो स्वयं उनमें ही नहीं है, तो उनके श्रोताओं में कैसे आ पाती ?" इस प्रकार कहते हुए उसी दिन गांगजी भाई ने सद्गुरु स्वरूप के आगे हाथ जोड़कर अर्ज की थी, "हे देवचन्द्रजी! आज से आप मुझसे ऐसे-ऐसे विवेचन-वस्तु छिपाइयेगा नहीं, मुझे भी समझाते जाइयेगा।" गांगजी भाई द्वारा ऐसी जिज्ञासा प्रकट करने पर ही गांगजी भाई और सद्गुरु स्वरूप के बीच चर्चा-की-चर्चा शुरू हुई थी। उक्त प्रकार से चर्चा-कथा का जिज्ञासु एवं विवेकशील पात्र जानकर अखण्ड ज्ञान-सत् वस्तु समझाने हेतु सद्गुरु स्वरूप ने गांगजी भाई को याद किया और तुरंत बुलावा भेजा।

ज. ४३- जब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने गांगजी भाई को बुलावा भेजा, उस समय गांगजी भाई व्यापार के सिलसिले में नाव में चढ़कर विदेश जाने हेतु निकले थे। परन्तु पवन अनुकूल न होने के कारण →

→ नाव बीच में अटकी थी। नाव में श्री राजजी ने दो बार दर्शन देकर सद्गुरु की शरण में जाने का इशारा किया। अंत में तीसरी बार दर्शन देकर कहा, *"हम अब मुरकाबैं तुमहिं"* और नाव को पुनः किनारे लाकर खड़ा कर दिया। गांगजी भाई समझ गए →

स. ४४-जब सद्गुरु स्वरूप ने गांगजी भाई के आगे श्यामजी के मंदिर में प्राप्त हुए तीसरे दर्शन का खुलासा किया, तब गांगजी भाई के और अधिक जिज्ञासु हो जाने पर सद्गुरु स्वरूप ने उन्हें क्या कहा?

ज. ४४- जब सद्गुरु स्वरूप धनी श्री देवचन्द्रजी ने नगर सेठ श्री गांगजी भाई शाह के आगे श्यामजी के मंदिर में प्राप्त हुए तीसरे दर्शन की →

स. ४५-जब गांगजी भाई अत्यन्त प्रसन्न होकर सद्गुरु की चर्चा सुनने आने लगे, तब सर्वप्रथम श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त की चर्चा कहाँ से शुरू हुई?

ज. ४५- उक्त प्रकार से विषय वस्तु के खुलस्त होने के पश्चात् श्यामजी →

❖ संक्षिप्त जीवन वृत्त ❖

स. १-दूसरी बार खेल में अक्षरातीत धाम से सखियाँ कब-कौन-सी तिथि तथा किस विक्रम संवत् में आईं?

ज. १- व्रज-रास खेलकर अक्षरातीत धाम में पहुँची हुई सखियाँ-ब्रह्मात्माएँ, दूसरी बार खेल में वि. सं. १६३८ में अश्विन माह के शुक्ल पक्ष की →

स. २-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी श्री अक्षरातीत धाम से पुनः कहाँ अवतरित हुये और वहाँ से कहाँ-कहाँ होते हुए हल्लार देश नवतनपुरी आ पहुँचे?

→ और तुरन्त नाव से उतरकर सद्गुरु की शरण में जाने को तैयार हुए। वे जैसे ही नाव से उतरकर १०-२० कदम ही चले थे कि अचानक पवन अनुकूल हो गया और नाव निकल गई। तब गांगजी भाई दौड़कर सद्गुरु की शरण में आ पहुँचे।

→ बातें विस्तारशः संपूर्ण हकीकत सहित तथा श्री राजजी से हुए वार्तालाप को भी शब्दशः सुना दिया, तब दर्शन विषयक वे सारी बातें सुनते ही गांगजी भाई के दिल-दिमाग में इतनी उत्सुकता और जिज्ञासा उमड़ पड़ी कि और आगे क्या हुआ, और आगे क्या हुआ? इस तरह पूछते ही गए। तब सेठ गांगजी भाई को सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजी ने पाँच साल की उम्र से उनके अपने ही साथ क्या-क्या घटते आया, वहाँ से लेकर तीसरे दर्शन तक की सारी कहानी क्रमशः विस्तार से सुना दी।

→ के मंदिर में कथा श्रवण करने जानेवाले प्रसिद्ध नगरसेठ गांगजी भाई शाह अब दैनिक सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजी के पास अत्यंत प्रसन्न होकर चर्चा श्रवण करने आने लगे। अतः श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त की कथा-चर्चा सर्वप्रथम "श्री राज मंदिर" से शुरू हुई।

-(प्रकरण ६, सवाल-जवाब नं. ४५, कुल सं. २३४+४५=२७९)।

❖ संक्षिप्त जीवन वृत्त ❖

→ चतुर्दशी तिथि के दिन सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजी के साथ खेल में अवतरित हुईं। उक्त कथन की साक्षी देनेवाली चौपाई निम्नलिखित है। जैसे-

साल नव से नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब ।
रूह अल्ला मिसल गाजियों, मोमिन उतरे तब ।।

-(श्री लालदास कृत बीतक साहेब, प्र. ७/चौ. १)।

ज. २- सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजी पुनः चौथे आसमान श्री अक्षरातीत धाम से मारवाड़ देश के उमरकोट गाँव में अवतरित हुए। वहाँ से १७ साल की उम्र में वे कच्छ-भूजनगर आये। वहाँ आठ साल रहकर हल्लार देश-जामनगर, नवतनपुरी आ पहुँचे।

स. ३- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की प्राकट्य तिथि और धामगमन तिथि कौन-कौनसी है?

स. ४- धामधनी श्री देवचन्द्रजी लौकिक पञ्चभौतिक शरीर में कितने साल रहे?

स. ५- श्री मेहराज स्वरूप की अवतरण तिथि कौनसी है और धाम पधारते समय की तिथि कौनसी है? पुनः-ये स्वरूप कहाँ अवतरित हुये और कहाँ से श्री परमधाम पधारे थे तथा इस पञ्चभौतिक शरीर में कितने साल तक रहे?

ज. ५- श्री मेहराज स्वरूप की अवतरण तिथि वि. सं. १६७५ अश्विन →

स. ६- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और श्री प्राणनाथजी स्वरूप के पञ्चभौतिक तन के परित्याग के निश्चित समय की पुष्टि प्रमाण द्वारा कीजिये।

ज. ६- सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजी के पञ्चभौतिक तन के परित्याग समय की निश्चितता श्री तारतम सागर और श्री बीतक साहेब की निम्नलिखित चौपाइयों से ज्ञात होती है। जैसे-

सम्वत सत्रह से बारोत्तरे, भादों मास उजाला पख।
चतुर्दशी बुधवार को, हुए धनी अलख ।।
- (श्री लालदास कृत बीतक साहेब, प्र. ७/चौ. १६)। →

स. ७- सुनत भागवत देहुरे, तहाँ कहा तारतम।
तुम आये हो अरस से, जगाओ अपनी आतम।।

उक्त चौपाई में कथित संवाद कहाँ, किसने, किससे और किस वक्त कहा था?

ज. ३- सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजी की संसार में प्राकट्य तिथि वि. सं. १६३८ अश्विन सुदी चतुर्दशी रात्रि के तीसरे पहर गुरुवार के दिन तथा श्री परमधाममगमन तिथि वि. सं. १७१२ भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी-बुधवार के दिन मध्य रात्रि के बाद है।

ज. ४- सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजी पञ्चभौतिक शरीर में चौहत्तर वर्ष में १ माह कम अथवा तिहत्तर वर्ष ग्यारह माह रहे।

→ वदि चौदस तिथि-रविवार के दिन प्रातः ९ बजे है और धामगमन तिथि वि.सं. १७५१ श्रावण वदि तीज तिथि की दो घड़ी रात्रि अवशेष रहने के समय की है। ये स्वरूप हल्लार देश-जामनगर स्थित मेड़ी में केशव ठाकुर के घर में प्रकट हुये थे और इनका धामगमन मध्य प्रदेश के पन्ना शहर में स्थित श्री पद्मावतीपुरी धाम में हुआ था। ये स्वरूप पञ्चभौतिक शरीर धारण कर इस संसार में ७५ वर्ष, ९ माह और २० दिन तक रहे।

→ पुनश्चः

मध रात पछी कीधुं परीआण,
विहारीजीने कांईक खबर थे जाण ।

- (श्री प्रकाश गु. प्र. ४/चौ. ६०)।

और महामति श्री प्राणनाथजी के पञ्चभौतिक तन के परित्याग समय की निश्चितता का अकाट्य प्रमाण श्री बीतक साहेब की निम्नलिखित चौपाई है। जैसे-

तीज भई रात घड़ी चौद लों, उपरान्त चौथ भई जब ।
दोय घड़ी रात बाकी रही, समय अन्तर्ध्यान को तब ।।

-(श्री लालदास कृत बीतक साहेब, प्र.७/चौ.२०)।

ज. ७- सुनत भागवत देहुरे, तहाँ कहा तारतम ।
तुम आये हो अरस से, जगाओ अपनी आतम ।।

- (श्री लालदास कृत बीतक साहेब, प्र.७/चौ.८)।

उक्त चौपाई में कथित संवाद हल्लार देश स्थित श्यामजी के →

→ मंदिर में अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म श्री राजजी ने रास के वेश में अर्थात् श्री कृष्ण स्वरूप में आकर श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से उस वक्त कहे थे, जिस वक्त सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी श्यामजी के मंदिर में निष्ठा लेकर श्रीमद्भागवत की →

स. ८- "इसीलिए तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना की गयी है"- ऐसा किसने और किससे कहा था?

स. ९- "अन्दर तुम्हारे आऊँगा" - ऐसा किसने और किससे कहा था?

स. १०-जिस दिन श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने पञ्चभौतिक शरीर का परित्याग किया था, उस दिन कौनसा दिन था?

स. ११-महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने धाम जाते समय समस्त सुंदरसाथजी की देख-भाल का भार किस-किस को सौंपा था?

स. १२-महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने समस्त सुन्दरसाथ की सेवा अथवा देख-भाल की जिम्मेदारी देते हुए इस विषय में महाराजा छत्रसाल से क्या कहा था?

ज. १२- "अपने पास आये "श्री सुन्दरसाथजी" की जमात को अपने बाद कौन सँभालेगा?"-यह सोचकर महामति श्री प्राणनाथजी →

स. १३-पञ्चभौतिक तन का परित्याग करने के पश्चात् महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप कहाँ गये?

→ कथा श्रवण कर रहे थे। श्रीमद्भागवत श्रवण करते समय अक्षरातीत श्री राजजी ने वक्ता कान्हजी भट्ट तथा अन्य श्रोताओं पर योगमाया समावृत कर दिया और सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को तीसरा दर्शन देकर उक्त चौपाई में कथित संवाद कहे थे।

ज. ८- "इसीलिए अर्थात् छः हजार तामसी सखियों की इच्छा अधूरी रह जाने के कारण ही इस तीसरे-जागनी के ब्रह्माण्ड की रचना की गयी है।"-यह बात श्री प्राणनाथजी ने दीव बन्दर में जयराम कंसरा की आत्म-जागृति करते समय कही थी।

ज. ९- *"अन्दर तुम्हारे आऊँगा"*- यह वाक्य तारतम देनेवाले स्वरूप ने श्यामजी के मंदिर में सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से कहा था।

ज. १०- जिस दिन महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने पञ्चभौतिक शरीर का परित्याग किया था, उस दिन गुरुवार था और उसके दूसरे दिन जुम्मे का दिन अर्थात् शुक्रवार था।

ज. ११- महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने धाम जाते समय समस्त सुन्दरसाथजी के देख-भाल की जिम्मेदारी का भार बातुनी अर्थ में श्री राजजी को सौंप दिया था, परन्तु प्रत्यक्ष अर्थात् जाहिरी अर्थ में अपने प्रमुख शिष्य महाराजा छत्रसाल को सौंपा था।

→ ने महाराजा छत्रसाल को योग्य पात्र जानकर समस्त सुन्दरसाथ के बीच उन्हें जिम्मेदारी देते हुए कहा, "देखिए! मेरे बाद समस्त सुन्दरसाथजी के देख-भाल की सारी जिम्मेदारी उठाने के लिए आपके सिवाय मैं अन्य किसी को योग्य पात्र नहीं देखता। अतः मैं आपको अपना जानकर आपके भरोसे इस जमात को छोड़कर जा रहा हूँ। इन्हें आप जतन कर सँभालना।" इस तरह जिम्मेदारी देकर महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप धाम चले।

ज. १३- पञ्चभौतिक तन का परित्याग करने के पश्चात् महामति श्री प्राणनाथजी शेष सुन्दरसाथ को जागृत कर इकट्ठा करने के लिए मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के दिल को ही अर्श बनाकर वहीं पर →

→विराजमान हुये। जिस प्रकार सद्गुरु स्वरूप ने श्री इन्द्रावती सखी के दिल को अर्श बनाकर वि. सं. १७१२ से लेकर वि. सं. १७५१ तक सुन्दरसाथ को इकट्ठा किया, उसी तरह कार्य-कारणवश श्री प्राणनाथजी भी मोमिनों के दिल में विराजमान हुये। जैसे-

अब हुकमें द्वार खोलिया, लिया अपने हाथ हुकम।
दिल मोमिन के आए के, अरस कर बैठे खसम ।।

-(श्री सिनगार, प्र. २/चौ.१)।→

स. १४-"अगले, बीच और आखर"-यह इशारा किन-किन सुन्दरसाथ को इंगित करता है?

ज. १४- "अगले" शब्द का इशारा श्री सद्गुरु के वक्त के ३१३ धामस्थ सुन्दरसाथ को इंगित करता है। "बीच" कहने का तात्पर्य वि. सं. १७१२ से लेकर वि. सं. १७५१ तक के सुन्दरसाथ से है।→

❖ अन्तर्ध्यान एवं बलिदान ❖

स. १-वि. सं. १७५० में किसका धामगमन हुआ था? उनका दिन, तिथि, पक्ष तथा समय निश्चित कर बताइये।

स. २-श्री बाईज्यूराजजी के धामगमन के कितने दिन पश्चात् श्री प्राणनाथजी ने यह पंचभौतिक तन छोड़ा?

स. ३-"धनी पहुँचे धाम अपने"- ऐसे शब्द सुनने के पश्चात् एक भी श्वास न लेनेवाले मोमिनों में अथवा जिन्होंने जीती बाजी जीतकर "फरदा रोज कयामत" की साक्षी को सार्थक कर दिखाया, उनमें कौन-कौन हैं?

→ उक्त चौपाई अकाट्यरूपेण यह निश्चित कर देती है कि धनी हमें छोड़कर धाम तो गए ही नहीं हैं, अपितु धाम की अन्य सखियों को जागृत कर इकट्ठा करने हेतु *"बुध तारतम भेलां बंने, तिहां पहेले पधार्‌या श्री राज"* - इस चौपाई को सार्थक करते हुए मोमिनों के दिल में ही विराजमान होकर कार्य कर रहे हैं।

→ पुनः "आखर" के कहने का तात्पर्य वि. सं. १७५१ से लेकर महाप्रलय तक के उन सुन्दरसाथ से है, जिनके लिए वाणी में "पर पिछले कारन ए बानी कही" ऐसा कहा है। अतः उन शेष सुन्दरसाथ को जागृत करने हेतु ही श्री राजजी मोमिनों के दिल को अर्श बनाकर उसमें विराजमान हुए हैं।

-(प्रकरण ७, सवाल-जवाब नं. १४, कुल सं. २७९+१४=२९३)।

❖ अन्तर्ध्यान एवं बलिदान ❖

ज. १- वि. सं. १७५० में श्री बाईज्यूराजजी अर्थात् श्री तेजकुँवरीबाई (अमलावती आत्मा) का परमधामगमन हुआ था। उनके धाम चलने का शुभ मुहूर्त वैशाख माह की शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि, बुधवार के दिन पहर दिन चढ़ते अथवा सुबह नौ बजे का था।

ज. २- श्री बाईज्यूराजजी (अमलावती आत्मा) के धाम चलने के १ वर्ष २ महीने और १० दिन पश्चात् महामति श्री प्राणनाथजी ने पञ्चभौतिक तन का परित्याग किया।

ज. ३- *"धनी पहुँचे धाम अपने"*- ऐसे शब्द, सुनने के पश्चात् एक भी श्वास लिए बिना धाम में उठनेवाले मोमिनों में शंकर हजूरी, लालमन, नारायणदास, धनजी भाई, जसिया भाई, गोदावरीबाई, किसनीबाई, अम्बोबाई, रतनबाई और रामबाई आदि हैं, इन्होंने जीती बाजी जीतकर "फरदा रोज क्यामत" की भविष्यवाणी को सार्थक-सिद्ध कर दिखाया।

स. ४-पुनः जीती बाजी हारकर देखते रहनेवालों में कौनसे सुन्दरसाथ हैं?

ज. ४- *"धनी पहुँचे धाम अपने"* - ऐसे शब्द सुनने के पश्चात् भी जीती बाजी हार जानेवालों और साथ में चलनेवाले सुन्दरसाथ को देखते →

स. ५-"मायावी जीवों में से पशु भी ऐसा न करे, जिनमें मायावी प्रेम है"- ऐसा कौन तथा किसे सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं?

ज. ५- "मायावी प्रेमवाले पशु भी ऐसा व्यवहार नहीं करते कि उनका सम्बन्धी धाम चला गया और वे यहाँ बैठे देखते ही रहें। वे तो अपने सम्बन्धी के साथ चले ही जाते हैं। किंतु हम तो उत्तम-ब्रह्मसृष्टि →

स. ६-"पर हुकुमें कछू न बसाय" अर्थात् हुकम के आगे किसी का भी वश नहीं चलता-ऐसा कौन और किससे कह रहे हैं?

ज. ६- *"पर हुकुमें कछू न बसाय"* अर्थात् बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ रहनेवाली ब्रह्मात्माओं को समझाते हुए कह रहे हैं, "हे धामस्थ सुन्दरसाथजी! श्री राजजी के हुकम के आगे किसी का कोई जोर नहीं चलता। हुकम जो चाहें, सो कर सकते हैं। जो कुछ भी अब तक हुआ, हो रहा है और होगा, वह सब का सब हुकम की करामात है। किन्हीं-किन्हीं का धनी के साथ चलना और किन्हीं-किन्हीं का चलनेवालों के प्रेम को देखते ही रहना तथा जिन्दगी भर की की-करायी प्रेम-सेवा को भूलकर आगे के समय के लिए →

स. ७-इस वक्त किसके तन धिक्कार के पात्र साबित हुए और किस-किस के तन साथ में अग्रगण्य साबित होकर धनी के साथ धाम चले?

→ रह जानेवालों में ऐसे सुन्दरसाथ हैं, जिनका प्रेम धनी के प्रति कम और अपने पञ्चभौतिक शरीर और शरीर संबंधी रिश्तेदारों के प्रति अधिक था। वे सब कुछ जानते-जानते भी देखते ही रह गए। अतः इनका जीवन धिक्कार का पात्र बना।

→ जमात के होकर भी अपने धनी का धाम चलना देखते ही रह गए। हम ब्रह्मसृष्टियों द्वारा भी ऐसा असम्बन्धी-सा चलन-व्यवहार होना, तो ब्रह्मसृष्टियों के नाम पर कलंक है। अतः हम ब्रह्मात्माओं द्वारा "यथा नाम तथा गुणः" के विपरीत अर्थात् अफसोस करने जैसा कार्य हुआ है।"–ऐसा ब्रह्मात्माओं में से बीतककार श्री लालदासजी महाराज अक्षरातीत धाम से आई ब्रह्मात्माओं को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं।

→ अपने आपको धिक्कार का पात्र सिद्ध करना, यह सब भी हुकम के ही हाथ में है। अन्यथा धाम की आत्माएँ-ब्रह्मसृष्टियों के नाम पर कलंक लगानेवाली बनकर यहाँ इस तरह कदापि नहीं रह सकतीं थीं। श्री राजजी के हुकम के आगे सभी को नतमस्तक होना ही पड़ता है। हुकम के कारण ही कितनी ब्रह्मात्माओं ने जीती बाजी जीतकर धाम की ओर प्रस्थान किया, तो धाम चलनेवाली में से भी कितनी जबरदस्त इश्क-ईमान रखनेवाली आत्माएँ जीती बाजी हारकर यहीं रह गईं। अतः सब कुछ करने-करानेवाले हुकम ही हैं। इसीलिए तो वाणी में कहा है-

हम हुकम के हाथ में, हक के हाथ हुकम।
इत हमारा क्या चले, ज्यों जाने त्यों करें खसम।।
-(श्री सिनगार, प्र. २७/चौ.५८)।

ज. ७- श्री धामधनी स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी के धाम चलते वक्त जो-जो ब्रह्मात्माएँ धनी का धाम चलना देखते हुए भी इस झूठे शरीर और शरीर सम्बन्धी व्यवहार के फन्दे में अटककर यहीं रह गईं, उनके तन धिक्-धिक् के अर्थात् धिक्कार के पात्र साबित →

हुए। पुनः जो ब्रह्मात्माएँ धनी के धाम जाते वक्त धनी के कदम पर कदम रखकर उनके साथ ही धाम चलीं अथवा जिन्होंने "धनी धाम चले"-ऐसा सुनने के पश्चात् श्वास तक नहीं लिया, वे धन्य-

स. ८- स्वामी श्री प्राणनाथजी के साथ श्री धाम चलनेवाले कितने मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के नाम श्री लालदास कृत बीतक साहेब में आते हैं तथा किन-किन के?

ज. ८- वि. सं. १७५१ में धनी श्री प्राणनाथजी स्वरूप के श्री धाम में उठते समय अपने धनी के साथ ही धाम में उठनेवाले कुछ आठ-दस मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के नाम श्री लालदास कृत बीतक साहेब में आते हैं। दूर-दूर के गाँव-गाँव तथा शहर-शहर में तो अन्य कितनी

स. ९- "जगाओ अपनी आतम"- ऐसा कौन, किसे तथा क्यों कह रहे हैं?

ज. ९- *"जगाओ अपनी आतम"* - ऐसा बीतककार श्री लालदासजी उन सुन्दरसाथ से कह रहे हैं, जो धनी का धाम चलना देखते हुए भी यहीं रह गए, उनके साथ चल न सके। ऐसा कहने का तात्पर्य

❖ मोमिनों की कुर्बानी ❖

स. १- वि. सं. १७५१ में पन्ना में जब हमारे धनी धाम पधारे, तब यह वचन सुनते ही जो आत्माएँ धनी के ऊपर बलिदान हुईं, उनके लिए यह भवसागर किस रूप में था?

ज. १- वि. सं. १७५१ में पन्ना से महामति श्री प्राणनाथजी जब श्री परमधाम पधारे, तब "धनी धाम चले" ये शब्द सुनते ही जितनी

→ धन्य कहलायीं अर्थात् धन्यवाद की पात्र सिद्ध हुई। एक ओर इन्होंने जीती बाजी जीत ली, तो दूसरी ओर वे जीती हुई बाजी जीतकर भी हार गए। कयामत के समय ऐसा होगा करके पहले ही भविष्य कहा गया था।

→ आत्माएँ, अपने धनी के साथ धाम चली थीं, जिनका पता ही नहीं। जितनी आत्माएँ पास में थीं, उनमें साथ तो क्या, पहले ही धाम जानेवाली दो आत्माओं श्री लालदासजी महाराज और श्री केशवदासजी महाराज को कार्य विशेष रोका गया। साथ चलनेवाली ब्रह्मात्माओं में शंकर हजूरी, लालमन, नारायणदास, गोदावरीबाई, किसनी, धनजी, जसिया, अम्बोबाई, रतनबाई और रामबाई के नाम प्रसिद्ध हैं।

→ यह है कि यदि हमारी आत्मा जागृत हुई होती, तो धनी का धाम चलना देखते हुए भी हम यहीं नहीं रह जाती थीं। इसलिए सुन्दरसाथजी! आप सभी अपनी आत्मा को जागृत कर धनी के साथ धाम चलिए। यह संसार, धनी और धाम को छोड़कर क्षणभर भी रहने योग्य नहीं है, तब हम यहाँ क्यों रहें? अतः अपने धाम लौट चलो!!

-(प्रकरण ८, सवाल-जवाब नं.९, कुल सं. २९३+९ =३०२)।

❖ मोमिनों की कुर्बानी ❖

→ भी सम्बन्धी आत्माएँ थीं, वे धनी के श्वास में श्वास मिलाकर धनी के ऊपर बलिदान हो गईं। उन आत्माओं की नजर में यह अथाह-अपार भवसागर गौपदवच्छ सदृश तुच्छ साबित हुआ। गौपदवच्छ भी मात्र कहने, समझाने अथवा लेखनी में लाने के लिए कहा गया। उन आत्माओं को तो यह भवसागर इतना भी देखने में नहीं आया था।

स. २-अपने सम्बन्धी प्रति का धर्म पालन करने के विषय में सम्बन्धी आत्माओं के अलावा अन्य कोई नहीं पहुँच सकता, ऐसा किसके लिए और क्यों कहा गया?

ज. २- अपने सम्बन्धी प्रति का धर्म पालन करने के बिषय में असम्बन्धी आत्माएँ नहीं पहुँच पाएँगीं क्योंकि त्रिकाल सम्बन्धी आत्माओं के अंदर सम्बन्धी प्रति का धर्म पालन करने की जैसी अटलता, निर्भरता →

स. ३-"ताको कौन फिराय"- ऐसा कौन और किसके प्रति कह रहे हैं तथा किसे कहाँ-से-कहाँ फिराना है और क्यों?

ज. ३- *"ताको कौन फिराय"* अर्थात् संसार और शरीर सम्बन्धी विभिन्न मायावी तत्त्वों ने धनी और धाम में लगे ध्यान को प्रियतम की ओर से हटाने के लिए कई प्रयत्न किये, परन्तु उनके ध्यान →

स. ४-"उन्हें मोमिन नहीं कहना चाहिए" अर्थात् किन्हें-कैसे दिलवालों को?

ज. ४- उन्हें श्री अक्षरातीत की ब्रह्मात्माएँ-मोमिन कैसे कहा जाय, जिन्हें →

स. ५-"जो मोमिनों-ब्रह्मात्माओं में होंगे, वे ऐसा कभी नहीं करेंगे"- अतः कैसा?

ज. ५- जो मोमिनों-ब्रह्मात्माओं में होंगे, वे धनी का धाम चलना सुनकर भी तन धारण करके संसार में रहने जैसा तुच्छ कार्य कभी नहीं →

स. ६-धनी और धाम का बिछोड़ सहन कर संसार में कैसे लोग रह-बैठ सकते हैं?

ज. ६- अपने धनी और धाम का बिछोड़ सहन कर संसार में तन धारण कर वे ही बैठ सकेंगे, जिन्हें न धनी की पहचान है और न धाम की अर्थात् धनी और धाम की उन्हें जैसी पहचान होनी चाहिए, उस →

→ अथवा दृढ़ता होती है, ऐसी अटलता, निर्भरता अथवा दृढ़ता असम्बन्धी आत्माओं को कभी प्राप्त नहीं हो सकती। सम्बन्धी आत्माओं के लिए जैसे सम्बन्ध एक गहन तत्त्व है, उसी तरह सम्बन्धी प्रति का धर्म पालन करना भी उनके लिए सब से निराला ही होगा। यसर्थ कहा गया है कि "बिना सम्बन्ध न पाईये, कोटिन करे आचार" अर्थात् जो चीजें सम्बन्धी आत्माओं के लिए जितनी सुलभ और सहज हैं, उतनी ही कठिन और दुर्लभ असम्बन्धी आत्माओं के लिए हैं।

→ को संसार की ओर कौन फिरा सकता है? - ऐसा बीतककार श्री लालदासजी महाराज धनी के साथ जानेवाली आत्माओं के प्रति धनी को छोड़कर संसार में रहनेवाली आत्माओं से कह रहे हैं। धनी के साथ चलनेवाली आत्माएँ तो जीती बाजी जीत कर धाम चली ही गयीं। उन्हें कोई नहीं फिरा सका।

→ "अपने धनी धाम चले"- ऐसे शब्द सुनने पर भी विरह नहीं आया, जिन्हें धनी का बिछोड़ सुनने पर भी दिल में दर्द नहीं हुआ। अतः ऐसा पत्थर सदृश दिल रखनेवालों को, वह भी अपने ही धनी के प्रति, ब्रह्मात्मा नहीं कहना चाहिए।

→ करेंगे। वे तो अपने त्रिकाल सम्बन्धी धनी का बिछोड़ सुनते ही अपने शरीर से आत्मा उड़ा देती हैं। वे धनी के बिछोड़ की बातें सुनने के पश्चात् एक श्वास भी नहीं ले सकतीं। वास्तव में वे ही धनी की सच्ची सम्बन्धी ब्रह्मात्माएँ-मोमिन कहला सकती हैं।

→ विषय में वे "तो चोपडे घडे जेम छांटो थाए (ज्यों छीट ना लगे घडे चिकटे)" जैसे हैं। जिस तरह तेल-घी लगाए हुए घड़े पर पानी के छींटे नहीं रुक पाते, उसी तरह धनी और धाम की पहचान के विषय में इन आत्माओं को छींटा तक नहीं लगता। अतः ऐसी ही आत्माएँ संसार में धनी का बिछोड़ सहन कर बैठ सकती हैं।

स. ७- "अब वे धाम में अपना मुख कैसे दिखा सकेंगी"- ऐसा किसके लिए और क्यों कहा गया है?

ज. ७- वे सखियाँ धाम में धनी के सामने कैसे-किस प्रकार अपना मुख दिखा सकेंगी अथवा धनियाणी बनकर धनी के साथ किस तरह →

स. ८- जिन मोमिनों की जबान में धनी और धाम के सिवाय अन्य कोई बात ही नहीं थी, ऐसे मोमिन भी अन्त में कैसे रह गये?

ज. ८- जिन मोमिनों-ब्रह्मात्माओं की जबान से रात-दिन आठों पहर - →

स. ९- रहनेवाली और जानेवाली आत्माओं के अंदर जो भी प्रेरणा हुई, वह सब हुकम-धनी की आज्ञा से ही हुई है, ऐसा क्यों कहा है?

ज. ९- हे मोमिनों! हे ब्रह्मात्माओं!! देखो, यदि आम लोगों की जिन्दगी में ही ऊपरवाले की मर्जी के बिना एक टूटा-सूखा हुआ पत्ता भी पेड़ से नहीं गिर सकता, तो अक्षरातीत धनी की सम्बन्धी उन ब्रह्मात्माओं पर जो धनी की अव्वल नम्बर की आशिक हैं, क्या ऐसी अघटित →

स. १०-विक्रम संवत् १७५१ में भादो वदि चौदस के दिन कौन धाम चले और क्यों तथा उनके साथ कौन-कौन धाम पधारे?

ज. १०- विक्रम संवत् १७५१ में भादो वदि चौदस के दिन श्री केशवदासजी धाम चले। श्री केशवदासजी को श्री प्राणनाथजी ने धाम जाते समय अपने से पहले चलता देखकर उन्हें रोकते हुए १८,७५८ →

→ धनियाणी का कर्तव्य निभा सकेंगी, ऐसा उन आत्माओं के लिए कहा गया है, जिन्होंने धनी के प्रति धनियाणी का कर्तव्य निभाने के बदले शरीर के सम्बन्धियों के प्रति ज्यादा विश्वास रखा क्योंकि उन्होंने झूठे शरीर के सम्बन्धियों पर ज्यादा विश्वास रखकर त्रिकाल सम्बन्धी सच्चे धनी को ठुकरा दिया और जीती बाजी हारकर संसार में ही बैठे रहे।

→ चौबीसों घण्टे धनी और धाम के सिवाय अन्य किन्हीं शब्दों का उच्चारण ही नहीं था, जो रात-दिन धनी और धाम के प्रेम में विभोर रहते हुए अन्य को भी धनी और धाम के विषय में दृढ़ बनाती थीं, वे आत्माएँ अंत में श्री राजजी के हुकम द्वारा ही रह गयीं क्योंकि यह बात हुकम की है।

→ कहानी सम्भव हो सकती है? कदापि नहीं! अतः धनी के साथ धाम चलनेवाली आत्माओं के धाम चलने में तथा धनी और धाम की पूरी पहचान करने के बाद भी यहाँ रहनेवाली आंशिक आत्माओं के यहाँ रह जाने में श्री राजजी के हुकम का मुख्यातिमुख्य हाथ है। श्री राजजी के हुकम ने ही ये सब अघटित तथा आश्चर्यवत् कार्य किए हैं। इसमें मोमिन-ब्रह्मात्माओं का लेश मात्र भी दोष नहीं है। यहाँ रहनेवाली ब्रह्मात्माओं को धनी के हुकम ने पीछे आनेवाली ब्रह्मात्माओं तक संदेश पहुँचाने के लिए खेल में रोक रखा था। अन्य कोई कारण नहीं है।

→ चौपाईवाली वाणी की जिल्द बाँधने का कार्य सौंपा था। अतः धनी द्वारा सौंपा हुआ वह कार्य पूर्णकर श्री केशवदासजी भादो वदि चौदस के दिन समस्त सुन्दरसाथ को प्रणाम कर धाम चले। उनके साथ अन्य भी कई ब्रह्मात्माएँ धाम चलीं, जिनके नाम इस प्रकार हैं। जैसे-श्री वल्लभदास, केशवदास, मथुरा, रामकुँवर, प्रसादी, हमीरा, शाहमन, नरसिंहदास, सन्तदास, पूरबाई, खड़गो और केशरबाई आदि।

स. ११-उपरोक्त प्रसंग में धाम जाने में अग्रगण्य कौन थे तथा उनके पीछे-पीछे धाम जानेवाले कितने थे?

ज.११- उक्त प्रसंग अर्थात् वि. सं. १७५१ भादो वदि चौदस के दिन →

स. १२-"धरी कदमों पर कदम" - ऐसा कौन और किससे कह रहे हैं? पुनः किसके कदम पर कदम रखकर धाम चलने के लिए प्रबोध कर रहे हैं?

ज. १२- *"धरी कदमों पर कदम"*- ऐसा बीतककार स्वामी श्री लालदासजी महाराज स्वयं यहाँ रहनेवाली धाम की ब्रह्मात्माओं →

❖ श्री देवचन्द्रजी के परिवार प्रसंग ❖

स. १-बीतककार इस प्रकरण में श्री देवचन्द्रजी के कौनसे अथवा कैसे परिवार का वृत्तांत बता रहे हैं?

ज. १- बीतककार इस प्रकरण में सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के शरीर सम्बन्धी परिवार के साथ-साथ आत्मीय परिवार अर्थात् दोनों ही तरह के →

स. २-श्री देवचन्द्रजी के लौकिक परिवार में कौन-कौन हैं?

ज. २- श्री देवचन्द्रजी के शरीर सम्बन्धी अर्थात् लौकिक परिवार में माता श्री कुँवरबाई, पिता श्री मतु महेता, पत्नी लीलबाई, पुत्र बिहारीजी और पुत्री जमुना है। पुत्र बिहारीजी की पत्नी का नाम कृष्णाबाई →

स. ३-श्री देवचन्द्रजी श्री अक्षरातीत धाम से खेल में किसके लिए आए?

ज. ३- श्री देवचन्द्रजी अक्षरातीत ब्रह्मधाम की श्री श्यामाजी अवतार हैं। वे संसार में अक्षरातीत धाम की बारह हजार ब्रह्मात्माओं को धाम →

→ धाम पधारने में श्री केशवदासजी महाराज अग्रगण्य थे, जिन्हें कार्य-कारणवश धनी ने रोक दिया था। इनके पीछे-पीछे धाम चलनेवाली ११ आत्माएँ थीं, जिनके नाम ऊपर दिए गए हैं।

→ से कह रहे हैं। वे धामस्थ ब्रह्मात्माओं को प्रबोध करते हुए कह रहे हैं कि हे धामस्थ ब्रह्मात्माओं! धनी के धाम जाते समय जिन मोमिनों ने धनी का साथ नहीं छोड़ा, उन मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के पदचिन्हों पर चलकर अपनी आत्मा को धनी के चरणों में समर्पित करते हुए धाम चलना है।

-(प्रकरण ९, सवाल-जवाब नं. १२, कुल सं. ३०२+१२=३१४)।

❖ श्री देवचन्द्रजी के परिवार प्रसंग ❖

→ परिवार का परिचय करायेंगे। लौकिक परिवार शरीर सम्बन्धी है, तो पारलौकिक परिवार आत्मा सम्बन्धी है। जैसे -

कर कबीला पार का, अंकूर बल सूर धीर ।
एक धनी नजर में लेय के, उडाए दे सरीर ।।

-(श्री किरंतन, प्र. ८७/चौ. ८)।

→ है। पुत्री जमुना का विवाह मेघा भाई से हुआ है। मेघा भाई के भाई का नाम थारा है। थारा की पत्नी ठकुरानी तथा पुत्र नागजी भी इसी परिवार में हैं। नागजी की पत्नी का नाम रंगबाई है, जो बहुत ही बोझल अर्थात् मोटी है।

→ ले जाने के लिए आए थे, जो अपने धाम से मायावी खेल देखने आयी हैं। जैसे -

"हम आए हैं इतने काम, ब्रह्मसृष्ट लेने घर धाम"

-(श्री प्रकाश हि. प्र. ३७/चौ.७७)।

स. ४- श्री देवचन्द्रजी के अलौकिक परिवार में कौन-कौन हैं?

ज. ४- श्री देवचन्द्रजी के अलौकिक परिवार में उनके द्वारा अक्षरातीत ब्रह्म का तारतम महामंत्र लेकर शिष्य बने हुए सुन्दरसाथ में सर्वप्रथम जामनगर के नगरसेठ गांगजी भाई शाह, फिर श्री हरिदासजी जो कच्छ-भूजनगर के हैं, उनकी पत्नी-वृन्दावन की माता, वृन्दावन, पुनः वृन्दावन की पत्नी मूली बाई और बेटा नरहर हैं।

श्री गांगजी भाई शाह की माताजी गंगाबाई हैं और पत्नी भानबाई →

स. ५- श्री देवचन्द्रजी के किस परिवार का बड़ा विस्तार कहा है?

ज. ५- श्री देवचन्द्रजी के पारलौकिक अर्थात् आत्मीय परिवार का बड़ा विस्तार कहा है। श्री देवचन्द्रजी द्वारा एकत्रित (जमा) किए हुये →

❖ सुन्दरसाथ आगमन ❖

स. १- सर्वप्रथम श्री निजानन्द संप्रदाय में सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के द्वारा धर्म-दीक्षा ग्रहण करनेवाले भाई का नाम क्या है? वे कैसे व्यक्ति थे?

ज. १- श्री निजानन्द संप्रदाय में सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के हाथों से →

स. २- गांगजी भाई के लौकिक परिवार में कौन-कौन थे? उनमें से कौन-कौन निजधाम की आत्माओं में थे?

ज. २- नगरसेठ गांगजी भाई के लौकिक परिवार में उनकी माता श्री गंगाबाई, पत्नी भानबाई, दो पुत्र श्यामजी व मानजी सहित बड़े भाई खेताभाई →

→ हैं, जो धर्म में नहीं हैं। श्यामजी और मानजी-ये दोनों गांगजी भाई के लड़के हैं। ये दोनों ही सद्गुरु के अलौकिक परिवार में नहीं हैं। गांगजी भाई की बहन बालबाई, भौजाई हीरबाई तथा बहू अजबाई और उनकी दोनों पुत्री हरबाई और लाड़बाई सद्गुरु के अलौकिक परिवार में हैं। अलौकिक परिवार में अन्य हरिवंश ठाकुर, गोवर्धन, मेहराज, उद्धव ठाकुर, मेघबाई, पद्मा, फूलबाई तथा जशोदा एवम् जशोदा की बेटी राजबाई, मानजी का बेटा-सुखबाई की वासना आदि-आदि हैं।

→ पारलौकिक परिवार की संख्या ३१३ है। अन्य साथ दूर-दूर के शहर तथा गाँव-गाँव में हैं। यहाँ मात्र कुछ साथ की ही गिनती की गई है।

-(प्रकरण १०, सवाल-जवाब नं.५, कुल सं. ३१४+५=३१९)।

❖ सुन्दरसाथ आगमन ❖

→ ब्रह्मतारक तारतम महामंत्र की दीक्षा लेकर शिष्य बननेवालों में सर्वप्रथम जामनगर के प्रसिद्ध नगरसेठ श्री गांगजी भाई हैं। वे उस जमाने के नगर चौधरी तथा धनाढ्य लोगों में से थे, जिनसे जामराजा भी कर्ज लिया करते थे। वे धन, दिमाग, यश, नाम, प्रतिष्ठा आदि में होनहार तथा सर्वरूपेण सम्पन्न थे।

→ और भाभी हीरबाई हैं। गांगजी की बहू का नाम अजबाई है और भाभी का नाम हीरबाई है । हीरबाई की बेटी का नाम जसोदा है। गांगजी भाई की बहन का नाम बालबाई है। ये भी गांगजी भाई के लौकिक परिवार में शामिल हैं। उक्त सदस्यों में से गांगजी भाई, बालबाई, हीरबाई, जसोदा तथा अजबाई आदि निजधाम की वासनाओं में से हैं।

स. ३-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के समय में कैसी चर्चा-कथा हुआ करती थी?

ज. ३- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के अमल (समय) में चर्चा-कथा द्वारा आनन्द →

स. ४-"भाव काढ़ दिखावहीं" कहने का क्या तात्पर्य है, स्पष्ट करो?

ज. ४- *"भाव काढ़ दिखावहीं"* कहने का तात्पर्य है कि सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी चर्चा करते समय चर्चा-कथा कहाँ की, किस विषय की हो रही है, उसे किस तरह समझना है और किस तरह ग्रहण करना है, अर्थात् *"कोमल चित करी लीजिए"-"धणी तणे* →

स. ५-किसकी और कौनसी लीला का सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी साथ के आगे बड़ा महत्त्व दिखाते थे ?

ज. ५- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी चर्चा-कथा में साथ के आगे विशेषकर द्वापर युग की गोपियों तथा कृष्ण की व्रज तथा रास लीला का विशेष महत्त्व बताते थे। उन लीलाओं का महत्त्व तथा उन दोनों लीलाओं में गोपियों और कृष्ण के रूप में खेलनेवाले कौन-कौन थे? वे कहाँ के थे अर्थात् कहाँ से आये थे और कहाँ गये? उक्त बातों को समझाते →

स. ६-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी द्वारा सुन्दरसाथ के आगे व्रज एवम् रास लीला का अधिक महत्त्व दिखाने का क्या कारण था?

ज. ६- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी द्वारा सुन्दरसाथ के आगे व्रज एवम् रास लीला का अधिक महत्त्व दिखाने का कारण यह था कि व्रज एवम् रास लीला किसी अन्य की लीलाएँ नहीं हैं, अपनी ही लीलाएँ हैं। व्रज-रास में श्री राजजी हमारे साथ श्री कृष्ण के रूप में थे। किंतु संबंध की पहचान बिना भी हम लोगों ने श्री राजजी के साथ कैसा →

→ और आत्मानुभव का जो सुख मिला करता था, वह अवर्णनीय था क्योंकि धनी श्री देवचन्द्रजी जोश में चर्चा किया करते थे तथा चर्चा-कथा में ग्राह्य वस्तुओं का बड़ा महत्त्व दिखाते थे। विशेषकर वे अपनी लीला अर्थात् ब्रज और रास की विशेषता का बड़ा भारी महत्त्व बताकर समझाया करते थे।

→ *वचन"* - तात्पर्य अन्य के वचन और संबंधी धनी के वचनों में कितनी भिन्नता है? कितना अन्तर है? उक्त बातों को समझाते हुए प्रेम, श्रद्धा और विश्वास के साथ कोमल दिल करके ग्रहण करने हेतु बारंबार सुन्दरसाथ को प्रबोध किया करते थे। जहाँ की चर्चा-कथा हो रही है, उस ब्रह्माण्ड का रूपक साथ के आगे खड़ा कर देते थे, जिससे श्रोताओं को "वे वहीं उसी स्थान पर पहुँच गये हैं" - ऐसा भास हो जाता था।

→ हुए सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी कहते थे, "वे लीलाएँ अपनी हैं। गोपियों और कृष्ण के रूप में उन लीलाओं में रमण करनेवाले हम ही थे। श्री परमधाम-अक्षरातीत धाम से सर्वप्रथम हम सब ब्रजमण्डल में आये। ब्रजलीला पूरी करके वहाँ से रास के ब्रह्माण्ड में जानेवाले भी हम ही थे। इन दोनों लीलाओं में हमारे अक्षरातीत धनी, श्री कृष्णजी के रूप में थे और हम ब्रह्मात्माएँ, गोपियों के रूप में थीं। यसर्थ कहा है, *"ब्रज रास लीला को, बड़ो दिखावत बोझ।"*

→ प्रेम-व्यवहार किया था? ब्रज का ब्रह्माण्ड भी तो यहाँ की तरह कालमाया का ही था, तब भी हम वहाँ ग्यारह वर्ष बावन दिन तक किस तरह प्रेम के जोश में मस्त रहे थे और कार्य-व्यवहार आदि में भी किसी तरह की कमी नहीं आती थी। हममें से किसी को ज्ञान नहीं था कि हममें धनी के प्रति संबंध का ज्ञान हुए बिना भी इतनी श्रद्धा, विश्वास और प्रेम क्यों था? धनी के आँखों से ओझल होते ही हमारी हालत *"रोवंतां दिन जाय"-"खिण वरसा सो थाय"* जैसी क्यों हो जाती थी, जब कि हम जानते थे कि धनी (श्री कृष्णजी) शाम होते ही पुनः लौटकर आनेवाले हैं?

स. ७-जब जमात में कोई नये सुन्दरसाथ आते, तो उसे समझाकर ले आनेवाले साथ के प्रति सद्गुरु अत्यंत खुश क्यों होते थे और उनकी उस सेवा के प्रति सद्गुरु अपना कौनसा फर्ज पूरा करते थे?

ज. ७- धाम की किसी आत्मा को अनजाने में किसी अन्य कथा-चर्चा में जाते देखकर लौकिक संबंध के कारण रास्ते में मिली सद्गुरु द्वारा जागृत आत्मा ने उससे कहा कि वह कथा तो तू बहुत सुनते आई है। आज मेरे लिए ही सही, इस कथा में चल न ! यहाँ भी परमात्मा की ही चर्चा-कथा होती है। यह बात सुनकर आने की इच्छा न होने पर भी शारीरिक संबंधी की बात ठुकरा न सकने के कारण सद्गुरु की →

स. ८-श्री मेहराज के घर-परिवार में कौन-कौन थे, जिन पर सद्गुरु स्वरूप ने मेहेर (दया) की थी?

ज. ८- ऐसे तो श्री मेहराज ठाकुर के घर-परिवार में माता श्री धनबाई, पिता श्री केशव ठाकुर, बड़े भाई हरिवंश ठाकुर, श्यामलदास ठाकुर, गोवर्धन ठाकुर, उद्धव ठाकुर तथा श्री मेहराज ठाकुर सहित अन्य →

स. ९-उक्त सात ब्रह्मात्माओं के लौकिक नाम सहित अलौकिक नाम भी बताइये ?

ज. ९- उक्त सात ब्रह्मात्माओं में से सभी के लौकिक नाम सहित अन्दर छिपे अलौकिक नाम भी अकाट्यरूपेण हैं तो सही, किंतु यहाँ उनमें →

स. १०-जूनागढ़ के रूद्रो भाई क्या रोजगार करते थे तथा वे सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को किस भाव से मानते थे?

स. ११-दीव बन्दर के सुन्दरसाथ में अग्रगण्य कौन थे? ये युगल दंपती श्री परमधाम की ब्रह्मात्माओं में शामिल थे या नहीं?

→ चर्चा में आ गई। सद्गुरु के चरण में प्रणाम करते ही सद्गुरु ने उसे "मूल मिलावे" की आत्मा परखा और उसे सद्गुरु के श्री मुख की चर्चा मीठी भी लगी तथा कुछ-कुछ समझ भी आ गई। अतः दूसरे दिन से वह स्वयं ही कथा-चर्चा श्रवण करने हेतु कथा-मण्डान में आने लगी। यसर्थ सद्गुरु उस नवजागृत आत्मा से भी अधिक उसे उस रास्ते से मरोड़कर उधर जाने के बदले इधर ले आनेवाली आत्मा के प्रति अत्यन्त प्रसन्न होते थे क्योंकि उनके अनुसार भूले-भटके साथ को ढूँढ़कर तारतम में लाने का कार्य तो स्वयं उनका था। अतः "इसने तो मेरा ही कार्य कर दिया, तो इसकी इस सेवा का बदला मैं कैसे चुकाऊँ ?"-यह सोचकर अत्यन्त प्रसन्न होकर उनकी इस सेवा के बदले में सद्गुरु कथा-चर्चा की लहर की लहर बहा देते थे अर्थात् कथा-चर्चा द्वारा उसे तृप्त कर देते थे।

→ भाभी आदि भी थे, किंतु उनमें से बड़े भाई हरिवंश ठाकुर और उनकी पत्नी मेघबाई, गोवर्धन ठाकुर और उनकी पत्नी पद्मा, श्री मेहराज ठाकुर और उनकी पत्नी फूलबाई तथा छोटे भाई उद्धव ठाकुर अर्थात् कुल सात जन ब्रह्मवासनाओं में थे। इन सातों पर सद्गुरु स्वरूप की मेहेर (दया) हुई। इनमें से भी श्री मेहराज ठाकुर पर विशेषरूप से मेहेर हुई।

→ से कुछ के ही पारलौकिक नाम दिए गए हैं। जैसे-गोवर्धन ठाकुर का पारलौकिक नाम गुणवन्तीबाई, श्री मेहराज ठाकुर का इन्द्रावतीबाई, फूलबाई का अमलावतीबाई और उद्धव ठाकुर का उत्तमबाई है।

ज. १०-जूनागढ़ के रूद्रो भाई वहाँ के एक प्रसिद्ध दुकानदार थे। वे सद्गुरु स्वरूप को अपनी आत्मा के धनी के रूप में मानते थे और सेवा करते थे तथा स्वयं को उनकी धनियाणी मानते थे।

ज. ११-दीव बन्दर के सुन्दरसाथ में सर्वाग्रगण्य थे-जयराम कंसरा और उनकी धर्मपत्नी। ये युगल दंपती श्री परमधाम की ब्रह्मात्माओं में शामिल थे।

स. १२-मंडई बन्दर के सुन्दरसाथ में अग्रगण्य कौन थे?

स. १३-ठट्ठा नगर के सुन्दरसाथ में से मुख्य धर्मप्रेमी भाई कौन थे?

❖ कुरान पुरान की साक्षी ❖

(तथा भविष्यवाणी)

स. १- हक-श्री राजजी ने रूह अल्लाह श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को नूर कुंजी-तारतम मंत्र दिया है, इस बात का प्रमाण कुरान और हदीसों में कहाँ, किस-किस जगह पर मिलता है?

ज. १- हक-श्री राजजी ने रूह अल्लाह-श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु →

स. २- कुरान में इस नूर (सनाखत) कुंजी-तारतम महामंत्र का प्रचार-प्रसार कब होने को कहा है?

स. ३- रूह अल्लाह-श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को दी हुई इस सनाखत कुंजी-ब्रह्मतारक तारतम महामंत्र की प्राप्ति की बातें कहाँ-कहाँ मिलती हैं?

ज. ३- रूह अल्लाह-श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को →

स. ४- ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के लिए ब्रह्मधाम से जो दो कागज आये हैं, वे कौन-कौन से हैं तथा उन्हें लानेवाले स्वरूप कौन-कौन हैं?

ज. १२- मंडई बन्दर के सुन्दरसाथ में सर्वाग्रगण्य श्री प्रागमल भाई थे।

ज. १३- ठट्ठा नगर के सुन्दरसाथ में से मुख्य धर्मप्रेमी तथा सर्वाग्रगण्य भाई श्री नाथा जोशी थे।

-(प्रकरण ११, सवाल-जवाब नं. १३, कुल सं. ३१९+१३=३३२)।

❖ कुरान पुरान की साक्षी ❖

(तथा भविष्यवाणी)

→ श्री देवचन्द्रजी को नूर कुंजी-तारतम महामंत्र दिया है, इस बात का प्रमाण कुरान के बारहवें सिपारे (अध्याय) के चौबीसवें पृष्ठ पर मिलता है और यदि उसका अनुवाद-टीका देखना हो, तो हुसैन साहेब की हुसैनी तफसीर के तीन सौ एक नंबर के पृष्ठ पर देख सकते हैं। उक्त पृष्ठों पर स्पष्टरूपेण यह प्रमाणित किया गया है कि हक-श्री राजजी ने रूह अल्लाह-श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को नूर कुंजी-तारतम महामंत्र दिया है।

ज. २- कुरान में इस नूर (सनाखत) कुंजी-तारतम महामंत्र की सारी हकीकत का प्रचार-प्रसार कयामत-आत्म-जागृति के दौरान होने को कहा है।

→ दी हुई इस सनाखत कुंजी-ब्रह्मतारक तारतम महामंत्र के प्राप्ति की बातें मूल वेदों से लेकर उपनिषद्, पुराण आदि आप्तपुरुषों के सभी सद्ग्रन्थों में मिलती हैं। उन सभी की भविष्य विषयक बातें यहाँ आकर मिली हैं। विचार-विवेक द्वारा देखने तथा ढूँढ़नेवाले खोजी लोगों के लिए ये सद्ग्रन्थ एक प्रत्यक्ष प्रमाण रूप हैं।

ज. ४- इस धरातल पर अक्षरातीत ब्रह्मधाम से खेल देखने आई ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के नाम पर खेल में नूर तजल्लाह-अक्षरातीत अर्श (ब्रह्मधाम) से जो दो चिट्ठियाँ आई हैं, उनमें से एक चिट्ठी द्वापर युग →

→ के अन्त में श्रीमद्भागवत महापुराण के रूप में आई थी, जिसे अवधूत श्री शुकदेव मुनि लेकर आए थे तथा दूसरी प्रत्यक्ष चिट्ठी कुरान शरीफ़ के रूप में आई थी, जिसे कलियुग में अरब देश में मुहम्मद अलेह सलाम लेकर आए थे, जिनमें से मुहम्मद साहेब द्वारा लाई →

स. ५-कौन इन चिट्ठियों को अपना जानकर खोलेंगे तथा पढ़कर समझेंगे?

ज. ५- ब्रह्मधाम-खुदा के अर्श से आई हुई उक्त दोनों चिट्ठियों को उस →

स. ६-क्या ये सारी बातें अल्लाह कलाम अर्थात् कुरान शरीफ़ में लिखी हुई हैं?

ज. ६- हाँ! अक्षरातीत ब्रह्मधाम-खुदा के अर्श (नूर तजल्लाह) की सारी →

स. ७-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और ब्रह्मात्माओं की हकीकत कुरान शरीफ़ में कहाँ-से-कहाँ तक लिखी हुई है?

स. ८-रूह अल्लाह-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने सनाखत कुंजी-तारतम महामंत्र के ज्ञान प्रचारार्थ धर्मविरोधी दज्जालों के साथ निरंतर कितने साल तक लड़ाई की?

स. ९-रूह अल्लाह-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से पहले मायावी दज्जालों ने किनके साथ लड़ाई की?

स. १०-रूह अल्लाह-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के बाद धर्मविरोधी दज्जालों-विरोधियों ने किसके साथ लड़ाई की?

स. ११-उन धर्म सिद्धान्त विरोधी दज्जालों ने किसके अंदर बैठकर श्री इन्द्रावती आत्मा से लड़ाई की?

→ हुई चिट्ठी-कागज कुरान शरीफ़ श्री निजधामस्थ आत्माओं के लिए प्रत्यक्ष साक्षीरूप है तथा शुकदेव मुनि द्वारा लाया हुआ श्रीमद्भागवत महापुराण परोक्ष साक्षीरूप है।

→ धाम से आई हुई ब्रह्मात्माएँ (मोमिन) ही अपना जानकर अपनायेंगी और खोलकर पढ़ेंगी तथा अपने घर की सारी हकीकत स्वयं समझकर अन्य को भी समझायेंगी।

→ बातें वेद-पुराणादि सद्ग्रन्थों से भी अधिक स्पष्टरूपेण कुरान में क्रमशः लिखी हुई हैं। स्वयं खुदा के श्री मुख से फुरमाया होने के कारण कुरान शरीफ़ को अल्लाह कलाम कहते हैं। यसर्थ कुरान शरीफ़ प्रत्यक्ष प्रमाण है। अन्य सभी परोक्ष हैं।

ज. ७- कुरान शरीफ़ ग्रन्थ में रूह अल्लाह-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की हकीकत के विषय में उनके जन्म समय वि. सं. १९३८ अथवा ई.स. १५८१ से लेकर ब्रह्मात्माओं की इच्छा पूरी होकर निजधाम-मूल मिलावे में जागृत होने तक की लीलाओं के विषय में लिखा हुआ है।

ज. ८- रूह अल्लाह-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने सनाखत कुंजी-तारतम महामंत्र के ज्ञान प्रचारार्थ धर्मविरोधी दज्जालों के साथ खोज के दौरान निरंतर ३५ साल और प्रचार-प्रसार के दौरान ३४ साल तक लड़ाई की।

ज. ९- रूह अल्लाह-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से हजार साल पहले मायावी दज्जालों ने अरब देशवाले मुहम्मद स्वरूप से भी लड़ाई की। वे भी जीवनभर अर्थात् तिरसठ साल तक दज्जाल से लड़ते रहे।

ज. १०-रूह अल्लाह-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के बाद धर्मविरोधी दज्जालों ने श्री मेहराज-इन्द्रावती आत्मा के साथ लड़ाई की।

ज. ११-उन धर्म सिद्धान्त विरोधी दज्जालों ने विशेषकर गादीपति श्री बिहारीजी के अन्दर बैठकर श्री मेहराज-इन्द्रावती आत्मा के साथ लड़ाई की। अपितु अन्त काल तक लड़ते ही रहे।

स. १२-क्या उक्त कथित सारी बातें प्रत्यक्ष साक्षीरूपी धर्मग्रन्थ कुरान में लिखी हुई हैं?

ज. १२- हाँ! उक्त कथित सारी बातें प्रत्यक्ष साक्षीरूपी धर्मग्रन्थ कुरान →

स. १३-तीनों स्वरूपों की हकीकत (बीतक) जब ब्रह्मात्माएँ दुनिया के आम लोगों को स्पष्टतः समझा देंगी, तब क्या होगा?

ज. १३- तीनों स्वरूपों की हकीकत (बीतक) जब ब्रह्मात्माएँ दुनिया के आम लोगों को स्पष्टतः समझा देंगी, तब उभय पक्षों अर्थात् हिंदू- →

स. १४-कयामत के समय जब जीवों के जागृत होने की बारी आयेगी, तब दुनिया किस तरह मोमिनों की शरण में शरणापन्न होने लगेगी?

ज. १४- कयामत (आत्म-जागृति) के समय बारी-बारी से तीनों सृष्टि अर्थात् →

स. १५-सद्गुरु स्वरूप के दोनों जामों-हरा हुल्ला और सुपेत गुदड़ी का अवधिकाल कहाँ-से-कहाँ तक है?

स. १६-रूह अल्लाह श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की जबान द्वारा अवतरित वाणी का अवतरण काल कब-से-कब तक कहा है?

स. १७-श्री राजजी ने कयामत (आत्म-जागृति) के दौरान परलोक की दैवत-वाणी कब तक जाहिर की?

→ शरीफ़ में लिखी हुई हैं। उस धर्मग्रन्थ में ऐसा स्पष्टरूपेण लिखा है कि कलियुग में होनेवाले दज्जाल, रूह अल्लाह तथा इमाम मेहदी अथवा सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी तथा महामति श्री प्राणनाथजी के साथ निरंतर १२० वर्ष तक लड़ेंगे।

→ मुसलिम के बीच का आपसी क्रोध-ब्रोध मिट जायेगा अर्थात् तीनों स्वरूपों ने अवतार लेकर इंसान को क्या दिया और क्या बना दिया, इन बातों की समझ जब आम जनता को आ जायेगी, तो वे स्वयं ही एकेश्वर भक्त बन जायेंगे और अक्षर-अक्षरातीत अथवा नूर-नूर तजल्लाह के सिवाय अन्य किसी का नाम नहीं लेंगे।

→ ब्रह्म, ईश्वरी और जीव के आत्म-जागृति का समय आएगा। उस समय जब अनन्त संख्यावाली जीव सृष्टि के आत्म-जागृति की बारी आयेगी, तब वे टिड्डी (सलह) के जमात की तरह ब्रह्मात्माओं की शरण में शरणापन्न होने लगेंगे, ऐसा कुरान तथा हदीसों में स्पष्टतः लिखा हुआ है।

ज. १५- सद्गुरु स्वरूप के दोनों जामे-हरा हुल्ला और सुपेत गुदड़ी का अवधिकाल कुरान में १२० वर्ष लिखा है। ये १२० वर्ष वि. सं. १६३८ से १७५८ तक हैं। इस अवधिकाल में सद्गुरु श्री निजानन्द स्वामी के निजानन्द सिद्धान्त का दोनों पक्षों में जोर-शोर से प्रचार-प्रसार हुआ।

ज. १६- रूह अल्लाह श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की जबान द्वारा अवतरित वाणी का अवतरण काल ११० वर्ष ४ महीने कहा है। वह समय वि. सं. १६३८ से लेकर वि.सं. १७४८ अथवा ई.स. १५८१ से लेकर ई. स. १६९१ तक है।

ज. १७- श्री राजजी ने कयामत (आत्म-जागृति) के दौरान श्री परमधाम की दैवत-दिव्य वाणी वि. सं. १६३८ से लेकर वि. सं. १७४८ तथा उसके बाद चार महीने तक जाहिर की।

स. १८-मसरकवाले कौन हैं और वे अंत में तारतम में कैसे आएँगे तथा मगरबवाले कौन हैं और वे अंत में तारतम में कैसे आएँगे?

ज. १८- मसरकवाले हिन्दू भाई हैं और मगरबवाले मुसलिम भाई हैं क्योंकि →

❖ दोनों स्वरूपों का मिलाप ❖

स. १- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी स्वरूप के जीवनकाल में सुन्दरसाथ की लौकिक और अलौकिक सेवा किस-किसने की और कैसे?

स. २- "कौन ब्रत इनसों करीं" - ऐसा कौन, किसके प्रति और क्यों कहते थे?

ज. २- *"कौन ब्रत इनसों करीं"* - ऐसा सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी नई आत्मा को लेकर आनेवाली आत्मा के प्रति कहते थे क्योंकि →

स. ३- श्री धाम के सुन्दरसाथ को इकट्ठा करने के विषय में सद्गुरु क्या-क्या विचार करते थे?

ज. ३- जब से श्यामजी के मंदिर में तीसरे दर्शन के दौरान श्री राजजी ने "तू अकेली नहीं है, तेरे साथ धाम की बारह हजार सखियाँ भी →

स. ४- "चरचा का चलावें पूर" अर्थात् सद्गुरु पहले भी तो चर्चा-कथा करते ही आये थे, तो उन्होंने यहाँ चर्चा का पूर चलाने अर्थात् चर्चा की लहरों को और बढ़ाने के विषय में क्यों सोचा?

→ हिन्दू भाई मसरक अर्थात् पूर्व दिशा की ओर नमन करते हैं, तो मुसलिम भाई मगरब अर्थात् पश्चिम दिशा की ओर नमन करते हैं। ये दोनों ही समाज अंत में भागते-दौड़ते हुए अर्थात् टिड्डी (सलह) के जमात की तरह एक अद्वैत ब्रह्म की छत्र-छाया के तले तारतम के माध्यम से आएँगे।

-(प्रकरण १२, सवाल-जवाब नं. १८, कुल सं. ३३२+१८=३५०)।

❖ दोनों स्वरूपों का मिलाप ❖

ज. १- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी स्वरूप के जीवनकाल (अमल) में सुन्दरसाथ की लौकिक सेवा अर्थात् रसोई-पानी का प्रबंध मिलाने की सेवा नगरसेठ श्री गांगजी भाई और हीरबाई ने की, तो अलौकिक सेवा स्वयं सद्गुरु स्वरूप ने दिन में तीन-तीन बार चर्चा-कथा के माध्यम से की।

→ किसी नई आत्मा के आते ही, वे जमात में वृद्धि होती देखकर आत्मीय सुख में इतना विभोर हो जाते थे कि उन्हें लगने लगता था कि इस आत्मा ने तो मेरा ही कार्य कर दिया। इसकी इस सेवा के बदले में मैं इसके लिए कौन-सा व्रत करूँ, जिससे इसके सारे मनोरथ पूर्ण हो सकें।

→ हैं। अतः तू उन सब को जागृत करके इकट्ठे ही आना।" - इस तरह कहा था, तब से श्री धाम के सुन्दरसाथ को इकट्ठा करने के विषय में सद्गुरु रात-दिन निरंतर "वे साथ कब मिलेंगे, कौन मिलेगा? कौन आयेगा?"- ऐसा विचार करते रहते थे। कोई एक भी नये साथ मिलते थे, तो वे अत्यंत प्रसन्न हो जाते थे।

ज. ४- *"चरचा का चलावें पूर"* अर्थात् सद्गुरु चर्चा-कथा तो पहले से ही करते आये थे, किंतु ज्यों-ज्यों धाम की आत्माओं में वृद्धि होती जाती थी, त्यों-त्यों धाम की उन आत्माओं को धाम की चर्चा-कथा सुनाने के प्रति सद्गुरु की आतुरता बढ़ती जाती थी। तब वे अत्यंत →

→प्रसन्न होकर सोचने लगते थे, "मैं इनकी क्या सेवा करूँ ?" अतः →

स. ५- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी श्री गांगजी भाई के घर-चाकला मंदिर स्थित साथ को अपनी आँखों से ओझल क्यों नहीं होने देते थे?

ज. ५- सद्गुरु की चर्चा-कथा सर्वप्रथम राज मंदिर में शुरू हुई थी। तत्पश्चात् श्री राजजी की प्रेरणा से गांगजी भाई ने उन्हें अपने घर में →

स. ६- अजबाई और मेघबाई कौन-कौन थे और कहाँ-कहाँ रहते थे तथा दोनों का आपस में क्या संबंध था?

ज. ६- अजबाई नगरसेठ गांगजी भाई की बहू अर्थात् उनके पुत्र श्यामजी की पत्नी थी और मेघबाई जामनगर के प्रसिद्ध दीवान (मंत्री) श्री →

स. ७- "राज नित देवें दीदार" - ऐसा कौन, कहाँ और किससे कहती थी?

स. ८- गांगजी भाई के घर हो रही कथा-चर्चा के दौरान श्री राजजी दिन में कितनी बार दर्शन देते थे तथा दर्शन के साथ-साथ अन्य क्या-क्या करते थे?

ज. ८- गांगजी भाई के घर हो रही कथा-चर्चा के दौरान श्री राजजी दिन में तीन-तीन बार दस सखियों के साथ प्रकट होकर दर्शन देते थे। →

स. ९- "तुमहूँ करो दीदार" - ऐसा कौन, कहाँ और किससे कहते थे?

→ इसके बदले में उन्होंने दो वक्त की चर्चा-कथा को बढ़ाकर तीन वक्त की चर्चा-कथा द्वारा सुन्दरसाथ की सेवा करने का सोचा।

→ पधराकर अपना घर ही उन्हें सौंप दिया था। अतः सद्गुरु सोचते थे कि यदि धाम का नाता समझकर मेरा प्रबन्ध सुन्दरसाथ करते हैं, तो श्री राजजी ने भी तो इन्हें जागृत कर धाम ले आने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी है। अतः धनी की आज्ञानुसार धाम के सुन्दरसाथ को नजर तले रखना ही धनी की आज्ञा पालन करना है। ऐसा सोचकर ही सद्गुरु साथ को हमेशा अपनी नजर के तले रखते थे। नजर से दूर होने ही नहीं देते थे।

→ केशव ठाकुर की बहू अर्थात् उनके सबसे बड़े सुपुत्र हरिवंश ठाकुर की धर्मपत्नी थी। अजबाई सुप्रसिद्ध नगरसेठ की बहू थी, तो मेघबाई मंत्री खानदान की बहू थी। इन दोनों में से अजबाई, मेघबाई के सहोदर भाई की बेटी थी अर्थात् मेघबाई फूफी थी और अजबाई उनकी भतीजी थी।

ज. ७- *"राज नित देवें दीदार"*- ऐसा अजबाई अपनी फूफी मेघबाई से उनके घर जाकर कहती थी।

→ मात्र दर्शन ही नहीं देते थे, अपितु घटी हुई वस्तुओं की पूर्ति कर देते थे और साथ में बैठकर प्रेम से आरोगते हुए, "अरे! यह तो बहुत ही फीका हो गया है, तो कभी अरे! यह तो बहुत ज्यादा ही मीठा है!" इस तरह की बातें बताते थे और भोजन-लीला के पश्चात् सभी को पान का बीड़ा भी देते थे। छोटे-छोटे बच्चों के लिए गुड़िया आदि खिलौने भी ले आया करते थे।

ज. ९- *"तुमहूँ करो दीदार"* - यह बात प्रतिष्ठित मंत्री श्री केशव ठाकुर के घर जाकर भतीजी अजबाई अपनी फूफी मेघबाई से कहती थी। वह अपनी फूफी मेघबाई से कहती थी, " हे फूफी! तुम एक बार तो मेरे घर आकर श्री राजजी (श्री कृष्णजी) के दर्शन कर लो।"

स. १०-कितने साल के बाद मेघबाई ने देवर गोवर्धन से उक्त विषय का निर्णय करके आने के लिए आज्ञा देते हुए कहा, "जाओ गोवर्धन तुम"?

ज. १०- भतीजी अजबाई अपनी फूफी मेघबाई के घर कम से कम साल में तीन बार तो गई ही होगी और हर बार वह श्री कृष्णजी के दर्शन →

स. ११-मेघबाई ने तो देवर गोवर्धन को हुकम कर दिया कि अजबाई की बातें सच्ची हैं या झूठी, इस बात का पता लगाकर आओ। तो क्या गोवर्धन भाई, भाभी का हुकम मानकर पता लगाने चले गये?

ज. ११- अरे जनाब! गोवर्धन भाई भी तो "बडे घराने सब कोई जाने" जैसों में से ही थे। अतः नहीं गये। अपनी भाभी के ही देवर न →

स. १२-दीवान केशव ठाकुर के घर के किस सदस्य को सर्वप्रथम गांगजी भाई के घर-चाकला मंदिर आकर सद्गुरु सहित श्री राजजी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला और क्यों?

ज. १२- भाभी मेघबाई और देवर गोवर्धन दोनों ही बड़े घराने के कारण अपनी-अपनी प्रतिष्ठा का जतन करने लगे। किंतु पतिदेव की आज्ञा प्राप्त कर पत्नी पद्मा गांगजी भाई के घर आई। जब वह अजबाई के साथ गांगजी भाई के घर पहुँची, तो वहाँ श्री राजजी →

स. १३-गोवर्धन भाई सद्गुरु स्वरूप के दर्शन करने कब और कैसे गये तथा सद्गुरु स्वरूप के चरण लगते हुए उन्होंने क्या कहा?

स. १४- वि. सं. १९८७ (ई. स. १९३०) के कार्तिक माह में क्या-क्या हुआ?

→ करने की बात कहते ही आई थी। अतः पूरे नौ सालों में ज्यादा नहीं, तो भी कम से कम सत्ताईस बार तो उसने वह बात कही ही होगी अर्थात् पूरे नौ साल बाद मेघबाई ने अपने देवर गोवर्धन के सिर पर वह बात निश्चित करके आने की जिम्मेदारी डालते हुए कहा, *"जाओ गोवर्धन तुम"* अर्थात् हे गोवर्धन! जाओ और यह अजबाई जो कहती है, उस बात का पता लगाकर आओ कि क्या यह बात सही है?"

→ ठहरे ! उन्होंने भी मन में सोचा, "तीन-तीन बार दर्शन ! वह भी दैनिक !! और वह भी किसके ?" अतः उनके मन ने भी असंभव समझकर, जाने से नकार दिया। उसी वक्त वहाँ उनकी भाग्यवती पत्नी पदूमा आ पहुँची। उचित समझकर गोवर्धन भाई ने भाभी का हुकम शिरोधार्य करने के लिए वह हुकम अपनी पत्नी पदूमा के सिर पर डाल दिया और कहा, "पदूमा! तुम अजबाई के साथ जाओ और सारी हकीकत का पता लगाकर आओ।"

→ (श्री कृष्णजी), १० सखियों, सदूगुरु और अन्य सखियों के साथ बैठकर, "अरे! यह तो बहुत तीखी है, यह तो खारी है! अरे! यह कितना मीठा है !" इस प्रकार की बातें करते हुए प्रेम से आरोग रहे थे। उनके दर्शन कर पदूमा वहाँ ज्यादा ठहर नहीं सकी और सबको प्रणाम कर यह शुभ संदेश अपने पतिदेव को देने के लिए अपने घर दौड़ गई। अतः केशव ठाकुर के घर से सर्वप्रथम सदूगुरु और श्री राजजी के दर्शन करने का सौभाग्य पदूमा को प्राप्त हुआ।

ज. १३- गोवर्धन भाई अपनी पत्नी पदूमा के कहने पर दूसरे दिन फल-फूल लेकर चाकला मंदिर गए और सदूगुरु स्वरूप के चरणों में प्रणाम करते हुए कहा, " हे गुरुदेव! मेरी आत्मा देओ जगाय।"

ज. १४- वि. सं. १६८७ (ई. स. १६३०) के कार्तिक माह में गांगजी भाई के घर की चर्चा-कथा के मण्डान विषय की चुगली कोतवाल के पास पहुँची। उसी कार्य-कारणवश श्री ५ नवतनपुरी धाम की स्थापना हुई।

स. १५-चुगलखोर ने कोतवाल के पास जाकर गांगजी भाई के घर की चर्चा-कथा के मण्डान विषय में क्या चुगली लगाई?

ज. १५- चुगलखोर ने नगर के कोतवाल के पास जाकर गांगजी भाई के घर की चर्चा-कथा के मण्डान विषय की चुगली लगाते हुए कहा, →

स. १६-चुगलखोर की बातें सुनते ही कोतवाल ने क्या किया और कोतवाल द्वारा भेजे हुए दो सिपाहियों की क्या दशा हुई?

ज. १६- चुगलखोर की बातें सुनते ही कोतवाल ने दो चोपदारों (सिपाहियों) को हुकम किया। वे दोनों चोपदार (सिपाही) चुगलखोर के साथ गांगजी भाई के घर की ओर आने लगे, जहाँ सत्संग-कथा चल रही थी। चलते-चलते कुछ दूरी पर पहुँचते ही उस चुगलखोर द्वारा दिखाए गए घर का दीपक एक के बदले दो हो गया। दोनों चोपदार सोचने लगे "अब, क्या करें? चुगलखोर तो घर दिखाकर →

स. १७-धरोल पहुँचे चोपदार ने किससे और क्या पूछा तथा पूछने पर उसे क्या जवाब मिला? पुनः वह रातभर में कितने कोस चला और अपने घर कब लौटा?

ज. १७- जो चोपदार रातभर दीपक का पीछा करते-करते धरोल पहुँचा था, उसने दीपक के बुझ जाने पर एक पनिहारी से पूछा, "ए बहन! यह कौनसा गाँव है?" तब पनिहारी ने पूछा, "क्या?" तब चोपदार ने पुनः पूछा, "बहन! यह जामनगर का कौन-सा →

स. १८-जो चोपदार रात के चार पहर तक एक ही कुएँ के चारों ओर फिरता रहा, वह अपने घर कब पहुँचा? पुनः उसका वह पूरा दिन कैसे व्यतीत हुआ?

→ "अरे भाई! आप नगर की सुरक्षा करने हेतु सरकार से वेतन लेकर खाते तो हो, किंतु अपने कार्य पर ध्यान नहीं देते। हमारे ही नगर में एक कायस्थ के घर में

"जीरू मर्द बैठत हैं, तुम क्यों न लेत खबर"

सत्संग के बहाने क्या-क्या भ्रष्टाचार होता है, इस बात पर आप ध्यान क्यों नहीं देते?"

→ अपने घर चला गया। यह दीपक तो दो हो गया।" तब दोनों चोपदारों ने एक-एक दीपक के पीछे जाने का निश्चय किया। दोनों ने आपस में सलाह-मशविरा किया कि यदि तुम्हें सत्संग-कथावाला घर मिले, तो मुझे आवाज दे देना और यदि मुझे मिलेगा, तो मैं तुम्हें आवाज दे दूँगा, तुम आ जाना। इस तरह दोनों चोपदार एक-एक दीपक का पीछा करते-करते रातभर चलते रहे। एक बारह कोस चलकर धरोल पहुँचा, तो दूसरा रात के चार पहर तक एक ही कुएँ के चारों ओर कोल्हू के बैल की तरह फिरता रहा।

→ गाँव है?" तब उस पनिहारी ने कहा, "अरे भाई! तुम्हारा दिमाग तो ठीक है न? क्या पागल के-से सवाल पूछ रहे हो? यह गाँव जाम राजा का नहीं है। यह तो मोहबड़जी का धरोल राज्य है!! क्या आप इसे जामनरेश का जामनगर समझ रहे हो? दीवानेपन की भी कोई हद होती है।" पनिहारी की बात सुनकर वह चोपदार अपने-आप पर खिझकर नाराज होकर वापस लौट चला। दिन भर में बारह कोस चलकर वह शाम को अपने घर लौट आया।

ज. १८- जो चोपदार रातभर एक ही कुएँ की परिक्रमा करता रहा, सवेरा होते ही दीपक के बुझ जाने पर उसने देखा कि वह तो रातभर एक कुएँ की परिक्रमा कर रहा था। चुगलखोर द्वारा बताए हुए घर का पता न चलने पर सवेरा होते ही वह अपने घर लौट →

आया। अब घर पहुँचते ही बारह कोस आगे मोहबड़जी के राज्य में पहुँच जानेवाले दूसरे चोपदार की पत्नी उससे पूछने लगी, "अरे! मेरे पति कहाँ हैं? आप दोनों एक साथ ही गये थे, आप तो आ गये, तो वे क्यों नहीं आए?" तब कुएँ की परिक्रमा करनेवाले चोपदार ने उसे सारी हकीकत समझाते हुए कहा, "देखो! सन्ध्या का समय था। हम दोनों चुगलखोर के पीछे-पीछे जा रहे थे। चुगलखोर ने हमें एक जलता हुआ दीपक दिखाते हुए कहा कि देखो! यह दीपक जहाँ जल रहा है, उसी घर में जाना है। अतः जाओ और जाकर उन्हें पकड़ो । मैं तो चला!! ऐसा कहकर चुगलखोर तो चला गया। हम दोनों उस दीपक को लक्ष्य रखकर

स. १९-धरोल पहुँचे चोपदार के घर में कैसी दुविधा हुई?

ज. १९- जो चोपदार रातभर दीपक के पीछे-पीछे चलकर जाम राजा का राज्य छोड़कर धरोल पहुँच गया था, कुएँ की परिक्रमा करनेवाले चोपदार के लौट आने पर, धरोल पहुँचे चोपदार की पत्नी के मन में यह दुविधा होने लगी कि ये दोनों ही चुगलखोर की चुगली के कारण किसी साधु-महात्मा को पकड़ने गये थे। अतः वे महात्मा यदि सच्चे होंगे, तो अवश्य ही उनके दिए हुए श्राप से जीवन में खतरा आ सकता है क्योंकि साधु-सन्त भगवान का स्वरूप होते हैं। मेरे पति अवश्य ही महात्मा के फन्दे में फँस गए हैं और इसे

स. २०-दूसरे दिन सवेरे कोतवाल के पास आकर दोनों चोपदारों ने क्या कहा?

ज. २०- दूसरे दिन सवेरे दोनों चोपदार कोतवाल के पास गए और उससे कहा, "अरे! उस चुगलखोर ने तो हमें ऐसी जगह में फँसा दिया था कि पूछो ही मत? धन्य है कि ऊपरवाले की दया से हम जीवते ही वापस घर लौट आए। वह चुगलखोर तो एक दीपक बताकर रफू-चक्कर हो गया। कुछ देर के बाद वह एक दीपक दो हो

→ आगे बढ़ने लगे। थोड़ी ही दूर गए थे कि वह दीपक एक से दो हुआ। अब हम दोनों में से किसके पीछे जाएँ? अतः हम दोनों ने एक-एक दीपक का पीछा करने का निश्चय किया। आगे-आगे दीपक, पीछे-पीछे हम! इस तरह पीछा करते-करते तो सवेरा हो गया और दीपक बुझ गया। तब मैंने देखा कि मैं रातभर एक कुएँ की परिक्रमा लगाता रहा। अतः मैं वहाँ से लौटकर घर आ गया। आपके पतिदेव उस दूसरे दीपक का पीछा करते-करते कहाँ पहुँचे होंगे और क्या हुआ होगा, वे ही जानें। वे कब आयेंगे, यह तो मैं भी नहीं जानता?" इस प्रकार कुएँ के चारों ओर फिरनेवाले चोपदार और धरोल पहुँचे चोपदार की पत्नी दिनभर लड़ते-झगड़ते रहे।

→ मालूम होते हुए भी यह मुझे बताना नहीं चाहता। यदि कोई अच्छी खबर होती, तो कब का बता देता था। मेरे पति अवश्य ही जिंदे नहीं बचे होंगे। क्या जाने? नहीं तो एक का लौट आना और एक का नहीं आना! इसमें अवश्य ही कोई रहस्य है। दोनों एक ही काम के लिए एक ही जगह गए थे। जीवित होते, तो आज दिन भर में अवश्य ही आ जाते थे। क्या मालूम जीवित हैं या नहीं? धरोल पहुँचे चोपदार के घर इस तरह पूरे दिन दुविधा का ही वातावरण रहा। सन्ध्या के समय बारह कोस चलकर धरोल पहुँचा चोपदार भी घर लौट आया।

→ गया। अब कौनसा सही और कौनसा गलत? अतः हम दोनों ने एक-एक दीपक का पीछा करने का निश्चय किया। मैं तो रातभर एक ही कुएँ की परिक्रमा करता रहा। दूसरे ने कहा कि अरे! मैं तो बारह कोस चलकर जामराजा का राज्य छोड़कर धरोल राज्य में पहुँच गया था। अब यदि वह चुगलखोर मिले न, तो पहले हम उसका सिर धड़ से अलग कर देंगे। बाद में उससे पूछेंगे कि वे साधु-महात्मा कहाँ-किस घर में हैं ?"

स. २१-"इन भाँत के माजिजे, और लाखों दिये निसान" - ऐसा कौन, किससे और किसके प्रति कह रहे हैं तथा "लाखों निशान दिए" क्यों और किसके लिए?

ज. २१- *"इन भाँत के माजिजे, और लाखों दिये निसान"*- ऐसा →

स. २२-विक्रम संवत् १६७५ (ई. स. १६१८) में क्या हुआ?

स. २३-उक्त स्वरूप का प्राकट्य किस देश के, किस नगर में, कैसे परिवार में, किस माह के, किस पक्ष की, किस तिथि को, किस दिन और किस समय हुआ?

स. २४-मेहराज ठाकुर के अन्य चारों भाइयों में से कौनसे भाई सद्गुरु स्वरूप की चर्चा-कथा सुनकर उस चर्चा-की-चर्चा अपने घर जाकर सुनाया करते थे?

स. २५-घर में होनेवाली चर्चा-की-चर्चा सुनकर कौन गोवर्धन भाई से कहने लगे कि जिनके सदुपदेश की चर्चा आप सुना रहे हैं, मुझे भी उनके पास ले जाइये?

ज. २५- श्री गोवर्धन भाई द्वारा घर में चर्चा-की-चर्चा सुननेवालों में से →

स. २६-"अरे भाई! उनसे आज्ञा लिए बिना तुझे चर्चा में ले जाने का कार्य मुझसे नहीं होगा" - ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा?

ज. २६- "अरे भाई! उनसे आज्ञा लिए बिना तुझे चर्चा में ले जाने का कार्य →

→ बीतककार श्री लालदासजी महाराज सद्गुरु स्वरूप के प्रति अपने धामस्थ सुन्दरसाथ से कह रहे हैं अर्थात् वे साथ को संबोधित करते हुए कह रहे हैं, "सद्गुरु स्वरूप ने हमें अपने आत्मा के संबंधी की पहचान कराने के ध्येय से कई चमत्कार कर दिखाए, परन्तु हम लोग सद्गुरु स्वरूप की पहचान नहीं कर सके।"

ज. २२- विक्रम संवत् १९७५ (ई. स. १९१८) में अक्षरातीत ब्रह्मधाम से कल्कि अवतार के रूप में मेड़ी में श्री राजजी का प्राकट्य हुआ।

ज. २३- उक्त स्वरूप का प्राकट्य भारतवर्ष के हल्लार देश स्थित जामनगर प्रांत में जामराजा के सुप्रसिद्ध मंत्री केशव ठाकुर के घर अथवा मंत्री परिवार में वि. सं. १९७५ में भादों माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि-रविवार के दिन सुबह नौ बजे हुआ।

ज. २४- मेहराज ठाकुर के अन्य चारों भाइयों में से सर्वप्रथम सद्गुरु के दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त करनेवाले भाई श्री गोवर्धन ठाकुर ही सद्गुरु के चर्चा-की-चर्चा घर परिवार के सदस्यों के बीच दैनिक सुनाया करते थे।

→ सबसे छोटे श्रोता श्री मेहराज ठाकुर अपने भाई श्री गोवर्धन ठाकुर से कहने लगे, "हे भाई! जिन सद्गुरु स्वरूप के श्री मुख की चर्चा सुनकर आप हमें उस चर्चा-की-चर्चा सुनाते आए हैं, मुझे भी उन सद्गुरु स्वरूप के पास ले जाइये। मुझे उनके दर्शन करने की इच्छा है।"

→ मुझसे नहीं होगा"- ऐसा श्री गोवर्धन ठाकुर ने अपने छोटे भाई श्री मेहराज ठाकुर से कहा क्योंकि वहाँ चर्चा सुननेवालों में उनके जैसा छोटी उम्रवाला कोई श्रोता नहीं था। यदि कच्ची उम्र होने के कारण श्री मेहराज वहाँ जाकर शोर या आवाज करने लगते, तो चर्चा-कथा में विघ्न पड़ता था। अतः सद्गुरु स्वरूप से पूछे बिना श्री मेहराज को चर्चा-कथा में ले जाना संभव नहीं था।

स. २७-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी द्वारा की हुई चर्चा-की-चर्चा सुनकर जिनके अंदर सद्गुरु के दर्शन करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई, वे भाई कौन हैं? कितनी उम्र में उन्हें दर्शन की इच्छा उत्पन्न हुई और कितने समय बाद उन्हें दर्शन प्राप्त हुए ?

ज. २७- श्री गोवर्धन ठाकुर नित्य प्रति घर जाकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के श्री मुख की चर्चा-की-चर्चा सुनाया करते थे और उनकी चर्चा छोटे भाई श्री मेहराज ठाकुर बड़ी लगन से सुना करते थे।

स. २८-श्री मेहराज ठाकुर को किस साल के, किस माह के, कौन से पक्ष की, किस तिथि के दिन सद्गुरु स्वरूप के दर्शन हुए?

ज. २८- श्री मेहराज ठाकुर को सद्गुरु स्वरूप के दर्शन (सद्गुरु स्वरूप से

स. २९-जब भाई गोवर्धन ने छोटे भाई मेहराज की इच्छा सद्गुरु स्वरूप के आगे रखी, तब उनके विचारों को सुनकर सद्गुरु स्वरूप ने उनसे क्या कहा और किन-किन उदाहरणों द्वारा समझाते हुए उन्हें श्री मेहराज स्वरूप को दर्शन हेतु ले आने की आज्ञा दी?

ज. २९- श्री गोवर्धन भाई ने जब अपने छोटे भाई श्री मेहराज ठाकुर के दर्शन विषय की आतुरता की बातें सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी के आगे रखीं, तब उनके विचार-विमर्श को सुनकर सद्गुरु स्वरूप

स. ३०-"बाल वय वस्तु आवत" - यह बात किसने, किससे और क्यों कही?

ज. ३०- *"बाल वय वस्तु आवत"* - यह बात सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने श्री गोवर्धन भाई से कही। बाल्यावस्था अर्थात् खेलने-कूदने की उम्र में श्री मेहराज का मन परमात्मा के भजन अथवा कथा-

→ अतः श्री मेहराज ठाकुर के अंदर ही सद्गुरु स्वरूप के दर्शन करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई थी। उनके अंदर यह इच्छा तब उत्पन्न हुई थी, जब उनकी उम्र १२ साल २ महीने और ४ दिन की थी। अपनी प्रबल इच्छा के कारण वे रोज अपने बड़े भाई गोवर्धन ठाकुर से प्रार्थना किया करते थे कि वे उन्हें भी चर्चा में ले जायें। परंतु बड़े भाई रोज सद्गुरु की आज्ञा लेना भूल जाते थे। अतः श्री मेहराज को क्रमशः छः दिनों तक तड़पना पड़ा और अंत में १२ साल २ महीना और १० दिन की उम्र में अर्थात् सातवें दिन उन्हें सद्गुरु स्वरूप के दर्शन प्राप्त हुए।

→ श्री इन्द्रावती आत्मा का मिलाप) वि. सं. १९८७ में मागसर माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि के दिन जामनगर स्थित श्री ५ नवतनपुरी खिजड़ा मंदिर में खिजड़ा के वृक्ष के नीचे हुआ था। इन दोनों स्वरूपों का मिलाप अन्य सभी मिलापों में मुख्यातिमुख्य है और समस्त समाज द्वारा मानने योग्य है।

→ ने उन्हें समझाते हुए कहा, "देखो गोवर्धन! इस विषय में उम्र को नहीं, बल्कि दिल की तड़पन को देखना चाहिए। जब चर्चा सुनते-सुनते वह मेरे दर्शन करने की इच्छा से तड़पने लगा है, तो उसे रोकना नहीं चाहिए। देखो! ध्रुव, प्रह्लाद एवम् नारद की उम्र कितनी थी? उन्हें पाँच साल की उम्र से ही परमात्मा के दर्शन करने की इच्छा हुई थी। मेरी हालत भी पाँच साल की उम्र से ही बदलने लगी थी। मेहराज तो बारह वर्ष के हो चुके हैं। अतः उन्हें जरूर ले आना।" इस तरह गोवर्धन भाई को सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज को दर्शन हेतु ले आने की आज्ञा दी।

→ चर्चा में कैसे लगे? ऐसा सोचकर गोवर्धन ठाकुर उन्हें सद्गुरु स्वरूप के दर्शन हेतु ले जाने में संकोच कर रहे थे। अतः उन्हें समझाने हेतु सद्गुरु स्वरूप ने उक्त कथन द्वारा समझाते हुए कहा कि ऐसा मत सोचो। इस विषय में उनकी उम्र को नहीं, बल्कि उनके बालमन की दृढ़ता को देखो। उनके दिल की तीव्र इच्छा और तड़पन को समझकर उन्हें अवश्य ले आओ।

स. ३१-श्री मेहराज ठाकुर के चरण में आ पहुँचते ही सद्गुरु स्वरूप ने क्या किया?

ज. ३१- श्री मेहराज ठाकुर जैसे ही अपने बड़े भाई श्री गोवर्धन भाई के साथ सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की शरण तले चरणों में पहुँचे, वैसे ही सद्गुरु ने हाथ पकड़कर उन्हें बिठाया और कहा कि यह तो →

स. ३२-सद्गुरु स्वरूप धनी श्री देवचन्द्रजी के साथ श्री मेहराज ठाकुर संसार में एक साथ कब-से-कब तक रहे?

स. ३३-श्री मेहराज के अन्दर जब जागृत बुद्धि ने प्रवेश किया, तब सद्गुरु स्वरूप ने उन्हें एकांत में भविष्य विषयक कौनसी बातें बताईं?

ज. ३३- श्री मेहराज के अन्दर जब जागृत बुद्धि ने प्रवेश किया, तब सद्गुरु →

स. ३४-सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज के दिल-दिमाग में इशारे से किस विषय का बीज बो दिया?

स. ३५-सद्गुरु स्वरूप ने श्री इन्द्रावती आत्मा को इशारे से हिन्दू और मुसलिम दोनों के धर्मग्रन्थों के ज्ञान और उस ज्ञान की पिपासु आत्माओं की एकता के विषय में कौनसी सूचना दी, जिसे स्वयं उन्होंने अपने कार्यक्षेत्र में प्रयोग भी करके दिखाया था?

ज. ३५- सद्गुरु स्वरूप ने श्री इन्द्रावती आत्मा को इशारे से हिन्दू और मुसलिम दोनों ही जातियों में धाम की आत्माओं के होने की →

→ धाम की होनहार आत्मा इन्द्रावती की वासना है। साथ ही उन्होंने श्री मेहराज ठाकुर को स्वयं अपने दिल (आत्मा) का अनुभव भी बता दिया कि तुम्हारे आने से मुझे ऐसा लग रहा है कि *"तुम आए सब आइयां, दुख गया सब दूर।"* अब और क्या कहूँ ? अच्छा हुआ, तुम आ गये!

ज. ३२- श्री मेहराज ठाकुर सद्गुरु स्वरूप धनी श्री देवचन्द्रजी के साथ संसार में वि. सं. १६८७, मागसर माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि से लेकर वि. सं. १७१२, भादों माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि तक अर्थात् लगभग कुल २५ वर्ष रहे।

→ श्री देवचन्द्रजी ने उन्हें एकांत में इशारे से कुरान ग्रन्थ में स्थित ब्रह्मात्माओं की बातें और मुसलमान वर्ग में भी धाम के आत्माओं के होने की बातें बताईं। पुनः यह भी बताया कि इस खेल में आई हुई ब्रह्मात्माओं में सकुमार और साकुण्डल नामक दो मुख्य सखियाँ हैं, जिनकी परात्मा मूल मिलावे में हँस रही हैं।

ज. ३४- सद्गुरु स्वरूप ने इशारे से श्री मेहराज के दिल-दिमाग में कुरान ग्रन्थ में भी अपने घर की बातें होने की तथा धाम की आत्माओं का हिन्दू तथा मुसलिम दोनों ही जातियों में उतरने की बातों के बीज बो दिये।

→ तथा दोनों के धर्मग्रन्थों में धाम की बातों के होने की सूचना दी तथा इसी तथ्य को उन्होंने कार्यक्षेत्र में प्रयोग करके भी दिखाया। जैसे - तारतम ज्ञान समस्त मानव मात्र के लिए है। अतः समस्त मानवात्मा का उस पर बराबर अधिकार है। तारतम मंत्र जाति, वर्ण, लिंगादि को नहीं दिया जाता। तारतम तो मानव शरीर के अंदर स्थित चेतन (आत्मा) को दिया जाता है। जैसे-खोजीबाई एक मुसलिम स्त्री थी और साथ ही विधवा भी थी। परन्तु सद्गुरु स्वरूप ने उसके अंदर स्थित धाम की रईबाई की वासना को तारतम मंत्र दिया था।

स. ३६-वह स्त्री कौन थी और कैसी थी, जो श्रीमन्निजानंद संप्रदाय में हिन्दू-मुसलिम एकता विषय की साक्षीरूप है?

ज. ३६- उस स्त्री का नाम खोजीबाई था। एक तो वह मुसलिम धर्म की थी, दूसरे विधवा भी थी। वह धाम की रईबाई सखी की वासना →

स. ३७-खोजीबाई को तारतम देते समय श्री मेहराज स्वरूप ने सबके सामने श्री सद्गुरु स्वरूप से क्या पूछा था और उस विषय में श्री सद्गुरु स्वरूप ने उन्हें क्या जवाब दिया था?

ज. ३७- रईबाई की जागनी के दौरान तारतम मंत्र देते समय श्री मेहराज →

स. ३८-उक्त प्रश्नोत्तर के दरमियान सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी स्वरूप ने श्री मेहराज से अपने दिल की कुछ बातें भी कहीं थीं, वे बातें कौनसी हैं?

स. ३९-"जो बातें मुझसे नहीं बन सकीं, वे कार्य तुम्हारे द्वारा होंगे"-ऐसा कहते हुए सद्गुरु स्वरूप ने मेहराज स्वरूप को कौन-कौनसी बातें इशारे से बताईं, जिनके द्वारा जागनी लीला का बीज मात्र बोया गया?

ज. ३९- "जो बातें मुझसे नहीं बन सकीं, वे सारी बातें आगे जाकर तुम्हारे द्वारा होंगी" - ऐसा कहते हुए सद्गुरु स्वरूप ने मेहराज को भविष्य विषयक बातें इशारे से समझाते हुए कहा, "देखो! इसलिए भविष्य में पहली-कुरान शरीफ़ के अन्दर की उन बातों को देखना, जहाँ →

→ थी। उसे सद्गुरु ने तारतम मंत्र देकर अपने शुद्ध हिन्दू श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-श्रीमन्निजानंद सिद्धान्त में शामिल किया था। इस कार्य से स्पष्ट होता है कि तारतम मंत्र पर समस्त चेतनात्मा मात्र का अधिकार है। तारतम की नजर में न हिन्दू है, न मुसलिम; न वर्ण है, न आश्रम है; न कोई उच्च है, न कोई नीच है। तारतम तो समस्त मानवात्माओं के लिए है, न कि पुरुष और स्त्री के लिए।

→ स्वरूप ने सबके सामने सद्गुरु स्वरूप से पूछा था, "क्या मुसलिम जाति में भी हमारे धाम की वासनाएँ (ब्रह्मात्माएँ) उतरीं हैं?" मेहराज स्वरूप के इस प्रश्न के उत्तर में सद्गुरु श्री निजानन्द स्वरूप श्रीदेवचन्द्रजी ने सबके सामने स्पष्टरूप से कहा था, *"यामें कोई कोई वासना जान"* अर्थात् "हाँ! इनमें भी धाम की आत्माएँ कुछ मात्रा में हैं।"

ज. ३८- उक्त प्रश्नोत्तर के दरमियान सद्गुरु ने श्री मेहराज को अपने दिल की बातें बताते हुए कहा था, "देखो मेहराज! पवित्र धर्मग्रन्थ "कुरान" देखने की मेरी बहुत इच्छा थी, परंतु समाज के कारण मैं उसे देख नहीं पाया। अतः तुम देखना क्योंकि वहाँ भी हमारे धाम की बातें छिपी हैं।"

→ हमारे धाम की बातें हैं, दूसरी-सकुमार और साकुण्डल नामक दो सखियों को ढूँढ़कर जगाना, तीसरी-मुसलमान जाति में आई हुई आत्माओं के प्रति पक्षपात न होने देना, चौथी-हिन्दू तथा मुसलिम उभय समाज के प्रति समान दृष्टि रखकर एक नये धार्मिक समाज का गठन करना, पाँचवीं-छत्तीस हजार आत्माओं को जमा करके बड़ा मेला करना और नादान जीवों को अखण्ड मुक्ति बख्शिश कर धाम आना। इस प्रकार सद्गुरु स्वरूप ने उक्त बातों द्वारा जागनी लीला का बीज मात्र श्री मेहराज के दिल में बो दिया और भविष्य के लिए आज्ञा दी।

स. ४०-अब दोनों भाई-श्री गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहराज ठाकुर नित्य प्रति सद्गुरु स्वरूप के श्री मुख की चर्चा किस प्रकार सुनने लगे और उक्त चर्चा के कारण दोनों के कौल, फैल और हाल में क्या परिवर्तन आने लगा?

ज. ४०- अब दोनों भाई-श्री गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहराज ठाकुर सद्गुरु के श्री मुख की चर्चा सुनने घर से साथ ही आते हैं। पाठशाला में पढ़ने भी दोनों साथ-साथ ही जाते हैं। एक ही माता-पिता के इन दोनों पुत्रों का घर में भी रहन-सहन एक साथ ही है। एक ही गुरु के ये दोनों शिष्य चौबीसों घण्टे एक ही जगह अर्थात् परमधाम →

स. ४१-"दो नाते की बात"-यह कथन कौन और क्यों कह रहे हैं ? स्पष्टतः समझाइये।

ज. ४१- *"दो नाते की बात"*-यह कथन बीतककार स्वामी श्री लालदासजी महाराज दोनों भाइयों-श्री गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहराज ठाकुर के प्रेम के प्रति कह रहे हैं क्योंकि इन दोनों की →

स. ४२-बड़े भाई श्यामलिया ने एक दिन दोनों भाई गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहराज ठाकुर को किस वजह से डाँटा?

ज. ४२- बड़े भाई श्यामलिया घर में कमाई-धमाई में सबसे आगे थे क्योंकि वे उस समय बड़े मंत्री पद का कार्य सँभाल रहे थे, इसलिए घर-परिवार में उनका ज्यादा रोब भी चलता था। दोनों भाई-श्री गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहराज ठाकुर अभी पढ़ने-लिखने की →

स. ४३-बड़े भाई श्यामलिया ने दोनों भाइयों-गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहराज ठाकुर को डाँटते-डाँटते ऐसा क्या कह दिया, जिसे सुनते ही दोनों भाई तलवार लेकर उन्हें मारने के लिए टूट पड़े?

→ की ही बातों में मस्त रहते हैं। पुनः पारलौकिक दृष्टि से देखा जाय, तब भी ये दोनों एक ही गगन के सितारे हैं अर्थात् धाम में ये दोनों बहन-बहन अथवा एक ही धनी की धनियाणी हैं। सद्गुरु के श्री मुख की चर्चा के कारण इन दोनों का प्रेम हद के ब्रह्माण्ड को पार कर बेहद के प्रेम में परिवर्तित होने लगा। दोनों कभी भी अलग होते ही नहीं थे। दोनों का परस्पर प्रेम इतना बढ़ गया था कि देखनेवाले भी उनका रहन-सहन देखकर आश्चर्यचकित रह जाते थे क्योंकि इन दोनों भाइयों की कहनी, करनी तथा दशा किसी से भी नहीं मिलती थी। ये दोनों भाई धाम के प्रेम के परवश होकर "चौदह लोक से मथुरा न्यारी" की तरह जहान-परिवार से हर विषय में न्यारे हो चुके थे।

→ बातें सबसे न्यारी थीं। इन दोनों के कौल, फैल और हाल किसी से भी मिलते ही नहीं थे। अतः बीतककार को "सौ बात की एक बात", की तरह कहना ही पड़ा कि यह प्रेम तो "दो नाते की बात" वाला प्रेम है अर्थात् ये दोनों इस लोक में भी एक ही घर के और एक ही माता-पिता के पुत्र अर्थात् भाई-भाई थे और धाम में भी एक ही धनी की धनियाणी अर्थात् बहन-बहन थे। अतः इन दोनों के प्रेम को किसकी उपमा दी जाय?

→ उम्र के थे। किंतु वे पढ़ने-लिखने में कम ध्यान अथवा कम मेहनत करते थे। स्कूल-कालेज तो नाम मात्र के लिए जाया करते थे। उनका ज्यादा से ज्यादा ध्यान और लगन तो धर्म विषयक ज्ञान लेने में लगता था। यह बात माता-पिता के दिल में भी खटकते रहती थी। अतः अभी वे भौतिक पढ़ाई-लिखाई में ध्यान दें और मेहनत करें तथा आध्यात्मिक मार्ग पर न चलें, इसी ध्येय से बड़े भाई श्यामलिया ने दोनों का विरोध किया था।

ज. ४३- बड़े भाई श्यामलिया ने दोनों छोटे भाइयों को एक दिन घर और पढ़ाई के प्रति लापरवाह होने की वजह से डाँटते हुए आवेश में कहा, "तुम दोनों ने घर के काम-काज छोड़कर, पढ़ना-लिखना बन्द कर माता-पिता का कहना भी अनसुना कर दिया है और →

→ इसका मुख्य कारण नगरसेठ गांगजी भाई शाह और तुम्हारे गुरु श्री देवचन्द्रजी हैं। इन दोनों को नगर से बाहर निकालने पर ही तुम दोनों सुधरोगे और बड़ों का कहना भी मानने लगोगे। तब →

स. ४४-उस वक्त बड़े भाई श्यामलिया कैसे बच पाये?

ज. ४४- बड़े भाई श्यामलिया कुएँ पर सिर में साबुन लगाते हुए नहा रहे थे और दोनों भाइयों को डाँटते-डाँटते उन्होंने आवेश में आकर नगर सेठ गांगजी भाई तथा सद्गुरु स्वरूप को नगर से बाहर निकाल देने की बात कह दी। वह बात सुनते ही दोनों ही भाई हाथ में तलवार लेकर उनकी ओर टूट पड़े। दोनों भाइयों को हाथ में तलवार लेकर आता देखकर वे दौड़ते-दौड़ते माताजी की गोद में शरण लेने पहुँच गए। पुत्र श्यामलिया को बचाने के लिए माँ ढाल बनकर आगे आई। तब दोनों ने कहा, "देखिए! आप बड़े →

स. ४५-शाम को पिताश्री केशव ठाकुर ने दोनों भाइयों को बुलाकर क्या कहा और भाइयों के झगड़े को मिटाने के लिए बड़े भाई श्यामलिया की बातों को किस तरह दोनों के आगे रखा?

ज. ४५- किसी कार्य से बाहर गए पिताश्री केशव ठाकुर शाम को घर लौट आये। लौटने पर माताजी ने दिन की सारी रामकहानी उन्हें सुना दी। पिताजी सोचने लगे, दोनों लड़के गोवर्धन ठाकुर और मेहराज ठाकुर सयाने हो चुके हैं। अतः श्यामलिया के मुख से उनके गुरु को नगर से बाहर निकाल देने की जो बात निकली, वही बात उन्हें ज्यादा खटक गई और वही बात उन्होंने पकड़ ली। उसी के कारण मामला इतना बढ़ गया। पिता केशव ठाकुर एक अनुभवी मंत्री थे। उन्होंने शाम को दोनों भाइयों-गोवर्धन और मेहराज ठाकुर को बुलाया और पास में बिठाकर कहा, "आज दिन में तुम दोनों ने क्या-क्या नाटक किया? बात को समझे-बूझे बिना बड़े भाई को तलवार उठाकर मारने जाना, क्या इसी को समझदारी →

→ तक तुम दोनों भाई कोई काम नहीं आओगे।" बड़े भाई श्यामलिया के ऐसा कहते ही, दोनों भाई दौड़कर घर के अन्दर जाकर हाथ में तलवार लेकर बड़े भाई श्यामलिया पर टूट पड़े।

→ भाई हैं। अतः हमसे गलती होने पर हमें दो लात मार भी दें, तो हम सहन कर लेंगे क्योंकि हम छोटे हैं। परन्तु आपने हमारे गुरु को नगर से बाहर निकालने की जो बात कही न, उसके बदले में यदि हमने आपके सिर को आपके धड़ से अलग न कर दिया, तो देखना। आप होते कौन हैं हमारे गुरु को नगर से बाहर निकालने वाले? अभी आप माताजी की गोद में छिप जाने के कारण बच गए हैं। माताजी भी आपको कब तक बचाएगी? कब तक गोद में छिपाए रखेगी? देखते हैं।" इस तरह दोनों भाई अंगुली दिखाकर वहाँ से चले गए। तभी श्यामलदास ठाकुर बच पाए।

→ कहते हैं? क्या करना चाहते थे, तुम दोनों?" तब बात को सँभालने के लिए उन्होंने कहा, "बड़े भाई श्यामलिया का कहना यह नहीं था कि तुम दोनों धर्म न करो, कथा-चर्चा सुनने न जाओ। वह तो कितने दिन पहले से ही मुझसे कहते आया था कि "ये दोनों भाई इतने लगनशील होकर आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा-कथा सुन रहे हैं। किंतु यदि ये दोनों श्यामजी के मंदिर में कान्हजी भट्ट के पास जाकर चर्चा-कथा सुनते, तो इनकी यह मेहनत कामयाब हो जाती। ये तो गांगजी के घर में श्री देवचन्द्रजी के पास जाकर अपना समय और मेहनत बरबाद कर रहे हैं क्योंकि स्वयं श्री देवचन्द्रजी भी श्यामजी के मंदिर में कान्हजी भट्ट के श्री मुख की चर्चा सुनकर ही तो इनके गुरु बने हैं। यदि ये दोनों सोलह आना ज्ञानयुक्त गुरु के पास जाकर सुनते-सीखते तो कम-से-कम बारह आने अथवा चौदह आने विद्वान तो बनते! जब स्वयं गुरु ही मात्र चार आने भर का ज्ञान रखते हैं, तो ऐसे गुरु की चर्चा सुनने तथा सीखने से ये दोनों कितने बनेंगे? श्यामजी के मंदिर में कान्हजी भट्ट के पास जाकर यदि ये सुनें या सीखें, तो कम-से-कम श्री देवचन्द्रजी के बराबर →

→तो ही जायेंगे? अतः आप उन्हें समझाइये कि वे अपनी मेहनत और →

स. ४६-जब पिताश्री ने गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहराज ठाकुर से श्यामजी के मंदिर में कान्हजी भट्ट के पास बैठकर चर्चा सुनने का जिक्र किया, तब दोनों भाइयों ने क्या जवाब दिया?

ज. ४६- जब पिताश्री ने दोनों भाइयों-गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहराज ठाकुर से श्यामजी के मंदिर में कान्हजी भट्ट के पास बैठकर चर्चा सुनने का जिक्र किया, तब दोनों भाइयों ने जवाब देते हुए कहा, "हम गुरु श्री देवचन्द्रजी के ही पास कथा-चर्चा सुनने क्यों जाते हैं और श्यामजी के मंदिर में भट्टजी के पास क्यों नहीं जाते, यह बात भाई श्यामलिया क्या समझें?" तब पिता केशव ठाकुर ने पूछा, "अच्छा →

स. ४७-दीवान केशव ठाकुर ने दोनों भाइयों को श्यामजी के मंदिर में ले जाकर कान्हजी भट्ट से क्या कहा?

ज. ४७- दीवान केशव ठाकुर ने दोनों भाइयों को श्यामजी के मंदिर में ले जाकर कान्हजी भट्ट से कहा, " हे भट्टजी! ये दोनों मेरे पुत्र हैं। ये →

स. ४८-दीवान केशव ठाकुर की बातें सुनकर कान्हजी भट्ट ने दोनों भाइयों से क्या कहा? भट्टजी की आज्ञा प्राप्त कर पिताश्री के सामने दोनों भाइयों ने भट्टजी से क्या पूछा तथा भट्टजी ने उसका क्या जवाब दिया?

ज. ४८- दीवान केशव ठाकुर की बातें सुनकर कान्हजी भट्ट ने दोनों भाइयों से पूछा, " हे भाइयों! आप दोनों क्या पूछना अथवा जानना →

→ समय बरबाद न करें। तुम दोनों बड़े भाई की बातें समझे बिना ही उन्हें तलवार लेकर मारने दौड़ पड़े?"

→ तुम ही बताओ कि तुम दोनों कान्हजी भट्ट के पास न जाकर श्री देवचन्द्रजी की चर्चा में ही क्यों जाते हो?" तब दोनों ने कहा, "वे हमारे प्रश्नों के उत्तर दे पाएँ, तब न हम उनकी चर्चा में जाएँ! सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी किसी भी अथवा कैसे भी प्रश्न का जवाब दे सकते हैं। तभी हम उनके पास चर्चा-कथा सुनने जाते हैं।" उनकी यह बात सुनकर पिता केशव ठाकुर ने उनका विरोध किया और बोले, "अरे! झूठ मत बोलो!! सारी दुनिया को जवाब देनेवाले और स्वयं तुम्हारे गुरुजी को भी ऐसा बनानेवाले भट्टजी के पास चलकर तुम दोनों यदि ऐसा कहो, तो मैं मान लूँगा। चलो तुम दोनों मेरे साथ कान्हजी भट्ट के पास!!" तब पिताश्री केशव ठाकुर और दोनों भाई उक्त वाद-विवाद का निर्णय करने हेतु श्यामजी के मंदिर में कान्हजी भट्ट के पास चल पड़े।

→ आपसे दो-चार प्रश्न पूछना चाहते हैं। आप इनके प्रश्नों का इन्हें कबूल हो, ऐसा जवाब दिलाकर यदि इन्हें संतोष दिला सकेंगे, तो ये हमेशा आप की सेवा में उपस्थित रहेंगे, ऐसा इनका कहना है। इसलिए आप इनके प्रश्नों का जवाब देकर इन्हें संतोष दिलाइये।"

→ चाहते हैं, पूछ लीजिए?" इस प्रकार कान्हजी भट्ट की आज्ञा प्राप्त होने पर दोनों भाइयों ने पूछा, " हे भट्टजी! लोक कितने हैं? तत्त्व और गुण कितने हैं? शास्त्रों में कितने प्रकार के प्रलय कहे हैं?" इस पर भट्टजी ने जवाब देते हुए कहा, "देखो! लोक चौदह हैं,चौदह लोक से पन्द्रहवाँ लोक नहीं है। उसी प्रकार तत्त्व भी पाँच ही हैं, पाँच तत्त्व से ऊपर छट्ठाँ तत्त्व नहीं है। पुनः गुण भी तीन ही हैं, तीन गुणों से परे चौथा गुण नहीं है तथा प्रलय भी चार ही हैं। जैसे - नित्य, नैमित्तिक, प्राकृतिक और महाप्रलय।"

स. ४९-तत्पश्चात् दोनों भाइयों ने कान्हजी भट्ट के आगे कौन से प्रश्न रखे और कान्हजी भट्ट ने उन प्रश्नों के जवाब में क्या कहा?

ज. ४९- तत्पश्चात् दोनों भाइयों ने भट्टजी से पूछा, "यदि ऐसा ही है, तो जब महाप्रलय में चौदह लोक, पाँच तत्त्व तथा तीनों गुण सहित →

स. ५०-उक्त प्रश्नों का जवाब सुनकर दोनों भाइयों ने पुनः भट्टजी के आगे कौनसे प्रश्न रख दिये?

ज. ५०- उक्त प्रश्नों का जवाब सुनकर दोनों भाइयों ने भट्टजी से पूछा, "हे भट्टजी! यदि आपका कहना सही है,तो हमें यह बताइये कि आपने जिस क्षीर सागर, अक्षय वट नामक वृक्ष तथा अंगुष्ठाकारवाले परमात्मा के बारे में अभी बताया, वह क्षीर सागर →

स. ५१-उक्त प्रश्न के जवाब के विषय में कान्हजी भट्ट ने दीवान केशव ठाकुर से क्या कहा?

ज. ५१- उक्त प्रश्न सुनते ही कान्हजी भट्ट की सुध-बुध गायब हो गई। →

स. ५२-कान्हजी भट्ट की बातें सुनकर पिता श्री केशव ठाकुर ने अपने दोनों पुत्रों-गोवर्धन और मेहराज ठाकुर से क्या कहा ?

ज. ५२- कान्हजी भट्ट की उक्त बातें सुनकर दीवान श्री केशव ठाकुर को →

स. ५३-उक्त घटना द्वारा दोनों भाइयों को कौनसी बात हाथ लगी? तदुपरान्त दोनों भाई क्या करने लगे?

→ समस्त प्राकृतिक पदार्थों का नाश होने का कहा है, तो उस वक्त आपके वे परमात्मा कहाँ और कैसे रहते हैं?" तब कान्हजी भट्ट बोले, "उस वक्त वे परमात्मा क्षीर सागर में स्थित अक्षय वट नामक वृक्ष पर अँगुठे के आकार में रहते हैं। बाद में जब प्रलय काल की अवधि पूरी हो जाती है, तब उन्हीं परमात्मा द्वारा पुनः सृष्टि का विस्तार होता है।"

→ कौनसे लोक में है? अक्षय नामक वट वृक्ष किस तत्त्व का है तथा उन अंगुष्ठाकार परमात्मा का शरीर किस तत्त्व और गुण से निर्मित है और कहाँ है? क्योंकि पहले तो आपने ही कहा था, "चौदह लोक से परे पन्द्रहवाँ लोक नहीं है, पाँच तत्त्व से परे छट्ठाँ तत्त्व नहीं है और न तीन गुण से परे चौथा गुण ही है।" यह बात सुनते ही भट्टजी की सुध-बुध गायब हो गई।

→ तब भट्टजी ने दीवान केशव ठाकुर से कहा, "हे दीवानजी! आपके पुत्रों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का जवाब मैं तो क्या, यदि स्वयं ब्रह्माजी भी उतर आयें, तो वे भी नहीं दे पायेंगे। जब ब्रह्माजी भी इन प्रश्नों का जवाब नहीं दे सकते, तो मैं किस खेत की मूली हूँ?"

→ मन में बड़ा ही आश्चर्य महसूस हुआ और वे सोचने लगे, "अरे! इन्होंने तो एक ही प्रश्न में कान्हजी भट्ट को कान पकड़ा दिया, परास्त कर दिया।" अतः उन्होंने गर्व के साथ दोनों लड़कों से कहा, "अब तुम दोनों चर्चा-कथा सुनने जहाँ जाना चाहो, जा सकते हो। आज के बाद कोई तुम्हें कुछ नहीं कहेगा।" इस प्रकार कहकर दोनों भाइयों को आजाद कर दिया।

ज. ५३- उक्त वाद-विवादरूपी घटना द्वारा दोनों भाइयों-गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहराज ठाकुर को अपने सद्गुरु के ज्ञान का महत्त्व हाथ लगा और अन्य तारतमहीन थोथे कथाकारों के "तोते के राम राम" सदृश लक्ष्यहीन चर्चा का रहस्य भी जानने को मिला कि →

→ये थोथे कथाकार कितने पानी में हैं? अब तो शेर की छाती लेकर दोनों भाई जामनगर में जहाँ कहीं भी कथा-चर्चा हो रही हो, उस मण्डान में जाकर श्रोता के रूप में बैठ जाते थे और थोड़ी देर पश्चात् चर्चा करनेवाले वक्ता के आगे प्रश्नों की झड़ी लगा देते थे कि लोक कितने हैं? पुनः तत्त्व भी बताओ, कितने हैं? शास्त्रों में गुण और प्रलय कितने-कितने कहे हैं? इस प्रकार के प्रश्नों द्वारा वे सभी कथाकारों का मुखमर्दन करते फिरने लगे। इन दोनों भाइयों →

स. ५४-ये दोनों भाई-गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहराज ठाकुर संसार में कितने साल तक एक साथ रहे?

स. ५५-जब गोवर्धन भाई धाम चले, उस समय श्री मेहराज क्या करते थे?

स. ५६-श्री गोवर्धन भाई के धाम जाने से सबसे ज्यादा चोट किसे पहुँची और क्यों?

ज. ५६- श्री गोवर्धन ठाकुर के संसार छोड़ने पर सबसे ज्यादा चोट श्री मेहराज ठाकुर को पहुँची क्योंकि इन दोनों भाइयों के बीच प्रेम →

स. ५७-अपनी परात्मा के साक्षात्कार के लिए श्री मेहराज ने क्या किया था?

ज. ५७- अपनी परात्मा के साक्षात्कार के लिए श्री मेहराज ठाकुर अथवा श्री इन्द्रावती आत्मा ने जैसी कसनी (कसौटी) की, वैसी अन्य आत्माओं द्वारा संभव ही नहीं है। बारह हजार आत्माओं के बदले स्वयं इन्द्रावती आत्मा ने ही यह बात साबित कर दिखाई कि खेल के बीच रहकर भी इसी पञ्चभौतिक शरीर द्वारा जीते जी परलोक →

→ के आतंक से भट्टजी सहित अन्य कथाकारों में त्राहि-त्राहि होने लगी। सभी कथाकार सोचने लगे कि अब क्या करें? न इनके प्रश्नों का जवाब देते बनता है, न इन्हें कथा-मण्डान से भगाना ही उचित लगता है। न व्यासासन पर बैठने की हिम्मत ही होती है, न व्यासासन छोड़कर भागते ही बनता है। इस प्रकार इन दोनों भाइयों के प्रश्नों ने सभी कथाकारों को नीले-पीले, हरे-काले मुखवाला बना दिया। इस तरह ये दोनों आगे बढ़ते गये।

ज. ५४- ये दोनों भाई-श्री गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहराज ठाकुर संसार में वि. सं. १६७५ से लेकर वि. सं. १७०० तक अथवा २५ साल में १ माह २५ दिन कम तक एक साथ रहे। अतः दोनों २४ वर्ष १० माह और ५ दिनों तक एक साथ रहे।

ज. ५५- जिस समय श्री गोवर्धन ठाकुर श्री परमधाम चले, उस समय श्री मेहराज ठाकुर जामराजा के दरबार में दीवान पद में रहकर सेवा कर रहे थे।

→ इतना बढ़ गया था कि उनके लिए राम-लक्ष्मण और कृष्ण-बलराम का दृष्टांत देने में भी संकोच होता था। अतः श्री मेहराज ठाकुर को शरीर अथवा संसार के प्रति इतनी नफरत होने लगी थी कि उनके दिल में वैराग्य जाग उठा।

→ स्थित अपने परात्मा स्वरूप के साक्षात्कार की दृढ़ इच्छा रखनेवाले अवश्यमेव ही ऐसे अघटित कार्य कर दिखाते हैं। यदि स्वयं श्री इन्द्रावती सखी अपनी आत्मा के साक्षात्कार हेतु इस प्रकार की कसौटी नहीं करती, तो परात्मा के प्रत्यक्ष साक्षात्कार विषय की बातें असंभव ही रह जाती। इस प्रकार श्री इन्द्रावती आत्मा ने सर्वात्माओं के लिए असंभव कार्य को भी संभव कर दिखाया।

-(प्रकरण १३, सवाल-जवाब नं. ५७, कुल सं. ३५०+५७=४०७)।

❖ कसौटी ❖

स. १- तेरह वर्ष माया मिने, था ऊपर लौकिक बोझ ।
श्री राज तरफ रहत है, रमें बीच कौसर हौज ।।

इस चौपाई का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए बताइये कि यह चौपाई किस अवधिकाल का बोध करा रही है? पुनः तेरह वर्ष कहाँ-से-कहाँ तक के कहे हैं? लौकिक बोझ क्या था तथा श्री प्राणनाथजी कैसे हौज कौसर ताल में रमा करते थे?

ज. १- प्रश्न में कथित चौपाई श्री इन्द्रावती आत्मा के उन्नतशील समय →

स. २- श्री गोवर्धन भाई के धाम जाने के बाद एक दिन श्री मेहराज के दिल में क्या विचार आया?

ज. २- श्री गोवर्धन भाई के धाम चले जाने के बाद श्री मेहराज के दिल-दिमाग में जीवन की क्षणभंगुरता को देखकर जीवन के प्रति नफरत और घृणा उत्पन्न होने लगी। उन्हें लगने लगा कि क्या जाने अब मेरा इस संसार में कितना समय बाकी है? कल का क्या भरोसा? →

स. ३- "श्री देवचन्द्रजी देखत" अर्थात् "श्री देवचन्द्रजी यदि श्री परमधाम के एक-एक निशान हमें देखकर बताते हैं, तो मैं क्यों नहीं देख पाता हूँ?" - इस कथन द्वारा श्री मेहराज का वास्तविक कहना क्या था?

ज. ३- श्री मेहराज को इस विचार ने ग्रस्त कर रखा था कि गोवर्धन भाई तो धाम चले गए, अपनी बारी भी अब कभी भी आ सकती है। →

❖ कसौटी ❖

→ का बोध करा रही है। उक्त चौपाई में कहे तेरह वर्ष वि. सं. १६८७ से लेकर वि. सं. १७०० तक के हैं अर्थात् श्री इन्द्रावती आत्मा और सद्गुरु स्वरूप के मिलाप से लेकर गोवर्धन भाई के धाम जाने तक के। इन तेरह सालों में श्री इन्द्रावती ने सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी के पास आकर एक ओर आध्यात्मिक ज्ञान का संग्रह किया, तो दूसरी ओर दीवान के लड़के होने के नाते मंत्री पद सँभालने की भौतिक पढ़ाई-लिखाई करते हुए फूलबाई के साथ सांसारिक संबंध भी स्वीकारा। इतना सब बोझ सिर पर होते हुये भी कभी-कभी उन्हें २५ पक्ष के आध्यात्मिक ज्ञान की चितवनि द्वारा परमधाम के हौज कौसर ताल में फिरने का प्रत्यक्ष अनुभव भी हुआ करता था।

→ अतः एक दिन उनके मन में यह विचार आया, "हम धाम से खेल में अपने धनी की आज्ञा लेकर ही आये हैं और हमें धनी ने ही खेल देखने हेतु इस संसार में भेजा है। हमारे धनी तो सर्वशक्तिमान् हैं। अतः जब श्री सुन्दरबाई अग्रगण्य न होकर भी यहीं बैठे-बैठे धाम की परिक्रमा करते और सबकी परात्मा देखकर के सबको अपनी-अपनी परात्मा का परिचय कराकर दृढ़ करा देती हैं और वहाँ दिखनेवाली एक-एक वस्तु का वर्णन कर सुनाती हैं, तो मैं क्यों नहीं? मैं इस विषय में चुप्पी साधकर कैसे बैठ सकती हूँ?"

→ अतः उनका कहना यह था कि यदि सद्गुरु के कहे प्रमाण धाम में धनी की नजर में मैं सबसे आगे हूँ, अग्रगण्य हूँ, तो जब सुन्दरबाई श्री परमधाम के एक-एक निशान प्रत्यक्ष इसी शरीर में होते हुए देखकर, वर्णन कर हमें सुनाती हैं, तो मैं क्यों "मेरी परात्मा कहाँ है? किस दिशा में है? मूल मिलावे की कौनसी पंक्ति में किस तरह किस वस्त्र में बैठी है?" इतना भी नहीं देख पाती? ऐसा क्यों हो रहा है? इस प्रकार की चिंता के कारण ही वे दुःखी थे।

स. ४- श्री इन्द्रावती आत्मा का कसौटी में उतरने का मूल कारण क्या था?

स. ५- जब धनी सद्गुरु कहते थे कि इन्द्रावती धाम की एक पवित्र आत्मा है, तो इन्द्रावती के कहे अनुसार उन्हें श्री परमधाम न दिखने का मुख्य कारण क्या था?

ज. ५- जब धनी सद्गुरु नित्य प्रति चर्चा में कहा करते थे कि श्री इन्द्रावती →

स. ६- "जब मैं अपने धनी से आज्ञा लेकर खेल देखने आई हूँ, तो क्या धनी से मेरा इतना भी जोर नहीं चल सकता कि मैं अपनी बीतक यहीं बैठे देख सकूँ? क्या मेरे धनी मुझे इतना भी नहीं दिखा सकते?" - इस कथन द्वारा श्री इन्द्रावती आत्मा किस बात का दावा कर रही हैं?

स. ७- "परन्तु इस विषय में किसी का दोष नहीं है, दोष तो मेरे अन्दर के अवगुणों का है"-यह विचार करके श्री इन्द्रावती आत्मा क्या करने लगी?

ज. ७- "परन्तु इस विषय में किसी का दोष नहीं है, दोष तो मेरे अन्दर के अवगुणों का है" अर्थात् जब श्री इन्द्रावती के दिल में यह चौकस निर्णय हो गया कि न तो सद्गुरु स्वरूप के कहने में कोई दोष है →

स. ८- श्री इन्द्रावती आत्मा अब अपने अन्दर कौन-कौनसे अवगुण देखने लगी और उन अवगुणों को निर्मूल करने के लिए कौन-कौनसे उपाय करने लगी?

ज. ८- श्री इन्द्रावती आत्मा अब "अपने अंदर चौकस ही अवगुण हैं"- यह जानकर परमधाम-मूल मिलावे में न लगकर अन्यत्र लगनेवाले दुष्ट मन के ऊपर नियन्त्रण करने लगी। इस दुष्ट मन को फिराने →

ज. ४- श्री इन्द्रावती आत्मा का कसौटी में उतरने का मूल कारण उनकी यह इच्छा ही थी, "जब तक मैं अपने धाम को, अपनी परात्मा को न देख लूँ, तब तक मैं यह कैसे मान लूँ कि मैं भी धाम की आत्मा हूँ?"

→ आत्मा धाम की बारह हजार ब्रह्मात्माओं में से एक पवित्र आत्मा है, तब भी श्री इन्द्रावती आत्मा के अनुसार उन्हें धाम और उनकी परात्मा न दिखने का मुख्य कारण उनके अंदर विद्यमान विकाररूपी अवगुण है। इसी कारण वे श्री परमधाम मूल मिलावे में स्थित अपनी परात्मा को नहीं देख पा रही थी। नहीं तो, अन्य कोई कारण नहीं था।

ज. ६- उक्त कथन द्वारा श्री इन्द्रावती आत्मा इस बात का दावा ले रही हैं कि यदि मैंने इसी शरीर में होकर निजधाम और अपनी परात्मा देखने की इच्छा की, तो स्वयं श्री सद्गुरु स्वरूप ही कहा करते हैं कि "सब विध पियाजी समरथ" अर्थात् हमारे पियाजी पूर्णरूपेण सामर्थ्यशाली हैं। अतः वे मेरी इच्छा अवश्य पूर्ण कर सकते हैं, किंतु विकार तो मुझमें ही हैं।

→ और न श्री राजजी मुझे नहीं दिखाना चाहते, ऐसा ही है। दोष तो मुझमें ही है। मुझमें ही अवगुण छिपे हुए हैं। मेरी इच्छा पूरी करने में बाधा डालनेवाले मेरे अवगुण ही हैं। तब उन्होंने विचार किया, "जब मैं इन अवगुणों का पता लगाकर इन्हें शरीर से बाहर निकाल दूँगा, तब देखता हूँ कि मैं अपनी परात्मा कैसे नहीं देख पाता।" अब जहाँ-जहाँ उनका मन लगता, वहाँ-वहाँ वे अपने अवगुण ढूँढ़ने लगते थे।

→ हेतु वे अपने मन को "मेरा-मेरा" करके वह जिन-जिन चीजों में लगता है, उन-उन चीजों को लाकर सद्गुरु स्वरूप के चरणों में अर्पण करने लगी। इस तरह मन की परीक्षा करते-करते श्री इन्द्रावती आत्मा आगे बढ़ने लगी और अपने मन को हर प्रकार से मायावी साधनों से फिराकर परमधाम की ओर अथवा परात्मा की ओर लगाते हुए कसनी करने लगी।

स. ९-अपने अवगुणों के विषय में श्री मेहराज ने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के पास आकर क्या अर्ज की?

ज. ९- अपने अवगुणों के विषय में श्री मेहराज ने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी स्वरूप के पास आकर अर्ज करते हुए कहा, "हे धामधनी स्वरूप मेरे सद्गुरु! अपने अवगुण अपने-आप को दिखाई नहीं देते। अतः →

स. १०-श्री मेहराज की उक्त बातें सुनकर सद्गुरु स्वरूप ने उनसे क्या कहा?

ज. १०-श्री मेहराज की उक्त बातें सुनकर सद्गुरु स्वरूप ने उन्हें बार-बार कहा और समझाया, " हे मेहराज! तुम में कोई भी तथा किसी भी →

स. ११-श्री सद्गुरु के श्री मुख से उक्त बातें सुनकर श्री मेहराज अपने मन में क्या विचार करने लगते ?

ज. ११-श्री सद्गुरु स्वरूप के श्री मुख से उक्त बातें सुनकर श्री मेहराज मन ही मन विचार करने लगते, "यद्यपि सद्गुरु के कहे अनुसार मैं धाम की द्वादश सहस्त्र सखियों में से सर्वाग्रगण्य पवित्र तथा अत्यंत निर्मल इन्द्रावती आत्मा हूँ , परन्तु मैं यह कैसे मान लूँ कि मैं एक निर्मल और पवित्र आत्मा हूँ ? क्योंकि यदि मैं निर्मल एवं पवित्र आत्मा इन्द्रावती होती, तो मेरी ही तरह धामस्थ सखी श्री सुन्दरबाई अष्ट →

स. १२-श्री सद्गुरु स्वरूप की बातों को सुनकर अब श्री मेहराज श्री मुख के वचनों को सिर पर लेकर कैसे चलने लगे अथवा क्या करने लगे?

ज. १२-धामधनी स्वरूप श्री सद्गुरु स्वरूप के श्री मुख के वचनों को सुनकर श्री मेहराज सोचने लगे, "जब स्वयं सद्गुरु ने ही कहा है कि मैं धाम की निर्मल एवम् पवित्र आत्मा हूँ और द्वादश सहस्त्र सखियों में भी अग्रगण्य हूँ , तो यदि मैं उनके कहे अनुसार वहाँ की अग्रगण्य आत्मा इन्द्रावती हूँ , तो मुझमें यहाँ भी इन्द्रावती आत्मा →

→ आप ही बता दीजिए न कि ऐसे कौन-कौनसे अवगुण हैं, जिनके कारण मैं अपनी ही परात्मा स्वरूप को देख नहीं पा रहा हूँ, जिससे मैं उन प्रत्येक अवगुणों को दूर कर अपनी परात्मा देख सकूँ। निश्चित ही इन अवगुणों के कारण ही मेरा मन परमधाम में बैठी मेरी परात्मा की ओर न जाकर यहाँ की विभिन्न चीजों में लगते रहता है।"

→ प्रकार के अवगुण नहीं हैं। तुम तो श्री परमधाम की द्वादश सहस्त्र सखियों में से अग्रगण्य तथा अत्यंत निर्मल-पवित्र आत्मा हो। तुम मेरी बातों पर विश्वास करो। ऐसी कसौटी द्वारा शरीर को कष्ट क्यों दे रहे हो ?"

→ पहर की एक-एक लीला को प्रत्यक्ष देखकर वर्णन कर सकती है, तो क्या मैं इन्द्रावती आत्मा अभी तक अपनी परात्मा भी नहीं देख पाई? इसका मुख्य कारण अवश्य ही मुझमें छिपे अवगुण हैं। इसके सिवाय क्या कोई अन्य कारण हो सकता है? अब तो मेरे मन में ऐसे-ऐसे ख़यालात भी आने लगे हैं कि या तो मुझमें अवगुण हैं या तो मैं धाम की आत्मा ही नहीं हूँ। परंतु यह भी कैसे मान लूँ? अपने धामधनी स्वरूप सद्गुरु के ऊपर मैं इतना बड़ा आरोप लगाना तो क्या, लगाने की बात सोच भी कैसे सकती हूँ? अतः जरूर मुझमें ही अवगुण हैं, जिन्हें मैं देख नहीं पा रही हूँ।"

→ की ही तरह के कौल, फैल और हाल आने चाहिए। इस प्रकार धामधनी स्वरूप सद्गुरु के वचनों को शिरोधार्य करके श्री इन्द्रावती आत्मा समस्त सुन्दरसाथ समाज को सद्गुरु के गुण गाकर समझाने लगी कि-

जानहून कोड़ धड़, धड़ धड़ कोड़ मत्थन ।
मत्थाँ मत्थाँ कोड़ मुँह, मुँह मुँह कोड़ जिभन ।।

हेतरा मिडी तोहिजा, तांजे गुण गणँन ।
भाल तोहिजी हिकड़ी, तोके कीं न पुजँन ।। →

पुनः

दुष्ट अमें न दाखजे, अन्तर जो अभ्यास ।
कींगो कस्तूरीय जो, कांई न लभे बास ।।

स. १३-अपने मन को वश में करने के लिए श्री मेहराज क्या-क्या करने लगे?

ज. १३- श्री मेहराज के अनुसार यदि वे धाम की निर्मल, पवित्र एवम् सर्वाग्रगण्य आत्मा इन्द्रावती हैं, तो उनके अंदर विचार-विवेक, उत्साह-उमंगादि भी सबसे न्यारा ही होना चाहिए तथा वे सोचने लगे कि सद्गुरु ने यहीं प्रत्यक्ष देखी मेरी परात्मा को, मैं न देखूँ,

स. १४-श्री मेहराज ने अपने आहार को घटाते-घटाते कहाँ तक घटा दिया?

ज. १४- श्री मेहराज ने अपने मन सहित गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करने के लिए अपनी पूर्ण खुराक में से दैनिक थोड़ा-थोड़ा घटाते-घटाते दो पैसे भर में पहुँचा दिया अर्थात् पूर्ण खुराक सोलह आना

स. १५-उक्त कसौटी के प्रतिफल श्री मेहराज के शरीर की क्या दशा हुई?

ज. १५- उपरोक्त कसौटी के प्रतिफल श्री मेहराज का शरीर दिन-प्रतिदिन सूखते-सूखते क्षीण होने लगा। कुछ दिनों में ही उन्हें चलने-फिरने में कमजोरी महसूस होने लगी। किंतु वे ज़िद पर अड़ गए कि यदि मैं इन्द्रावती हूँ, तो मुझमें इन्द्रावती के लक्षण दृश्यमान् होने ही

स. १६-अब श्री मेहराज का मन कहाँ और किसमें लगने लगा? वे अपने मन को किस तरह फटकारने लगे?

ज. १६- शरीर की ऐसी नाजुक हालत हो जाने पर भी चंचल मन बंदर की

→ उक्त चौपाइयों द्वारा वे सद्गुरु स्वरूप की दया-कृपा और मेहेर समस्त सुन्दरसाथ को समझाने लगे कि हमें सद्गुरु के प्रति कितना आभार मानना चाहिए।

→ तो दूसरा कौन देखेगा? अतः अपने चंचल मन को सब ओर से हटाकर परमधाम की ओर फिराना ही पड़ेगा। किंतु यह सरलतापूर्वक हाथ आनेवाला नहीं है। इसको अपने वश में करने के लिए इसकी शक्ति को ही छीनना पड़ेगा और उसे शक्ति मिलती है खाद्य-खुराक द्वारा। यसर्थ अपनी खुराक को ही सीमित कर देना चाहिए। अतः उन्होंने यह निश्चय किया कि अब मुझे अपने गुण, अंग, इन्द्रिय सहित मन को वश में करना पड़ेगा।

→ में से पहले आठ आना किया, फिर आठ आना का आधा चार आना किया और फिर चार आना का भी आधा दो आना किया और फिर दो आने का भी आधा एक आना कर दिया। अब इसका भी आधा कर दें, तो दो पैसे भर रह गए। इतना ग्रहण करने पर आत्मघात भी नहीं लगता और गुण, अंग, इन्द्रियों के राजा मन की चंचलता भी ठिकाने बनी रह सकती है। इस तरह वे कठिन कसौटी पर उतर गए।

→ पड़ेंगे और मुझे इस तरह चलना ही पड़ेगा। इस कठिन कसौटी द्वारा गुण, अंग, इन्द्रिय तो शान्त होते गए, परन्तु मन धाम की ओर फिरने के बदले घर की अच्छी-अच्छी चीजों में लगने लगा। अतः घर की जिन-जिन चीजों में श्री मेहराज का मन लगने लगा, उन-उन चीजों को वे अवगुण समझकर सद्गुरु के चरणों में अर्पण करने लगे। इस प्रकार की कसौटी के प्रतिफल उनका शरीर सूखते चला गया और सारा शरीर हलदी सदृश पीला हो गया।

→ भाँति उछल-उछलकर लौकिक पदार्थों में जा लगता। अतः श्री मेहराज अपने चंचल मन को कोसते और फटकारते हुए कहते, "हे चण्डाल मन! तुझे लगने की जगह अर्थात् श्री परमधाम २५ पक्ष में लगना चाहिए, तू तो कहाँ-कहाँ दौड़ रहा है?"

स. १७-श्री मेहराज का मन अब उमड़-उमड़कर घर की किन-किन चीजों में लगने लगा? श्री मेहराज उन चीजों को अपने अवगुण समझकर उनका क्या करने लगे?

ज. १७- श्री मेहराज का मन अब उमड़-उमड़कर घर में स्थित सोना-चाँदी →

स. १८-घर की सभी चीजों को श्री सद्गुरु के चरणों में समर्पित कर देने के पश्चात् श्री मेहराज का मन कहाँ जा लगा?

ज. १८- घर की सभी चीजों को श्री सद्गुरु के चरणों में समर्पित कर देने के पश्चात् श्री मेहराज का मन सोचने लगा, "तेरी पत्नी यदि →

स. १९-श्री मेहराज इस तरह अपने मन को परखने के लिए कहाँ-कहाँ तक गये?

ज. १९- उपरोक्त प्रकार से अपने मन की परीक्षा करने के पश्चात् अब श्री मेहराज को उनका मन शान्त हुए जैसा लगने लगा। लेकिन फिर →

स. २०-जब श्री मेहराज का मन हर्षित होकर बाज़ार की दुकानों में स्थित वस्तुओं में लगने लगता, तब वे क्या करते थे?

ज. २०- जब श्री मेहराज का मन हर्षित होकर बाज़ार की दुकानों में स्थित →

स. २१-श्री मेहराज अपने शरीर को जबरदस्त कसौटी पर चढ़ाकर अपनी इन्द्रियों को परखते हुए धामधनी स्वरूप सद्गुरु से क्या कहते?

ज. २१- श्री मेहराज अपने गुण, अंग, इन्द्रियों सहित मन को श्री परमधाम →

→ आदि अच्छी-अच्छी चीजों में लगने लगा। अतः जिन-जिन चीजों की ओर उनका मन आकृष्ट होता, उन-उन चीजों को उठाकर वे श्री सद्गुरु के पास ले आते और उन्हें अपने अवगुण समझकर श्री धामधनी स्वरूप सद्गुरु के चरणों में समर्पित कर देते और अपने मन को फटकारते, "अरे चण्डाल मन! तू अब कहाँ-किसमें लगेगा?"

→ तेरी है, तो तेरी पत्नी के गहने भी तो तेरे ही हैं न! इस तरह उनका मन पत्नी फूलबाई के गहनों में जा लगा। तब श्री मेहराज ने अपनी पत्नी से उसके गहने माँगकर उन्हें भी श्री सद्गुरु के चरणों में समर्पित कर दिया। अब मन कहाँ जायेगा और क्या करेगा? इस प्रकार मन की परीक्षा करने लगे।

→ वे सोचते हैं कि मेरा मन धाम की ओर तो लगता ही नहीं है। ऐसा क्यों हो रहा है? तब विचार किया कि जरा बाज़ार में अथवा सोने-चाँदी एवं कपड़े-लत्ते की दुकानों में जाकर देखें तो! अतः इस प्रकार अपने मन की गति-विधि को जानने हेतु वे सोने, चाँदी तथा कपड़ों की दुकानों में गये। वहाँ जाकर देखा, तो पाया कि यह चण्डाल मन तो अच्छे-अच्छे हारों और कपड़ों के प्रति उमड़ने लगा।

→ वस्तुओं में लगने लगता, तब वे अपने चण्डाल मन को धिक्कारते हुए कहते, "अरे चण्डाल मन! तू अब भी नहीं बदला? वैसा-का-वैसा ही है? अरे कुकर्मी! अब तो मान जा !! धाम की ओर लग!!! तुझे परमधाम के २५ पक्षों में फिरना है, न कि माया में!!!"

→ की ओर फिराने हेतु जबरदस्त कसौटी करने लगे और बारम्बार सद्गुरु के चरणों में अर्ज करते, "हे धनी! अपने अवगुण मुझे क्यों पकड़ में नहीं आते? यदि आप मेरे अवगुण मुझे दिखा दें, तो मैं उन सभी अवगुणों को दूर कर उन्हें उनके ठिकाने लगा देता।"

स. २२-रास्ते पर चलते समय यदि श्री मेहराज को कोई मित्र मिल जाता था, तो वे अपना मुँह दूसरी ओर फिराकर आगे क्यों निकल जाते थे?

ज. २२- रास्ते पर चलते समय भी श्री मेहराज के हाथ में जाप की माला →

स. २३-इस प्रकार श्री मेहराज ने जब कठिन कसौटी द्वारा अपने शरीर को त्याज्य स्तर में पहुँचा दिया, तब क्या घटना घटी, स्पष्टतः समझाइये?

ज. २३- उपरोक्त प्रकार से जब श्री मेहराज ने अपने गुण, अंग, इन्द्रियों सहित मन को भी झूठे प्रपंचों से हटाकर धामधनी की ओर फिरा दिया, तब एक समय अचानक उनका मन पचीस पक्ष की लीला में लग गया। उन्हें उस समय ब्रज और रास के दर्शन हुए। तत्पश्चात् वे बेहद भूमिका से परे अक्षर धाम से भी आगे स्थित सातों घाटों →

स. २४-उक्त घटना के फलस्वरूप जब श्री मेहराज श्री परमधाम में उठने की आस में तल्लीन हो गए, तब बालबाई ने उन्हें उक्त अवस्था में देखकर श्री सद्गुरु स्वरूप से क्या कहा?

ज. २४- उक्त घटना के कारण जब श्री मेहराज-श्री इन्द्रावती आत्मा द्वारा उपरोक्त रूपेण "आतम पर आतम पेखे" यह महावाक्य साकार हो गया, तब धाम का प्रेम उमड़ आने के कारण उनका दिल- →

स. २५-"एक भाई पहिले चला, अब यह हुआ तैयार"-ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा?

ज. २५- *"एक भाई पहिले चला, अब यह हुआ तैयार"* अर्थात् →

→ रहती थी। रास्ते पर चलते समय भी वे अपनी सुरता धाम में लगाने-फिराने के लिए राज-राज जपते हुए ही चलते थे। चलते समय रास्ते में कभी वे अपने किसी मित्र या दोस्त को आता देखते, तो उन्हें अनदेखा करने या बचने का उपाय सोचने लगते। अतः उनसे बचने के लिए वे उनसे मुँह फिराकर उन्हें अनदेखा कर उनसे आगे निकल जाते, जिससे धाम की चितवनि में विघ्न न पड़े।

→ में पहुँच गए, जिन्हें देखकर उनका मन खिल उठा। श्री यमुनाजी पार करने के पश्चात् सातों घाट पार कर उनका मन चाँदनी चौक में फिरने लगा। जब वे रंगमहल के पूर्व से दक्षिण की ओर गये और पश्चिम तथा उत्तर दिशा में फिरकर मूल दरवाजे से सीधे अन्दर चले गये, तो उनका मन भी सीधे मूल मिलावे के पूर्व दरवाजे की बाईं ओर के थंभों में जा लगा, जिससे सटकर बैठी उनकी परात्मा खेल देख रही थी। उन्होंने देखा कि वहाँ बैठी सभी आत्माएँ खेल देखने में तल्लीन थीं। ये सब देखने के पश्चात् आत्मा को संतोष तथा शान्ति हुई।

→ दिमाग शून्य-सा हो गया। अब तत्क्षण उन्हें अपनी परात्मा में उठने की लगन लग गई और सद्गुरु का भविष्य सात समुंदर पार चला गया अर्थात् अदृश्य हो गया। परन्तु "ईश्वरेच्छा बलीयसी" के कारण उस समय बालबाई वहाँ पहुँच गई और उक्त दशा में पहुँचे श्री मेहराज की सारी खबर सद्गुरु को सुझा दी और यह सलाह भी दी कि किसी भी बहाने से श्री मेहराज की धाम में लगी सुरता को फिरा दो। उनके "राज-राज" की रट में विघ्न पड़ने पर ही वे जीवित रहेंगे।

→ गोवर्धन भाई तो धाम चले। अब उनके पीछे-पीछे श्री मेहराज भी धाम जाने के लिए तैयार हो रहे हैं। अतः उन्हें बुलवाकर आप समझाते क्यों नहीं हैं? शरीर छूट जाने पर आप कुछ नहीं कर पाएँगे। ऐसा बालबाई ने श्री सद्गुरु स्वरूप से कहा क्योंकि श्री मेहराज की दशा देखकर उन्हें सद्गुरु के भविष्य की चिंता होने लगी थी।

स. २६-बालबाई की बात सुनकर श्री सद्गुरुजी ने क्या किया?

स. २७-श्री सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज को बुलवाकर उनसे क्या पूछा और पूछने पर श्री मेहराज ने उन्हें क्या जवाब दिया?

ज. २७- श्री सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज को बुलवाकर उनसे पूछा, "तुम →

स. २८-जब सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज से पूछा, "हे मेहराज! तुम मुझे क्या पहचानकर बैठे हो?" तब इस पर श्री मेहराज ने सद्गुरु स्वरूप से क्या कहा? पुनः उस वक्त सद्गुरु की ओर से बालबाई ने श्री मेहराज से क्या कहा?

ज. २८- जब सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज से पूछा, "हे मेहराज! तुम मुझे क्या पहचानकर बैठे हो? मैं कहता तो हूँ, "तुम पवित्र-निर्मल आत्मा इन्द्रावती हो।" तब इस पर श्री मेहराज ने सद्गुरु स्वरूप से कहा, "आपकी चर्चा सुनते समय जब उसमें ब्रज की बातें आती हैं, तो →

स. २९-"ए अवगुन नहीं तेरे" - यह कथन किसने और किससे कहा? इस कथन के जवाब में श्री मेहराज ने क्या कहा?

स. ३०-पुनः जब सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज से पूछा कि "क्या है तेरे मन में", जिसके कारण तुम यह सब कर रहे हो, तब श्री मेहराज ने क्या कहा?

स. ३१-श्री मेहराज की उक्त बातें सुनकर सद्गुरु स्वरूप ने जवाब में क्या कहा?

ज. २६- बालबाई द्वारा श्री मेहराज की खबर सुनकर श्री सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज को अपने पास बुलवाया।

→ यह सब क्यों कर रहे हो? तुम्हारे दिल में क्या है? मुझे स्पष्टरूप से बताओ कि तुम यह सब किस लिए कर रहे हो।" तब श्री मेहराज ने जवाब दिया, "जब आपके श्री मुख से मैं ब्रज की चर्चा सुनता हूँ, तो मैं अपने-आप को सँभाल नहीं पाता हूँ। मेरी आँखों से अश्रु बहने लगते हैं।"

→ मुझे सहन नहीं होती। वहाँ की लीला-कथा सुनते ही मेरी आँखों से निरन्तर अश्रु बहने लगते हैं। अतः मैं क्या करूँ?" तब श्री सद्गुरु स्वरूप की ओर से बालबाई ने श्री मेहराज से पूछा, "तुम सद्गुरु स्वरूप को क्या पहचान कर बैठे हो? यदि तुमने उन्हें साक्षात् धामधनी स्वरूप समझा होता, तो तुम रात-दिन उनकी ही परिक्रमा करते रहते। तब ब्रज लीला की कथा में तुम्हारा मन कदापि नहीं लगा होता।" बालबाई की उक्त बातों का समर्थन करते हुए सद्गुरु ने श्री मेहराज से कहा, "यदि तुम्हें ऐसा ही होता हो, तो तुम ब्रजवाले स्वरूप का ध्यान धर लो।"

ज. २९- "ए अवगुन नहीं तेरे" - यह कथन सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज से कहा। तब श्री मेहराज ने कहा, "यदि मुझमें अवगुण नहीं हैं, तो धाम की अपनी ही लीलाओं को मैं क्यों नहीं देख पाता?"

ज. ३०- पुनः जब सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज से पूछा, "क्या है तेरे मन में ", जिसके कारण तुम यह सब कर रहे हो, तब श्री मेहराज ने कहा, "जिस तरह आप धाम की लीलाओं को देखकर हमें वर्णन कर सुनाते हैं, उसी तरह मैं क्यों नहीं देख पाता?"

ज. ३१- श्री मेहराज की उक्त बातें सुनकर जवाब में सद्गुरु स्वरूप ने कहा, "यह बात तो हुकम के हाथ की है। मेरे बाद तुम्हें भी होगा। तुम्हें अभी देखना हो, तो मुझे उठाकर तुम गादी पर बैठ जाओ।"

स. ३२-सद्गुरु स्वरूप ने ऐसा क्या कहा, जिसके कारण श्री मेहराज का चित्त पीछे फिर गया?

ज. ३२- सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज से कहा, "देखो! हुकम की बात तो →

स. ३३-बालबाई और सद्गुरु स्वरूप ने आपस में सलाह-मशविरा कर श्री मेहराज का चित्त फिराने हेतु कौनसा बहाना बनाया?

स. ३४-श्री मेहराज को अपने पास बुलाकर सद्गुरु स्वरूप ने उनसे क्या कहा?

ज. ३४- श्री मेहराज को अपने पास बुलवाकर सद्गुरु स्वरूप ने उनसे कहा, "हे मेहराज! मुझे सिद्धान्त की कई बातें सिद्ध करने के लिये दोनों पुराणों-हरिवंश पुराण और ब्रह्मवैवर्त पुराण की जरूरत →

स. ३५-श्री मेहराज स्वरूप कितने दिन में गुजरात जाकर दोनों पुराण लेकर लौट आए?

स. ३६-क्या श्री मेहराज गुजरात स्थित अहमदाबाद पहुँचकर वे दोनों पुराण ले आये थे?

ज. ३६- सद्गुरु स्वरूप की आज्ञा शिरोधार्य करके श्री मेहराज दूसरे ही दिन सबेरे खाने-पीने का सामान लेकर अहमदाबाद के लिए रवाना हो गए। दिनभर चलकर रात में एक जगह ठहरे। दूसरे दिन सुबह चलने की तैयारी कर ही रहे थे कि इतने में सामने से एक भेषधारी ब्राह्मण पुरुष आया और उसने उनसे पूछा, "आप →

→ हुकम के हाथ में ही है। किंतु तुम्हें अभी देखना ही है, तो तुम मुझे धाम में उठाकर मेरी जगह बैठ जाओ, तब तुम सब देख सकोगे।" यह बात सुनते ही श्री मेहराज का चित्त फिर गया और धाम देखने की इच्छा टूट गई।

ज. ३३- बालबाई और सद्गुरु स्वरूप ने आपस में सलाह-मशविरा कर श्री मेहराज का चित्त धाम से फिराने के लिए और उनकी राज-राज की रटन छुड़ाने के लिए उन्हें अहमदाबाद जाकर दो पुस्तक ढूँढ़कर ले आने के कार्य में लगा दिया।

→ है। मैंने इन दोनों पुराणों की यहाँ सारे जामनगर में तलाश करवाई, परंतु यहाँ नहीं मिली। सभी दुकानदारों ने कहा कि ये दोनों ग्रन्थ यहाँ नहीं हैं, परंतु अहमदाबाद में अवश्य मिल जायेंगे। लेकिन मेरा यह कार्य तुम्हारे सिवाय कौन कर लायेगा? इसलिए मैंने तुम्हें बुलवाया है। क्या तुम अहमदाबाद जाकर मेरे लिए हरिवंश पुराण और ब्रह्मवैवर्त पुराण ले आओगे?" तब श्री मेहराज ने जवाब दिया, "हाँ! मैं ले आऊँगा।"

ज. ३५- श्री मेहराज स्वरूप को श्री सद्गुरु स्वरूप और बालबाई ने सलाह-मशविरा करके पन्द्रह दिन के अन्दाज से अहमदाबाद, गुजरात भेजा था, किंतु श्री मेहराज दो ही दिन में वह कार्य निपटाकर जामनगर लौट आये।

→ कहाँ जा रहे हैं?" श्री मेहराज ने उत्तर दिया, "मैं अपने सद्गुरुजी के लिए हरिवंश पुराण और ब्रह्मवैवर्त पुराण नामक दो ग्रन्थ लेने अहमदाबाद जा रहा हूँ।" तब भेषधारी ब्राह्मण पुरुष ने कहा, "अच्छा! मुझे भी वे दोनों ग्रन्थ ही बेचने हैं। अतः यदि आप लेना चाहते हैं, तो ले लीजिए।" तब श्री मेहराज ने दोनों ग्रंथ हाथ में लेकर देखे कि दोनों ग्रंथ नए ही हैं। तब दोनों ग्रंथों की कीमत चालीस रुपये चुकाकर वे आधे रास्ते से ही लौट चले। अहमदाबाद तक तो जाना ही नहीं पड़ा।

स. ३७-"बुक सेलर" के रूप में आया हुआ व्यक्ति कौन था?

ज. ३७- वे दोनों पुराण लेकर "बुक सेलर" के रूप में आनेवाला व्यक्ति श्री राजजी के जोश का स्वरूप था। उन्हें हुकम का स्वरूप भी →

स. ३८-बालबाई और सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज को गुजरात स्थित अहमदाबाद शहर किस विचार से भेजा था और हुआ क्या?

ज. ३८- श्री सद्गुरु स्वरूप और बालबाई-दोनों ने इस विचार से श्री मेहराज स्वरूप को गुजरात स्थित अहमदाबाद शहर भेजा था कि उन्हें जाने में पाँच दिन लगेंगे, तो आने में भी पाँच दिन तो अवश्य ही लग जायेंगे। पुनः उन्हें वहाँ वे दोनों ग्रंथ ढूँढ़ते-ठहराते भी तो →

स. ३९-श्री सद्गुरु स्वरूप तथा बालबाई की सलाह के विरुद्ध ब्राह्मण भेष में आये "बुक सेलर" ने ऐसा कार्य क्यों किया?

ज. ३९- "बुक सेलर" के रूप में आया वह भेषधारी ब्राह्मण पुरुष अन्य कोई नहीं, बल्कि श्री राजजी के हुकम का स्वरूप था। श्री मेहराज के अंदर धाम में उठने की उत्कट चाहना हो रही थी। किंतु सद्गुरु

❖ अरब यात्रा ❖

स. १-श्री मेहराज (इन्द्रावती स्वरूप) सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी की आज्ञा शिरोधार्य करके किस संवत् में अरब यात्रा हेतु निकले?

→ कहा जाता है। कार्य-कारणवश श्री राजजी की आज्ञा पालन करने हेतु स्वरूप धारण करके आने के कारण ही उन्हें हुकम के स्वरूप के नाम से पहचाना जाता है।

→ चार-पाँच दिन लग ही जायेंगे। अतः कुल मिलाकर कम-से-कम पन्द्रह दिन तो वे राज-राज की रटन से वंचित रहेंगे। तब उनका मन थोड़ा शान्त रहेगा और धाम में लगी हुई उनकी सुरता व्यवहारिक कार्य में लगते ही विरह हट जायेगा। किंतु श्री मेहराज स्वरूप वह कार्य दो ही दिन में पूरा कर लौट आए। लौटते समय रास्ते से ही वे हाथ में माला लेकर राज-राज करने लगे। तब बालबाई और श्री सद्गुरु स्वरूप ने देखा कि श्री मेहराज तो पहले की तरह ही राज-राज करने लगे। दोनों विचार करने लगे कि अब क्या किया जाए?

स्वरूप द्वारा की गई ब्रह्मात्माओं के जागनीरूपी कार्य की भविष्यवाणी के आधारभूत स्वयं श्री मेहराज ही थे। अतः धाम जाने से रोकने के लिए बालबाई तथा सद्गुरु स्वरूप ने उन्हें बहाने से अहमदाबाद भेजा था। किंतु ये मेहराज स्वरूप मात्र पन्द्रह दिन के लिए उलझन में डालने से रुकनेवाले नहीं हैं, इस बात की सूचना देने के लिए ही वह ब्राह्मण भेषधारी पुरुष दोनों पुराण लेकर रास्ते के बीच मिला था।

-(प्रकरण १४, सवाल-जवाब नं. ३९,कुल सं. ४०७+३९=४४६)।

❖ अरब यात्रा ❖

ज. १- श्री मेहराज (इन्द्रावती स्वरूप) सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी स्वरूप की आज्ञा शिरोधार्य करके वि. सं. १७०३ फाल्गुन माह में भारत से अरब यात्रा के लिए निकले।

स. २- श्री राजजी स्वरूप सद्गुरु ने श्री मेहराज को अरब किस ध्येय से भेजा था?

स. ३- खेता भाई कौन थे? वे अरब क्यों गये थे तथा उन्हें अरब गये कितने साल हो चुके थे?

स. ४- खेता भाई के विषय में सद्गुरु के दिल में क्या-कैसी इच्छा एवं भावना थी?

ज. ४- खेता भाई के विषय में सद्गुरु स्वरूप के दिल में यह इच्छा थी कि नगरसेठ श्री गांगजी भाई के सहोदर भाई होने के कारण गांगजी भाई →

स. ५- अरबस्तान अथवा बरारब जाने हेतु साल का कौनसा महीना अनुकूल होता है?

स. ६- उस समय नाव द्वारा यात्रा करने पर कितने दिनों में बरारब पहुँचा जाता था? श्री मेहराज बरारब खेता भाई के पास कितने दिनों में पहुँचे?

ज. ६- यदि हवा का रुख अनुकूल दिशा में हो, तो नाव द्वारा भारतीय →

स. ७- अरब पहुँचने पर श्री मेहराज द्वारा प्राप्त हुआ पत्र पढ़कर कौन बहुत आनन्दित हुए? वह पत्र किसने लिखकर भेजा था?

ज. ७- श्री मेहराज भारत से चालीस दिन की समुद्री यात्रा पूरी कर →

स. ८- जब श्री मेहराज ने खेता भाई को भारत लौट चलने तथा तारतम सम्बन्धी सारी बातें कह समझाईं, तब खेता भाई को उन विषयों की छींट तक क्यों नहीं लगी?

ज. २- श्री राजजी स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने श्री मेहराज स्वरूप को श्री गांगजी भाई के बड़े भाई श्री खेता भाई को वापस घर ले आने के लिए अरब भेजा था।

ज. ३- खेता भाई नगरसेठ श्री गांगजी भाई के सहोदर बड़े भाई थे। गांगजी भाई के घर में स्थित भाभी हीरबाई उन्हीं की पत्नी थीं। खेता भाई धन-दौलत कमाने के उद्देश्य से अरब गये थे। उन्हें अरब गये पचीस साल हो चुके थे।

→ की तरह ही वे भी धार्मिक आत्मा होंगे। अतः यदि ऐसा ही हो, तो एक तो हमें धाम की आत्मारूपी अमूल्य धन की प्राप्ति हो जाएगी। दूसरे उनके द्वारा कमाया हुआ लौकिक धन गांगजी भाई के धन की तरह ही धर्म प्रचार-प्रसाररूपी शुभ कार्य में लग जायेगा।

ज. ५- अरबस्तान अथवा बरारब जाने हेतु साल का माघ तथा फाल्गुन महीना ही अनुकूल होता है।

→ समुद्र के इस किनारे से अरब देश के समुद्र के उस किनारे पर उतरने के लिए उस समय पूरे चालीस दिन लगते थे। श्री मेहराज ठाकुर अरब देश स्थित बरारब में विराजमान खेता भाई के पास पूरे चालीस दिनों में पहुँचे।

→ अरबस्तान अथवा बरारब में विराजमान खेता भाई के पास पहुँचे और उनसे मिलकर उन्हें उनके भाई गांगजी और पत्नी हीरबाई द्वारा लिखी गई चिट्ठियाँ दी, जिन्हें पढ़कर खेता भाई बड़े ही आनन्दित हुए।

ज. ८- जब श्री मेहराज ठाकुर ने खेता भाई को उनके भाई श्री गांगजी के घर में हो रही लीला अर्थात् सद्गुरु स्वरूप द्वारा गांगजी भाई के ऊपर की हुई दया अथवा मेहेर की बरसात की बातें तथा तारतम विषयक →

→ आध्यात्मिक ज्ञान समझाया, तब उस विषय में खेता भाई को छींट तक नहीं लगी क्योंकि पचीस साल तक मुसलमानों के देश अरबस्तान →

स. ९- जब श्री मेहराज ने खेता भाई को उनके द्वारा मेहनत से कमाए हुए धन को समेटकर स्वदेश स्थित उनके घर अथवा परिवार के पास लौट चलने तथा उस धन को गांगजी भाई की तरह ही श्री राजजी की सेवा में लगाने की बात कही, तब खेता भाई ने उन्हें क्या जवाब दिया?

ज. ९- जब श्री मेहराज ने खेता भाई को उनके द्वारा मेहनत से कमाए हुए धन को समेटकर स्वदेश स्थित उनके घर अथवा परिवार के पास लौट चलने तथा उस धन को गांगजी भाई के धन की तरह ही श्री राजजी की सेवा में लगाने की बात समझाई, तब खेता भाई उन्हें समझाने लगे, "देखो मेहराज! मैं भारतवर्ष छोड़कर अरब देश धन कमाने हेतु ही आया था। पुनः जिस ध्येय से →

स. १०-जब खेता भाई ने श्री मेहराज से भारत लौटने की बात का समर्थन किया, तब उसके पश्चात् खेता भाई तथा श्री मेहराज दोनों किस-किस कार्य में लग गये?

ज. १०- श्री मेहराज ठाकुर की बातें सुनने और परिवार के सदस्यों की →

स. ११-बरारब में खेता भाई के कार्य-व्यापार को समेटते-समेटते कितना समय लग गया?

स. १२-श्री मेहराज द्वारा खेता भाई सहित भारत आने की तैयारी करते-करते कितना समय व्यतीत हुआ था कि एक दिन अचानक एक घटना घटी? उस घटना को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

→ में रह जाने के कारण खेता भाई के अंदर स्थित भारतीय संस्कार शून्य हो चुके थे तथा अरब देश के संस्कार उन पर चढ़ जाने के कारण उनकी जीवात्मा अपात्र बन चुकी थी।

→ आया था, उसी के अनुसार अतुल्य धन कमाया भी! आज मुझे घर-परिवार छोड़कर यहाँ आये हुए पचीस साल हो चुके हैं। अतः आपके कहे प्रमाण मैं अपने देश लौटने के लिए तैयार हूँ। शायद आप मेरे द्वारा कमाए हुए धन को श्री गांगजी भाई के धन की तरह ही समझ रहे हैं। परंतु मेरा धन वैसा नहीं है, जो कि उनके धन की तरह धर्म में लग सके। मेरे द्वारा कमाए हुए धन की तो तीन ही गति हो सकती है। या तो मेरे द्वारा कमाया हुआ धन १) अग्नि में जलकर खाक हो जाएगा अथवा २) पानी में डूबकर लापता हो जाएगा या फिर ३) इन उभय बलाओं से यदि यह धन बच भी जाता है, तो सीधे राज दरबार में जमा हो जाएगा, किंतु धर्म-कार्य में नहीं लग पायेगा क्योंकि मेरा धन धर्म में लगे, ऐसा है ही नहीं! मूल में ही कीड़े पड़े हुए धनरूपी वृक्ष का विस्तार भी तो सड़नयुक्त ही होगा न!!"

→ चिट्ठियाँ पढ़ने के बाद खेता भाई ने भारत वापस लौटने का निर्णय लिया। तब उन्होंने श्री मेहराजजी को पचीस साल से ब्याज में लगाये बाहर के पैसे उठाने की जिम्मेदारी सौंप दी और स्वयं अपने दुकान में स्थित शेष सामान आदि को बेचकर द्रव्य में परिवर्तित करने लगे। इस प्रकार दोनों अपने-अपने कार्य में व्यस्त हो गये।

ज. ११- उक्त प्रकार बराबर स्थित खेता भाई के दुकान की चीजों को द्रव्य में बदलते-बदलते और बाहर ब्याज पर दी हुई रकम को समेटते-समेटते चार साल व्यतीत हो गए।

ज. १२- श्री मेहराज बाहर से ब्याज पर दिए जितने पैसे समेटकर लाते थे, वे सारे पैसे वे खेता भाई के पास जमा करते जा रहे थे। इस तरह तैयारी करते-करते जब चार साल व्यतीत हुए, तब एक दिन उधर श्री मेहराज ब्याज के पैसे उठाने बाहर गये थे कि इधर खेता भाई की अकस्मात् मृत्यु हो गई।

स. १३-जिस समय खेता भाई की मौत हुई, उस समय श्री मेहराज कहाँ थे और क्या कर रहे थे?

स. १४-खेता भाई की मौत होते ही श्री मेहराज की अनुपस्थिति में खेता भाई की दुकान (गोदाम)के हाकिम (राज्याधिकारी) ने क्या किया और क्यों?

स. १५-उस हाकिम (राज्याधिकारी) ने श्री मेहराज के ऊपर बुरी दृष्टि क्यों की?

ज. १५- जब श्री मेहराज ठाकुर खेता भाई द्वारा व्यापारियों को ब्याज पर दिया हुआ पैसा समेटने बाहर गए थे, उसी समय एक दिन अचानक खेता भाई की मौत हो गई और हाकिम ने दुकान पर मोहर लगा दी। दुकान पर पहुँचते ही जब श्री मेहराज को सारी हकीकत का पता चला, तो उन्होंने उस हाकिम के विरोध में अदालत में फरियाद की और अदालत को इस बात की स्पष्ट जानकारी दी, "इस धन के वारिसदार भारत में हैं। मैं यहाँ बरारब में २५ साल से रह →

स. १६-श्री मेहराज एक दिन रात के अन्तिम पहर में खेता भाई की दुकान के बाहर से गहरी नींद से उठकर क्यों भागे? सवेरा होने पर वे कितने घंटे दौड़ चुके थे?

ज. १६- खेता भाई की मृत्यु के पश्चात् हाकिम ने दुकान पर तो मोहर लगा दी थी। इसलिए एक दिन जब श्री मेहराज रात में खेता भाई की दुकान के बाहर सोये हुए थे, सुबह के तीन बजे अचानक उनकी नींद टूटी और उन्होंने सुना कि कुछ पठानी लोग थोड़ी →

ज. १३- जिस वक्त खेता भाई की मौत हुई, उस समय श्री मेहराज ठाकुर खेता भाई द्वारा व्यापारियों को ब्याज पर दिये हुए पैसे समेटने बाहर गए हुए थे।

ज. १४- खेता भाई की मौत होते ही श्री मेहराज की अनुपस्थिति में खेता भाई की दुकान (गोदाम) पर शेख सल्ला नामक हाकिम (राज्याधिकारी) ने मोहर लगा दी। गोदाम में स्थित विस्तृत संपत्ति का कोई वारिसदार नहीं है, यह समझकर हाकिम ने उसे सरकारी धन बनाकर जप्त कर लिया।

→ रहे खेता भाई को लेने आया था। हम दोनों चार साल से अपने देश भारत स्थित अपने परिवार के पास लौट जाने की तैयारी में लगे हुए थे।" इस बात की गवाही आस-पास के लोगों ने भी दी। इस तरह केस आगे बढ़ता गया और हाकिम की हार होते गई। यहाँ अवश्यमेव ही श्री मेहराज की जीत हो जाती। परन्तु खेता भाई के विस्तृत धन को अपना बनाने की नीयत से एक दिन उस हाकिम ने खेता भाई की दुकान के बाहर सोये हुए श्री मेहराज को मार डालने के लिए कुछ मुसलिम पठानों को भेज दिया। परन्तु उन्हें उस कार्य में सफलता न मिल सकी।

→ दूरी पर खड़े होकर अरबी भाषा में उन्हें जान से मार डालने की बातें कर रहे हैं। तब वे तुरंत ही वहाँ से उठकर बाण सदृश दौड़ते हुए निकल पड़े तथा वे पठानी लोग देखते ही रह गए। एक पहर समय अर्थात् लगभग तीन घंटे दौड़ने पर सवेरा हुआ। तब उन्हें पता चला कि वे दौड़ते-दौड़ते सुलतानगढ़ नामक पहाड़ पर आ पहुँचे हैं, जो खेता भाई की दुकान से बहुत दूर था। फिर सुबह होते ही राजधानी में पहुँचकर उन्होंने खेता भाई की वसीयत के विषय में राजधानी की अदालत में फरियाद की।

स. १७- सुलतानगढ़ पहाड़ से सीधे राजधानी पहुँचकर श्री मेहराज ने किसके पास निवेदन चढ़ाया और वहाँ के हाकिम ने उन्हें कितने महीनों तक भटकाया?

ज.१७- सुलतानगढ़ पहाड़ से सीधे राजधानी में पहुँचकर श्री मेहराज →

स. १८-दो महीने भटकने पर जब श्री मेहराज निराश हो गए, तब उस वक्त उन्हें कौन मिला?

स. १९-जब उस अरबी भेषवाले ने श्री मेहराज से उनकी निराशा का कारण पूछा, तब श्री मेहराज ने उन्हें क्या बताया?

स. २०-श्री मेहराज की दर्दभरी फरियाद सुनने के पश्चात् उस अरबी भेषवाले व्यक्ति ने उनसे क्या कहा और एक पत्र में क्या लिखकर दिया?

ज. २०- श्री मेहराज की उपरोक्त दर्दभरी फरियाद सुनकर अरबी भेषवाले व्यक्ति ने कहा, "यह डरने का नहीं, हिम्मत से काम लेने का समय है।" अतः इस व्यक्ति ने उन्हें सलाह दी कि जब इमाम- →

स. २१-जब जुम्मे के दिन इमाम बादशाह नमाज़ के लिए घोड़े पर सवार होकर निकला, तब बीच रास्ते में श्री मेहराज ने क्या किया?

ज. २१- जुम्मे के दिन अर्थात् शुक्रवार को जब इमाम बादशाह घोड़े पर सवार होकर जुलूस के साथ नमाज़ के लिए जा रहा था और →

→ ठाकुर ने सीधे वहाँ के सुलतान के पास निवेदन चढ़ाया, परंतु वहाँ के हाकिम ने उनकी फरियाद सुलतान इमाम तक पहुँचने ही नहीं दी। फरियाद को पहुँचाने के विषय में आज-कल, आज-कल करते-करते दो महीने तक उसने श्री मेहराज को भटकाया।

ज. १८- हाकिम द्वारा दो महीने तक निरन्तर भटकाने के बाद एक दिन जब श्री मेहराज अत्यन्त चिन्तित अवस्था में एक पेड़ के नीचे बैठकर सोच रहे थे कि अब क्या किया जाय, तब अचानक उन्हें अरबी भेषवाला एक व्यक्ति मिला।

ज. १९- अरबी भेषवाले व्यक्ति ने श्री मेहराज को चिंतित अवस्था में देखकर उनसे पूछा, "अरे भाई! क्या हुआ? आप इतने चिंतित क्यों लग रहे हैं?" तब श्री मेहराज ठाकुर ने अपनी सारी हकीकत उन्हें सुना दी और कहा, "मेरी चिन्ता की वजह यही है।"

→ बादशाह नमाज़ के लिए घोड़े पर सवार होकर निकलेगा, तब घोड़े पर सवार बादशाह का दामन झटककर उनसे कहना, "हे बादशाह!

मैं अपने गले का बोझ, सो डारत हों गले तुम।
लेऊँ हिसाब तुमसों, खुदाए के हुकुम ।।

और यह चिट्ठी भी उसके हाथ में दे देना। इस तरह कहते हुए एक चिट्ठी भी उन्हें दे दी। उस चिट्ठी में भी उक्त चौपाई ही लिखी हुई थी।

→ उसके आगे-पीछे रक्षार्थ प्रहरी तैनात थे, तब श्री मेहराज भी रास्ते पर खड़े उसका इंतजार ही कर रहे थे। बादशाह के जुलूस के नजदीक आते ही श्री मेहराज फौजिओं के बीच से घुसकर बादशाह के पास पहुँच गये और वहाँ पहुँचकर शीघ्रता से बादशाह का दामन झटककर जोर से खींच दिया, जिससे बादशाह के जामे की कस टूट गयी।

स. २२-जुम्मे के दिन श्री मेहराज द्वारा दामन झटकने पर इमाम बादशाह ने अपने रक्षार्थ रखे हुए कड़े पहरेदारों को बीच में ही रोकते हुए क्या कहा?

ज. २२- श्री मेहराज ने आवेश में आकर इमाम बादशाह का दामन झटक तो दिया, किंतु तुरंत ही चारों ओर तैनात बादशाह के पहरेदारों ने →

स. २३-अपने पहरेदारों को रोकने के पश्चात् इमाम बादशाह ने श्री मेहराज से क्या पूछा?

ज. २३- अपने पहरेदारों को रोकने के पश्चात् बादशाह ने श्री मेहराज से पूछा, "हे बच्चे! तूने इस तरह बीच राह में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद भी मेरा दामन क्यों झटका? ऐसा करने का क्या कारण था? मुझे स्पष्टतः बता।" तब श्री मेहराज ने कहा - →

स. २४-जब बादशाह ने श्री मेहराज से सारी हकीकत पूछी, उस वक्त श्री मेहराज क्या कर रहे थे?

स. २५-"लात खौफ या बनी" - ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा?

स. २६-श्री मेहराज की बातें सुनकर और उनका दिया हुआ खत पढ़ने के बाद बादशाह ने क्या कहा?

ज. २६- श्री मेहराज की बातें सुनकर और उनका दिया हुआ खत पढ़ने के →

स. २७-"यह कलाम दुर्लभ" अथवा "क्या यह कयामत का दिन है?"- ऐसा किसने कहा?

स. २८-बादशाह ने अपना दामन झटककर छुड़ा लेने के पश्चात् किस ओर देखकर क्या कहा?

ज. २८- अपना दामन झटककर छुड़ा लेने के पश्चात् बादशाह ने आसमान में →

→ अपनी-अपनी पिस्तौल द्वारा श्री मेहराज पर निशाना साध लिया। यह देखकर श्री मेहराज काँप उठे और सोचने लगे कि अब क्या होगा? वे ऐसा सोच ही रहे थे कि इमाम बादशाह ने अपने पहरेदारों को रोकते हुए श्री मेहराज से कहा, "लात खौफ या बनी अर्थात् हे बच्चे! मत डर!!"-ऐसा कहते हुए बादशाह ने श्री मेहराज को सान्त्वना भी दी।

→ मैं अपने गले का बोझ, सो डारत हों गले तुम।
लेऊँ हिसाब तुमसों, खुदाए के हुकुम ।।

उक्त बात कहते हुए श्री मेहराज ने वह चिट्ठी भी बादशाह के हाथ में पकड़ा दी, जो अरबी भेषवाले व्यक्ति ने उन्हें दी थी। उस चिट्ठी में भी वही बात लिखी थी, जो श्री मेहराज ने बादशाह को कह सुनायी थी।

ज. २४- जब बादशाह ने श्री मेहराज से उनकी सारी हकीकत पूछी, उस वक्त श्री मेहराज डर के मारे "थर-थर काँप रहे थे।"

ज. २५- *"लात खौफ या बनी"* - ऐसा इमाम बादशाह ने श्री मेहराज ठाकुर से कहा क्योंकि उस वक्त श्री मेहराज डर के मारे थर-थर काँप रहे थे।

→ पश्चात् बादशाह ने आसमान की ओर देखते हुए कहा, "ऐसा तो कुरान, हदीसों में कयामत के समय होने को लिखा है। क्या अभी ही कयामत आ गई?"

ज. २७- *"यह कलाम दुर्लभ"* अथवा *"क्या यह कयामत का दिन है"* - यह वाक्य स्वयं इमाम बादशाह के मुख से आश्चर्यचकित स्वर में निकला।

→ स्थित खुदा की ओर देखते हुए हाथ जोड़कर कहा, "हे खुदा! यह सुकन मुझको कबहूं , किनहूं न सुनाए" अर्थात् ऐसे वचन आज तक मुझे कभी किसी ने नहीं कहे थे, जैसे अभी इस व्यक्ति ने कहे।"

स. २९-बादशाह के उक्त वचन कहने के पश्चात् श्री मेहराज ने बादशाह से क्या कहा?

स. ३०- मैं ऐता तुमको ना कहता, पर मुझ पर हुआ जुलम।
मैं बहुत भटका, तब फरियाद करी आगे तुम।।
उक्त चौपाई में कथित बातें किसने, किससे और क्यों कहीं?

ज. ३०- प्रश्न में अंकित चौपाई में कथित बातें श्री मेहराज ने सुलतान →

स. ३१-श्री मेहराज की उक्त फरियाद सुनने के पश्चात् उसके बदले में बादशाह ने क्या कहा?

ज. ३१- श्री मेहराज की उक्त फरियाद सुनने के पश्चात् सुलतान बादशाह ने कहा -
इन्सा अल्ला ताला करे, मैं करों तेरा इन्साफ।
तेरा तुझको दिलाऊँ, कर दिया तोहे सब माफ।। →

स. ३२-"कर दिया तोहे सब माफ" - यह वाक्य किसने, किससे और क्यों कहा?

ज. ३२- *"कर दिया तोहे सब माफ"* - यह वाक्य सुलतान बादशाह ने श्री मेहराज से कहा क्योंकि श्री मेहराज ने नमाज़ के लिए →

स. ३३-दूसरे दिन श्री मेहराज कहाँ पहुँचकर किस बात का इंतजार कर रहे थे और क्यों ?

ज. ३३- दूसरे दिन श्री मेहराज ठीक समय पर अदालत पहुँचकर, अदालत के खुलने, सुलतान के इन्साफ के तख्त पर बैठने और अदालत →

ज. २९- इमाम बादशाह को दु:खी होकर खुदा से प्रार्थना करते हुए देखकर श्री मेहराज ने कहा, "मैंने आपके साथ न ऐसा किया ही होता और न कहा ही होता, परन्तु आपके कर्मचारियों ने मुझ पर बहुत जुल्म ढाया है। इसलिए मजबूरन मुझे ये सब करना पड़ा।"

→ बादशाह के आगे खड़े होकर कही हैं क्योंकि उनकी फरियाद सुनकर सुलतान ने अत्यंत दर्दभरे दिल से आसमान की ओर देखते हुए खुदा से प्रार्थना की थी। अत: सुलतान को अपने उक्त व्यवहार के पीछे छिपे कारण तथा उक्त रूपेण फरियाद करने की मजबूरी से अवगत कराना जरूरी था।

→ अर्थात् "यदि खुदा ताला की मुझ पर मेहेर हुई और मैं कल तख्त पर बैठने तक जिन्दा रहा, तो मैं सर्वप्रथम तेरा इन्साफ करूँगा तथा तेरी जितनी भी धन-सम्पत्ति मेरे कर्मचारियों ने हड़प की है, सारी की सारी मैं तुझे वापस दिलवा दूँगा। तूने बीच राह में मेरे साथ जैसा व्यवहार किया है, उसके बदले में मैं तुझे जो चाहूँ, वो सजा दे सकता हूँ। परन्तु तेरी मजबूरी समझकर मैंने तेरी सारी गलतियाँ नजरअन्दाज कर दी हैं और तुझे माफ कर दिया है।" इतना कहकर सुलतान नमाज़ के लिए चला गया।

→ जाते सुलतान बादशाह का सभी पहरेदारों के सामने दामन झटकने की हिम्मत की थी, जिससे सुलतान बादशाह की इज्जत पर दाग लगा था। इस हरकत के बदले बादशाह सुलतान उन्हें फाँसी दे सकता था या कैद कर सकता था, परन्तु उसने उनके सभी गुनाहों को माफ कर दिया।

→ के प्रहरी की पुकार का इंतजार कर रहे थे क्योंकि नमाज़ के लिए जाते समय दामन झटककर इन्साफ माँगने पर सुलतान ने सर्वप्रथम उनका ही इन्साफ करने और उनका सब कुछ उन्हें वापस दिलाने का वचन दिया था।

स. ३४-दूसरे दिन बादशाह सुलतान ने इन्साफ के तख्त पर बैठते ही चोपदारों (पट्टेदार सिपाहियों) को क्या आदेश दिया?

स. ३५-अदालत के बाहर आकर चोपदार क्या पुकार करने लगा?

ज. ३५- बादशाह सुलतान की आज्ञा सुनते ही चोपदार अदालत के बाहर →

स. ३६-चोपदार की पुकार सुनते ही श्री मेहराज ने उससे क्या कहा?

स. ३७-श्री मेहराज को पहचानते ही पट्टेदार सिपाही उन्हें दोनों ओर से पकड़कर कहाँ ले गये?

स. ३८-श्री मेहराज को देखते ही बादशाह ने उनसे कैसा व्यवहार किया और क्या कहा?

ज. ३८- श्री मेहराज को सामने उपस्थित देख बादशाह सुलतान ने बड़े →

स. ३९-मेहराज के साथ बादशाह का व्यवहार देखकर कौन काँप रहा था और क्षण-प्रतिक्षण उसके शरीर के कम्पन के बढ़ने की वजह क्या थी?

ज. ३९- सुलतान द्वारा श्री मेहराज को स्थान देकर पास में बैठाकर प्रेम से बातचीत करता देखकर बादशाह के पास बैठा मंत्री काँप रहा था →

ज. ३४- दूसरे दिन बादशाह सुलतान ने इन्साफ के तख्त पर बैठते ही अपने चोपदारों (पट्टेदार सिपाहियों) को हुकम किया कि उस व्यक्ति को ले आओ, जिसने कल नमाज़ के लिए जाते समय मेरा दामन झटककर इन्साफ माँगा था।

→ आकर ढिंढोरा पीटते हुए चिल्लाने लगा, "सुनो! सुनो!! सुनो!!! कल नमाज़ के लिए जाते समय रास्ते पर बादशाह सुलतान का दामन झटककर फरियाद सुनानेवाला व्यक्ति तुरन्त अन्दर हाजिर हो....।"

ज. ३६- चोपदार के ढिंढोरे की आवाज सुनते ही श्री मेहराज ने तुरंत सामने आकर उससे कहा, "हे प्रहरियों! वह व्यक्ति मैं ही हूँ। मैंने ही बादशाह का दामन झटककर फरियाद की थी।"

ज. ३७- श्री मेहराज को पहचानते ही पट्टेदार सिपाही उन्हें दोनों ओर से पकड़कर अदालत के अन्दर बादशाह सुलतान के पास ले गये।

→ आदर-भाव से उन्हें बैठने का स्थान दिया और इज्जत के साथ अपने पास बिठाकर कई दिनों पहले से परिचित दोस्त की तरह उनसे बातचीत करने लगा। "भारत में इसलाम धर्म कैसा चल रहा है?" आदि धर्म मार्ग की बातें बड़े प्रेम से पूछने लगा।

→ । जैसे-जैसे बादशाह श्री मेहराज से प्रेम-भाव से बातें पूछते जा रहा है, वैसे-वैसे उस मंत्रीके शरीर की कंपन-गति तेज होती जा रही थी क्योंकि वह मंत्री हाकिम शेख सल्ला का रिश्तेदार था। ये दोनों मिलकर खेता भाई का धन हड़प कर जाने हेतु जोर-जबरदस्ती कर रहे थे। इसी कारण उन्होंने श्री मेहराज की फरियाद सुलतान तक न पहुँचाकर दबा दी थी।

स. ४०-इसलाम धर्म के प्रचार-प्रसार के विषय में श्री मेहराज द्वारा कही बातें सुन बहुत खुश होकर जब बादशाह ने श्री मेहराज से पूछा, "आपने मुझसे अर्ज करने से पहले मेरे दीवान से फरियाद क्यों नहीं की?" तब इस प्रश्न के जवाब में श्री मेहराज ने सुलतान बादशाह से क्या कहा, जिसे सुनकर बादशाह अत्यंत प्रसन्न हुआ ? क्यों?

ज. ४०- इसलाम धर्म के प्रचार-प्रसार के विषय में श्री मेहराज द्वारा कही बातें सुन बहुत खुश होकर जब सुलतान बादशाह ने श्री मेहराज से पूछा, "आपने पहले मेरे कर्मचारियों अथवा दीवान आदि से फरियाद करने के बदले सीधे मेरा ही दामन क्यों झटका?" तब →

स. ४१-श्री मेहराज ने बादशाह के आगे हाकिम शेख सल्ला का ही नाम क्यों दिया, अन्य किसी का क्यों नहीं ?

ज. ४१- श्री मेहराज को अपना कार्य सिद्ध कर पुनः अपने देश लौटना →

स. ४२-शेख सल्ला हाकिम को बादशाह सुलतान ने किस रूप में हुकम सुनाया अर्थात् मौखिक आदेश दिया या चोपदार द्वारा लिखित आदेश भिजवाया?

ज. ४२- सुलतान बादशाह ने हाकिम शेख सल्ला को एक चिट्ठी में लिखित आदेश दिया और वह चिट्ठी एक चोपदार के हाथ में देते हुए कहा कि इनका सारा सामान इन्हें अपनी नजर के सामने दिलाकर ही आना। उस चिट्ठी में लिखित रूप में निम्न आदेश दिया गया था। जैसे - →

स. ४३-बादशाह द्वारा हाकिम शेख सल्ला को दिए गए, लिखित आदेश को हाकिम शेख सल्ला तक किसने पहुँचाया?

→ बादशाह के इस प्रश्न के जवाब में श्री मेहराज ने कहा, "मैं मूलतः भारतीय निवासी हूँ। यहाँ के कायदे-कानून कैसे हैं, मुझे क्या मालूम? इन सब बातों की तनिक भी जानकारी न होने के कारण ही मैंने सीधे आपसे अर्ज की।" श्री मेहराज के मुख से यह जवाब सुनकर सुलतान बादशाह समझ गया कि यह व्यक्ति किसी से बदला लेना नहीं चाहता। यह मात्र अपना काम बनाना चाहता है। दीवान के शरीर की कंपन इस बात की प्रत्यक्ष साक्षी है क्योंकि यदि एक व्यक्ति मेरे आगे मेरे दीवान के बेअदबी की जिक्र करता, तो अवश्य ही मुझे अपने दीवान से हाथ धोना पड़ता। अतः बादशाह ने महसूस किया कि यह व्यक्ति तो स्वयं खुदा स्वरूप है। मात्र रूप बदलकर मेरे पास आया है।

→ था। वे वहाँ विदेश में किसी से बदला नहीं लेना चाहते थे। किंतु यदि वे बादशाह को हाकिम शेख सल्ला का नाम नहीं देते, उनके उस कार्य का सिद्ध होना संभव नहीं था क्योंकि उसी हाकिम ने खेता भाई की दुकान (गोदाम) में मोहर लगाई थी।

→ सब मता है इनका, सुनत दीजियो तुम ।
नातो मार उखाड़ों जड़मूल से, जो फेरा मेरा हुकुम ।।

अर्थात् सुलतान बादशाह ने उस चिट्ठी के माध्यम से लिखित रूप में हाकिम शेख सल्ला को यह आदेश दिया था कि इस चिट्ठी में अंकित व्यक्ति के जितने भी सामान अथवा धन-दौलत पर तुमने मोहर लगायी है, चिट्ठी पढ़ते ही उनका एक-एक मता (सामान) उन्हें लौटा देना। यदि इस विषय में तूने मेरी आज्ञा का तनिक भी उलंघन किया, तो मैं तुझे तेरे जड़-मूल सहित उखाड़कर खत्म कर दूँगा अर्थात् कुल-परिवार सहित तुझे फाँसी की सजा दे दूँगा।

ज. ४३- सुलतान बादशाह द्वारा शेख सल्ला को दिए गए लिखित आदेशवाली चिट्ठी को लेकर हाकिम शेख सल्ला के पास श्री मेहराज के साथ एक सरकारी कर्मचारी (पट्टेदार सिपाही) गया था।

स. ४४-बादशाह के लिखित आदेश को लेकर चोपदार श्री मेहराज सहित कहाँ गया और उसने क्या किया?

ज. ४४- बादशाह के लिखित आदेश को लेकर चोपदार श्री मेहराज को साथ ले शेख सल्ला हाकिम के दरवाजे के आगे जा खड़ा हुआ और पुकारने →

स. ४५-सुलतान बादशाह का आदेश पाते ही हाकिम शेख सल्ला ने क्या किया?

ज. ४५- सुलतान बादशाह की चिट्ठी पढ़ने के पश्चात् तुरन्त ही हाकिम →

स. ४६-इमाम सुलतान द्वारा दिए आदेश के पालनार्थ खेता भाई के दुकान की चाबी श्री मेहराज को सुपुर्द करने के पश्चात् हाकिम शेख सल्ला ने क्या किया?

ज. ४६- इमाम सुलतान द्वारा दिए आदेश के पालनार्थ खेताभाई के दुकान की चाबी श्री मेहराज को सुपुर्द करने के पश्चात् बुरी नीयत रखनेवाले हाकिम शेख सल्ला ने मन ही मन बिचार किया कि →

स. ४७-जब अरब से भारत लौटने की तैयारी करते-करते खेता भाई की मौत हो जाने की बात सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने सुनी, तब उन्होंने क्या किया और क्यों?

ज. ४७- श्री गांगजी भाई के सहोदर श्री खेता भाई को भारत वापस ले आने के लिए श्री मेहराज ठाकुर अरब गए थे। परन्तु स्वदेश लौटने की तैयारी करते-करते चार साल बाद अचानक एक दिन खेता →

स. ४८-जब श्री नवतनपुरी से बिहारीजी,श्यामजी और मानजी अरब पहुँचे, तब उनके पहुँचते ही श्री मेहराज ने क्या किया?

→ लगा, "अरे हाकिम शेख सल्लाजी! बाहर आइये और यह चिट्ठी पढ़ते ही इस व्यक्ति (मेहराज) के गोदाम में मोहर लगाकर आपने इनका जितना भी माल-मता जप्त किया है, उसे मेरी नजर के सामने इन्हें वापस कीजिए। यह बादशाह का हुकम है।"

→ शेख सल्ला ने खेता भाई के दुकान की चाबी श्री मेहराज के हाथ में रख दी और अपनी गलती हेतु माफी माँगी। इस प्रकार खेता भाई के दुकान की चाबी श्री मेहराज को दिलवाकर वह चोपदार वापस लौट गया।

→ इस मेहराज ने खेता भाई का धन मुझे खाने नहीं दिया, तो मैं उसे भी खाने क्यों दूँ? यह कुनीयत लेकर उसने जब श्री मेहराज गोदाम की चाबी लेकर ब्याज पर दिया हुआ धन समेटने बाहर गए थे, तब अपने आदमियों को भेजकर गोदाम में आग लगवा दी। भीषण अग्नि की चपेट में आकर रुपया-पैसा, बहीखाता आदि सब कुछ नष्ट हो गया। थोड़ा कुछ सोने-चाँदी के गहने तथा वस्तुएँ ही शेष बचीं।

→ भाई की मौत हो गई। श्री मेहराज ने तुंरत ही यह समाचार भारत आनेवाले किसी यात्री द्वारा श्री सद्गुरु, गांगजी भाई तथा खेता भाई की पत्नी आदि उनके परिवार के अन्य सदस्यों को भेज दिया था। यह समाचार सुनते ही विदेश में श्री मेहराज को अकेला देखकर श्री मेहराज की मदद हेतु श्री सद्गुरु, बालबाई तथा गांगजी भाई ने आपस में सलाह कर गुरुपुत्र श्री बिहारीजी, गांगजी भाई के ज्येष्ठ पुत्र श्री श्यामजी भाई शाह और कनिष्ठ पुत्र श्री मानजी भाई शाह को अरब श्री मेहराज के पास भेज दिया।

ज. ४८- जब श्री नवतनपुरी से बिहारीजी, श्यामजी और मानजी अरब पहुँचे और श्री मेहराज से मिले, तब मिलते ही श्री मेहराज ने उन्हें अरब की वह सारी हकीकत सुना दी, जो वहाँ घटी थी। तत्पश्चात् उन्होंने अग्नि-काण्ड में बचा हुआ धन और बाहर से उठाया हुआ →

→कर्ज का धन रजिस्टर में लिखित नामावली सहित श्री बिहारीजी के आगे रख दिया तथा पुनः हाथ जोड़कर निवेदन किया कि ये →

स. ४९-श्री मेहराज की सहायता करने के ध्येय से अरब आये बिहारीजी, श्यामजी तथा मानजी ये तीनों मिलकर खेता भाई का धन हड़प कर लेने हेतु अरब से भारत लौटते समय क्या षड्यंत्र रचने लगे? इस षड्यंत्र में मानजी भाई द्वारा साथ न देने पर उनका क्या हाल हुआ?

ज. ४९- श्री मेहराज की सहायता करने के ध्येय से अरब आये बिहारीजी, श्यामजी तथा मानजी ये तीनों मिलकर खेता भाई का धन हड़प कर जाने के उद्देश्य से सारा धन तीनों परस्पर बाँट लेने और सारा धन हड़प कर जाने का लाञ्छन श्री मेहराज के सिर पर →

स. ५०-खेता भाई का धन हड़प कर जाने और मानजी भाई की हत्या-ये दोनों आरोप श्री मेहराज के सिर पर डालते हुए रोते-रोते बिहारीजी और श्यामजी ने ये सारा वृत्तांत बालबाई को किस तरह सुनाया?

ज. ५०- जब श्यामजी और बिहारीजी दोनों भारत-जामनगर लौटे,तो दोनों ने राह में रचा हुआ षड्यंत्र रोते-रोते बालबाई के आगे रख दिया। दोनों रोते-रोते कहने लगे, "हम दोनों जब अरब पहुँचे, तो मेहराज हमें बताने लगा कि उसने खेता भाई का सारा रुपया-पैसा, धन-संपत्ति जिस पर हाकिम की मोहर लगी थी, मोहर से बरी करवाकर और बाहर दिया हुआ ब्याज का धन भी समेटकर गोदाम में जमा किया था। परन्तु कुनीयत के कारण हाकिम शेख सल्ला ने गोदाम →

स. ५१-श्री मेहराज की सहायता करने के ध्येय से अरब आये बिहारीजी और श्यामजी ने श्री नवतनपुरी लौटकर क्या षड्यंत्र रचा ?

→ सब कुछ ले जाकर श्री सद्गुरु के चरणों में रख देना और थोड़ा जो कुछ भी बाकी है, वह मैं ले आऊँगा।

→ मोड़ने का षड्यंत्र रचने लगे। इस षड्यंत्र में जब मानजी भाई ने शामिल होने से इनकार कर दिया, तब मानजी भाई को रास्ते से हटाने के लिए एक दिन सवेरे जब मानजी भाई जहाज में किनारे खड़े होकर दातौन कर रहे थे, तब पूर्वनिश्चित नीति के अनुसार अचानक बिहारीजी ने रत्नों से जड़ित एक छोटी तलवार को जहाज के किनारे से पानी में धकेल दिया और चिल्लाए, "अरे! तलवार गई पानी में!! दौड़ो ..... दौड़ो ..... !!!" उस तलवार को बचाने के लिए मानजी भाई दौड़े। पीछे से श्यामजी ने उन्हें पानी में धक्का दे दिया। मानजी भाई तलवार के साथ पानी में डूब गए। इस तरह बिहारीजी और श्यामजी ने मानजी को रास्ते से बाहर हटा दिया।

→ में आग लगा दी और रुपया, पैसा, बहीखाता आदि सब कुछ आग में भस्म हो गया। मेहराज की यह चाल सुनकर जब इसके विरोध में मानजी ने उनसे कहा कि कहीं खेता भाई की धन-संपत्ति हड़पने के लिए आपने ही तो गोदाम में आग नहीं लगवा दी थी? तब मानजी भाई की यह बात सुनकर मेहराज आग-बबूला हो उठे और उन्होंने तुरन्त तलवार लेकर मानजी का सिर धड़ से अलग कर दिया। हमारे पीछे भी तलवार लेकर दौड़े थे, परन्तु हम तो अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग निकले। तब हम बच पाए। मेहराज अब मेहराज नहीं रहा। अरब जाकर वह तो पूरा मुसलमान बन चुका है। किसी की जान लेना, तो उसके लिए साधारण बात है।" इस तरह स्वयं किया हुआ हत्या का पाप षड्यंत्र द्वारा दोनों ने मेहराज के सिर पर डालकर रोते-रोते दुःखी होकर बालबाई को सारा वृत्तांत सुना दिया।

ज. ५१- श्री मेहराज की सहायता करने के ध्येय से अरब आये बिहारीजी और श्यामजी भाई ने श्री मेहराज द्वारा भेजा हुआ सारा धन हड़प लिया और श्री मेहराज के ऊपर खेता भाई का सारा धन हड़प →

→कर जाने और मानजी भाई के हत्या की बड़ी भारी लाञ्छना लगाकर रोते-रोते बालबाई के मन को जीत लिया। पुनः श्री →

स. ५२-श्यामजी और बिहारीजी की बातें सुनते ही श्रीमती बालबाई ने क्या किया?

ज. ५२- श्री गांगजी भाई की बहन बालबाई ने अपने भतीजे श्यामजी भाई और गुरुपुत्र बिहारीजी की बनावटी बातों पर विश्वास कर लिया और अपने छोटे भतीजे मानजी के हत्यारे श्री मेहराज से बदला लेने की ठान ली। सद्गुरु स्वरूप के आगे अंगुली उठाते हुए उन्होंने यह प्रण किया, "यदि श्री मेहराज के आकर प्रणाम करने पर श्री सद्गुरु स्वरूप ने उन्हें प्रणाम तक कहा न, तो मैं →

स. ५३-किस वि. सं. में श्री मेहराज अरब यात्रा पूरी कर श्री जामनगर लौटे?

स. ५४-बरारब के तट से नाव में बैठकर भारत के किनारे नाव से उतरते ही श्री मेहराज के साथ क्या घटना घटी? उन्हें कहाँ जाना पड़ा और क्यों? वहाँ से उन्हें कितने दिनों बाद छुटकारा मिला और क्यों?

ज. ५४- श्री मेहराज अरब से खेता भाई की वसीयत का सारा काम तमाम कर जब भारत वापस लौट रहे थे और समुद्री यात्रा पूरी करके वे →

स. ५५-श्री मेहराज द्वारा भारत लायी गयी खेता भाई की शेष सारी सूत-सम्पदा कहाँ गयी?

स. ५६-जब पाँच साल पश्चात् अरब यात्रा पूरी कर श्री मेहराज श्री सद्गुरु स्वरूप के चरणों में पहुँचे, तब उन पर क्या आपत्ति टूट पड़ी ? उन्हें किस स्थिति में सद्गुरु के चरणों से वापस लौटना पड़ा?

→ सद्गुरु स्वरूप का मुख बन्द करने का षड्यंत्र रचकर सबको श्री मेहराज के विमुख बना दिया।

→ "बालबाई" कुएँ में डूब मरूँगी और सद्गुरु स्वरूप पर स्त्री-हत्या की पगड़ी बाँध दूँगी। यदि मैं इतना नहीं कर सकी, तो मैं बालबाई नहीं।" उन्होंने जामनगर के राजदरबार में जाकर श्री मेहराज के खिलाफ यह फरियाद भी की कि खेता भाई का सारा धन श्री मेहराज ने हड़प कर लिया है, जब कि वे इस धन के वारिसदार नहीं हैं। यदि यह धन खेता भाई के परिवार को नहीं मिल पाता, तो भले राजदरबार में जमा हो जाय, परन्तु श्री मेहराज को कदापि न मिले। इस बात की छान-बीन हो। इस प्रकार नालिस करने की अर्जी की।

ज. ५३- श्री मेहराज वि. सं. १७०८ में अरब से अपनी जिम्मेदारी पूर्ण कर अपने स्वदेश जामनगर वापस लौटे।

→ जैसे ही भारत के किनारे उतरे, तत्क्षण जामनगर के राजदरबार के प्रहरियों ने उन्हें पकड़ लिया क्योंकि बालबाई ने राजदरबार में उनके खिलाफ फरियाद की थी। नाव से उतरने पर उन्हें सीधे राजदरबार जाना पड़ा। अतः राजदरबार जाकर खेता भाई के नाम की जितनी भी शेष दौलत वे अरब से लाये थे, वह सब की सब उन्होंने रजिस्टर सहित राजदरबार में जमा कर दी। इस कार्य को पूरा करते-करते जामनगर में ही उन्हें डेढ़ महीने लग गये।

ज. ५५- श्री मेहराज द्वारा भारत लायी गयी खेता भाई की शेष सारी सूत-सम्पदा, कमाई, धन-दौलत आदि खेता भाई के कहे प्रमाण राजदरबार में ही चली गयी।

ज. ५६- श्री मेहराज श्री सद्गुरु स्वरूप की आज्ञा पालनार्थ ही वि. सं. १७०३ में अरब गये थे और वि. सं. १७०८ में वहाँ से वापस लौटे। अरब से लौटकर जामराजा को खेता भाई के धन का सारा हिसाब-किताब देकर जैसे ही श्री मेहराज श्री सद्गुरु के चरणों में प्रणाम करने पहुँचे, वैसे ही उन पर एक भारी आपत्ति →

टूट पड़ी। जिन सद्गुरु स्वरूप की आज्ञा पालन करने तथा उन्हें खुश करने हेतु श्री मेहराज अरब गए थे, उन्हीं सद्गुरुजी के चरणों में पहुँचने पर श्री मेहराज को पता चला कि वे स्वरूप उनसे नाराज हैं। और इतना ही नहीं उन स्वरूप ने श्री मेहराज के →

स. ५७- "हल्की याको जिन गिनो" -इस कथन द्वारा बीतककार श्री लालदासजी महाराज किस ओर संकेत कर रहे हैं? श्री प्राणनाथजी की माया के साथ हुई तीन लड़ाइयों में से प्रथम लड़ाई कौनसी है और किसके साथ हुई?

ज. ५७- श्री प्राणनाथजी की माया के साथ हुई तीन जबरदस्त लड़ाइयों में से प्रथम लड़ाई स्वयं श्री सद्गुरु स्वरूप के साथ तब हुई, जब श्री प्राणनाथजी अरब यात्रा से लौटकर श्री सद्गुरु स्वरूप के पास पहुँचे थे और श्री सद्गुरु स्वरूप ने बालबाई के कारण उनसे मुँह फिराकर उनके प्रणाम का प्रत्युत्तर तक नहीं दिया था। उस समय श्री मेहराज स्वरूप को जो धक्का लगा था, उसका दर्द तो अवर्णनीय है। दो साल तक एक ही जामनगर शहर में होते हुए भी →

स. ५८-श्री मेहराज श्री मेड़ी स्थित अपने घर में किस स्थिति में और कितने साल रहे? तत्पश्चात् किसके कारण उन्हें अपना घर छोड़कर धरोल स्थित कल्लाजी नामक राजा के पास आना पड़ा और क्यों?

ज. ५८- श्री मेहराज श्री मेड़ी स्थित अपने घर जाकर हाथ में माला लिए श्री राजजी को पुकारने लगे, "हे धनी! जिन स्वरूप को मैं खुश करना चाहता था, जिनकी आज्ञा पालन करना ही मेरा जीवन →

स. ५९-श्री मेहराज कल्लाजी राजा के पास कितने समय रहे और वहाँ रहकर कौनसा पदभार सँभालते रहे? पुनः उन्हें किस कारणवश गुजरात जाना पड़ा और वहाँ वे कितने साल रहे?

→ प्रणाम करने पर उनका प्रणाम तक अस्वीकार कर दिया। उनसे बातचीत तक नहीं की। उनसे मुँह फिराकर बैठ गए। अन्त में लंबे समय तक इंतजार करने के पश्चात् अपनी बेइज्जती के बदले में कुछ प्रतिज्ञा करके श्री मेहराज अपने घर लौट आये।

→ *"न वे बुलावे, न ए जाय"* इस दशा में पहुँचकर श्री मेहराज अपना दर्दभरा दिल लेकर मेड़ी में ही बैठे रहे। अतः बीतककार श्री लालदासजी महाराज *"हल्की याको जिन गिनो"* - इस कथन द्वारा श्री सुन्दरसाथजी को माया की ओर इशारा करते हुए कह रहे हैं, "हे साथजी! इस माया को हलका मत समझना। इसी माया के चंगुल में फँसकर श्री सद्गुरु स्वरूप और श्री मेहराज स्वरूप इतने मजबूर हो गए कि श्री मेहराज स्वरूप दो साल तक मेड़ी घर में श्री सद्गुरु स्वरूप के दर्शन करने तथा उनसे मिलने के लिए भाँति-भाँति से बिलखते रहे। इस तरह इस माया ने उन श्री सद्गुरु स्वरूप तथा श्री मेहराज स्वरूप के बीच जबरदस्त फूट डालकर दोनों को एक-दूसरे के विमुख कर दिया, जिन सद्गुरु स्वरूप का पूरा भविष्य ही श्री मेहराज स्वरूप के कंधे पर था।

→ था, उन्हीं को खुश करने के लिए किए गए कार्य का प्रतिफल मुझे उलटा क्यों मिला? मैंने क्या गलती की थी, जिससे कि मेरे धनी मुझसे रुठ गये?" इस तरह श्री मेहराज हाथ में माला लेकर विरह करते हुए बिलखने-तड़पने लगे। ऐसी अवस्था में वे अपने मेड़ी स्थित घर में २ साल रहे। तब एक दिन भाभी के कड़वे बचनों के कारण २ साल बाद वे मेड़ी स्थित अपना घर छोड़कर धरोल नगर के कल्लाजी राजा के पास पहुँच गए और उनके यहाँ मंत्री पद सँभालने लगे।

ज. ५९- श्री मेहराज ठाकुर धरोल नगर के राजा कल्लाजी के पास अपने पेटार्थ दीवान पद का कार्य-भार सँभालते-सँभालते दो साल रहे। पुनः उन्हें उसी पद के कार्य हेतु वहाँ से गुजरात (अहमदाबाद) जाना पड़ा। वे वहाँ आठ महीने रहे।

स. ६०-यहाँ श्री नवतनपुरी में सद्गुरु की हालत दिन प्रतिदिन बिगड़ती क्यों जा रही थी? श्री सद्गुरु की तरफ से कितने बार तथा कौन-कौन श्री मेहराज को बुलाने गये?

ज. ६०- यहाँ जामनगर श्री नवतनपुरी में श्री सद्गुरु स्वरूप के धाम पधारने का समय होने लगा था। इसलिए बार-बार वे श्री मेहराज को याद कर रहे थे। जैसे-जैसे धाम जाने का समय नजदीक आता जा रहा था, वैसे-वैसे श्री सद्गुरु स्वरूप की हालत बिगड़ती जा रही थी। श्री सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज को बुलाने के लिए बार-बार अपनी ओर से आदमी भेजे। श्री मेहराज को बुला लाने →

स. ६१-श्री सद्गुरु की ओर से श्री मेहराज को बुलाने जानेवालों ने श्री सद्गुरु की शारीरिक दशा के विषय में श्री मेहराज से क्या अथवा कैसा छल-कपट किया और क्यों?

ज. ६१- धरोल नगर के कल्लाजी राजा के राज्य में दीवान पद पर आसीन श्री मेहराज ठाकुर को सद्गुरु की तरफ से बुलानेवालों में से एक भी व्यक्ति ने श्री मेहराज को सद्गुरु की सच्ची स्थिति की खबर नहीं दी। सभी ने श्री मेहराज और सद्गुरु के बीच छल-कपटरूपी षड्यंत्र का जाल बिछा दिया। बुलावा भेजने पर जानेवाले व्यक्ति →

स. ६२-सद्गुरु ने कुल नौ बार श्री मेहराज को बुला लाने का संदेशा भेजा था। अतः नौ बार में से सबसे शुरू में और सबसे अंत में श्री मेहराज को बुलाने कौन गया था?

स. ६३-अन्त में सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने श्री मेहराज को बुला लाने हेतु किसे भेजा और उनके बदले में गया कौन तथा क्यों?

ज. ६३- अन्त में सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने श्री मेहराज को बुलाने हेतु →

→ सर्वप्रथम श्रीमती बालबाई गई। "सद्गुरु स्वरूप की तबीयत नरम है और उन्हें दवा की जरूरत है।" यह बहाना लेकर वे श्री मेहराज के पास गईं और दवा लेकर वापस लौट आईं। तत्पश्चात् गुरुपुत्र बिहारीजी श्री मेहराज के पास गए और वे भी श्री मेहराज को सच्ची खबर न देकर बहाना बनाकर लौट आये। इस तरह सद्गुरु स्वरूप के कहने पर श्री मेहराज को बुलाने हेतु बालबाई, बिहारीजी और यशोदा आदि बार-बार गए, परन्तु सभी ने बहाना बनाया। सच्ची बात किसी ने श्री मेहराज तक नहीं पहुँचाई क्योंकि ये लोग श्री मेहराज और सद्गुरु स्वरूप का मिलाप नहीं होने देना चाहते थे। इस प्रकार सद्गुरु स्वरूप ने कुल नौ बार श्री मेहराज को बुलावा भेजा।

→ न श्री मेहराज का संदेशा अथवा प्रणामादि श्री सद्गुरु स्वरूप तक पहुँचाते थे और न ही सद्गुरु की सच्ची हालत और "आपके लिए बुलावा भेजा है"- ऐसी खबर ही श्री मेहराज को देते थे। ऐसा करने के पीछे इन सबका यह मनसूबा था कि दोनों का मिलाप हुए बिना ही सद्गुरु स्वरूप धाम चले जायें क्योंकि यदि इन दोनों का मिलाप हो जाता, तो अरब यात्रा के दौरान उनके द्वारा रचे गए षड्यंत्र का खुलासा हो जाता और उनकी पोल खुल जाती। विशेषकर इस बात का ज्यादा डर श्यामजी और बिहारीजी को था।

ज. ६२- सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज को बुला लाने के लिए कुल नौ बार संदेशा भेजा था। अतः नौ बार जानेवालों में सात अलग-अलग व्यक्ति थे। परन्तु सबसे शुरू में और सबसे अन्त में श्री मेहराज को बुलाने जानेवाली बालबाई थीं।

→ डाँटकर श्री बिहारीजी को आदेश दिया था। परन्तु डाँटते समय सद्गुरु स्वरूप ने कहा था, *"मैं धाम दरवाजे पैठ ना सकों, ठाढ़ी इन्द्रावती करे रुदन"* अर्थात् जब तक मैं श्री इन्द्रावती आत्मा-श्री मेहराज से नहीं मिलूँगा, तब तक मैं धाम नहीं जा सकूँगा क्योंकि श्री इन्द्रावती आत्मा धाम दरवाजे पर खड़ी-खड़ी →

रो रही है। अतः मेरे लिए धाम दरवाजा तब तक बन्द है, जब तक मैं श्री मेहराज से मिल नहीं लेता। इसलिए तुरन्त जाओ और श्री मेहराज को बुला लाओ।" सद्गुरु स्वरूप के मुख से निकली यह बात सुनते ही बालबाई चौंक उठी और बिहारीजी को रोककर

स. ६४-"वे कहते सैयन को" - यह वाक्य किसने, किससे कहा तथा इस वाक्य द्वारा किसका परिचय कराया जा रहा है?

स. ६५-श्री मेहराज सिंधी भाषा में सद्गुरु के गुणों का परिचय सुन्दरसाथ के सामने पेश किया करते थे, इस बात को प्रमाणित करनेवाली चौपाई कौनसी है, पेश करो?

ज. ६५- श्री मेहराज स्वरूप श्री सद्गुरु स्वरूप के गुणों का परिचय सुन्दरसाथ के सामने सिंधी भाषा में वर्णन किया करते थे, इस

स. ६६-"एते बुलावने आय" - यह वाक्य किसने, किससे और कब कहा?

ज. ६६- *"एते बुलावने आय* अर्थात् अरे मेहराज! तुझे क्या हो गया है?

स. ६७-उक्त वचनों के जवाब में श्री मेहराज ने क्या कहा?

ज. ६७- उक्त बातों के जवाब में श्री मेहराज ने श्री बालबाई के आगे सब कुछ सच-सच कह दिया, "सद्गुरु स्वरूप का संदेशा लेकर जितने

स. ६८-जिस दिन श्री मेहराज कल्लाजी राजा को उनका कार्य-व्यवहार सौंपकर श्री सद्गुरु के चरणों में पहुँचने हेतु विदा हुये, वह दिन कौनसा था?

→ स्वयं ही श्री मेहराज को बुला लाने दौड़ पड़ी क्योंकि अब भी यदि वे श्री सद्गुरु स्वरूप और श्री मेहराज का मिलाप नहीं करातीं, तो उस विषय सद्गुरु स्वरूप को हुए सारे दुःखों का गुनाह उनके सिर पर आ जाता। बालबाई ही मिलाप में रुकावट बनी थीं और अन्त में उन्हीं को मिलाप करवाना पड़ा।

ज. ६४- "वे कहते सैयन को" - यह वाक्य सद्गुरु स्वरूप ने बिहारीजी से श्री मेहराज को बुला लाने के विषय में कहा था। इस वाक्य द्वारा श्री सद्गुरु श्री मेहराज स्वरूप का परिचय करा रहे थे, जो सिंधी भाषा में श्री सद्गुरु स्वरूप का परिचय सुन्दरसाथ को कराया करते थे।

→ बात को प्रमाणित करनेवाली चौपाइयाँ निम्नलिखित हैं। जैसे -

जानहून कोड़ धड़, धड़ धड़ कोड़ मत्थन ।
मत्थाँ मत्थाँ कोड़ मुँह, मुँह मुँह कोड़ जिभन ।।

हेतरा मिडी तोहिजा, तांजे गुण गणँन ।
भाल तोहिजी हिकड़ी, तोके कीं न पुजँन ।।

→ सद्गुरु स्वरूप तुझे पुकार-पुकारकर थक गये और तुम इतना बुलाने के बाद भी नहीं आ रहे हो?" - यह वाक्य श्री बालबाई ने श्री मेहराज से तब कहा, जब वे अन्तिम बार श्री मेहराज को बुलाने गई थीं।

→ भी जन मेरे पास आए, उन सब में से एक ने भी "सद्गुरु स्वरूप तुम्हें पुकार-पुकारकर बुला रहे हैं" - ऐसा संदेशा नहीं दिया। यदि मैं सच्चाई जानता, तो कब का श्री सद्गुरु स्वरूप के चरणों में पहुँच गया होता।"

ज. ६८- जब बालबाई द्वारा सद्गुरु स्वरूप की वास्तविक हालत श्री मेहराज के कानों में पहुँची, तब वे राजदरबार का सारा कार्य-भार कल्लाजी राजा के हाथों में ज्यों का त्यों सौंपकर पाँच मिनट में श्री सद्गुरु स्वरूप के चरणों में पहुँचने हेतु विदा होकर →

→जामनगर, श्री नवतनपुरी के लिए रवाना हो गए अर्थात् वह श्री →

स. ६९- कितने साल बाद किस वि. सं. के, किस पक्ष की, किस तिथि के दिन श्री मेहराज श्री सद्गुरु के चरणों में आ पहुँचे?

स. ७०- अब इतने सालों बाद मिलाप होने के कारण श्री सद्गुरु स्वरूप और श्री मेहराज स्वरूप में क्या-क्या बातचीत हुई?

ज. ७०- अब नौ साल बाद श्री सद्गुरु स्वरूप तथा श्री मेहराज स्वरूप →

❖ सद्गुरु अन्तर्ध्यान लीला ❖

स. १- "तब पूछा ए कौन है"- ऐसा कब, किसने, किससे तथा कहाँ पूछा और इस प्रश्न का उत्तर क्या मिला?

ज. १- "तब पूछा ए कौन है"- ऐसा श्री सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज से जामनगर स्थित श्री नवतनपुरी के चाकला मंदिर में उस समय →

स. २- "मैं बहुत बेर याद किया" श्री सद्गुरु स्वरूप के ऐसा कहने पर श्री मेहराज ने क्या उत्तर दिया?

ज. २- जब सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज से कहा, "हे मेहराज!" मैंने तुम्हें बहुत बार याद किया और तुम्हें बुला लाने के लिए आदमी →

स. ३- "अब फिर तो तुम लौकिक कार्य हेतु नहीं जाओगे न?" सद्गुरु के इस प्रश्न के उत्तर में श्री मेहराज ने क्या कहा?

→ कृष्ण जन्माष्टमी का दिन था।

ज. ६९- वि. सं. १७१२ को श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि के दिन पूरे नौ साल बाद श्री मेहराज श्री सद्गुरु स्वरूप के चरणों में आ पहुँचे।

→ का मिलाप होने के बाद पूरे २२ दिनों तक दोनों स्वरूप एक साथ रहे। नौ साल की जुदाई के दौरान क्या-क्या हुआ और अरब यात्रा में जो-जो घटना घटी, उसका सम्पूर्ण वृत्तांत श्री मेहराज ने श्री सद्गुरु के चरणों में रख दिया।

-(प्रकरण १५, सवाल-जवाब नं. ७०, कुल सं. ४४६+७०=५१६)।

❖ सद्गुरु अन्तर्ध्यान लीला ❖

→ पूछा था, जब श्री मेहराज ने वि. सं. १७१२ में कृष्ण अष्टमी के दिन धरोल के राजा कल्लाजी के पास से लौटकर चाकला मंदिर में बीमार अवस्था में पौढ़े हुए श्री सद्गुरु स्वरूप के चरणों में प्रणाम किया था । इस प्रश्न के जवाब में श्री मेहराज ने कहा था, "मैं मेहराज-इन्द्रावती आत्मा आयी हूँ।"

→ भी भेजे थे", तब इस पर श्री मेहराज ने कहा, "हे धनी! क्या करूँ? एक तो लौकिक कार्यों की जिम्मेदारी मेरे सिर पर थी, दूसरे अपने जगह पर अपने कार्य की जिम्मेदारी सौंपने के लिए आदमी ढूँढ़ते-ढूँढ़ते देर हो गई। पुनः बुलानेवालों में से किसी ने भी मुझे वास्तविक समाचार नहीं सुनाया।"

ज. ३- जब सद्गुरु ने पूछा, "अब फिर तो तुम लौकिक कार्य हेतु नहीं जाओगे न?" तब इस पर श्री मेहराज ने कहा, "हाँ! मैं लौकिक कार्यों का जिम्मा सौंप कर आया हूँ। अब मैं फिर नहीं जाऊँगा।"

स. ४- "अब मैं हुकुम करत" अर्थात् श्री सद्गुरु ने श्री मेहराज स्वरूप को क्या हुकम किया?

स. ५- "अब मैं हुकुम करत"- ऐसा कहने के पश्चात् तुरन्त श्री सद्गुरु स्वरूप ने क्या कहा?

ज. ५- जब श्री सद्गुरु स्वरूप श्री मेहराज को अपना आध्यात्मिक कार्य- →

स. ६- प्रसाद से भरे थाल के रूप में श्री सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज को क्या सौंप दिया?

ज. ६- सद्गुरु ने कई दिनों से खाना-पीना छोड़ दिया था। आज अचानक →

स. ७- "एक ठौर प्रसाद लीजिये"- ऐसा किसने, किससे और कब कहा?

ज. ७- *"एक ठौर प्रसाद लीजिये"*-ऐसा श्री मेहराज स्वरूप ने बिहारीजी →

स. ८- "क्या रद बदल होत है"- श्री सद्गुरु द्वारा ऐसा पूछने पर श्री मेहराज ने क्या कहा?

स. ९- "एक ठौर प्रसाद लेवें, ऐसा करो हुकुम"- यह बात किसने, किससे कहा? इस पर श्री सद्गुरु स्वरूप ने क्या कहा, स्पष्टतः समझाओ?

स. १०- पिताजी के कहने पर बिहारीजी ने श्री मेहराज के साथ एक ही थाली में प्रसाद तो लिया, परन्तु प्रसाद लेने के पहले क्या किया?

ज. ४- *"अब मैं हुकुम करत"* अर्थात् श्री सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज को अपना समस्त आध्यात्मिक कार्य-भार सँभालने का हुकम किया।

→ भार सँभालने की बातें समझा रहे थे, तभी उन्हें याद आया कि उन्हें भूख लगी है। अतः तत्पश्चात् उन्होंने सुन्दरसाथ से कहा, "मुझे भूख लगी है। कुछ आरोगने के लिए लाओ।"

→ "भूख लगी है" यह सुनते ही सुन्दरसाथ तुरन्त रसोई तैयार कर भोजन से भरा थाल तैयार कर ले आये। उसमें से थोड़ा कुछ खाकर थाल का शेष सब कुछ उन्होंने श्री मेहराज के हाथ में सौंप दिया। इस प्रकार प्रसाद से भरे थाल के रूप में उन्होंने अपने कार्य-भाररूपी धर्मगादी की जिम्मेदारी ही श्री मेहराज को सौंप दी।

→ से कहा। जब श्री मेहराज ने बिहारीजी से एक साथ प्रसाद लेने का आग्रह किया, तब बिहारीजी ने उनका आग्रह स्वीकार नहीं किया। तब श्री मेहराज ने इस विषय में बिहारीजी से पुनः अर्ज की ।

ज. ८- *"क्या रद बदल होत है"*- श्री सद्गुरु द्वारा ऐसा पूछने पर श्री मेहराज ने अर्ज की, "हे धनी! मैं और श्री बिहारीजी एक साथ प्रसाद ले सकें, आप उन्हें ऐसी आज्ञा कर दीजिए ।"

ज. ९- *"एक ठौर प्रसाद लेवें, ऐसा करी हुकम"*- यह बात श्री मेहराज स्वरूप ने श्री सद्गुरु स्वरूप से कही थी। तब इस पर श्री सद्गुरु स्वरूप ने बिहारीजी को हुकम किया, "जब मेहराज बुला रहे हैं, तो तुम उनके साथ प्रसाद लेने क्यों नहीं बैठ जाते?" तब पिताजी के कहने पर बिहारीजी श्री मेहराज के साथ प्रसाद लेने बैठ गए।

ज. १०-श्री सद्गुरु स्वरूप-पिताजी के कहने पर बिहारीजी श्री मेहराज स्वरूप के साथ एक ही थाली में प्रसाद लेने बैठ तो गए, परंतु लेने के पहले बिहारीजी ने उसी थाल में दो हिस्से बना लिए।

स. ११-एक दिन एकान्त मिलने पर श्री मेहराज ने श्री सद्गुरु के चरणों में कहाँ से लेकर कहाँ तक की हकीकत रख दी तथा सद्गुरु स्वरूप ने भी श्री मेहराज के आगे किस तरह सारी बातों का खुलासा कर दिया?

ज. ११- एक दिन एकान्त मिलने पर श्री मेहराज ने सद्गुरु के चरणों में वि. सं. १७०३ से लेकर वि.सं. १७१२ अर्थात् नौ सालों के बीच घटी सारी आपबीती सुना दी और श्री सद्गुरु स्वरूप ने भी →

स. १२-श्री मेहराज की हृदयविदारक दर्दभरी बातें सुनकर सद्गुरु स्वरूप ने उनसे क्या कहा?

ज. १२- श्री मेहराज की हृदयविदारक दर्दभरी बातें सुनने के पश्चात् श्री सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज से कहा, "हे मेहराज! दुःख का निदान तीसरी भोम के सम्वाद को याद करो। श्री राजजी ने तो हमसे वहीं →

स. १३-श्री मेहराज स्वरूप धरोल से आने के पश्चात् कितने दिनों तक श्री सद्गुरु स्वरूप के साथ रहे तथा कितने दिनों पश्चात् श्री सद्गुरु स्वरूप ने उन्हें अपने घर-परिवार से मिलने जाने की आज्ञा की?

स. १४-श्री मेहराज जब श्री सद्गुरु स्वरूप के कहने पर अपने घरवालों से मिलने मेड़ी स्थित अपने घर गए, तब उसके बाद क्या हुआ?

ज. १४- श्री मेहराज धरोल से लौटने पर पूरे २२ दिनों तक निरन्तर सद्गुरु →

स. १५-श्री मेहराज स्वरूप को श्री सद्गुरु स्वरूप के धाम पधारने की खबर कब मिली?

→ श्री मेहराज के आगे अपनी मजबूरियाँ खुलस्त कर उन्हें समझा दिया कि उन्होंने किस कारण से उनसे मुँह फिराया था और उनका प्रणाम अस्वीकार किया था। पुनः इस बात का भी खुलासा कर दिया कि ऐसा करने के पीछे एक मुख्य कारण यह था कि उन्हें श्री मेहराज पर इतना विश्वास था कि उस विश्वास के बल पर ही उन्होंने उनसे मुँह फिराकर बालबाई की जान बचाई और स्वयं भी बदनाम होने से बच सके। इस प्रकार दोनों के दिल परस्पर पवित्र और निर्मल हो गये तथा मायावी दुश्मन परास्त हो गये।

→ कहा था। परन्तु उस वक्त वह बात हमारे गले नहीं उतरी और हम ज़िद पर ज़िद करते हुए खेल देखने की माँग करते रहे। अब जब श्री राजजी ने हमारी ज़िद पूरी करने के लिए हमें खेल देखने भेज दिया है, तो हमें यह खेल अच्छी तरह देखना ही पड़ेगा। हमने ही वहाँ कहा था न, "कहा करसी हमको माया"। अब देखो माया ने क्या कर डाला। मुझे मजबूर कर तुम्हें नौ साल तक रुलाती रही। अब तो तुमने माया की पहचान कर ली न?"

ज. १३- श्री मेहराज स्वरूप धरोल के राजा कल्लाजी के पास से श्री नवतनपुरी आकर सद्गुरु के चरणों में पूरे २२ दिन रहे। बाईस दिन पश्चात् श्री सद्गुरु स्वरूप ने उन्हें मेड़ी स्थित उनके घर-परिवार के लोगों से मिलने जाने की आज्ञा की।

→ स्वरूप की सेवा में उपस्थित रहे। २२ दिन व्यतीत होने पर एक दिन सद्गुरु को भी याद आया कि "मेहराज को अपने घर-परिवारवालों से भी मिलना चाहिए।" तब इसी बहाने से श्री मेहराज को उन्होंने मेड़ी स्थित उनके घर भेज दिया। उसी दिन *"मध रात पछी कीधुं परीआण"* अर्थात् श्री सद्गुरु स्वरूप मध्य रात्रि के पश्चात् श्री परमधाम पधारे।

ज. १५- जब श्री मेहराज ठाकुर चाकला मंदिर से श्री सद्गुरु स्वरूप से विदा लेकर मेड़ी स्थित अपने घर गये, तब लगभग रात के ११ बज रहे थे। →

→ दूसरे दिन करीब नौ बजे उन्हें समाचार मिला कि सद्गुरु स्वरूप तो →

स. १६- "धाम नाता किने ना देखा"- ऐसा किसने और किसके लिए कहा तथा ऐसा कहने के पीछे क्या कारण था?

ज. १६- *"धाम नाता किने ना देखा"*- ऐसा बीतककार श्री लालदासजी महाराज ने श्री सुन्दरसाथजी के लिए कहा क्योंकि →

स. १७- "ए आज्ञा यों ही हती"- ऐसा कौन, किससे और क्यों कह रहे हैं?

ज. १७- *"ए आज्ञा यों ही हती"* अर्थात् इस बक्त यहाँ ऐसा ही होने की आज्ञा हुई थी। ऐसा बीतककार श्री लालदासजी महाराज श्री सुन्दरसाथजी को संबोधित करते हुए कह रहे हैं क्योंकि ब्रह्मात्माओं ने परमधाम में माया की शक्ति के विषय में "कहा →

स. १८- "केतेक दिन पीछे" अर्थात् श्री सद्गुरु स्वरूप के धाम जाने के बाद कितने दिनों तक गादी खाली पड़ी रही?

स. १९- कितने दिनों पश्चात् बालबाई श्री मेहराज के पास मेड़ी में आईं?

स. २०- "अब क्या करना है तुम्हें"- ऐसा किसने, किससे और किस विषय में तथा क्यों कहा?

ज. २०- *"अब क्या करना है तुम्हें"*- ऐसा बालबाई ने श्री मेहराज →

स. २१- बालबाई ने मेड़ी आकर श्री मेहराज से किस विषय की, कैसी बातें की?

ज. २१- बालबाई ने मेड़ी आकर श्री मेहराज को श्री सद्गुरु स्वरूप की भविष्य विषयक बातें याद दिलाते हुए कहा, "हे मेहराज! श्री →

→ रात के बारह बजे ही श्री परमधाम पधार चुके हैं।

→ श्री सद्गुरु स्वरूप के धाम जाने के पश्चात् सभी सुन्दरसाथ अपना-अपना धर्म छोड़कर घर-घर में बैठ गये, ठीक उसी तरह जिस तरह श्री सद्गुरु के जामनगर आने से पहले बैठे थे। सद्गुरु के कहे प्रमाण निरंतर मंदिर आने, चर्चा-कथा सुनने और भजन-कीर्तन करने के बदले सभी ने मंदिर आना ही छोड़ दिया।

→ करसी हमको माया" कहते हुए श्री धनीजी की आज्ञा का उल्लंघन किया था। तब धनी ने हमसे कहा था, "मैं वहाँ खेल में तुम्हें आजमाकर देखूँगा।" इस पर पुनः सखियों ने कहा था, "हे धनी! एक बार क्या *"सौ बेर देखो अजमाए के"* हम कभी नहीं भूलेंगीं।" परंतु कहे प्रमाण न बनकर पहली बार ही भूल गईं और धर्म छोड़कर घर-घर में बैठ गयीं।

ज. १८- *"केतेक दिन पीछे"* अर्थात् श्री सद्गुरु स्वरूप के धाम जाने के बाद डेढ़ महीने तक श्री सद्गुरु स्वरूप की गादी खाली पड़ी रही।

ज. १९- श्री सद्गुरु स्वरूप के धामगमन के ठीक डेढ़ महीने बाद बालबाई मेड़ी स्थित श्री मेहराज के पास आईं।

→ ठाकुर से मेड़ी में आकर सद्गुरु के धर्म सिद्धान्त के प्रचार-प्रसार विषयक बातों को छेड़ते हुए पूछा क्योंकि उन्हें श्री सद्गुरु स्वरूप की गादी पर श्री मेहराज को नहीं, बल्कि गुरुपुत्र के बहाने से बिहारीजी को बैठाना था।

→ सद्गुरु स्वरूप पहले से ही कहते आए थे कि हमारा धर्म तो ऐसा है कि "पसरसी चौदे भवन", किंतु इस प्रकार चुपकी साधकर बैठने से क्या श्री सद्गुरु स्वरूप की भविष्यवाणी फलीभूत हो सकेगी? चाकला मंदिर तो अब कीड़े-मकोड़ों का घर बन चुका है। एक भी सुन्दरसाथ अब मंदिर नहीं आते। पहले जैसा भजन- →

→ कीर्तन, कथा-चर्चा सब कुछ बन्द हो गया। अन्य तो अन्य, किंतु मेहराज तुम स्वयं भी अन्य की ही तरह चुपकी साधकर मेड़ी में बैठ गए? तुम्हारे प्रति श्री सद्गुरु स्वरूप का कितना विश्वास था? वे बार-बार कहते-कहते थकते नहीं थे, "मेरे पीछे मेहराज, मेरे पीछे मेहराज।" हे मेहराज! क्या तुम वे सारी बातें भूल गए? अब पुनः सुन्दरसाथ के जमघट हेतु हमें एक को अग्रगण्य चुनना ही पड़ेगा →

स. २२-धर्म का विस्तार करने और श्री सद्गुरु के भविष्य विषयक वचनों को सार्थक करने की सलाह लेते-लेते बालबाई ने श्री मेहराज के आगे कैसी बातें पेश कर दीं?

ज. २२- श्रीमन्निजानन्द धर्म सिद्धान्त के विस्तार तथा प्रचार-प्रसार की बातों के बहाने से बालबाई ने सद्गुरु स्वरूप के भविष्य विषयक वचनों को प्रमाण के रूप में रखते हुए कहा, "हे मेहराज! श्री →

स. २३-"निसबत नसली से करें"- इस कथन का क्या तात्पर्य है? इस कथन द्वारा बालबाई क्या इशारा देना चाहती थीं?

ज. २३- *"निसबत नसली से करें"*- इस कथन का तात्पर्य यह है कि →

स. २४-"येही बात है सिरे"- यह वाक्य किसने, किससे और क्यों कहा?

ज. २४- *"येही बात है सिरे"*- यह वाक्य श्री मेहराज ने बालबाई से कहा क्योंकि बालबाई अच्छी तरह से जानती थी कि गादी की जिम्मेदारी श्री सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज के हाथ में सौंपी थी। →

स. २५-अपनी बातों का समर्थन होते देख बालबाई ने श्री मेहराज के आगे क्या कहा?

→ और उसे अधिकार देकर सद्गुरु की गादी पर आसीन करना पड़ेगा। पहले की तरह ही यदि नित्य प्रति कथा-चर्चा, भजन-कीर्तन, उत्सव-रसोई का आयोजन न करें, तो हमारा धर्म १४ लोकों में कैसे फैलेगा और सद्गुरु का भविष्य किस तरह से फलीभूत हो पायेगा तथापि गादीपति चुनने के विषय में नसली उत्तराधिकारी देखें, तो बिहारीजी ही सिरदार-अग्रगण्य सिद्ध होते हैं।"

→ सद्गुरु स्वरूप का तुम पर कितना विश्वास था। इस विषय में तुम्हें अब सोचना-समझना और विचार-विवेक करना चाहिए क्योंकि धर्म-समाज के बीच एक गादीपति चुने बिना सुन्दरसाथ को एकत्रित नहीं किया जा सकता। अतः अब श्री सद्गुरु स्वरूप की धर्मगादी पर किसी को बिठाकर उसे अधिकार देना जरूरी है। नसली दृष्टि से देखा जाय, तो सद्गुरु स्वरूप की गादी के उत्तराधिकारी श्री बिहारीजी ही हैं। तथापि आगे तुम्हारी मर्जी।"

→ सद्गुरु की गादी के अधिकार के विषय में यदि सम्बन्ध से देखा जाय, तो यह नियम है कि पिता की मिल्कियत का वारिसदार बेटा ही होता है। इस कथन द्वारा श्री बालबाई ने एक कमाल का इशारा दिया कि किसी भी प्रकार से श्री सद्गुरु स्वरूप की गादी पर श्री बिहारीजी को ही आसीन कराना चाहिए।

→ अब यहाँ श्री मेहराज यदि बालबाई द्वारा इशारों में कही हुई बातों को समझकर कबूल न करें, तो "तीन सौ तेरह" संख्याबाला समाज दो भागों में विभक्त हो जाएगा, परंतु श्री मेहराज समाज में फूट पड़ने देना नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने बालबाई की बातों का समर्थन करते हुए कहा, "येही बात है सिरे" अर्थात् यही कार्य करना उत्तम होगा।

ज. २५- जब उक्त प्रकार श्री मेहराज ने बालबाई की बातों का समर्थन किया, तब तुरंत ही बालबाई ने श्री मेहराज के आगे अपने दिल की बातें रखते हुए कहा, "हे मेहराज! श्री सद्गुरु स्वरूप के →

→ मुखारविंद से नित्य प्रति चर्चा में सुन्दरसाथ ने "मेरे पीछे मेहराज, मेरे पीछे मेहराज" यह बात हजार बार से भी ज्यादा सुनी होगी, परन्तु "मेरे पीछे बिहारीजी" यह बात तो एक बार भी नहीं सुनी →

स. २६-बालबाई की वास्तविकता जानने पर उन्हें सान्त्वना देते हुए श्री मेहराज ने क्या कहा?

ज. २६- बालबाई की चतुराईयुक्त षड्यंत्रपूर्ण वास्तविकता अथवा कमजोरी पता चलते ही श्री मेहराज ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा, "देखिये! सभी सुन्दरसाथ मुझे तो मानेंगे न?" इस पर बालबाई ने कहा, "हूँ! हूँ!! तुम्हें तो सोलह ही आने मानेंगे।" तब →

स. २७-शुभ मुहूर्त देखकर जब बिहारीजी को श्री सद्गुरु स्वरूप की गादी पर आसीन करने का दिन आया, तब उस दिन एकदिली आत्माओं ने एकदिली होकर क्या सूचना दी?

ज. २७- श्री मेहराज ठाकुर ने आगे होकर समस्त सुन्दरसाथ को समझाया और उन्हें संतोष दिलाकर एक शुभ मुहूर्त निश्चित कर श्री बिहारीजी को गादी पर बिठाने का निर्णय किया। परन्तु एक भी सुन्दरसाथ को दिल से यह मंजूर नहीं था। अपितु जो निर्णय लिया गया था, वह तो मान्य करना ही पड़ा। अतः महन्त श्री के गादी अभिषेक के उपलक्ष्य में सार्वजनिक रसोई सहित दूधपाक का प्रबन्ध करना था। इसीलिए श्री मेहराज ने समस्त साथ से दूधपाक →

स. २८-क्या बिहारीजी को गादीपति बनाने की बात सुनकर किसी ने विरोध नहीं किया? यदि किया, तो क्यों?

ज. २८- श्री मेहराज ठाकुर ने बालबाई के आन्तरिक ध्येय को जान लेने के पश्चात् निश्चिन्त होकर सभी सुन्दरसाथ को संदेश भेज दिया कि गुरुपुत्र बिहारीजी को श्री सद्गुरु स्वरूप की गादी पर बिठाने के लिए शुभ मुहूर्त देखकर फलाना दिन निश्चित किया गया है। अतः समस्त सुन्दरसाथ उस दिन समय पर एकत्रित हो जायें। →

→ होगी। इसलिए क्या यह कार्य सम्भव है? क्या सुन्दरसाथ बिहारीजी को कबूल करेंगे अथवा मानेंगे? तुम्हारी जगह बिहारीजी का नाम सुनते ही भड़क नहीं जायेंगे?"

→ श्री मेहराज ने कहा, "सब मुझे मानेंगे, तो मैं बिहारीजी को मानूँगा। सर्वाग्रगण्य रूप में मैं उन्हें उठाकर गादी पर बिठाऊँगा और साष्टांग दण्डवत् प्रणाम कर सद्गुरु स्वरूप की जगह उन्हें रखकर मैं उनकी आरती करूँगा। तब मेरे पीछे-पीछे सब सुन्दरसाथ भी करेंगे या नहीं?" तब बालबाई कहने लगी, "हूँ! हूँ!! आपके पीछे तो सभी सुन्दरसाथ आपके अनुकूल चलने लगेंगे।"

→ बनाने के लिए अपने-अपने घरों से एक-एक लोटा दूध लाने की बिनती की। परंतु एक ब्रह्मात्मा के दिल में आया, ***"मेरी लोटा एक जल, वामें रहै समाइ"*** अर्थात् सबके दूध में मैं मेरा एक लोटा पानी मिला दूँ तो? यह सोचकर एक ने एक लोटा पानी लाकर दूध जमा करने के लिए रखे गए ड्रम में डाल दिया। परन्तु सभी के दिल में एकदिली का विचार व्यापक हो जाने के कारण अंत में उस ड्रम में एक बूँद भी दूध नहीं गिरने पाया। इस इशारे द्वारा ३९३ ब्रह्मात्माओं ने यह साबित कर दिया कि बिहारीजी दूधपाक के लायक नहीं, अपितु पानीपाक के लायक हैं। अतः दूधपाक की जगह पानीपाक की ही रसोई दी गयी।

→ यह सूचना मिलते ही सभी सुन्दरसाथ दूसरे ही दिन इकट्ठे हो गये। उनमें से भी विशेष रूप से जो ट्रस्टी थे, वे कहने लगे, "हे मेहराज! यह क्या होने जा रहा है? यह बात कहाँ से आई? आपके स्थान पर बिहारीजी को श्री सद्गुरु स्वरूप की गादी पर आसीन करना? यह बात तो आज तक हमने कभी भी श्री सद्गुरु स्वरूप के मुख से सुनी ही नहीं।" इस तरह सभी ट्रस्टीगण विरोध करने लगे। इसका कारण यह था कि गुरुपुत्र बिहारीजी किसी भी दृष्टि से उस गादी पर आसीन होने के पात्र नहीं ठहरते थे।

स. २९-विरोध करनेवाले ट्रस्टियों अथवा सुन्दरसाथ को किसने और कैसे समझाया तथा समर्थन कराया?

ज. २९- बिहारीजी को गादीपति बनाने के विषय में विरोध करनेवाले ट्रस्टियों अथवा सुन्दरसाथ में से प्रत्येक को श्री मेहराज ने एकान्त में बिठाकर यह कहकर समझाया, "देखो! श्री सद्गुरु स्वरूप ने जो गादी मुझे दी है, वह बातुनी गादी है, जिसमें हमारे धर्म सिद्धान्त का समावेश है। इसके अंतर्गत श्रीमन्निजानन्द धर्म का प्रचार- →

स. ३०-जानते और समझते हुए भी सभी सुन्दरसाथ के विरुद्ध जाकर श्री मेहराज ने गुरुपुत्र बिहारीजी को गादी पर क्यों बैठाया?

ज. ३०- श्री मेहराज ठाकुर ने जानते और समझते हुए भी समस्त सुन्दरसाथ के विरुद्ध जाकर बिहारीजी को गादीपति इसलिए बनाया क्योंकि उनका मुख्य उद्देश्य था कि सद्गुरु की जागनी द्वारा श्री कृष्ण →

❖ तारतम वाणी अवतरण ❖

स. १- किस वि. सं. के कौनसे महीने में श्री मेहराज ठाकुर ने श्री सद्गुरु स्वरूप की गादी पर बिहारीजी को बैठाने का संदेश समस्त साथ को भेजा?

स. २- बिहारीजी को गादीपति बनाकर कथा-चर्चा, उत्सव रसोई आदि की पूर्ववत् शुरूआत पुनः किसने की?

स. ३- श्री सद्गुरु स्वरूप के धाम चले जाने के पश्चात् श्री सद्गुरु स्वरूप का भविष्य विस्मृत कर जो सुन्दरसाथ, अपने-अपने घरों में बैठ गए थे, वे अब कैसे बनने लगे?

→ प्रसार करना, साकुण्डल और सकुमार को ढूँढ़कर जागृत करना, छत्तीस हजार ब्रह्म तथा ईश्वरी आत्माओं को एकत्रित कर एक अभूतपूर्व मेला करना आदि बातें आती हैं, जो श्री सद्गुरु स्वरूप ने मुझे सौंपी हैं। जाहिरी गादी पकड़कर जामनगर में ही बैठे रहने से क्या साकुण्डल और सकुमार की जागनी हो पाएगी? इस तरह क्या ३६,००० का मेला हम कर पाएँगे?" इस प्रकार श्री मेहराज ने समस्त ट्रस्टीगणों को समझाकर, सान्त्वना दिलाकर अपने निर्णय का समर्थन करवाया।

→ प्रणामी धर्म सिद्धान्त पर ईमान लाकर जागृत हुए छोटे से समाज के बीच फूट न पड़े। समाज में एकता बनी रहे। समाज को विभाजित होने से बचाने के लिए ही श्री मेहराज ने श्री सद्गुरु स्वरूप की गादी पर बिहारीजी को बैठाया था। पुनः दूसरी ओर सकुमार और साकुण्डल की जागनी हेतु यह निर्णय श्री राजजी की ही प्रेरणा भी थी।

-(प्रकरण १६, सवाल-जबाब नं. ३०, कुल सं. ५१६+३०=५४६)।

❖ तारतम वाणी अवतरण ❖

ज. १- श्री मेहराज ठाकुर ने वि. सं. १७१२ अश्विन महीने में श्री सद्गुरु स्वरूप की गादी पर बिहारीजी को बैठाने का संदेश गाँव-गाँव में स्थित सुन्दरसाथ को भेजा।

ज. २- बिहारीजी को गादीपति बनाकर पुनः पूर्ववत् नित्य प्रति कथा-चर्चा, उत्सव-रसोई, भजन-कीर्तन मेहराज ठाकुर (श्री इन्द्रावती आत्मा) ने किया।

ज. ३- श्री सद्गुरु स्वरूप के धाम चले जाने के पश्चात् जो सुन्दरसाथ धर्म सिद्धान्त और सद्गुरु स्वरूप के भविष्य के वचनों को भूलकर अपने-अपने घरों में बैठ गए थे, वे सभी अपनी भूल मानकर →

→पश्चाताप करने लगे। अपने आप में बड़ी शर्मिन्दगी महसूस करने →

स. ४- सद्गुरु स्वरूप के धर्म सिद्धान्त का कार्य पुनः शुरू कर किसने आगे बढ़ाया?

स. ५- श्री मेहराज ठाकुर को "एहिया" यह पदवी किसके द्वारा प्राप्त हुई और क्यों?

स. ६- श्री मेहराज गादीपति बिहारीजी की चर्चा-कथा कैसे-किस तरह से सुनते थे?

ज. ६- श्री मेहराज सबसे पहले श्री सद्गुरु स्वरूप श्री बिहारीजी की चर्चा-कथा ध्यानपूर्वक सुनते थे। जब महन्त श्री सद्गुरु स्वरूप →

स. ७- नित्य प्रति चर्चा-की-चर्चा करते-करते श्री मेहराज को क्या होने लगा?

ज. ७- नित्य प्रति चर्चा-की-चर्चा करते-करते श्री मेहराज के अन्तर →

स. ८- "हम श्री राजजी से कितने दूर हैं अथवा श्री अक्षरातीत धनी के साथ हमारा कैसा सम्बन्ध है?" ऐसी-ऐसी बातें श्री मेहराज साथ के आगे किस तरह रखने लगे?

ज. ८- श्री मेहराज उक्त बातों को चर्चा-की-चर्चा द्वारा सुन्दरसाथ के बीच रखते हुए, नश्वर और धोखेदार संसार तथा श्री परमधाम के बीच की तफावत और उसके महत्त्व को गहनता से दर्शाते हुए →

→ लगे और कहने लगे, "हमें उस वक्त क्या हो गया था? हम कैसे भूल गये थे?"

ज. ४- निजानन्द स्वामी श्री सद्गुरु स्वरूप के श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त के प्रचार-प्रसाररूपी कार्य का पुनरुद्धार "एहिया" अर्थात् श्री मेहराज ने किया।

ज. ५- श्री मेहराज ठाकुर को "एहिया" यह पदवी धर्मग्रन्थ कुरान द्वारा प्राप्त है। कुरान धर्मग्रन्थ में कथित जिकरिया पैगम्बर श्री सद्गुरु स्वरूप हैं तथा उनके नसली और नजरी पुत्रों में से नजरी पुत्र श्री मेहराज होने के कारण ही उन्हें "एहिया" पदवी दी गई है।

→ बिहारीजी चर्चा-कथा करने के पश्चात् एकान्त अपने कमरे में चले जाते थे, तब श्री मेहराज समस्त सुन्दरसाथ के आगे चर्चा-की-चर्चा करके सुनाया करते थे। समस्त सुन्दरसाथजी को चर्चा-की-चर्चा द्वारा पूरी तरह आत्म-तृप्ति कराकर ही वे अपने भौतिक कार्यों में संलग्न होते थे।

→ की आँकड़ियाँ खुलने लगी। मन में सुन्दरसाथ के प्रति इस तरह के नए-नए विचार आने लगे, भावनाएँ उत्पन्न होने लगी, "धाम के साथ की खेल के बीच मुझे कैसी सेवा करनी चाहिए? यह सेवा मुझे अवश्य ही यहीं करनी चाहिए क्योंकि धाम में तो सेवा की जरूरत ही नहीं है।"

→ सुन्दरसाथ से कहते थे, "हे साथजी! हम श्री राजजी से कहने मात्र के लिए दूर हैं। परंतु यदि श्री तारतम ज्ञान की समझ से देखा जाय, तो अत्यंत नजदीक ही हैं। अक्षरातीत धनी श्री राजजी के साथ हमारा आद-अनाद का सम्बन्ध है। उन्हें भूलाकर हम अज्ञानवश माया के बने हुए हैं। यह माया तो दुःख निदान है। जब तक हम धाम नहीं पहुँचेंगे, तब तक दुःख ही दुःख में चक्कर मारते रहेंगे।"

स.९- श्री मेहराज ठाकुर के मन में सुन्दरसाथ की सेवा करने की इच्छा किस तरह उत्पन्न हुई?

ज. ९- श्री मेहराज ठाकुर के मन में चर्चा-की-चर्चा करते-करते यह →

स. १०-गोविन्द भेड़े का काम हाथ में लेने की इच्छा के पीछे श्री मेहराज का क्या ध्येय था?

ज. १०- श्री इन्द्रावती आत्मा-श्री मेहराज ठाकुर का गोविन्द भेड़े-लौकिक →

स. ११-अपनी इच्छा पूर्ण करने हेतु श्री मेहराज ने किसके साथ सलाह-मशविरा की?

ज. ११- अपनी इच्छा अर्थात् श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम के मेले के माध्यम →

स. १२-श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम का मेला करने के लिए श्री मेहराज ठाकुर को जामनगर के वजीर को निवेदन पहुँचाकर दीवान पद का भार लेने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

स. १३-दोनों ओर की अर्थात् भौतिक और पारलौकिक जिम्मेदारी अच्छी तरह सँभालने के लिए श्री मेहराज क्या करने लगे?

ज. १३- दोनों ओर की अर्थात् भौतिक जिम्मेदारी दीवान पद की नौकरी →

स. १४-श्री सुन्दरसाथजी को स्वरूप-चर्चा सुनाने की सेवा कौन करते थे? कब?

ज. १४- जब से गुरुपुत्र बिहारीजी गादीपति हुए, तब से जाहिर में स्वरूप- →

→ विचार प्रकट होने लगा कि यहाँ संसार में ही धाम के साथ की सेवा, जितनी बने उठानी चाहिए। ऐसा मौका हमें धाम में कहाँ मिलेगा? जैसी सेवा यहाँ संसार में बन सकती है, वैसी अन्यत्र कहीं नहीं बन सकती।

→ कार्य अर्थात् मंत्री पद का कार्य-भार अपने कंधे पर लेने के पीछे मुख्यातिमुख्य ध्येय धाम के साथ की सेवा करना था क्योंकि उनकी तीव्र इच्छा थी कि वे श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम का मेला कर अपने सम्बन्धी धाम के परिवार को खुश करें।

→ से श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु स्वरूप की अंगभूता आत्माओं को एकत्रित कर उन्हें सेवा द्वारा सुख पहुँचाने की इच्छा पूर्ण करने हेतु श्री मेहराज ठाकुर ने गादीपति महंत श्री बिहारीजी से सलाह-मशविरा कर दीवान पद लिया।

ज. १२- श्री मेहराज ठाकुर द्वारा श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम का मेला करने के लिए जामनगर के राजा को निवेदन चढ़ाकर मंत्री पद सँभालने का कारण था, "खरुं करतां खोटा मांहेंथी" अर्थात् झूठे धन से सच्चे धनी श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम के मेले में एकत्रित हुई धाम की सम्बन्धी सच्ची आत्माओं की सेवा करना चाहते थे।

→ के कार्य-भार सहित पारलौकिक धाम के परिवार को चर्चा-कथा के माध्यम से सँभालने की जिम्मेदारी अच्छी तरह से वहन करने हेतु श्री मेहराज रात के तीन बजे उठने लगे। अन्यथा दोनों ओर पहुँच नहीं पाते थे।

→ चर्चा करने की सेवा वे ही करते थे, जिसमें अक्षर परे अक्षरातीत श्री परमधाम स्थित मूल मिलावे में विराजमान युगलस्वरूप श्री राजश्यामाजी द्वारा धारण किए हुए वस्त्राभूषणों के सिंगार का वर्णन होता था। यह चितवनि दिन के ठीक साढ़े चार बजे हुआ करती थी।

स. १५-श्री मेहराज स्वरूप जब दीवान पद पर नियुक्त होकर सुन्दरसाथ का जमघट करके सुन्दरसाथ को अलौकिक रस का पान कराने के लिए कसौटी करने लगे, तभी माया किस रूप में उनके ऊपर टूट पड़ी अथवा माया ने दूसरी बार किस तरह श्री मेहराज स्वरूप को धक्का दिया?

ज. १५- जब श्री मेहराज स्वरूप सुन्दरसाथ को लौकिक और पारलौकिक रस का पान कराने के लिए बन्दगी में उतर रहे थे, तभी अकस्मात् ही माया दूसरी बार उनसे युद्ध करने के लिए उन पर टूट पड़ी। जब से श्री बिहारीजी गादी पर आसीन हुए थे, तब से उन्होंने नियम बाँध दिया था कि सभी सुन्दरसाथ को दोनों वक्त की चर्चा में हाजिर होना अनिवार्य है। सभी सुन्दरसाथ महंत श्री के कड़े स्वभाव के कारण दोनों समय की चर्चा में उपस्थित हो जाते थे। एक साथी दो कोस दूर गाँव से चार मील चलकर चर्चा-दर्शन को आते थे। पुनः दो कोस चलकर जाते थे। इसी तरह संध्या की चर्चा में भी चार मील चलकर आते और चर्चा श्रवण कर प्रसाद लेकर पुनः घर को जाते थे। पूरे दिन में सोलह मील जाने और आने में ही समय व्यतीत हो जाता था। पुनः लौकिक कमाई किए बिना भी गुजारा नहीं हो सकता था क्योंकि परिवार में श्रीमती और बच्चे भी थे। अतः एक दिन डरते-डरते उन भाई ने महंत श्री बिहारीजी के आगे दोनों समय चर्चा में आने की असमर्थता प्रकट करते हुए कहा, "हे धामधनी! मैं बहुत गरीब हूँ। मेरा पूरा दिन चर्चा में आने-जाने में ही व्यतीत हो जाता है और लौकिक कमाई किए बिना निर्वाह नहीं हो पाता। अतः मैं आपसे अर्ज करता हूँ कि कृपया मुझे एक समय के लिए क्षमा करें।"

बिहारीजी यह सुनते ही गरम हो गए और कह दिया, "जो धर्म की मर्यादा का पालन नहीं कर सकते, उन्हें धर्म में रहने की आवश्यकता नहीं है। अतः तुम्हें मैं दोनों समय के लिए माफ कर देता हूँ। अब कभी अपना मुख मुझे नहीं दिखाना।" इस प्रकार →

कड़े स्वर में डाँटकर धर्म-समाज और तिलक-प्रसाद से बहिष्कृत कर दिया। उक्त भाई इस धर्मसंकट से बड़े दुःखी हुए। बहुत रोए। कइयों अनुनय-विनय किया। परन्तु बिहारीजी ने एक नहीं सुनी। अन्त में जब कोई हल न निकला, तो विचार किया "इस प्रकार धर्म-समाज, तिलक-प्रसाद एवम् धामधनी सद्गुरु के हृदय से दूर रहकर जीने से तो शरीर छोड़ देना ही श्रेयस्कर है।" यह विचार करके अन्न-जल का परित्याग कर दिया और नौ दिनों तक बिहारीजी के द्वार पर पड़े रहे, परन्तु महंत श्री नहीं पिघले। उनके स्वभाव से सुन्दरसाथ भी इतना डरते थे कि किसी को कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हुई।

अंत में दसवें दिन स्त्री वर्ग द्वारा यह बात श्री मेहराज की धर्मपत्नी श्री फूलबाई के कानों तक पहुँची। वे बड़ी दयालु और सरल स्वभाव की थीं। वे उन भाई को समझा-बुझाकर अपने घर ले गईं और सान्त्वना देकर धैर्य बँधाया। भोजन-प्रसाद कराकर तृप्त किया। तत्पश्चात् बोलीं, "आप चिंतित न हों। ये जब राजदरबार से लौटेंगे, तो आपकी अर्ज मैं उन्हें सुना दूँगी। मुझे पूरा विश्वास है कि महंत श्री को इनके सिवाय कोई नहीं मना सकता और इनकी बात मानकर वे अवश्य ही आपको धाम, धर्म तथा तिलक-प्रसाद में पुनः शामिल कर लेंगे।" इधर बिहारीजी को द्वारपाल द्वारा जब इस बात का पता चला, तो उन्होंने तुरन्त द्वारपाल को हुकम कर दिया कि श्री मेहराज जैसे ही राजदरबार से लौटें, तो उन्हें अन्दर न आने देना। श्री मेहराज जैसे ही राजदरबार से लौटे, द्वारपाल ने महंत श्री का हुकम सुना दिया। महंत श्री का हुकम सुनकर श्री मेहराज ने कारण पूछा, तो बिहारीजी ने सारा वृत्तांत सुना दिया और उनके आगे यह बात रख दी कि आपकी धर्मपत्नी ने उन्हें आश्रय देकर अधर्म का कार्य किया है। अतः अब आप यदि धामधनी और धर्म के सन्मुख रहना चाहते हैं, तो आपको अपनी धर्मपत्नी का परित्याग करना होगा और आप यदि मेरी आज्ञा का पालन नहीं करेंगे, तो आपकी धर्मपत्नी द्वारा किए गए इस अधर्म की सजा के प्रतिफल मैं आपको धाम और धर्म से बहिष्कृत करता हूँ क्योंकि पत्नी द्वारा किया

गया अपराध तो पति के सिर पर भी लागू होता है। श्री मेहराज स्वरूप के लिए यह धर्मसंकट का विषय था किंतु उन्होंने इसे अपनी परीक्षा समझकर तुरन्त ही निश्चय कर लिया कि धामधनी श्री सद्गुरु स्वरूप की आज्ञा शिरोधार्य करना ही उनका धर्म है।

उपरोक्त निश्चय लेने के पश्चात् उन्होंने विशुद्धहृदया एवम् पतिव्रता फूलबाई को पत्र लिख दिया कि, "हे फूलबाई! मुझे सद्गुरु स्वरूप के भविष्य की चिन्ता है। अतः तुम जिस तरह आज तक मेरे अनुकूल बनी रही, उसी तरह रहकर अपना धर्म करते जाना और मैं अपने धर्म मार्ग पर अडिग रहूँगा। आज परिस्थिति के कारण हम पिस रहे हैं। हमारी कसौटी चल रही है। सद्गुरु की जिम्मेदारी मुझ पर होने के कारण मैं तुम्हारा परित्याग कर रहा हूँ। आगे जो होगा श्री धामधनी की आज्ञा से होगा।" इस तरह पत्र लिखकर फूलबाई को भेज दिया। फूलबाई ने उस पत्र का प्रत्युत्तर लिखकर भेजा, "हे स्वामीजी! आप सद्गुरु स्वरूप की आज्ञा और भविष्य सामने रखकर चलना। मैं अपने धर्म पर खड़ी हूँ। आप भी विघ्न-बाधाओं तथा आपत्तियों से घबराना नहीं। आपने जो निर्णय लिया है मुझे मंजूर है।" इस दिन से श्री →

स. १६-श्री सुन्दरसाथ को धाम की चितवनि कौन, कब और कहाँ करवाते थे ? उस समय कौन और कहाँ से आ पहुँचते थे और क्यों?

ज. १६- श्री बिहारीजी समस्त सुन्दरसाथ को श्री चाकला मंदिर में धाम की चितवनि करवाते थे। यह चितवनि सद्गुरु स्वरूप के वक्त से ही होती आयी थी। श्री सद्गुरु स्वरूप के धाम जाने के बाद →

स. १७-"बुजरक जानी खाक" - ऐसा भाव किसके अंदर उत्पन्न हुआ? पुनः किसे महत्त्वपूर्ण माना और किसे खाक?

ज. १७- *"बुजरक जानी खाक"*- यह भाव श्री मेहराज के अंदर उत्पन्न हुआ। श्री मेहराज ने खाक तुल्य धन-सम्पदा को बुजरक- →

→ मेहराज स्वरूप मेड़ी गये ही नहीं। चाकला से ही राजदरबार जाने-आने लगे।

सर्व स्त्रियों की आदर्श स्वरूपा श्री फूलबाई का यह नियम था कि वे पतिदेव को भोजन कराये बिना कभी अन्न-जल नहीं लेती थीं। अतः उन्होंने अन्न-जल त्याग दिया। छः महीने तक निरन्तर यह कसनी सहन करते हुए जब धाम जाने का समय नजदीक आ गया, तो उन्होंने अपनी अन्तिम प्रार्थनायुक्त चिट्ठी श्री मेहराज को भेजी, जिसमें लिखा था, "हे धनी! मेरी अन्तिम प्रार्थना स्वीकार करना। जहाँ मेरा अन्तिम संस्कार हो, वहाँ पर अपने चरण-कमल रखकर मुझे स्वीकार कर लेना।" अतः फूलबाई की अन्तिम प्रार्थना स्वीकार कर श्री मेहराज स्वरूप वहाँ गये, जहाँ फूलबाई का अन्तिम संस्कार हुआ था और संस्कार हुई राख पर अपने चरण-कमल रखकर अमलावती आत्मा को अपने स्वरूप में लीन कर लिया।

इस प्रकार श्री मेहराज स्वरूप ने कलियुगरूपी माया के साथ हुए इस दूसरे युद्ध में भी विजय प्राप्त की और जूनागढ़ में पहुँचने पर तेजकुँवरी के रूप में अमलावती आत्मा को पुनः अपना लिया।

→ जब बिहारीजी को गादीपति बनाया गया, तब यह चितवनि पुनः होने लगी। चितवनि के वक्त दिन के ठीक साढ़े चार बजे श्री मेहराज राजदरबार से सीधे श्री चाकला मंदिर आ पहुँचते थे क्योंकि जब तक श्री मेहराज ठाकुर महन्त श्री की चितवनि में अग्रगण्य होकर नहीं बैठते थे, तब तक अन्य सुन्दरसाथ भी नहीं बैठते थे। इसलिए राजदरबार से आकर श्री मेहराज को चितवनि में उपस्थित होना ही पड़ता था।

→ महत्त्वपूर्ण मानकर दीवान पद ग्रहण किया था और इसी खाक तुल्य धन-सम्पदा द्वारा उन्होंने सद्गुरु की सम्बन्धी आत्माओं का मेला कर साथ को खुश करने की सेवा को बुजरक अर्थात् महत्त्वपूर्ण सेवा मानी तथा दीवान पद ग्रहण कर कमाने लगे।

स. १८-श्री मेहराज के दिल में लगभग कितने समय तक राजदरबार में दीवान पद पर सेवारत रहने के पश्चात् धाम के अमूल्य सुन्दरसाथ की सेवा करने की इच्छा उत्पन्न हुई?

स. १९-श्री मेहराज सुन्दरसाथजी की सेवार्थ मन में क्या-क्या सोचने लगे?

ज. १९- श्री मेहराज सुन्दरसाथ की सेवार्थ मन में सोचने लगे, "सद्गुरु द्वारा भविष्य के लिए की हुई अनेकों आज्ञाओं में से, "साथकी →

स. २०-श्री परमधाम का सम्बन्ध जानकर श्री मेहराज ने एक निष्पक्ष तथा विश्वसनीय साथ को क्या कहकर दान-पुण्य विषय की जिम्मेदारी सौंपी?

ज. २०- श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम से शुरू किया हुआ मेला साप्ताहिक था। उसमें श्री सद्गुरु स्वरूप महन्त श्री बिहारीजी तथा उनके हुजूरी से लेकर दर्जानुसार समस्त साथ को दान-पुण्य करना था। अतः दान-पुण्य करने के लिए श्री मेहराज ने धाम के एक विश्वसनीय साथी को कोठार खाली करने की जिम्मेदारी सौंप →

स. २१-श्री मेहराज ने श्री सद्गुरु स्वरूप गादीपति बिहारीजी और उनके हुजूरी के लिए कैसे वस्त्राभूषण बनाने को कहे?

स. २२-जिन भाई को श्री मेहराज ने विश्वास कर कोठार खाली करने की सेवा सौंपी थी, वे भाई सौंपी गई सेवा के विषय में क्या भाव रखते थे?

ज. १८- राजदरबार में लगभग दो साल तक दीवान पद पर सेवारत रहने के पश्चात् श्री मेहराज के दिल में कमाए हुए पैसों द्वारा ब्रह्मात्माओं का मेला करके उनकी सेवा द्वारा उन्हें खेल के बीच खुश करने की तथा इस कार्य द्वारा धाम में यश-कीर्ति प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न हुई।

→ सेवा करो बेशुमार" भी तो एक आज्ञा है। सद्गुरु की अन्य आज्ञाएँ भी उनके नाम पर किए जानेवाले मेले द्वारा पालन की जा सकती हैं। पुनः इस मेले द्वारा मुझे किसी अन्य को थोड़े ही खुश करना है। मुझे तो इस मेले द्वारा अपने धाम के परिवार, श्यामाजी के अंग अर्थात् मेरे अपने सुन्दरसाथ को खुश करना है।" ऐसे तरह-तरह के विचार उनके मन में घर करने लगे।

→ दी और कहा, "देखो! धाम के सुन्दरसाथ में से जो भी यदि कपड़ा-लत्ता, वस्त्राभूषणादि, नगद-रुपये दो माँगे, तो चार देना, चार माँगे, तो आठ देना। इस तरह उनकी इच्छा की अपेक्षा दुगुना देकर कोठार खाली करने की जिम्मेदारी तुम्हारी और कोठार भरने की जिम्मेदारी मेरी। तुम इस विषय में दिल में तनिक भी संकोच कदापि नहीं करना कि कोठार खाली हो रहा है। तुम्हें सिर्फ इस बात की चिन्ता होनी चाहिए कि मैं यह कोठार किस प्रकार खाली करूँ।" इस तरह समझाकर श्री मेहराज ने उस भाई को कोठार खाली करने की जिम्मेदारी सौंप दी।

ज. २१- श्री मेहराज ने श्री सद्गुरु स्वरूप गादीपति बिहारीजी के लिए अति सुन्दर, बहुमूल्य तथा उनके रुचि अनुकूल वस्त्राभूषण बनवाये। उसी प्रकार गादीपति के हजूरी नागजी के लिए भी उनके दर्जानुसार रुचिपूर्वक एक तलवार और वस्त्राभूषण तैयार करवाये।

ज. २२- श्री मेहराज ने जिन विश्वसनीय भाई के हाथ में कोठार को खाली करने की सेवा सौंपी थी, वे भाई सौंपी गई सेवा के विषय में सोचते थे, "श्री सद्गुरु स्वरूप मेरे भी तो हैं न! सुन्दरसाथ भी तो मेरे ही हैं!! एक तो मुझे श्री सद्गुरु स्वरूप और श्री सुन्दरसाथजी →

→की सेवा करने का सुनहरा अवसर मिला, फिर उसमें भी दान करना और भण्डार खाली करना? पुनः वह धन लुटाना भी, तो कहाँ? अपने ही सुन्दरसाथ में? तो मैं क्यों पीछे देखूँ? "एक तो →

स. २३-श्री मेहराज की आज्ञा पाकर वे भाई किस प्रकार सेवा में हाथ चालाकी करने लगे?

ज. २३- श्री मेहराज की आज्ञा पाकर वे भाई कोठार खाली करने के लिए चौबीसों घण्टे सुन्दरसाथ जमात के बीच खुले दिल से वस्त्राभूषण, →

स. २४-श्री मेहराज ने श्री बिहारीजी और नागजी दोनों के लिए उनके दर्जे के अनुसार वस्त्राभूषणादि क्यों बनवाये?

स. २५-श्री मेहराज ने वस्त्राभूषणादि मात्र महन्त श्री और उनके हजूरी के लिए ही बनवाये थे अथवा अन्य समस्त सुन्दरसाथ के लिए भी?

स. २६-श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम पर आयोजित उत्सव में समस्त सुन्दरसाथ को समय पर उपस्थित रहने का आमंत्रण किसने भेजा? कब?

ज. २६- श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम पर आयोजित उत्सव में गाँव-गाँव में →

स. २७-श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम पर आयोजित उत्सव के लिए एकत्रित सामग्रियाँ कहाँ इकट्ठी की गई थीं? इस विषय में गादीपति बिहारीजी को सिरदर्द क्यों हुआ?

ज. २७- श्री सद्गुरु स्वरूप धनी श्री देवचन्द्रजी के नाम पर आयोजित →

→ कहना साथ में, और दूजा पाया हुकुम।" अतः अब मैं यह सेवा क्यों न करूँ?" इस प्रकार वे भाई भी श्री मेहराज की आज्ञानुकूल भाव ही रखते थे।

→ नगद-पैसे आदि अपेक्षा से दुगुना देकर इस प्रकार लुटाने लगे कि यदि कोई तीसरा व्यक्ति इस तरह दान-पुण्य होता देख ले, तो वह यही समझेगा कि लुटानेवाला अपनी कमाई का धन नहीं बल्कि ऐसी धन-दौलत लुटा रहा है, जिसका कोई वारिसदार नहीं है। इस प्रकार की हाथ चालाकी द्वारा वे भाई कोठार खाली करने की सेवा करने लगे।

ज. २४- धाम के अन्य सुन्दरसाथजी के आगे श्री बिहारीजी महन्त श्री थे तथा नागजी महन्त श्री के हजूरी थे। अतः ये दोनों ही समाज के बीच मान-सम्मान के योग्य थे। इसलिए श्री मेहराज ने इन दोनों के लिए उनकी रुचि के अनुसार वस्त्राभूषणादि बनवाये।

ज. २५- श्री मेहराज ने वस्त्राभूषणादि मात्र महन्त श्री तथा उनके हजूरी के लिए ही नहीं, अपितु श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम पर किए गए मेले की याद के रूप में समस्त साथ के लिए भी उनके दर्जे के अनुसार भाँति-भाँति की वस्तुओं का प्रबन्ध किया था।

→ बसे समस्त साथ को समय पर उपस्थित रहने का आमंत्रण श्री मेहराज ने वि. सं. १७१२ में सूचना-पत्र द्वारा यह कहकर भेज दिया था, "श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम का मेला करना है। अतः श्री सद्गुरु स्वरूप के सम्बन्धी एक भी सुन्दरसाथ न छूटने पावें, सभी उपस्थित रहें।" इस तरह श्री मेहराज के आग्रहपूर्वक आमन्त्रण पर समस्त सुन्दरसाथ इकट्ठे हो गए।

→ मेले के लिए एकत्रित की गई सामग्रियाँ श्री मेहराज ने अपने घर मेड़ी में इकट्ठी की थीं। इस विषय में गादीपति बिहारीजी को सिरदर्द इसलिए हुआ क्योंकि उनका कहना था कि मेले का सामान वहाँ रखना चाहिए, जहाँ मेला किया जा रहा हो। जब मेला श्री चाकला मंदिर में आयोजित किया गया है, तो सामान मेड़ी में क्यों रखा गया है?

स. २८-श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम का उत्सव शुरू होते ही राजदरबार में वज़ीर के पास चुगली लगा दिए जाने पर क्या हुआ?

ज. २८- उक्त तैयारियों के साथ श्री सद्गुरु स्वरूप के नाम पर आयोजित मेला श्री चाकला मंदिर में शुरू हुआ। श्री मेहराज मेले के लिए एकत्रित किया हुआ सारा सामान अपने घर मेड़ी से लाकर श्री →

स. २९-"हुआ धक्का इन समै" - ऐसा कौन कह रहे हैं? धक्का किसे हुआ तथा किसने दिया?

ज. २९- *"हुआ धक्का इन समै"* अर्थात् राजदरबार में चुगली हो जाने →

स. ३०-चुगली सुनते ही राजदरबार के वज़ीर ने श्री मेहराज सहित अन्य किसे-किसे नजरकैद में डाल दिया तथा वह स्वयं कहाँ गया और क्यों, स्पष्टतः समझाओ?

ज. ३०- चुगलखोर की बातें सुनते ही राजदरबार के प्रधान वज़ीर ने →

स. ३१-अहमदाबाद के बादशाह कुतुब खाँ ने जाम सत्ता पर किस विक्रम संवत् में चढ़ाई की थी और क्यों?

स. ३२-उस समय किस कारण से हिन्दू राजाओं में खलबली मचने लगी?

ज. ३२- उस समय हिन्दू राजाओं में खलबली मचने की वजह थी - हिन्दू →

स. ३३-प्रबोधपुरी (हब्सा) में श्री मेहराज सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी स्वरूप को ध्यान में लेकर क्या विचार करने लगे?

→ चाकला मंदिर में खर्च कर रहे थे। यह उत्सव सात दिन का था, परन्तु तीसरे ही दिन किसी (महंत श्री) के द्वारा राजदरबार में प्रधान दीवान को चुगली लगा दिए जाने के कारण प्रधान दीवान के हुकम से मेला बन्द करा दिया गया। मेले में भारी विघ्न पड़ा। उत्सव बन्द हुआ तथा इकट्ठा किया गया सारा सामान राजदरबार में लाकर उस पर मोहर लगा दी गई। तीनों भाई श्री मेहराज ठाकुर, उद्धव ठाकुर और श्यामलदास नजरकैद में पड़ गए।

→ तथा मेले में विघ्न पड़ने के कारण श्री मेहराज स्वरूप को बड़ा भारी धक्का पहुँचा। चुगलखोर ने चुगली लगाकर झूठे आरोप द्वारा उन्हें भारी दुःख-कष्ट पहुँचाया। यह बात प्रसंगवश बीतककार श्री लालदासजी महाराज कह रहे हैं।

→ विचार-विवेक किये बिना ही श्री मेहराज सहित अन्य दोनों भाइयों-श्यामलदास ठाकुर और उद्धव ठाकुर को भी नजरकैद में डाल दिया तथा वह स्वयं जामनगर के राजा को लेकर अहमदाबाद वहाँ के बादशाह कुतुब खाँ के साथ उसके ऊपर स्थित किसी कर्ज के विषय में छेड़े जानेवाले युद्ध को रोकने एवम् उससे सन्धि करने चला गया।

ज. ३१- अहमदाबाद के बादशाह कुतुब खाँ ने जामराजा के राज्य पर वि. सं. १७१४ में चढ़ाई की थी। उसका कारण यह था कि जामनगर के राजा ने कुतुब खाँ बादशाह से कुछ कर्ज लिया था और वह कर्ज की रकम लौटा नहीं पाया था।

→ राज्य जामनगर तथा अहमदाबाद का मुसलमान बादशाह कुतुब खाँ। हिन्दू राजाओं को डर था कि यदि जामराजा द्वारा कर्ज की पूर्ति न कर पाने के कारण बादशाह कुतुब खाँ जामनगर पर चढ़ाई कर देगा, तो जामराजा अवश्य ही परास्त हो जायेगा और हिन्दू राजाओं का राज्य मुसलमान बादशाह के हाथ में चला जायेगा।

ज. ३३- मेला करते-करते चुगलखोर द्वारा चुगली लगा देने के कारण जब जामनगर के प्रधान दीवान ने श्री मेहराज सहित दोनों भाइयों →

→को प्रबोधपुरी (हब्सा) में नजरबन्द कर दिया, तब श्री मेहराज स्वरूप मेला करने की आज्ञा देनेवाले श्री सद्गुरु स्वरूप को ध्यान में लेकर विरह-विलाप करते हुए विचार करने लगे, "हे धनी! हे मेरे सद्गुरु!! आपने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? इस चुगलखोर को भी प्रेरणा करनेवाले आप ही हैं। यदि ऐसा ही →

स. ३४-इस प्रकार विचार करते-करते जब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी स्वरूप श्री मेहराज के दिल पर विराजमान हुए, तो क्या हुआ? पहले दर्शन देने के पश्चात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी किस रूप में उनके सामने आये?

ज. ३४- श्री मेहराज द्वारा उक्त प्रकार विचार-विवेक, विरह-विलाप करते-करते अचानक श्री सद्गुरु स्वरूप श्री मेहराज के सामने प्रकट हो गए और उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा, "हे मेहराज! मैंने तुमसे मेला करने को कहा तो था, परन्तु ऐसा मेला नहीं। तुम्हें मैंने साकुण्डल और सकुमार सखी को ढूँढ़ निकालने की आज्ञा दी थी तथा छत्तीस हजार आत्माओं को लेकर साकुण्डल और सकुमार →

स. ३५-वाणी अवतरण के दौरान सर्वप्रथम कौनसा प्रकरण प्रकट हुआ?

स. ३६-सुन्दर अनुपम स्वरूप के दिल पर विराजमान होते ही कहाँ की लीला का गान होने लगा?

स. ३७-श्री ठकुरानीजी द्वारा योगमाया के ब्रह्माण्ड में धारण किए हुए सिंगार का वर्णन कब हुआ?

ज. ३७- जब श्री मेहराज वि. सं. १७१५ में हब्सा में नजरकैद में पड़े, तब →

→ करना था, तो मुझे मेला करने की आज्ञा क्यों दी? मैं आपकी आज्ञा पालन करने हेतु ही तो यह मेला कर रहा था न ? आपने मुझे ही इस प्रकार हाँसी का पात्र बना दिया? मेरी ऐसी बेइज्जती क्यों की? मेरी कौनसी गलती थी अथवा क्या कसूर था, जिसकी सजा देते हुए आपने मुझे इस दशा में पहुँचा दिया?" इस तरह श्री मेहराज दर्दभरे दिल से विलाप करने लगे।

→ सखी के साथ मेला करने को कहा था। तुम्हारे इस मेले में साकुण्डल और सकुमार सखी कहाँ हैं? पुनः मैंने जो मेला करने को कहा था, वह मेला यहाँ नहीं है। वह तो पूर्व दिशा में है। फिर मेले में मैंने शारीरिक खुराक पहुँचाने को नहीं, बल्कि आत्मीय ज्ञानरूपी खुराक पहुँचाने का हुकम किया था। शारीरिक खुराक पहुँचानेवाला मेला तो हर कोई करते आये हैं। तुम्हें तो ऐसा मेला करना था, जो "न भूतो न भविष्यति" अर्थात् न किसी ने किया था और न कोई करेगा।" इतना कहने के पश्चात् श्री सद्गुरु स्वरूप ने अपने वास्तविक स्वरूप अर्थात् श्री श्यामाजी के स्वरूप में दर्शन दिया और वे श्री मेहराज के दिलरूपी धाम में विराजमान हो गये। तब मिश्री की ईंटें गिरने लगी, बिजली चमकने लगी और श्री मेहराज के श्री मुख से "वाणी" प्रकट होने लगी।

ज. ३५- वाणी अवतरण के दौरान सर्वप्रथम "प्रेम सेवा वाले प्रगट कीधी" यह प्रकरण अवतरित हुआ और तत्पश्चात् "एणे पगले आपण चालीए" यह प्रकरण प्रकट हुआ।

ज. ३६- सुन्दर अनुपम स्वरूप अर्थात् श्री श्यामाजी स्वरूप के श्री मेहराज के दिल पर विराजमान होते ही उनके श्री मुख से सर्वप्रथम व्रजमण्डल की लीला का गान होने लगा, जो लीला उन्होंने ग्यारह वर्ष बावन दिन तक अपने धनी के साथ की थी।

→ सर्वप्रथम उनके श्री मुख से व्रज की लीला का गान हुआ। तत्पश्चात् व्रजमण्डल में वंशी की नाद कान में पड़ते ही ब्रह्मात्माएँ इस अथाह-अपार दुस्तर भवसागर को लात मारकर किस मार्ग (पगला) पर चलकर रासमण्डल में प्रवेश हुईं, पुनः उस मार्ग पर चलते समय →

→ उनके लिए यह अथाह-अपार मोहसागर बाधक क्यों नहीं हुआ? यह सब वर्णन करने के पश्चात् श्री श्यामाजी-श्री ठकुरानीजी →

स. ३८-श्री इन्द्रावती सखी के पवित्र दिल द्वारा यहाँ अन्य किस-किस के सिंगार का क्रमशः वर्णन होते गया?

स. ३९-श्री मेहराज के सिर पर आए दुःख-कष्ट का प्रतिफल क्या हुआ?

स. ४०-"यही उन साथ की सेवा है"- ऐसा किस लीला के लिए कहा गया है? किस लीला का वर्णन सुनकर ब्रह्मात्माएँ सुख प्राप्त करेंगी अथवा कौनसी सेवा सच्ची सेवा है?

ज. ४०- श्री राजश्यामाजी तथा समस्त साथ के सिंगार के पश्चात् अखण्ड व्रज लीला और अखण्ड महारास लीला का वर्णन हुआ। तत्पश्चात् श्री प्रकाश और श्री षटऋतु-ये दोनों ग्रंथ भी पूरे हुए तथा चौथे ग्रंथ श्री कलश की एक चौपाई अवतरित हुई। रास-प्रकाश की वाणी अर्थात् अपनी ही लीला व्रज और रास का वर्णन सुनकर ब्रह्मात्माएँ निजसुख प्राप्त करेंगी। अपनी इसी लीला की जानकारी का ज्ञानरूपी खुराक खिलाकर १२,००० ब्रह्मात्माओं →

स. ४१-किसे प्रबोधपुरी में "यथा नाम तथा गुणः" भारी फायदा हुआ? इस चर्चा एवम् चमत्कार को देख और सुनकर किसे तथा किसके प्रति विश्वास आया?

ज. ४१- प्रबोधपुरी (हब्सा) में "यथा नाम तथा गुणः" अर्थात् श्री मेहराज ठाकुर के नाम के अनुकूल चौदह लोक में प्रकाश पहुँचानेवाला →

→ द्वारा योगमाया के ब्रह्माण्ड-श्री रासमण्डल में धारण किए हुए सिंगार का वर्णन हुआ, जिसे धारण करके श्री श्यामाजी ने योगमाया के ब्रह्माण्ड में महारास लीला की थी।

ज. ३८- श्री इन्द्रावती सखी के पवित्र दिल द्वारा यहाँ सर्वप्रथम श्री ठकुरानीजी के सिंगार का वर्णन हुआ। तत्पश्चात् श्री राजजी के सिंगार का वर्णन हुआ और फिर श्री सुन्दरसाथजी के सिंगार का वर्णन हुआ।

ज. ३९- श्री मेहराज के सिर पर आए दुःख-कष्ट के फलस्वरूप बेहद-परलोक के अक्षरातीत धाम की तारतमरूपी श्री मुख वाणी प्रकट हुई, जिसके द्वारा श्री इन्द्रावती आत्मा अपने दुःख को भूलाकर अखण्ड सुख में ओत-प्रोत हो गई।

→ को तृप्त करके परमधाम जाने के लायक बनाने की सेवा को ही सच्ची सेवा कहा है। श्री मेहराज द्वारा श्री सद्गुरु स्वरूप की आज्ञा के बातुनी अर्थ को न समझ पाने के कारण ही वे आटा, मैदा, खाँड़, तेल इकट्ठा करके मेला कर रहे थे। अब उन्हें स्पष्टतः समझ आ गया कि श्री सद्गुरु स्वरूप ने ज्ञान के भण्डारे द्वारा मेला करने की आज्ञा दी थी, जिसके द्वारा खेल में आई आत्माएँ जागृत हों। इसी को सच्ची सेवा कहा। इसी विषय में वाणी में कहा गया है, "सेवानी सेवा दाखुं सार।" मैदा, आटा, खाँड़, तेल आदि लौकिक अर्थात् शारीरिक पुष्टि करने की सेवा तो हर कोई करते हैं, परंतु यह सेवा श्री मेहराज के अलावा अन्य कौन कर सकता है?

→ सूर्यरूपी ज्ञान "तारतम नो तारतम" अर्थात् वाणी का अवतरण हुआ तथा इस सृष्टि में इससे बढ़कर इससे बड़ा फायदा दूसरा तो कोई है ही नहीं! प्रबोधपुरी में हुई इस चर्चा एवं चमत्कार को सुन तथा देखकर श्री मेहराज ठाकुर के बड़े भाई श्यामलदास ठाकुर को अपने छोटे भाई श्री मेहराज के प्रति अलौकिक श्रद्धा और विश्वास आया।

स. ४२-"हब्से के पातसाह पर" कहने का क्या तात्पर्य है? यह किसके लिए कहा गया है? यहाँ क्या पातशाही हुई? इस समय की भविष्यवाणी किसने और कहाँ की थी?

ज. ४२- *"हब्से के पातसाह पर"* कहने का तात्पर्य है-हब्सा-प्रबोधपुरी (नजरकैद) में श्री राजजी की मेहेर के फलस्वरूप श्री इन्द्रावती के माध्यम से हुआ "तारतम नो तारतम" अर्थात् तारतमवाणी →

स. ४३-अंजील, जंबूर, तौरेत और फिरकान-ये चार किताबें पश्चिम में किस-किस के नाम से हैं, जो जड़-चेतन सभी को गति-मुक्ति देने का दावा लेकर बैठी थीं?

स. ४४-वि. सं. १७१४ (ई. स.१६५७) में हब्सा-कैदखाने में कौन-कौनसी किताबें अवतरित हुईं?

स. ४५-"बेहद वाणी" नामक प्रकरण श्री मेहराज के श्री मुख से कहाँ जाते समय अवतरित हुआ था?

स. ४६-जब जोश में श्री मेहराज के श्री मुख से "बेहद वाणी" नामक प्रकरण उतरा, तब होश में आने पर उसे पढ़कर श्री मेहराज को क्या अनुभव होने लगा?

स. ४७-श्री मेहराज के श्री मुख से रास की कुछ रामतें और वेदान्त पक्ष के कुछ कीर्तन कहाँ-कहाँ प्रकट हुये हैं?

ज. ४७- महारासमण्डल में खेलते समय गाई हुई रास की कुछ रामतें श्री →

→ अवतरणरूपी धर्मकार्य। यह श्री मेहराज ठाकुर अथवा श्री इन्द्रावती आत्मा के लिए कहा गया है। यहाँ "तारतम का तारतम" अर्थात् तारतमवाणी का अवतरण हुआ। इसी को पातशाही कहा। इस विषय की भविष्यवाणी पश्चिम अर्थात् मुसलमानों (असुरों) के सद्धर्मग्रन्थ कुरान में मुहम्मद स्वरूप ने *"हब्से के पातसाह पर, ए बड़ा लिखा निसान"* - इस कथन द्वारा की थी।

ज. ४३- अंजील, जंबूर, तौरेत और फिरकान-इन चार किताबों में से अंजील ईसा के नाम पर है, जंबूर दाऊद के नाम पर है, तौरेत मूसा के नाम पर और फिरकान मुहम्मद साहेब के नाम पर है। इन चार किताबों के कारण पश्चिमवाले अर्थात् मुसलमान जड़-चेतन सभी को गति-मुक्ति देने का दावा लेकर बैठे थे।

ज. ४४- वि. सं. १७१४ में हब्सा-कैदखाने में श्री रास (अंजील), श्री प्रकाश (जंबूर), श्री षटऋतु तथा श्री कलश (तौरेत) ग्रंथ के एक चौपाई की शुरूआत हुई।

ज. ४५- *"बेहद वाणी"* नामक प्रकरण श्री मेहराज के श्री मुख से दीव बंदर जाते समय नाव में अवतरित हुआ था।

ज. ४६- जब जोश में श्री मेहराज के श्री मुख से "बेहद वाणी" नामक प्रकरण उतरा, तब होश में आने पर श्री मेहराज मन में विचार करने लगे, "मेरे द्वारा बेहद वाणी उतरने के कारण मेरा सिर सुमेरु पर्वत सदृश आसमान में पहुँच गया है। मेरी हिम्मत और बढ़ गई है।" इस प्रकाश का अनुभव श्री मेहराज को हुआ।

→ मेहराज के श्री मुख से रामनगर में उतरी थीं और वेदान्त पक्ष के कुछ कीर्तन रामनगर से आगे जाते समय जगह-जगह प्रकट होते गये थे। इन सभी वाणियों की समाप्ति अंत में श्री पद्मावतीपुरी धाम-पन्ना में हुई।

स. ४८-"तौरेत" ग्रंथ जिसे हम "श्री कलश" नाम से पहचानते हैं, वह कहाँ प्रारंभ हुआ था और अंत में पूरा कहाँ हुआ तथा कब?

स. ४९-"श्री सनन्ध" किताब कहाँ और कब उतरी?

स. ५०-"श्री प्रकाश गुजराती" और "श्री कलश गुजराती" ग्रंथों का हिन्दी में भाषान्तर कहाँ, किसने और क्यों किया ?

स. ५१-रामनगर के मजल में बीतककार श्री लालदासजी ने कहा "भया परना में बड़ा तूल"। अतः रामनगर में धनी की कौन-कौनसी वाणियाँ शुरू हुईं, जिनका समापन श्री पन्ना धाम में हुआ?

स. ५२-फिरकान (कुरान) पक्ष की वाणी किस ग्रंथ में है, जो श्री पन्ना धाम में अवतरित हुई?

स. ५३-जिन ग्रंथों में श्री निजधाम की प्रदक्षिणा और सातों स्वरूप का विवेचन गहनता से समझाया गया है, जिसका अवतरण श्री पन्ना धाम में हुआ, वे हमारे १४ ग्रंथों में से कौन-कौनसे ग्रंथ हैं?

स. ५४-"ए हादी मेहदी इमाम"- ये तीन स्वरूप कौन-कौन हैं?

ज. ५४- हादी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी हैं। मेहदी स्वरूप श्री श्यामजी के मंदिर में श्री सद्गुरु स्वरूप को तारतम समझाकर श्री तारतम महामंत्र देनेवाले एवं श्री सद्गुरु स्वरूप के हृदयधाम में विराजमान →

ज. ४८- "तौरेत" ग्रंथ जिसे हम "श्री कलश" नाम से पहचानते हैं, वह प्रारंभ हुआ था, जामनगर के कैदखाने (प्रबोधपुरी) में वि. सं. १७१५ में और इस ग्रंथ की समाप्ति हुई थी, वि. सं. १७२९ में सूरत में।

ज. ४९- "श्री सनन्ध" किताब वि.सं. १७३५ के आषाढ़ महीने में अनूप शहर में अवतरित हुई थी।

ज. ५०- "श्री प्रकाश गुजराती" और "श्री कलश गुजराती" ग्रंथों का हिन्दी भाषान्तर भी अनूप शहर में स्वयं श्री महामतिजी द्वारा ही किया गया था, ताकि हिन्दी भाषी सुन्दसाथजी भी इस वाणी को अपनी भाषा में सरलतापूर्वक समझ सकें।

ज. ५१- रामनगर के मजल में बीतककार श्री लालदासजी ने कहा *"भया परना में बड़ा तूल"* अर्थात् रामनगर में श्री परमधाम के हमारे धनी का वर्णन करनेवाली श्री परिक्रमा और श्री सिनगार किताबें शुरू हुईं, जिनकी समाप्ति श्री पन्ना धाम में हुई।

ज. ५२- फिरकान (कुरान) पक्ष की वाणी विशेषकर श्री मारफत सागर और कयामतनामा नामक ग्रन्थों में है, जो मध्य प्रदेश स्थित श्री पन्ना धाम में अवतरित हुई।

ज. ५३- जिन ग्रंथों में श्री निजधाम की प्रदक्षिणा की गई है, वे क्रमशः श्री परिक्रमा तथा श्री सागरादि ग्रंथ हैं एवं जिनमें सातों स्वरूपों का विवेचन गहनतापूर्वक समझाया गया है, वे श्री खुलासा, श्री मारफत सागर तथा श्री लालदास कृत बीतक साहेबादि ग्रन्थ हैं, जिनका अवतरण श्री पन्ना धाम में हुआ।

→ होनेवाले स्वरूप हैं तथा इमाम स्वरूप स्वयं महामति श्री प्राणनाथजी हैं। "पीउ पांच बेर हम वास्ते, सागरमें डारया आप" अर्थात् पाँचों स्वरूपों का समूह नाम ही इमाम है।

-(प्रकरण १७, सवाल-जवाब नं. ५४, कुल सं. ५४६+५४=६००)।

❖ सुन्दरसाथ प्रबोध ❖

स. १-प्रबोधपुरी (हब्सा) में कैसी लीला हुई? कितने समय तक हुई तथा इन लीलाओं का दर्शन विशेषकर किसने किया?

ज. १- प्रबोधपुरी (हब्सा) में श्री सद्गुरु स्वरूप के वास्तविक स्वरूप का दर्शन करानेवाली लीला हुई। श्री मेहराज स्वरूप के मुखमण्डल में से बिजली की-सी चमक निकलने लगी और उसी समय मिसरी के →

स. २-जामराजा तथा जामनगर के प्रधान दीवान कुतुब खाँ बादशाह से सन्धि कर कब लौटे? लौटते ही उनके साथ क्या हुआ?

ज. २- जामराजा तथा जामनगर के प्रधान दीवान अहमदाबाद के बादशाह →

स. ३-जामनगर के राजा को रानी और राजपरिवार के अन्य सदस्यों ने क्या-क्या बातें सुनाईं और क्या सलाह दी?

ज. ३- जामनगर के राजा को रानी और राजपरिवार के लोगों ने बताया, "अरे! आपने श्री मेहराज स्वरूप के ऊपर कैसा जुल्म ढाया है? यदि श्री मेहराज दोषी होते, तो क्या श्री कृष्ण एवं गोपियाँ उनकी मुट्ठी में होतीं? हमने अपनी आँखों से देखा है कि रात के समय श्री कृष्ण →

स. ४-रानियों द्वारा प्रत्यक्ष देखी बातों को सुनते ही जामराजा ने श्री मेहराज सहित तीनों भाइयों को किस तरह विदा किया?

ज. ४- रानियों तथा राजपरिवार के अन्य सदस्यों द्वारा प्रत्यक्ष देखी बातें सुनते ही जामराजा ने तुरंत प्रधान दीवान को बुलवाकर तीनों →

स. ५-जामनगर के राजा ने अपने दीवान को उसके गलती की सजा दी या नहीं दी?

ज. ५- जिस दीवान ने बिना सोचे-समझे श्री मेहराज को नजरकैद में डाल →

❖ सुन्दरसाथ प्रबोध ❖

→ ईंटों की वर्षा हुई। उसी के साथ श्री मेहराज के श्री मुख से अद्वैत वाणी प्रकट होने लगी। रात भर कभी दधि-मन्थन की लीला होती, तो कभी रास की रामतें। ये लीलाएँ करीब एक साल तक होती रही। इन लीलाओं का दर्शन विशेषकर राज परिवार और मंत्री परिवार के लोगों ने ऊपर अटारी पर चढ़कर किया।

→ कुतुब खाँ से सन्धि कर पूरे एक साल बाद लौटे। अपने घर-राजदरबार में प्रवेश करते ही राजा और प्रधान दीवान को अपनी-अपनी पत्नी सहित परिवार के सभी सदस्यों द्वारा उलाहनापूर्ण वचन सुनने पड़े।

→ तथा गोपियाँ श्री मेहराज के पास आकर व्रज एवं रास की लीलाएँ किया करती हैं। एक तो आपने जाने-पहचाने बिना ऐसे व्यक्ति का घर लूट लिया, दूसरे उन्हें नजरकैद में बन्द कर रखा है। अतः आप उन्हें जल्द से जल्द सिरोपाव पहनाकर माफी देकर विदा कर दीजिए। कदाच श्री मेहराज नाराज हो गए, तो हमारी खैर नहीं। हम बच नहीं पायेंगे।"

→ भाइयों-श्री मेहराज, श्यामलदास और उद्धव ठाकुर को सिरोपाव पहनाकर अपने प्रधान दीवान की तरफ से हाथ जोड़कर क्षमा-याचना की तथा बिना सोचे-समझे उन पर लाञ्छना लगाने एवं उन्हें कष्ट पहुँचाने जैसी अपनी गलती को सुधारने के लिए जूनागढ़ का एक गाँव बख्शिश के रूप में दिया।

→ दिया था, उसे उसकी उस भूल के कारण जामनगर के राजा ने अपने राज्य से निकाल दिया और वह खंभालिया के राजा के पास जाकर दीवान का कार्य करने लगा।

स. ६- श्री मेहराज जामनगर के राजा से सम्मानपूर्वक विदा लेकर कहाँ चले और क्यों?

ज. ६- श्री मेहराज अपने दोनों भाइयों सहित जामनगर के राजा से आदरभाव सहित सम्मानपूर्वक विदा लेकर सीधे महन्त श्री बिहारीजी के पास →

स. ७- नजरकैद में श्री मेहराज के श्री मुख से श्री राजजी की दया-कृपारूपी अवतरित वाणी में श्री राजजी ने १२,००० ब्रह्मात्माओं का हाथ श्री मेहराज के हाथ में पकड़ाया है, यह जानते ही समस्त सुन्दरसाथ क्या चाहने लगे?

ज. ७- जब समस्त साथ को निश्चितरूप से ज्ञात हो गया कि नजरकैद →

स. ८- हब्सा-नजरकैद में अवतरित वाणी में से षटऋतु ग्रन्थ के वचनों को पढ़ते ही महन्त श्री बिहारीजी क्यों चौंक उठे, उसमें ऐसा क्या लिखा था?

ज. ८- हब्सा-नजरकैद में अवतरित वाणियों में से षट्ऋतु ग्रन्थ में एक →

स. ९- "क्यों एता विरह किया आपने" - ऐसा बिहारीजी ने श्री मेहराज से क्यों कहा? पुनः बिहारीजी के इस कथन का जवाब श्री मेहराज ने क्यों नहीं दिया?

ज. ९- *"क्यों एता विरह किया आपने"* अर्थात् श्री सद्गुरु स्वरूप के श्री मेहराज को अकेला छोड़कर धाम चले जाने पर उन्हें आगे रखकर श्री मेहराज द्वारा किये हुए विरह को महन्त श्री बिहारीजी ने अपने सिर पर लेकर कहा, "अरे मेहराज! मैं तुम्हारे सामने जामनगर श्री →

स. १०- "अब ए बानी रहने देओ" श्री बिहारीजी ने किस वाणी के विषय में ऐसा कहा और क्यों?

→ आये और धनी की दया-कृपा द्वारा हब्सा-नजरकैद में जो चार किताबें अवतरित हुई थीं, उसे महन्त श्री के आगे रख दिया क्योंकि धर्म-सिद्धान्त विषयक सारी बातें सद्गुरु स्वरूप के स्थान पर विराजमान महन्त श्री को बताना ही सच्चा धर्म है।

→ (हब्सा) में श्री मेहराज स्वरूप के ऊपर श्री राजजी की दया-कृपारूपी वर्षा हुई है और उस वर्षा के रूप में तारतम के तारतमरूपी वाणी का अवतरण हुआ है, जिसके द्वारा हम १२,००० एवं २४,००० ब्रह्म तथा ईश्वरी आत्माओं का हाथ श्री राजजी ने श्री मेहराज के हाथ में सौंपा है, तब समस्त सुन्दरसाथ उस वाणी का मनन-चिन्तन करने की इच्छा करने लगे।

→ जगह, *"मैं लेऊँ धनी अपना"* इस तरह कहा है। इसे पढ़कर महन्त श्री बिहारीजी चौंक उठे और सोचने लगे कि जब मेहराज मुझसे धनी को ही छीन लेंगे, तो शेष क्या रह जाएगा? यह बात तो मैं ही समझ सकता हूँ, अन्य कोई नहीं!

→ चाकला मंदिर में ही तो था। मेरे जीते जी, मुझे मारकर तुमने इतना विरह क्यों किया? तुमसे इतनी बड़ी गलती कैसे हो गई?" यदि महंत श्री के इस कथन का जवाब श्री मेहराज देते, तो बात और बिगड़ जाती। इसलिए श्री मेहराज ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। आज तक श्री बिहारीजी को श्री सद्गुरु स्वरूप के स्थान पर बैठाकर उन्हें "सद्गुरु" सम्बोधन करते और कराते हुए ही श्री मेहराज धर्म-कार्य सँभालते आए थे। अब ऐसी परिस्थिति में वे कैसे कह देते कि, आप "सद्गुरु" नहीं हैं। अतः उन्होंने उस समय कुछ न कहना ही उचित समझा।

ज. १०- उक्त कथन श्री बिहारीजी ने हब्सा-नजरकैद में अवतरित वाणी के विषय में श्री मेहराज का मुख बन्द करने हेतु कहा था। इस कथन द्वारा उनका तात्पर्य था कि श्री मेहराज अपनी इस गलती →

→ को स्वयं अपने और उनके (श्री बिहारीजी के) बीच ही रहने दें। यह वाणी सुन्दरसाथ को दिखाने योग्य नहीं है क्योंकि इसके कारण समस्त साथ की नजर में श्री मेहराज द्वारा किए गए →

स. ११-उक्त वाद-विवाद का प्रतिफल क्या हुआ अर्थात् उक्त वाद-विवाद द्वारा यहाँ स्पष्टरूपेण क्या झलकने लगा?

ज. ११- श्री मेहराज और महन्त श्री के बीच हुए उक्त वाद-विवाद का प्रतिफल यह हुआ कि महन्त श्री ने सुन्दरसाथ की श्री मेहराज के माध्यम से श्री राजजी की मेहेररूपी वर्षा अर्थात् हब्सा में अवतरित →

स. १२-श्री बिहारीजी के पास से निवृत्त होकर श्री मेहराज कहाँ गये और क्यों?

स. १३-श्री मेहराज ठाकुर जूनागढ़ में कब से कब तक रहे?

स. १४-जूनागढ़ में एक अपने ही सुन्दरसाथ भाई रहते थे, जो बड़े प्रेम से श्री मेहराज की चर्चा-कथा में निमग्न रहते थे, उनका नाम क्या था?

स. १५-कान्हजी भाई जूनागढ़ में किसके घर में रहते थे और क्या करते थे?

स. १६-जूनागढ़ में जो हरजी व्यास नामक प्रचण्ड विद्वान ब्राह्मण रहते थे, वे कैसे थे?

→ वास्तविक विरह का प्रदर्शन होगा। इस प्रकार महन्त श्री बिहारीजी ने हब्सा में अवतरित वाणी को सुन्दरसाथ तक पहुँचने नहीं दिया और श्री मेहराज को आज्ञा दी, *"अब ए बानी रहने देओ।"*

→ वाणी का मनन-चिन्तन करने की उत्कट चाहना को कुचल डाला, जिसके पीछे महन्त श्री बिहारीजी का स्वार्थ छिपा हुआ था। बिहारीजी डर गये थे क्योंकि हब्सा में अवतरित षटऋतु ग्रन्थ में स्पष्टतः कहा है, "मैं लेऊँ धनी अपना।" अतः यदि सुन्दरसाथ इन वचनों को पढ़ते, तो बिहारीजी को डर था कि उनके हाथ से गादी निकलने में कितना समय लगता?

ज. १२- महन्त श्री बिहारीजी के पास से निवृत्त होकर श्री मेहराज नजरकैद से निकलकर सिरोपाव पहनाते क्षमा-याचना के रूप में जामनगर के राजा द्वारा बख्शिश के रूप में दिये हुए जूनागढ़ के गाँव में आबादी बसाने के कार्य में जुट गए।

ज. १३- श्री मेहराज ठाकुर जूनागढ़ के एक गाँव में, जो उस समय आबादीरहित रेतीयुक्त था, वहाँ आबादी बसाने के कार्य हेतु वि. सं. १७१६ से लेकर लगभग वि. सं. १७१९ तक रहे।

ज. १४- जूनागढ़ में जो सुन्दरसाथ भाई रहते थे, जो धर्म के विषय में बड़े मर्मज्ञ एवं हिम्मती थे तथा बड़े प्रेम से श्री मेहराज की चर्चा-कथा में निमग्न रहते थे, उनका नाम था कान्हजी भाई।

ज. १५- कान्हजी भाई जूनागढ़ में एक अत्यंत प्रचण्ड विद्वान ब्राह्मण हरजी व्यास के घर में रहते थे और वहाँ चाकर के रूप में नौकरी किया करते थे।

ज. १६- जूनागढ़ में जो गुजरात राज्य के प्रसिद्ध एवम् प्रचण्ड विद्वान हरजी व्यास रहा करते थे, उनमें अत्यधिक विद्वत्ता के कारण अपनी विद्वत्ता के प्रति घमण्ड भरा हुआ था।

स. १७-एक दिन अचानक हरजी व्यास ब्राह्मण को भोम क्यों उतारना पड़ा अथवा उन्हें क्या हुआ था?

ज. १७- एक दिन हरजी व्यास ने बीमारी से लाचार होकर चारपाई पकड़ ली। अन्त्यावस्था में पहुँचे हरजी व्यास को चारपाई से नीचे →

स. १८-हरजी व्यास ब्राह्मण को भोम उतारने के पश्चात् आस-पास के लोग क्या करने लगे?

स. १९-हरजी व्यास ब्राह्मण जब अचानक होश में आ गये, तब अपने लिए हो रहे कर्मकाण्ड को देखने पर वे नाराज होकर क्या-क्या कहने लगे?

ज. १९- आतुरी दान (अंतकाल का दान) कराते-कराते जब अचानक हरजी व्यास ब्राह्मण होश में आ गए और बड़ी उतावली के साथ जब लोगों को अपने लिए दान-पुण्य में भी आतुरी दान के लिए दौड़-धूप करते देखा, तो आग-बबूला हो गए और लाल-लाल आँखें बनाते हुए कहने लगे, "अरे! मेरे नाम पर यह सब करानेवाले →

स. २०-हरजी व्यास ब्राह्मण की बातें सुनकर कान्हजी भाई को क्या शंका हुई?

ज. २०- आग-बबूला हुए हरजी व्यास ब्राह्मण की बातें सुनते ही कान्हजी भाई चौंक गये। वे सोचने लगे, "इस ब्राह्मण ने कहा "मैं नहीं इन इण्ड का" अतः यदि यह चौदह लोक ब्रह्माण्ड का जीव नहीं है तो अवश्य ही यह ब्रह्म-ईश्वरी आत्माओं में से होगा क्योंकि ऐसी बातें तो ब्रह्मात्माओं के मुख से ही निकल सकतीं हैं। पुनः इसने ऐसा भी कहा-जिसे मैंने ना किया, उसे हाँ करानेवाला और मेरी हाँ को →

स. २१-हरजी व्यास ब्राह्मण द्वारा कही हुई बातें कान्हजी भाई ने किसे सुनाईं?

→ भोम (जमीन) पर उतारना पड़ा क्योंकि हिन्दू धर्म में मान्यता है कि अन्त्यावस्था में यदि चारपाई पर लेटे-लेटे शरीर से जीव निकल जाय, तो उस जीवात्मा की अधोगति होती है। इसलिए उन्हें भोम उतारा गया था।

ज. १८- हरजी व्यास नामक ब्राह्मण को अन्त्यावस्था में पहुँचा समझकर आस-पास के लोग उनके नाम पर अंतिम विधि के अंतर्गत आनेवाला आतुरी दान करा रहे थे।

→ तुम लोग कौन हो? तुम्हें यह कार्य करने के लिए किसने लगाया? मुझसे भी बड़ा विद्वान बनकर यह सब करानेवाला कौन है? मैं इस इण्ड का जीव नहीं हूँ। तुम लोग इन कार्यों द्वारा मेरे मन को क्यों तड़पा रहे हो? मैं इस खेत की कमाई खानेवाले जीवों में से नहीं हूँ। आज तक जिस कार्य के लिए मैंने ना कर दिया, उसे हाँ करानेवाला मुझे नहीं मिला। पुनः जिस कार्य के लिए मैंने हाँ कह दिया, उसे ना करानेवाला भी मुझे नहीं मिला। इन दो बातों की दाझ (घमण्ड-जलन) लेकर मैं मर रहा हूँ। मुझ जैसे के नाम पर ऐसा कर्म कराने की सलाह देनेवाला कौन है?"

→ ना कराने की ताकत रखनेवाला विद्वान भी मुझे नहीं मिला। इन्हीं दो बातों की दाझ लेकर मैं मर रहा हूँ। यदि ऐसा ही हो, तो हे राजजी! इस ब्राह्मण को कुछ दिन के लिए तो बचा लीजिए, जिससे यदि वे धाम की आत्मा में होंगे, तो जागृत हो जायेंगे और यदि नहीं, तो कम-से-कम इनकी हाँ को ना और ना को हाँ तो मैं करवाकर ही छोड़ूँगा। मेरे धनी महामति स्वरूप के यहीं इसी गाँव में होते हुए इनका अहंकार लेकर मरना, सृष्टि विरुद्ध है।" उक्त प्रकार की विभिन्न शंकाएँ कान्हजी के मन में उठने लगीं।

ज. २१- उक्त प्रकार की शंकातुर बातें दूध पहुँचानेवाले कान्हजी भाई ने दूध पहुँचाने के बहाने महामति स्वरूप श्री मेहराज को सुनाते →

हुए कहा, "आज मेरे मालिक ने बेहोश अवस्था से होश में आने पर अपनी अन्त्यावस्था जानकर लोगों को आतुरी दान कराते देखकर ऐसी-ऐसी बातें कही। कहीं ये धाम की आत्मा-ब्रह्मसृष्टि

स. २२-कान्हजी भाई की बातें सुनते ही श्री मेहराज स्वरूप ने क्या कहा और इस विषय में कानजी भाई को क्या सलाह दी?

ज. २२- कान्हजी भाई की बातें सुनकर महामति स्वरूप श्री मेहराज ने उनसे कहा, "देखो कान्हजी! तुम साक्षी रहो। मैं एक दिन उसकी

स. २३-"ज्यों कहे वासना धाम"- ऐसा कौन कह रहे हैं और क्यों? पुनः हरजी व्यास ब्राह्मण को कुछ समय के लिए और जीता रखने की प्रार्थना किसने, किससे की?

ज. २३- *"ज्यों कहे वासना धाम"*- यह बात कान्हजी भाई श्री महामति

स. २४-"तुम साख रहियो सैयन"- ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा?

ज. २४- *"तुम साख रहियो सैयन"*- ऐसा हरजी व्यास ब्राह्मण के विद्वत्ता

स. २५-कान्हजी भाई श्री महामति स्वरूप की सलाह से उस ब्राह्मण की कैसी सेवा करने लगे तथा इसके पीछे क्या कारण छिपा था?

ज. २५- श्री मेहराज स्वरूप की आज्ञा पाकर कान्हजी भाई हरजी व्यास ब्राह्मण की बड़ी लगन से सेवा करने लगे। नित्य प्रति वे स्वयं

स. २६-"जो हजार रुपया देवहीं"- इस कथन का क्या तात्पर्य है? ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा?

→ में तो नहीं? पुनः उन्हें इस बात का बड़ा अभिमान है कि इस जीवन में उनकी हाँ को ना और ना को हाँ करानेवाला उन्हें कोई नहीं मिला। इन्हीं दो बातों का अभिमान लेकर वे मर रहे थे।"

→ हाँ को ना और ना को हाँ करा दूँगा। परंतु तुम उसे मरने से बचा लेना। अच्छी तरह ध्यान देकर उसकी सेवा करना। यदि वह धाम की आत्मा में होगा, तो एक और आत्मा जागृत हो जाएगी और यदि नहीं, तो मैं कम-से-कम उसका अभिमान तोड़कर उसकी दाझ तो अवश्य ही मिटा दूँगा।" यह सलाह श्री मेहराज स्वरूप ने कान्हजी भाई को दी।

→ स्वरूप से कह रहे हैं क्योंकि उन्हें शंका थी कि यदि यह हरजी व्यास ब्राह्मण इस चौदह लोकरूपी इण्ड का न हो, तो वह अवश्य ही ब्रह्म अथवा ईश्वरी आत्मा में होना चाहिए। अतः हरजी व्यास ब्राह्मण को संसार में कुछ दिनों के लिए और जीता रखने की प्रार्थना कान्हजी भाई ने श्री राजजी से की।

→ विषयक अहंकारपूर्ण वचनों को सुनकर श्री महामति स्वरूप ने कान्हजी भाई से कहा क्योंकि महामति स्वरूप उस ब्राह्मण को तारतमवाले और बिना तारतमवाले में क्या अन्तर होता है, इस बात से भलीभाँति अवगत कराना चाहते थे।

→ बगीचे में जाकर नई-नई ताजी सब्जियाँ चुनकर लाते थे और अपने हाथों से उनकी रुचि के अनुसार तरकारी बनाकर उन्हें खिलाते थे। सेवा करते-करते कान्हजी भाई ने अपने मालिक हरजी व्यास की ऐसी सेवा की कि ऐसी सेवा स्वयं उसकी अपनी पत्नी, बेटी अथवा बहू ने भी जिन्दगी में न की हो। इसका कारण था-श्री राजजी की आज्ञानुकूल उन्हें कुछ समय के लिए जिंदा रखना।

ज. २६- जब कान्हजी भाई की तरकारी की सेवा से हरजी व्यास दो-तीन महीने में ही स्वस्थ हो गये और कान्हजी भाई की प्रेममयी सेवा →

→ से कान्हजी के प्रति बड़े आभारी हुए, तब सबके सामने वे कान्हजी भाई से कहने लगे, "हे कान्हजी! तुम्हारी तरकारी की सेवा से ही मैं आज बच पाया हूँ। तुमने मुझे मरने से बचा लिया। तुम्हारी तरकारी की सेवा से मैं इतना खुश हूँ कि क्या बताऊँ? यदि इस वक्त मुझे, "जो हजार रुपया देवहीं" अर्थात् कोई हजार रुपये →

स. २७-उक्त कथन के जवाब में कान्हजी भाई ने अपने मालिक हरजी व्यास से क्या कहा और क्यों?

ज. २७- अपने मालिक हरजी व्यास ब्राह्मण की बातों को सुनकर चाकर कान्हजी भाई ने कहा, "अरे मेरे मालिक! आप तो मेरे मालिक हैं और मैं आपका सेवक हूँ। आपकी सेवा करना तो मेरा फर्ज है। रही बात प्रेममयी सेवा की, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे मालिक →

स. २८-कुछ दिन पश्चात् पुनः हरजी व्यास ब्राह्मण ने अत्यंत प्रसन्न होकर कान्हजी भाई से क्या कहा?

ज. २८- एक-डेढ़ महीने बाद एक दिन पुनः हरजी व्यास ने अत्यंत प्रसन्न होकर कान्हजी भाई से कहा, "अरे कान्हजी! तुमने तो कमाल →

स. २९-मालिक हरजी व्यास के बहुत आग्रह करने पर अंत में कान्हजी भाई ने अपने मालिक से क्या माँगा?

ज. २९- उक्त प्रकार अपने मालिक हरजी व्यास को अपनी तरकारी की सेवा से उऋण होने के लिए आतुर हुआ देखकर बहुत आग्रह करने पर कान्हजी भाई ने कहा, "हे मेरे मालिक! मुझे पूर्ण विश्वास →

स. ३०-"मैं तो बहुत राजी भया, जो कोई ऐसा आहार पहुँचाए"- ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा? पुनः हरजी व्यास ब्राह्मण अपने चाकर कान्हजी भाई से और प्रसन्न क्यों हुए?

→ भेंट के रूप में भी दे न, तब भी मैं उससे इतना खुश नहीं होऊँगा, जितना तुम्हारी तरकारी की सेवा से मैं खुश हूँ। अतः मुझे इतना खुश करके तुम मुझसे क्या माँगना चाहते हो? क्या प्राप्त करना चाहते हो? माँगो-माँगो! तुम जो भी माँगोगे, मैं उसके लिए ना नहीं करूँगा।"

→ होने के नाते, मुझे देनेवाले तो आप ही हैं न! मैं भी तो, आपसे ही माँगूंगा न!! मुझे देनेवाला आपके सिवाय अन्य कौन है? परंतु आप अभी बीमार हैं, असक्त हैं। पहले आप अच्छी तरह तंदुरुस्त हो जाइए। इतनी भी क्या उतावली है? आप जब पहले की तरह स्वस्थ हो जाएँगे, तब मुझे जो माँगना होगा, मैं माँग लूँगा।" इस तरह कहकर कान्हजी भाई और ध्यान देकर प्रेम से अपने मालिक की सेवा करने लगे।

→ कर दिया। अब तो मैं पहले की ही तरह बिलकुल तंदुरुस्त हो गया हूँ। अब मुझे जरा-सी भी कमजोरी नहीं लगती। अतः अब तुम बोलो कि अपनी इस तरकारी की सेवा के बदले तुम मुझसे क्या चाहते हो, जिससे कि मैं भी तुम्हारी इस तरकारी की सेवा से उऋण हो सकूँ। जो कुछ माँगना हो, निःसंकोच माँग लो।"

→ है कि आप अवश्य ही मुझे मेरी माँगी हुई वस्तु दे देंगे। मेरे एक परिचित साधु हैं, जो आपके विद्वत्ता की प्रशंसा सुनकर आपके श्री मुख से भगवान की चर्चा-कथा सुनने की लालसा लेकर यहाँ आए हैं। अतः यदि आप मेरी तरकारी की सेवा से प्रसन्न होकर उसके बदले में मुझे कुछ देना ही चाहते हैं, तो उन्हें भगवान की चर्चा-कथा सुना दीजिए।"

ज. ३०- *"मैं तो बहुत राजी भया, जो कोई ऐसा आहार पहुँचाए"*- ऐसा हरजी व्यास ब्राह्मण ने अपने चाकर कान्हजी भाई से कहा क्योंकि उन्हें लगा कि मेरे चाकर कान्हजी ने मेरी इतनी लगन से सेवा करके उसके बदले में मुझसे अपने परिचित साधु को भगवान की चर्चा-कथा सुनाने की चाहना की ? यह तो धन्य- →

→ धन्य है। इस तरह बारम्बार कान्हजी भाई को धन्य-धन्य कहते हुए हरजी व्यास ब्राह्मण अपने चाकर कान्हजी के प्रति और प्रसन्न होकर बोले, "अरे कान्हजी! मैं तुम्हें ना कैसे कहूँ ? मेरे तो दोनों →

स. ३१-कान्हजी भाई ने अपने मालिक हरजी व्यास को श्रीजी साहेबजी का परिचय कराते हुए क्या कहा?

ज. ३१- कान्हजी भाई ने महामति स्वरूप श्री मेहराज अर्थात् श्रीजी का →

स. ३२-"पूछी खबर उन इनकों" अर्थात् किसने, किसकी खबर पूछी तथा जवाब में किसने और क्या कहा?

ज. ३२- *"पूछी खबर उन इनकों"* अर्थात् मिलते ही विद्वान ब्राह्मण हरजी व्यास ने महामति स्वरूप श्री मेहराजजी से पूछा, "हे साधु! आप कहाँ के रहनेवाले हैं और मेरे पास कहाँ से आ पहुँचे?" तब →

स. ३३-हरजी व्यास ने अपने चाकर के परिचित साधु को रहने के लिये कहाँ जगह दी?

स. ३४-हरजी व्यास ब्राह्मण अपने चाकर के परिचित साधु को किस ग्रन्थ से चर्चा सुनाने लगे और क्यों?

ज. ३४- चर्चा शुरू करने से पहले हरजी व्यास ब्राह्मण ने अपने चाकर के परिचित साधु अर्थात् श्री मेहराजजी से पूछा, "आप किस ग्रन्थ से चर्चा-कथा श्रवण करना चाहते हैं?" तब श्री मेहराजजी ने कहा, "मैं महापुराण श्रीमद्भागवत ग्रन्थ से भगवान की चर्चा →

स. ३५-श्री मेहराज ने हरजी व्यास ब्राह्मण के श्री मुख से भागवत की चर्चा क्रमशः कितने दिनों तक सुनी?

→ हाथों में लड्डू ही लड्डू है। अब तो मैं तुमसे और राजी हुआ क्योंकि मुझे तो तुमने दोनों ओर से धन्य-धन्य कर दिया। एक तो अपनी सेवा के बदले परिचित साधु को और दूसरे भगवान की चर्चा-कथा सुनाने की सेवा! वाह! कान्हजी, वाह!! तुम तो धन्य-धन्य हो!!!"

→ परिचय कराते हुए अपने मालिक हरजी व्यास से कहा, "ये एक घूमते-फिरते साधु हैं, जो आपके मुख से भगवान की चर्चा-कथा सुनने की जिज्ञासा रखते हैं।" इस तरह दोनों का मिलाप करा दिया।

→ श्री मेहराजजी ने जवाब दिया, "मैं तो रमता योगी, बहता पानी सदृश हूँ अर्थात् मेरा कोई एक ठिकाना नहीं है। मैं तो आपश्री की विद्वत्ता की महिमा सुनकर आपके श्री मुख से भगवान की चर्चा-कथा सुनने की इच्छा लेकर आपके पास आया हूँ। यदि आपकी दया-कृपा हो, तो मेरी इच्छा पूरी हो सकती है।"

ज. ३३- हरजी व्यास ने अपने चाकर के परिचित साधु अर्थात् श्री मेहराजजी के रहने की व्यवस्था अपने बाग में कर दी। उसी स्थान में रहते हुए श्री मेहराजजी साधु के भेष में विद्वान ब्राह्मण हरजी व्यास के श्री मुख से चर्चा-कथा सुनने लगे।

→ सुनना चाहता हूँ क्योंकि श्री कृष्ण लीलामय ग्रन्थ श्रीमद्भागवत सभी ग्रन्थों में उत्तम ग्रन्थ है। इसी ग्रन्थ द्वारा चर्चा श्रवण कर प्रेत योनि में पहुँचे धुन्धुकारी और मात्र सात दिनों में काल के मुख का ग्रास बननेवाले राजा परीक्षित भी वैकुण्ठ में मुक्ति प्राप्त कर सके। इसलिए मैं भी श्री कृष्ण लीलामय ग्रन्थ भागवत द्वारा ही चर्चा-कथा सुनना चाहता हूँ।"

ज. ३५- श्री मेहराज ने हरजी व्यास ब्राह्मण के मुखारविन्द से श्रीमद्भागवत ग्रन्थ द्वारा क्रमशः पूरे एक महीने तक चर्चा सुनी।

स. ३६-लगभग एक महीने बाद चर्चा में कौनसा प्रसंग आया?

स. ३७-"एक हीरे का मंदिर" अर्थात् उक्त कथित भागवत के प्रसंग में जिस हीरे के मंदिर की चर्चा की गई है, उसके पड़साल की लम्बाई कितने लाख योजन कही है?

स. ३८-"यह ठौर है किनका?"-यह प्रश्न किसने, किससे किया?

स. ३९-उक्त प्रश्न के जवाब में हरजी व्यास ब्राह्मण ने क्या कहा, जिसे सुनकर श्री मेहराज ने उनसे पुनः आग्रह किया?

स. ४०-जब विद्वान ब्राह्मण हरजी व्यास श्री मेहराज के प्रश्न विषय दो दिली हुए, तब श्री मेहराज ने उनसे पुनः आग्रह करते हुए क्या कहा?

ज. ४०- विद्वान ब्राह्मण हरजी व्यास जब उस स्थान के विषय में कभी, "वह स्थान तो नारायण का है", ऐसा कहते तो कभी "वह स्थान तो अक्षर का है", इस तरह दो दिली होकर जवाब देने लगे, तब →

स. ४१-"यह ठौर है किन का?" अर्थात् वह स्थान इस सृष्टि के ऊपर, नीचे अथवा अन्दर या बाहर है या तो इस ब्रह्माण्ड से परे है? -यह प्रश्न किसने, किससे पूछा?

ज. ४१- *"यह ठौर है किन का?"* अर्थात् आपके द्वारा बताया हुआ →

ज. ३६- उक्त प्रकार श्रीमद्भागवत द्वारा क्रमशः कथा श्रवण करते-कराते लगभग एक महीने बाद चर्चा में भगवान नारायण के एक मंदिर का ज़िक्र आया, जो हीरे का था।

ज. ३७- *"एक हीरे का मंदिर"* अर्थात् उक्त कथित भागवत के प्रसंग में जिस हीरे के मंदिर की चर्चा की गई है, उस मंदिर की पड़साल मात्र की लम्बाई चौरासी लाख योजन कही है।

ज. ३८- *"यह ठौर है किनका?"* - यह प्रश्न श्री मेहराज ने कथाकार विद्वान हरजी व्यास से किया।

ज. ३९- उक्त प्रश्न के जवाब में हरजी व्यास ब्राह्मण ने कहा, "यह ठौर अक्षर का है, ऐसा शास्त्रों में लिखा है।" तब उनके चरण पकड़कर श्री मेहराज ने पुनः आग्रह किया, "आप इस बात का निर्णय कर मुझे स्पष्टतः क्यों नहीं समझाते? मुझे आपके द्वारा ही इस ठौर-स्थान की प्राप्ति हो सकती है।"

→ श्रीजी ने उनके चरण पकड़कर हाथ जोड़ते हुए फिर कहा, "उस स्थान (मंदिर) में कौनसे भगवान रहते हैं अथवा उस मंदिर में रहनेवाले भगवान का नाम क्या है?-ये सब बातें आप मुझे चौकस करके क्यों नहीं बताते कि वह ठौर अक्षर का है या नारायण का है? इस बात का निर्णय कर मुझे आपके बिना और कौन समझा सकेगा? आप कृपा करके मुझसे तनिक भी अन्तर न कीजिए।"

→ चौरासी लाख योजनयुक्त पड़सालवाला हीरे का मंदिर कहाँ है? क्या वह इस चौदह लोक ब्रह्माण्ड के ऊपर है अथवा नीचे है? अन्दर है या बाहर है? कृपा करके आप मुझे इस स्थान को निश्चित कर समझा दीजिए।" - यह प्रश्न श्री मेहराज स्वरूप ने विद्वान कथाकार हरजी व्यास ब्राह्मण से पूछा।

स. ४२-श्री मेहराज के आग्रहपूर्ण वचनों को सुनकर हरजी व्यास ने पुनः क्या कहा?

स. ४३-हरजी व्यास ब्राह्मण का उक्त जवाब सुनकर श्रीजी ने क्या कहा?

ज. ४३- जब विद्वान ब्राह्मण हरजी व्यास अपना मन्तव्य बदलकर कहने लगे कि वह स्थान आदिनारायण का है, तब श्री मेहराज ने कहा, →

स. ४४-इस तरह श्रीजी के बार-बार आग्रह और विनती करने पर हरजी व्यास ब्राह्मण ने "झुक" अर्थात् थोड़ा नाराज़ होते हुए क्या कहा?

ज. ४४- जब श्री मेहराज बार-बार कथाकार हरजी व्यास ब्राह्मण के चरण पकड़कर उस स्थान विषय निश्चित तौर पर भगवान के नाम सहित समझाने का आग्रह करने लगे और कहने लगे, "आप कभी तो →

स. ४५-"कह्या कटु वचन आचार्यों को" अर्थात् हरजी व्यास ब्राह्मण ने आचार्यों को कैसे वचन सुनाए?

ज. ४५- *"कह्या कटु वचन आचार्यों को"* अर्थात् हरजी व्यास ब्राह्मण →

स. ४६-इसी बीच कान्हजी भाई ने श्रीजी के कान में क्या कहा?

ज. ४६- इसी बीच विद्वान ब्राह्मण हरजी व्यास की दयनीय दशा देखकर →

स. ४७-जब श्रीजी को जोश आया, तब उन्होंने किसे धक्का देते हुए क्या कहा?

ज. ४७- कान्हजी भाई की उक्त बातों को सुनकर जब श्रीजी को जोश आया, तब उन्होंने कान्हजी भाई को धक्का देकर कहा, "अरे →

ज. ४२- श्री मेहराज के आग्रहपूर्ण बचनों को सुनकर हरजी व्यास ब्राह्मण ने जवाब देते हुए कहा, "यह ठौर आद नारायण" अर्थात् यह स्थान आदिनारायण का है।

→ "जब आप स्वयं ही कह रहे हैं कि वह स्थान आदिनारायण का है और आदिनारायण क्षीर सागर में रहते हैं, तो यह स्थान तो चौदह लोक के अन्दर ही आया और ये सब स्थान तो महाप्रलय में नाश होनेवाले हैं, तो उक्तकथित हीरे का मंदिर और पड़साल कैसे अखण्ड रहेगा?"

→ कहते हैं कि वह स्थान नारायण का है, कभी कहते हैं कि अक्षर का है और कभी कहते हैं आदिनारायण का। इन तीनों में से एक को अविकल्प कर क्यों नहीं बताते? इन तीनों में से वह स्थान किसका है, इस बात का निश्चय करने का काम आपके सिवाय अन्य कौन कर सकता है? आप मुझ पर दया कीजिए। मुझसे तनिक भी अन्तर मत कीजिए।" इस पर हरजी व्यास ब्राह्मण थोड़ा नाराज-से होकर शास्त्रकारों-आचार्यों को दोष देने लगे।

→ शास्त्रकारों-आचार्यों को दोष देते हुए कहने लगे, "शास्त्रकारों-आचार्यों ने भागवत में ऐसा ही लिखा है। उन्होंने वह स्थान कभी अक्षर का है, ऐसा लिखा है, तो कभी नारायण का, तो फिर कभी आदिनारायण का। अब इस विषय में मैं आप को क्या जवाब देकर सान्त्वना दूँ क्योंकि लिखनेवालों ने ऐसा ही लिखा है?"

→ कान्हजी भाई ने श्रीजी के पास जाकर चुपके से उनके कान में कहा, "आप इन्हें कुछ अक्षरातीत विषय की बातें पूछिए न! देखें तो सही, वे क्या जवाब देते हैं?"

→ कान्हजी! इनसे अक्षरातीत की चर्चा क्या करें, ये तो क्षर ब्रह्माण्ड की चर्चा में ही परास्त होकर इस दशा में पहुँच चुके हैं। इनके पास ऐसा है ही क्या जिससे इनके साथ अक्षर और अक्षरातीत की चर्चा की जाय? ये तो क्षर पुरुष का ही निर्णय नहीं कर सके, तो इनसे अक्षर-अक्षरातीत विषय में क्या पूछें?"

स. ४८-"तब व्यास की सुध गई" अर्थात् किसने, किसके ऊपर रुष्ट होकर कैसे वचन कहे, जिन्हें सुनकर हरजी व्यास की सुध-बुध उड़ गई?

स. ४९-तत्पश्चात् श्रीजी ने हरजी व्यास ब्राह्मण से क्या कहा?

ज. ४९- उक्त वाद-विवाद के पश्चात् श्रीजी ने हरजी व्यास ब्राह्मण से कहा, "देखिए व्यासजी! आपको जिसने मौत के मुख से बचाकर बाहर निकाला, उसी ने मुझे आपके पास भेजा है क्योंकि भगवान सदैव अपने भक्तों के अहंकार को नष्ट कर उसे अपनी चरण-शरण में लेते हैं। आपने मरणावस्था से होश में आते ही कहा था, →

स. ५०-"मैं कह्या यों कर" - ये वचन हरजी व्यास ब्राह्मण ने कब कबूल किये?

ज. ५०- जब हरजी व्यास ब्राह्मण ने श्रीजी के मुख से अक्षर अक्षरातीत उच्चारण सुना, तब वे *"मैं कह्या यों कर"* अर्थात् अपने कहे वचन कबूल करते हुए कहने लगे, "मैंने वैसा ही कहा था, जैसा आपने अभी मुझसे कहा क्योंकि मैं चौदह लोकरूपी इण्ड का →

स. ५१-"हारा न काहू सरभर" - ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा?

ज. ५१- *"हारा न काहू सरभर"* - ऐसा विद्वत्ता के अभिमान में चूर →

स. ५२-गूलर वृक्ष का दृष्टान्त किसने दिया और क्यों? इस दृष्टान्त द्वारा वे क्या समझाना चाहते थे?

ज. ५२- गूलर वृक्ष का दृष्टान्त हरजी व्यास ने दिया। इस दृष्टान्त के →

ज. ४८- *"तब व्यास की सुध गई"* अर्थात् श्रीजी-महामति श्री प्राणनाथजी ने जब जोश में रुष्ट होकर कान्हजी भाई को धक्का देते हुए इशारे से कहा-"इनके पास है क्या, जो मैं इनसे अक्षर-अक्षरातीत विषय की चर्चा करूँ?" श्रीजी के ये वचन सुनते ही विद्वत्ता के अभिमान में फूले ब्राह्मण हरजी व्यास की सुध-बुध उड़ गई।

→ "मैं नाही इन इण्ड का, मेरा क्यों कलपाओ मन?" अर्थात् मैं इस खेत की कमाई खानेवालों में से नहीं हूँ। आज तक जिसे मैंने हाँ कर दिया, उसे ना करानेवाला मुझे नहीं मिला और मैंने जिसके लिए ना कर दिया, उस बात को हाँ करानेवाला भी मुझे कोई नहीं मिला । इन दो बातों की दाझ लेकर मैं मर रहा हूँ। आपके इन दो बातों की दाझ मिटाकर आपको शान्ति प्राप्त कराने के लिए ही ऊपरवाले ने मुझे आपके पास भेजा है।"

→ जीव नहीं हूँ। यह दान-पुण्य तो जमपुरी का साधन है। मैं उस खेत की कमाई खानेवालों में से नहीं हूँ। अपने नाम पर लोगों को आतुरी दान कराते हुए देखकर मुझे गुस्सा आ गया क्योंकि मैं अपनी विद्वत्ता के घमण्ड में चूर था, क्योंकि मुझे अपनी पूरी जिन्दगी में आज तक ऐसा कोई नहीं मिला, जो मेरी हाँ को ना और ना को हाँ करा सके। इन्हीं दो बातों की दाझ-जलन लेकर मैं मर रहा था। इसी तरह मैंने उस दिन भी कहा था, जिस दिन मैं बेहोश अवस्था से होश में आया था।"

→ हरजी व्यास ब्राह्मण ने श्री मेहराज से कहा क्योंकि उनका कहना था कि उन्होंने जिन्दगी में कइयों विद्वानों से धर्मयुद्ध किया था और उनमें से एक भी विद्वान उन्हें परास्त नहीं कर सके थे। परास्त तो क्या, उनके बराबर भी नहीं टिक सके थे।

→ माध्यम से वे श्री मेहराज को अपना परिचय देना चाहते थे कि, "हे भगत! हे भगतराज!! मैं तो गूलर के दाने के अन्दर के जीव सदृश हूँ क्योंकि एक गूलर के अन्दर स्थित बिचारे जीव को क्या पता कि उसी वृक्ष के अन्दर उसी की तरह ऐसे-ऐसे अन्य असंख्य →

→ गूलर लगे हुए हैं। गूलर के इन सभी जीवों का मूल आधारभूत तो वह गूलर का वृक्ष ही है। ऐसे अनेकों गूलर के वृक्षों का आधार यह धरती है। इस धरती की रचना करनेवाला भी एक ईश्वर नामक तत्त्व है। जिस तरह इन सभी बातों का ज्ञान गूलर के उन असंख्य दानों के अन्दर स्थित जीवों को नहीं होता, उसी तरह →

स. ५३- "मैं अपने साथ जो दो हथियार लेकर संसार से जा रहा था, वे दोनों हथियार आज आपके आगे रख रहा हूँ।" - ऐसा किसने और किससे कहा? वे दो हथियार कौन-कौनसे थे?

ज. ५३- *"मैं अपने साथ जो दो हथियार लेकर संसार से जा रहा था, वे दोनों हथियार आज आपके आगे रख रहा हूँ।"* - →

स. ५४- "अब मुझे परमात्मा पाने का सीधा और सच्चा मार्ग बताइये।" - इस तरह कहते हुए हरजी व्यास ब्राह्मण ने हार तो स्वीकार की, परन्तु क्या उन्होंने धर्म ग्रहण किया? यदि नहीं, तो क्यों?

ज. ५४- *"अब मुझे परमात्मा पाने का सीधा और सच्चा मार्ग* →

स. ५५- "जेता अंकुर इनका, वे उतना ही सत्संग कर सके" - ऐसा क्यों कहा गया?

ज. ५५- *"जेता अंकुर इनका, वे उतना ही सत्संग कर सके"* - ऐसा इसलिए कहा गया क्योंकि एक तो हरजी व्यास ब्राह्मण में →

स. ५६- जामराजा के राज्य जामनगर पर बादशाह कुतुब खाँ किस वि. सं. में चढ़ाई करने आया?

→ अनेकों गूलर सदृश ऐसे अनेकों ब्रह्माण्ड भी हैं। किंतु मैं भी इस एक ब्रह्माण्ड को ही जानता हूँ। उक्त सभी ब्रह्माण्डों का आधारभूत यह नींदरूप पाँचवीं क्षर समष्टि है। इस नींद अर्थात् पाँचवीं क्षर समष्टि से परे मायातीत बेहद का ब्रह्माण्ड है और उस बेहद के ब्रह्माण्ड से परे सृष्टिकर्ता परमेश्वर हैं और उनसे भी परे स्थित हैं, वे परमात्मा! अतः उनके स्थान को मैं कैसे जान सकता हूँ?"

→ ऐसा अभिमानी, अहंकारी, उन्मत्त ब्राह्मण हरजी व्यास ने महामति स्वरूप श्री मेहराज से कहा। जिन दो हथियारों को साथ लेकर वे संसार से जा रहे थे, वे दो हथियार हैं - १) जिस बात के लिए उन्होंने सबके सामने हाँ कर दिया, उस बात को ना करवाकर उसे परास्त करनेवाला संसार में कोई नहीं हुआ। २) जिस विषय में उन्होंने सबके सामने ना कर दिया, उसे हाँ करानेवाला भी कोई नहीं हुआ।

→ *बताइये।"* ऊपरवाले ने आपको मेरे लिए ही भेजा है। मेरी हाँ को ना और ना को हाँ आपने ही करवाया है। मेरी दाझ तो मिट गई। किंतु अब मेरी मुक्ति भी हो जाय, मुझे कोई ऐसा उपाय बता दीजिए।" इस तरह हरजी व्यास ब्राह्मण द्वारा बार-बार अर्ज करने पर महामति स्वरूप ने उन्हें "परा दशधा प्रेम लक्षणा" भक्ति मार्ग का ज्ञान प्रदान किया। लेकिन उसमें धाम का अंकुर न होने के कारण वह धर्म अपनाकर निजानन्द सिद्धांत में शामिल न हो सका।

→ जीव सृष्टि का अंकुर था। दूसरे वे वेदव्यासजी के व्याकरणीय ज्ञान के अभिमान में चूर थे। तीसरे उन्होंने वर्ण-धर्म की पोशाक पहन रखी थी। इस प्रकार तीन-तीन भूत सवार होने के कारण ही वे हर तरह से परास्त हो जाने के बावजूद भी अपना आत्मोद्धार नहीं कर सके। उनके नसीब में ऐसा ही लिखा हुआ था।

ज. ५६- गुजरात प्रान्त के जामराजा के राज्य जामनगर पर अहमदाबाद का बादशाह सुलतान कुतुब खाँ वि. सं. १७१९ में चढ़ाई करने आया।

स. ५७-इस समय श्रीजी को इलहाम अर्थात् ऊपरी सूचना किसने और क्यों दी?

ज. ५७- इस समय जूनागढ़ में गाँव बसा रहे श्रीजी स्वरूप श्री मेहराज को किसी दैविक शक्ति ने इलहाम अर्थात् ऊपरी सूचना दी कि हे मेहराज! तुम जामनगर चलो!! तुम जामनगर चलो!!! क्योंकि उस समय जामनगर पर अहमदाबाद का बादशाह कुतुब खाँ चढ़ाई →

स. ५८-श्री मेहराज ने सुन्दरसाथजी की रक्षार्थ किस वि. सं. में जामसत्ता की जिम्मेदारी सिर पर ली? वे कुतुब खाँ के पास क्यों गये तथा वहाँ क्या-क्या हुआ?

ज. ५८- श्री मेहराज स्वरूप को इलहाम सुनते ही जामनगर जाना पड़ा। वहाँ पहुँचते ही उन्हें खबर मिली कि अहमदाबाद का बादशाह कुतुब खाँ जामनगर पर चढ़ाई करनेवाला है। तब श्री मेहराज स्वरूप की दृष्टि में आया कि यदि कुतुब खाँ ने जामनगर पर चढ़ाई की, तो जामनगर युद्ध क्षेत्र बन जायेगा और अपना तीर्थस्थान नष्ट हो जायेगा। सुन्दरसाथ अकालिक मृत्यु के मुख में पड़ने लगेंगे। अपने गादीपति स्वरूप की भी न जाने क्या दशा होगी? यसर्थ लड़ाई रोकना और कुतुब खाँ से सन्धि करना बहुत जरूरी है। यह समझकर श्री मेहराज स्वरूप ने वि. सं. १७१९ →

स. ५९-श्री मेहराज स्वरूप को फाँसी पर चढ़ाए जाने की खबर सुनते ही कान्हजी भाई क्या सोचकर श्री मेहराज स्वरूप के रक्षार्थ अहमदाबाद नजरकैद में जा पहुँचे?

ज. ५९- जब श्री मेहराज स्वरूप को फाँसी पर चढ़ाए जाने की खबर जूनागढ़ स्थित कान्हजी भाई के कान में पहुँची, तब वे विचार-विवेक करने लगे, "अरे! श्री मेहराज के कंधे पर तो १२,००० ब्रह्मात्माओं तथा २४,००० ईश्वरी आत्माओं की जिम्मेदारी है। यदि वे ही फाँसी पर चढ़ा दिए जाएँगे, तो श्री सद्गुरु स्वरूप की →

→ करने जा रहा था। यह कार्य (इलहाम) वास्तव में श्री सद्गुरु स्वरूप ने ही किया था क्योंकि श्री मेहराज को माया का पूरा अनुभव कराने में अभी भी कुछ कमी रह गई थी। अतः जब तक वे स्वयं पूरी तरह माया न देख लेते, तब तक वे अपनी जमात-ब्रह्मात्माओं को मायावी खेल दिखाकर उनकी खेल देखने की इच्छा पूरी करके श्री परमधाम कैसे ले आते?

→ में जामनगर की सत्ता की जिम्मेदारी अपने सिर पर ले ली और बादशाह कुतुब खाँ से सन्धि करने अहमदाबाद चले गए। वहाँ सन्धि करते-करते अंत में यह निर्णय हुआ कि एक साल तक श्री मेहराज स्वरूप-जामनगर के मंत्री गिरवी के रूप में कुतुब खाँ के पास नजरकैद रहेंगे। एक साल के अंतराल में जामराजा बादशाह कुतुब खाँ से लिया हुआ कर्जा चुकाकर अपने मंत्री को छुड़ाकर ले जा सकते हैं। लेकिन यदि एक साल में जामराजा कर्जा चुकता न कर सके, तो उनके मंत्री को फाँसी की सजा दे दी जायेगी। अतः जामराजा के ऊपर बिश्वास कर श्री मेहराज बादशाह कुतुब खाँ के राज्य में नजरकैद में फँस गये। अन्त में एक साल के अंतराल में भी जब जामराजा कुतुब खाँ का कर्जा चुकता न कर सके, तो उन्होंने अपने मंत्री श्री मेहराज को बादशाह कुतुब खाँ के हाथ में सौंप दिया।

→ भविष्यवाणी अर्थात् ब्रह्म तथा ईश्वरी आत्माओं की जागनीरूपी जिम्मेदारी कौन निभाएगा? मैं तो आज मरूँ, चाहे सौ साल बाद। मेरे हाथों में तो एक भी आत्मा की जागनी नहीं है। अतः यदि मैं श्री मेहराज की जगह पर फाँसी पर चढ़ जाऊँ, तो श्री सद्गुरु स्वरूप की भविष्यवाणी पूर्ण हो सकती है। अरे! सौ साल जीकर कुत्ते-बिल्ली की मौत मरने से, तो श्री मेहराज को फाँसी के फंदे से उबारकर तन छोड़ते हुए मूल मिलावे में जागृत होकर अपना जीवन सार्थक करना एक उत्तमातिउत्तम विकल्प होगा।" ऐसा बिचार कर सारा सामानादि लेकर वे फाँसी के एक दिन पहले →

→ संध्या के समय श्री मेहराज स्वरूप की धर्मपत्नी का भेष लेकर पालकी में बैठकर तुरंत अहमदाबाद के नजरकैद में पहुँच गए। प्रहरियों ने उन्हें श्री मेहराज स्वरूप की धर्मपत्नी समझकर अंदर जाने की अनुमति दे दी। अन्दर जाकर वे श्री मेहराज से मिले →

स. ६०-श्री मेहराज स्वरूप को श्री राजजी ने माया का पूरा अनुभव कहाँ कराया तथा वे किस दशा में गुजरात से दीव बंदर पहुँचे और कब?

ज. ६०- श्री मेहराज स्वरूप को श्री राजजी ने अहमदाबाद के बादशाह कुतुब खाँ की नजरकैद में डालकर माया का पूरा अनुभव कराया। श्री मेहराज पर भी राजनीति क्षेत्र का रंग अच्छी तरह चढ़ गया था क्योंकि उन्होंने श्री सद्गुरु स्वरूप को वचन दिया था कि वे पुनः राजनीति क्षेत्र में कभी नहीं जाएँगे। किंतु "ए थाय सरवे धणी →

स. ६१-श्री मेहराज स्वरूप को अहमदाबाद की नजरकैद से बाहर किसने निकाला? पुनः क्या बादशाह कुतुब खाँ कान्हजी भाई का कुछ बिगाड़ सके? यदि नहीं, तो क्यों?

ज. ६१- श्री मेहराज स्वरूप को अहमदाबाद के बादशाह कुतुब खाँ की नजरकैद से जूनागढ़ के हरजी व्यास ब्राह्मण के घर में स्थित चाकर कान्हजी भाई ने निकाला था। श्री मेहराज स्वरूप को फाँसी देने के लिए निश्चित किए हुए दिन जब सुबह नौ बजे बादशाह कुतुब खाँ के प्रहरी श्री मेहराज को ले जाने जेल के अंदर पहुँचे, तब उन्हें वहाँ श्री मेहराज की जगह एक दिगम्बर साधु (संन्यासी) मिला। उसे देखकर सभी प्रहरी डर गए। डर के मारे उन प्रहरियों को उस साधु को पकड़कर फाँसी देने के स्थान पर ले जाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। कान्हजी भाई को जब इस बात का पता चला, तो वे स्वयं ही दिगम्बर साधु की तरह "ॐ तत् सत्-ॐ तत् सत्" धुन की गर्जना करते हुए उस स्थान →

→ और आगे की सारी युक्ति उन्हें समझा दी तथा श्री मेहराज स्वरूप को स्वयं पहने हुए स्त्री का भेष पहनाकर पालकी में बैठाकर अहमदाबाद की नजरकैद से बाहर निकाला और बदले में स्वयं नजरकैद में रुक गये।

→ थकी" इस कथन पर पूर्ण विश्वास न होने के कारण ही वे समय-समय पर धनी को दिया हुआ वचन भूल जाते थे। अतः वे धनी को दिया हुआ वचन जीवनभर न भूल सकें, इसी ध्येय से श्री राजजी ने उन्हें नजरकैद में माया का वास्तविक परिचय कराने के लिए भेज दिया था। किंतु फाँसी लगने के १५ घण्टे पहले ही कान्हजी भाई को प्रेरणा देकर श्री राजजी ने श्री मेहराज स्वरूप को भेष बदलाकर नजरकैद से पालकी में बिठाकर रातों-रात अहमदाबाद से दीव बंदर भाई जयराम कंसरा के घर पहुँचा दिया। उस समय वि. सं. १७२१ पूरा होकर वि. सं. १७२२ लग चुका था।

→ पर पहुँच गए, जहाँ उन्हें फाँसी दी जानेवाली थी। वहाँ जाकर वे बादशाह को सम्बोधित करते हुए पूछने लगे, "हे कुतुब खाँ ! हे बादशाह ! क्या तेरे धर्मग्रन्थ कुरान शरीफ़ में ऐसा ही लिखा है कि गुनाह करे एक और सजा मिले दूसरे को? यदि ऐसा ही लिखा है, तो आ मुझे सजा दे!! मुझे फाँसी पर चढ़ा दे!!!" इस तरह ललकारते हुए जब कान्हजी भाई ने गर्जना की, तो आम जनता भी काँपने लगी। कुतुब खाँ बादशाह ने तुरंत आदेश देकर मलीदा मँगवाया और हाथ जोड़कर माफी माँगते हुए मलीदा खिलाकर कान्हजी भाई को विदा कर दिया। इस तरह बादशाह कुतुब खाँ कान्हजी भाई का कुछ नहीं बिगाड़ सका क्योंकि कान्हजी भाई तो पहले ही "पेहेले पी तूं सरबत मौत का, कर तेहेकीक मुकरर" बाणी की इस चौपाई के अनुकूल मौत का शरबत पीकर गए थे। अतः उनके साहस और उनकी निडरता को देखकर बादशाह कुतुब खाँ स्वयं डर गया।

-(प्रकरण १८, सवाल-जवाब नं. ६१, कुल सं. ६००+६१=६६१)।

❖ तीन सृष्टि ❖

स. १- "सृष्टि तीन ही प्रकार की है"- इस बात का प्रमाण कहाँ किस-किस ग्रन्थ में है?

स. २- शास्त्रों द्वारा प्रमाणित वे तीन सृष्टियाँ कौन-कौनसी हैं तथा किस-किस से सम्बन्धित हैं?

ज. २- वेद, कतेब एवं पुराणों द्वारा प्रमाणित वे तीन सृष्टियाँ इस प्रकार हैं। जैसे-पहली, क्षर पुरुष सम्बन्धी मायावी-जीव सृष्टियाँ। कूटस्थ अक्षर ब्रह्म जगत् का सृष्टिकर्ता कहलाता है। अतः उसके स्वप्न में उत्पन्न होनेवालों को जीव सृष्टि कहते हैं। इन्हें स्वप्निक, नाशवन्त अथवा अस्तित्त्वहीन सृष्टि भी कहते हैं। दूसरी अक्षर पुरुष सम्बन्धी →

स. ३- उक्त तीनों सृष्टियों की वास्तविकता खोलनेवाला कुंजीरूपी ब्रह्मतारक मंत्र सृष्टि में किसने लाया और किसे सौंपा?

ज. ३- उक्त तीनों सृष्टियों की वास्तविकता का खुलासा करने की ताक़त →

स. ४- वह सनाखत (तारतम) कुंजी आगे चलकर किस नाम से जाहिर होगी, ऐसा कहा गया?

स. ५- वेद-कतेब को माननेवालों के भी क्या एक ही साहेब (परमात्मा) हैं?

ज. ५- हाँ! वेद और कतेब को माननेवालों के भी एक ही साहेब (परमात्मा) हैं। इतना ही नहीं बल्कि सृष्टि के सारे मत-मतान्तरों के साहेब भी एक ही ब्रह्म हैं। हिन्दू और मुसलिम-ये दो धर्म सृष्टि में दिन और →

❖ तीन सृष्टि ❖

ज. १- *"सृष्टि तीन ही प्रकार की है"* - इस बात का प्रमाण संसार में वेदों में ही नहीं, अपितु कुरान सहित अन्य विभिन्न साधु-सन्तों की वाणियों में भी मिलता है।

→ ईश्वरी सृष्टि। सृष्टिकर्ता अक्षर के जागृत अवस्था में उत्पन्न जो बेहद की आत्माएँ हैं, उन्हें ईश्वरी सृष्टि कहते हैं। पुनः जो आत्माएँ क्षर और कूटस्थ अक्षर पुरुष से परे स्थित उत्तम पुरुष अक्षरातीत ब्रह्म सम्बन्धी हैं, उन्हें ब्रह्मसृष्टि कहते हैं। अतः ब्रह्म तथा ईश्वरी सृष्टियाँ बेहद सम्बन्धी तथा अविनाशी हैं और जीव सृष्टियाँ इहलोक अर्थात् हद ब्रह्माण्ड के क्षर पुरुष-आदिनारायण अथवा महाविष्णु सम्बन्धी तथा स्वप्निक एवम् नाशवन्त हैं।

→ रखनेवाला ब्रह्मतारक तारतम महामंत्र इस सृष्टि में श्री श्यामाजी अवतार धनी श्री देवचन्द्रजी ने लाये और उन्होंने यह नूर कुंजी-तारतम महामंत्र धामस्थ बारह हजार सखियों में से श्री इन्द्रावती आत्मा (श्री मेहराज) के हाथ में सौंप दिया।

ज. ४- वह सनाखत (तारतम) कुंजी आगे चलकर ब्रह्मतारक मंत्र अथवा तारतम महामंत्र के नाम से जाहिर होगी, ऐसा कहा गया।

→ रात की तरह हैं। हिन्दू अपने धर्मग्रन्थ में जिस लक्ष्यवाले साहेब को ब्रह्म कहते हैं, मुसलिम भी उसी लक्ष्यवाले ब्रह्म को पकड़कर "खुदा एक बरहक" कहते हैं। दोनों का लक्ष्य, धाम और स्थान एक ही है, परन्तु नाम मात्र अलग-अलग है। मुसलमान कहते हैं - नूर परे नूर तजल्लाह, तो हिन्दू कहते हैं-अक्षर परे अक्षरातीत। यसर्थ निर्णय तो यही निकलता है, "सोई खुदा सोई ब्रह्म।"

स. ६-ब्रह्मसृष्टियों (मोमिनों) के ऊपर जो आखरी पैगम्बर भेजे गए हैं, वे कौन हैं?

स. ७-कुरान की हकीकत किसके लिये है और उसे कौन ग्रहण करेंगे?

स. ८-मुहम्मद साहेब ने पहले से ही भविष्य विषय में क्या कहा था?

ज. ८- ग्यारह सौ साल पूर्व ही अरब देश में आकर मुहम्मद स्वरूप ने भविष्य →

स. ९-"खुदा के नूर से मुहम्मद और मुहम्मद के नूर से दुनिया उत्पन्न हुई" - अतः कैसे, स्पष्टतः समझाइये?

ज. ९- "खुदा के नूर से मुहम्मद" अर्थात् खुदा-अक्षरातीत श्री कृष्ण का →

स. १०-आखरी पैगम्बर का माजजा (चमत्कार) क्या है और सात निशान कौन-कौनसे हैं?

ज. १०-आखरी पैगम्बर महामति श्री प्राणनाथजी हैं और "ब्रह्म एक ही है"- इस बात का विश्वास दोनों पक्षों के जन-जन में कूट-कूटकर भरना तथा कुरान के सात निशानों को खोलकर सभी को उनकी →

स. ११-मुहम्मद साहेब ने रूह अल्लाह के आने की सदी कौनसी बताई थी?

स. १२-"मिसल गाजियों" कौन हैं, जिनके लिए खिलवतखाना जाहिर होने को कहा है?

ज. १२- *"मिसल गाजियों"* बारह हजार ब्रह्मात्माएँ हैं। इन्हीं को ब्रह्मधाम की ब्रह्मसृष्टियाँ भी कहते हैं। इन्हें कुरान में नूर तजल्लाह की रूहें →

ज. ६- ब्रह्मसृष्टियों (मोमिनों) के ऊपर जो आखरी पैगम्बर भेजे गए हैं, वे इमाम मेहदी स्वामी श्री प्राणनाथजी हैं।

ज. ७- कुरान ग्रन्थ में लिखी हुई हकीकत अक्षर-अक्षरातीत की साक्षी के रूप में है तथा मात्र ब्रह्म तथा ईश्वरी आत्माओं के लिए ही है। पुनः उस ग्रन्थ की हकीकत ब्रह्म और ईश्वरी आत्माएँ ही अपना सकेंगी।

→ विषय में कहा था कि मेरे पीछे कोई पैगम्बर नहीं होंगे, मैं आखरी पैगम्बर हूँ। मेरे जाने के बाद एक रूह अल्लाह आयेंगे और वे ही आगे चलकर इमाम मेहदी नाम से सृष्टि में प्रख्यात होंगे।

→ नूर उनकी अर्धाङ्ग श्री श्यामाजी हैं। पुनः "मुहम्मद के नूर से दुनिया" अर्थात् मुहम्मद श्री श्यामाजी सहित बारह हजार ब्रह्मात्माओं के खेल देखने की इच्छारूपी नूर से सारी दुनिया उत्पन्न हुई। सखियों का खेल माँगना ही श्री श्यामाजी की इच्छारूपी नूर है।

→ स्पष्टतः पहचान कराना ही उनका माजजा (चमत्कार) है। कुरान के सात निशान इस प्रकार हैं। जैसे - १) दज्जाल का जाहिर होना २) दाभा नामक जानवर का प्रकट होना ३) मगरब से सूर्य उगना ४) आजूज-माजूज का जाहिर होकर दुनिया को खाना ५) असराफील का सूर फूँकना ६) ईसा का जाहिर होकर दज्जाल को मारना तथा ७) इमाम मेहदी का प्रकट होना।

ज. ११-रूह अल्लाह के आने के विषय में मुहम्मद साहेब ने कहा था कि दसवीं सदी के पूर्ण होते ही बुरका डालकर रूह अल्लाह प्रकट होंगे अर्थात् जब मुहम्मद साहेब की हिजरी सन् के दस सदी पूरी होने में सवा नौ वर्ष बाकी होंगे, तब रूह अल्लाह आयेंगे।

→ कहा है। इन्हीं के लिए खिलवतखाना-पचीस पक्ष परमधाम की दैवत का वर्णन होने को कहा है, जो श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना में चार किताबों-खिलवत, परिक्रमा, सागर और सिनगार द्वारा जाहिर हुआ।

स.१३- ब्रह्म, ईश्वरी और जीवात्माओं का मूल स्थान कहाँ-कहाँ है?

ज. १३- ब्रह्म, ईश्वरी और जीवात्माओं में से द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माओं का मूल स्थान अक्षरातीत ब्रह्मधाम है। चौबीस हजार ईश्वरी आत्माओं →

स. १४-मोमिन-ब्रह्मात्माएँ घर में बैठे-बैठे ही खेल देख रही हैं - इस बात के जाहिर होने की बात कब, किसने और कहाँ कही है?

ज. १४- मोमिन-ब्रह्मात्माएँ अपने घर श्री अक्षरातीत धाम के अन्दर स्थित →

स. १५-"चार घड़ी दिन पीछला" - यह मुहूर्त कहाँ का है? "अब भी जरा-सी भी देर नहीं हुई है"- ऐसा क्यों तथा किसके लिए कहा गया है?

ज. १५- *"चार घड़ी दिन पीछला"* - यह मुहूर्त श्री परमधाम का है, →

स. १६-श्री राजजी के हुकम ने ब्रह्मात्माओं को कैसा खेल दिखाया है?

❖ कब लों कांसा कूटेगा ❖

स. १- श्री मेहराज स्वरूप धर्म अभियान के लिए कब और कहाँ-किस जगह से निकले?

स. २- श्री मेहराज स्वरूप को धर्म अभियान के दौरान दज्जालों से लड़ाई करनी पड़ी। अतः वे दज्जाल कौन-कौन हैं?

→ का मूल स्थान अक्षर धाम है, जो बेहद परे पचीस पक्ष के क्षेत्र में आता है। पुनः जीव आत्माओं का मूल स्थान बेहद में अपर प्रणव ब्रह्म के नेत्र में है। परन्तु अक्षरातीत धनी श्री प्राणनाथजी ने इन जीवात्माओं को अब वह स्थान छुड़ाकर बेहद के आठ प्रकार के मुक्तिस्थानों में कायम (अखण्ड) कर दिया है।

→ मूल मिलावे में बैठे-बैठे ही खेल देख रही हैं, इन बातों के कयामत के समय में जाहिर होने की भविष्यवाणी अव्वल स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब ने कुरान में श्री सद्गुरु स्वरूप के आने से हजार साल पहले अरब में ही कर दी थी।

→ जिस मुहूर्त में ब्रह्मात्माएँ अपने घर मूल मिलावे में असत्, जड़, दुःखरूपी नाटक देखने बैठीं। *"अब भी जरा-सी भी देर नहीं हुई है"* - ऐसा उक्त मुहूर्त के लिए ही कहा गया है क्योंकि वहाँ-परमधाम में अभी भी पिछला पहर घड़ी चार का चार ही है। अर्ध क्षण मात्र भी देर नहीं हुई है।

ज. १६- श्री राजजी ने ब्रह्मात्माओं को अपने हुकम के तले रखकर एक अघटित खेल दिखाया है।

-(प्रकरण १९, सवाल-जवाब नं.१६, कुल सं. ६६१+१६=६७७)।

❖ कब लों कांसा कूटेगा ❖

ज. १- श्री मेहराज स्वरूप धर्म अभियान के लिए वि. सं. १७२२ में दीव बंदर से निकले।

ज. २- धर्म अभियान के बीच जो धर्म विरोधी लोग थे, उन्होंने धर्म-सिद्धान्त को समझे बिना श्री मेहराज स्वरूप को कष्ट पहुँचाया।

→

→ ये दज्जाल स्वरूप वहाँ प्रचलित अन्य धर्म सिद्धान्त के कथाकार →

स. ३- पूर्णब्रह्म परमात्मा ने श्री मेहराज के प्रति ऐसा विचार कब किया, "इसने अब तक बहुत कष्ट झेले हैं। अब इसे सुख प्रदान करें"।

ज. ३- श्री मेहराज स्वरूप बि. सं. १७२० से बि. सं. १७२१ तक एक →

स. ४- कहाँ से चलकर श्री मेहराज ठाकुर कब दीव बंदर स्थित जयराम भाई के घर आये ?

स. ५- श्री मेहराज ठाकुर के दर्शन करते ही भाई जयराम कंसरा ने कैसे मिलाप किया?

स. ६- कुशल-क्षेम पूछने के पश्चात् जयराम भाई ने श्री मेहराज ठाकुर से क्या कहा?

स. ७- भाई जयराम कंसरा द्वारा उक्त प्रकार से पूछने पर श्री मेहराज ठाकुर ने उन्हें क्या जवाब दिया?

ज. ७- भाई जयराम कंसरा द्वारा उक्त प्रकार से पूछने पर श्री मेहराज ठाकुर (श्रीजी स्वरूप) ने उत्तर दिया, "हे भाई कंसरा! मैं आपके →

स. ८- सद्गुरु निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी के कहे प्रमाण माया में भूली हुई ब्रह्मात्माओं में से प्रत्यक्ष मुख्य आत्मा कौन थी?

स. ९- श्री मेहराज ठाकुर इस वक्त भाई जयराम कंसरा को किस तरह समझाने लगे?

→ आदि थे, जिनके साथ श्री मेहराज स्वरूप को लड़ाई करनी पड़ी।

→ साल अहमदाबाद की नजरकैद में रहे। तब अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा ने विचार किया, "अब तक श्री मेहराज ने बहुत कष्ट झेले हैं। अतः अब इन्हें सुख प्रदान करें।"- ऐसा सोचकर कान्हजी भाई के माध्यम से उन्हें नजरकैद से निकालकर दीव बंदर पहुँचाया।

ज. ४- गुजरात स्थित अहमदाबाद की नजरकैद से रातों-रात चलकर श्री मेहराज ठाकुर वि. सं. १७२२ में दीव बंदर स्थित जयराम भाई के घर पहुँचे।

ज. ५- श्री मेहराज ठाकुर के दर्शन करते ही जयराम भाई उठकर प्रेमपूर्वक अत्यन्त आनन्द की अनुभूति करते हुए श्रीजी (श्री मेहराज ठाकुर) से मिले।

ज. ६- कुशल-क्षेम पूछने के पश्चात् जयराम कंसरा ने श्री मेहराज से पूछा, "हे मेहराज ठाकुर! आप कहाँ से पधारे हैं? आपने मेरा घर पवित्र करने की कृपा कैसे की?"

→ लिए ही यहाँ आया हूँ। अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा-श्री राजजी की प्रेरणा द्वारा ही मैं यहाँ आया हूँ। श्री सद्गुरु स्वरूप की पूर्ण कृपा आपके ऊपर है। अतः उनकी दया से ही मैं आपके पास आया हूँ।"

ज. ८- सद्गुरु निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी ने श्री मेहराज स्वरूप पर आज्ञा की थी कि वे माया में भूली हुई ब्रह्मात्माओं को ढूँढ़कर सचेत करें। पुनः उन भूली हुई ब्रह्मात्माओं में से भूलने में अग्रगण्य आत्मा हैं-जयराम कंसरा। अतः सर्वप्रथम उन्हें सचेत करें।

ज. ९- श्री मेहराज ठाकुर ने इस वक्त भाई जयराम कंसरा को समझाते हुए सर्वप्रथम श्री देवचन्द्रजी से लेकर सुन्दरसाथ का अब तक का सारा समाचार बताया।

स. १०-श्रीजी स्वरूप श्री मेहराज ठाकुर ने भाई जयराम कंसरा को जामनगर, नवतनपुरी का समाचार बताने के उपरान्त क्या पूछा?

ज. १०- श्रीजी स्वरूप श्री मेहराज ठाकुर ने भाई जयराम कंसरा को →

स. ११-सुन्दरसाथ को जागृत करने के विषय में श्रीजी साहेबजी ने भाई जयराम कंसरा से क्या पूछा?

ज. ११- सुन्दरसाथ को जागृत करने के विषय में श्रीजी साहेबजी ने भाई जयराम कंसरा से पूछा, "अरे जयराम कंसरा! आप सद्गुरु के शिष्य हैं। पुनः बारह हजार में से अग्रगण्य आत्मा में हैं। क्या →

स. १२-"अपनी आत्मा और सुन्दरसाथ के प्रति आपको ऐसा अन्याय नहीं करना चाहिए।" - ये बात किसने, किससे और क्यों कही?

ज. १२- "अपनी आत्मा और सुन्दरसाथ के प्रति आपको ऐसा अन्याय →

स. १३-"आप कौन हैं? कैसी आत्माओं में से हैं और आपने किनसे धर्म ग्रहण किया है?" - इन प्रश्नों का महत्त्व समझाते हुए श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम कंसरा को किस तरह उनकी अंतरात्मा से प्रत्यक्षावगत कराया?

ज. १३- इन प्रश्नों का महत्त्व समझाते हुए श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम कंसरा से कहा, "क्या आपको मालूम नहीं है कि आप कौन हैं? आप संसार के मायावी जीवात्माओं के इष्ट अर्थात् ब्रह्मात्माओं में से हो, जिनके बराबर संसार में अन्य कोई नहीं है। आपकी चरण-रज प्राप्त करने के लिए तो त्रिदेवा भी तड़पते हैं। उत्तमातिउत्तम ब्रह्मात्मा में होकर भी इस प्रकार मोह-माया में निमग्न होकर अपनी आत्मा को घात करना, उसमें भी सद्गुरु जैसे के शिष्य होकर! यह →

→ जामनगर से लेकर अब तक का सारा समाचार बताने के उपरान्त पूछा, "हे भाई कंसरा! आपको दीव बंदर में रहते हुए कितने दिन हो गये? आपने आज तक दीव बंदर में क्या-क्या किया? इतने समय में आपने कितने सुन्दरसाथ को धर्म समझाया?"

→ आपको ऐसा ही करना चाहिए? अन्य भूली हुई आत्माओं को ढूँढ़ने के बजाय आपने अपनी आत्मा को भी माया में लिप्त कर दिया है। आपको इस तरह सद्गुरु की बदनामी नहीं करनी चाहिए। क्या धर्म देते अथवा मंत्र प्रदान करते समय सद्गुरु स्वरूप ने ऐसा ही करने को कहा था?"

→ नहीं करना चाहिए।" - ये बात श्री मेहराज ठाकुर ने भाई जयराम कंसरा को सावचेत करते हुए कही क्योंकि जब से जयराम भाई सद्गुरु स्वरूप से धर्म ग्रहण करके दीव बंदर आये थे, तब से आज तक माया-मोह में ऐसे तल्लीन हुए थे कि उन्हें तीन-तीन बार "आमंत्रण पत्र" देने पर भी आना तो दूर जवाब देने की भी फुरसत नहीं मिली थी।

→ आपको शोभा नहीं देता। आपने किनसे धर्म ग्रहण किया था? धर्म देते समय सद्गुरु स्वरूप ने आपसे जिस प्रकार चलने को कहा था, क्या आप उसी प्रकार चल रहे हैं? अपना आत्मघात करते, ब्रह्मात्माओं की जमात को कलंकित करते आपको थोड़ी-सी भी लाज नहीं आई? आप मुझे जवाब दीजिए कि आप सद्गुरु स्वरूप से धर्म ग्रहण कर घर आने के बाद कितनी बार सद्गुरु स्वरूप से मिले? कितनी बार जामनगर, गुरुद्वार के दर्शनार्थ गये? क्या आपने कभी धाम का नाता पालन करते हुए धामधनी स्वरूप सद्गुरु और सुन्दरसाथ की खबर ली? क्या आपको सद्गुरु स्वरूप ने अपने आत्मा सम्बन्धी धाम, धनी और धर्म के त्रिकाल सत्य परिवार की पहचान नहीं करायी थी? क्या सद्गुरु स्वरूप ने आपको परलोक सम्बन्धी ज्ञान नहीं दिया था?"

स. १४-पुनः श्री मेहराज ठाकुर ने भाई जयराम कंसरा को तीन-तीन बार लिखी हुई चिट्ठी का न जवाब देने और न दौड़कर आने जैसी लापरवाही के विषय में सावचेत करते हुए क्या कहा?

ज. १४- पुनः श्री मेहराज ठाकुर ने भाई जयराम कंसरा को तीन-तीन बार लिखी हुई चिट्ठी का न जवाब देने और न दौड़कर आने जैसी लापरवाही के विषय में सावचेत करते हुए कहा, "मैंने आपको तीन-तीन बार चिट्ठी लिखकर भेजी थी। एक तो सद्गुरु स्वरूप जब बीमार पड़े, तब अन्तिम दर्शनार्थ आपको आमंत्रित किया था। किंतु आप नहीं आये। पुनः दूसरी बार जब सद्गुरु →

स. १५-श्रीजी साहेबजी ने कैसे-कैसे खण्डनी के वचनों द्वारा भाई जयराम कंसरा को जीता-जागता किया?

ज. १५- श्रीजी साहेबजी ने भाई जयराम कंसरा को जागृत करने के लिए खण्डनी के वचनों द्वारा फटकारते हुए कहा, "हे भाई कंसरा! आपका इस प्रकार मायावी जीव सदृश होकर बैठने का क्या कारण है? क्या आपको अपने निजधाम नहीं जाना? यहीं अनादि-अखण्ड होकर रहना है? मायावी जीव भी कभी अपना (माया का) घर छोड़ते नहीं हैं, किंतु धाम की उत्तम आत्मा में होते हुए भी आपने तो अपने अनादि-अखण्ड सुख और अनादि काल के सम्बन्धी धाम और धनी को ही छोड़ दिया?क्या सद्गुरु स्वरूप ने आपको तारतम देते समय कान में ऐसा ही कहा था, "अब घर जाकर धाम के सम्बन्ध को कभी भी याद नहीं करना। मायावी जीवात्माओं से भी दुगुनी मात्रा में माया में दूध-मिश्री की तरह मिल जाना!!! आपके लिए संसार ही अनादि परमधाम है!!!

हे भाई कंसरा! आपको कैसे गुरु प्राप्त हुए हैं और कैसा ज्ञान →

स. १६-"आई सिर पर क्यामत रोसन" - यह कथन कौन, किससे और क्यों कह रहे हैं?

→ स्वरूप धाम पधारे, तब भी आपको पत्र लिखा था। समस्त सुन्दरसाथ उपस्थित हुये, मात्र आप ही नहीं आये। तत्पश्चात् सद्गुरु स्वरूप की गादी पर गुरुपुत्र श्री बिहारीजी को आसीन करते समय भी मैंने आपको आमंत्रण-पत्र भेजा था। तब भी आप न आये और न आपने पत्र का जवाब ही दिया। अन्य समस्त सुन्दरसाथ को फुरसत हुई, धनी गए - इस विषय में दर्द भी आया। परंतु आपको न तो धर्म के प्रति निर्लज्ज हुए विषय में शर्म आई और न धामधनी स्वरूप सद्गुरु के प्रति दर्द ही आया! आपको क्या हो गया है? आप क्या थे और क्या बन गये हो? आप तो धाम की आत्मा में होकर भी मायावी जीवात्माओं से भी बदतर होकर माया में निमग्न होकर बैठे हो!!"

→ मिला है? एक तो आप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी जैसे गुरु के शिष्य हैं। दूसरे आपको प्राप्त श्री तारतम महामंत्र और श्री तारतम ज्ञान के समान इस ब्रह्माण्ड में न कोई मंत्र है, न कोई ज्ञान ही है। ऐसे मंत्र और ऐसे ज्ञान के हकदार बनकर भी आपको क्या हुआ? क्या आपको अपनी आत्मा और अपने भविष्य के विषय में थोड़ी-सी भी चिन्ता नहीं है? आप अक्षरातीत धाम से अपने धनी-श्री राजजी से आज्ञा लेकर यह खेल देखने आए हो, न कि इस तरह अपनी परात्मा, अपने धाम और धनी को भूलकर मायावी जीव सदृश सुध-बुध खोकर भूलने के लिये। आप थोड़ा-सा विचार-विवेक करके तो देखिये कि आप कौन हैं? यहाँ क्यों आए हैं और आकर क्या करने के बदले क्या कर रहे हैं? आपने धर्म क्या समझा?" इस प्रकार श्री मेहराज ठाकुर ने ब्रह्मात्मा और जीवात्मा के बीच सन्तुलन करते हुए, उनके गुण-दोषों का विवेचन तथा खण्डन-मण्डन करते हुए अनेकों प्रकार से भाई जयराम को समझाया।

ज. १६- *"आई सिर पर क्यामत रोसन"*- यह कथन मेहराज ठाकुर श्री प्राणनाथजी भाई जयराम कंसरा से कह रहे हैं क्योंकि भाई →

→ जयराम पूरी तरह से स्वधर्म भूलकर माया में तल्लीन हो गये थे। अतः उन्हें अपना धर्म याद दिलाते हुए श्री मेहराज कहने लगे, →

स. १७- तारतम ज्ञान प्राप्त करने के बाद, सम्बन्ध निश्चित होने के बाद भी माया में लिप्त हुए भाई जयराम कंसरा को श्री मेहराज स्वरूप ने किस तरह फटकारकर धाम की ओर सम्मुख किया?

ज. १७- तारतम ज्ञान प्राप्त करने के बाद सम्बन्ध निश्चित होने के बाद भी माया में लिप्त हुए भाई जयराम कंसरा को धाम की ओर सम्मुख करने के लिए फटकारते हुए श्री मेहराज स्वरूप ने कहा, "अरे मूढ़ कंसरा! मुरदे सदृश इस संसार में रहकर आपको क्या प्राप्त करना है? ये चौदहों लोक नश्वर हैं। इसमें क्या आप अखण्ड रहेंगे? पूर्णब्रह्म परमात्मा की अंगभूता ब्रह्मात्मा में होकर आपको इस प्रकार अनजान मायावी पुतले बनकर भूलना शोभा नहीं देता। आप कौन हैं? कहाँ की आत्मा में से हैं और किनकी सम्बन्धी हैं? इतना तो विचार करो! आपको संसार में आए हुए बहुत दिन हो चुके हैं। अपनी उम्र तो देखो! कितनी व्यतीत हो चुकी और कितनी शेष रही? पुनः अब खेल में कितना रहना है? अब तक संसार में आपने कितना वैभव कमाया? आपकी इच्छा-तृष्णा कम हुई या नहीं? अब तो मूल घर श्री परमधाम को याद करो, जहाँ से आप इस संसार में आये हो। क्या आपको अपने घर पुनः नहीं जाना है? आप किन्हें ठुकराकर क्या बटोर रहे हो? क्या इस संसार में आज तक कोई तृप्त हुआ है? इस माया से आज तक कोई अघाए नहीं हैं। कुत्ते की तरह सूखी हड्डी चचोड़ते-चचोड़ते अपने को ही समाप्त करते जा रहे हैं, परंतु कभी तृप्त नहीं हुये। क्या आपको भी वैसा ही होना है? क्या आपको श्री परमधाम अपने धनी के पास नहीं जाना है? हमेशा क्या यहीं जन्मते-मरते रहना है? →

→ "अरे जयराम कंसरा! आपके सिर के काले बाल तो काले से सफेद हो चुके हैं अर्थात् संसार छोड़कर चलने का अन्तिम समय आ चुका है। तब भी आपका कुम्भकर्णपना जाता नहीं है?"

→ सारा संसार जिसे अपनी जिन्दगी समझता है, जिसे सुख मानकर बारम्बार जन्म-मरण को प्राप्त करता है, क्या आपको भी यहीं अखण्ड-नित्य-अचल होकर रहना है? आप तो श्री धाम से आयी हुई आत्माओं में हो, यहाँ के मायावी जीवों में नहीं। माया से उत्पन्न जीव भी माया नहीं छोड़ सकते, किंतु आप तो अपने वास्तविक धामधनी का परित्याग कर माया में लीन हो चुके हो। माया बटोरने में ही सारा समय बरबाद कर रहे हो। मायावी जीव इन्द्रिय सुखों के पीछे पागल रहते हैं। वे उससे निकल नहीं सकते और निकलना भी नहीं चाहते। परन्तु आपका इस माया से क्या सम्बन्ध है? आप तो धनी की सम्बन्धी आत्मा हो। संसार के मायावी जीवों के लिए तो माया का इन्द्रियजन्य सुख ही सब कुछ है। क्या आपको भी इन्हीं सुख का स्वाद लग गया है? धाम के अखण्ड सुख के अधिकारी होकर उसे ठुकराना और नश्वर सुखों में मस्त रहना, अपना अस्तित्त्व खो बैठने तुल्य ही है? राजहंसरूपी आत्मा में होकर मानसरोवर के मोती चुनने के बदले आप मायावी बगुला बनकर सड़ी हुई मछली की तरह इन्द्रियों के झूठे सुखों को प्राप्त करने में जीवन गँवा रहे हो। सर्वोत्तम धाम के सर्वोत्तम सुख को प्राप्त करनेवाली सर्वोत्तम आत्माओं में होकर ऐसा करना? जरा-सी तो शर्म रखो!

अरे मूढ़ाधीश! आपको किसमें निमग्न होना चाहिए और आप किसमें मस्त हो रहे हो? क्या आपके व्यवहार और मायावी जीवों के व्यवहार में अन्तर नहीं होना चाहिए? क्या सत और झूठ गुणयुक्त आत्माओं का व्यवहार-चलन एक समान होता है? आप कुम्भकर्णवत् आचरणों को छोड़कर सद्गुरु स्वरूप ने क्या कहा था, उन बातों को याद कर लो!!" इस तरह श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम कंसरा को फटकारकर धाम की ओर सम्मुख किया।

स. १८-श्रीजी स्वरूप की उक्त प्रकार की बातों का भाई जयराम कंसरा पर क्या असर हुआ?

ज. १८- श्रीजी स्वरूप की उपरोक्त बातें सुनकर भाई जयराम कंसरा →

स. १९-"ना जानी हम निसबत, ना कछु भई पहिचान" - यह कथन कौन और किसके सामने कबूल कर रहे हैं?

ज. १९- *"ना जानी हम निसबत, ना कछु भई पहिचान"* - ये बातें भाई जयराम कंसरा श्रीजी के आगे रोते-रोते कबूल कर रहे हैं →

स. २०-तदुपरान्त भाई जयराम कंसरा ने श्रीजी के आगे क्या कहा?

ज. २०- उक्त प्रकार पश्चात्ताप करते हुए रोते-रोते पुनः भाई जयराम कंसरा कहने लगे, "अब मैंने अपने ऊपर श्री राजजी की मेहेर देखी है। →

स. २१-उस वक्त वहाँ श्रीजी की चर्चा सुनने हेतु कौन-कौन उपस्थित थे? चर्चा करते-करते कितना समय हुआ?

ज. २१- जब सुबह आठ-नौ बजे दीव बंदर में भाई जयराम कंसरा के घर में श्रीजी और जयराम कंसरा का मिलाप हुआ, तब श्रीजी स्वरूप को अपने घर में पधराकर कुशल-क्षेम पूछते हुए भाई जयराम कंसरा ने श्रीजी से कहा, "अरे! कहाँ जामनगर और कहाँ दीव बंदर? आपका इस तरह मेरे घर में पधारने का क्या कारण है? किस लिए आप यहाँ पधारे हैं?" तब इसके प्रत्युत्तर में श्रीजी ने कहा, "मैं आपके घर आपके लिए ही आया हूँ। श्री राजजी ने →

स. २२-चर्चा पूरी होने के पश्चात् जयराम कंसरा ने श्रीजी से क्या अर्ज की?

→ अपने को धिक्कारने लगे और श्रीजी के आगे रोते-रोते अपनी भूल कबूलकर पश्चात्ताप करने लगे। अपनी मूर्खता के प्रति बारम्बार अफसोस मानते हुए श्री राजजी के प्रति आभार प्रकट करने लगे और कहने लगे, "मुझे इस माया में धाम की याद नहीं आई! मैं बिलकुल भूल गया!!"

→ और पछताते हुए कह रहे हैं, "मैं न तो मूल सम्बन्ध को जान सका और न ही सद्गुरु स्वरूप को पहचान सका। यदि मैंने मूल सम्बन्ध को जाना होता और श्री सद्गुरु स्वरूप की पहचान की होती, तो मेरी यह हालत नहीं हुई होती। मैं धामधनी स्वरूप श्री सद्गुरु के साथ का सम्बन्ध कबूल नहीं कर सका।"

→ धनी ने मुझे माया से निकालने के लिए मुझ पर दया कर आपको मेरे घर भेजा है। आपके आने से मैं तो धन्य-धन्य हो गया। कदाच आप न आते, तो मेरी क्या दशा होती? मेरी डूबती जीवन नैया को आपने बचा लिया। अब मैं दूसरी बार ऐसी गलती कभी होने नहीं दूँगा।"

→ मुझे आपकी खबर लेने के लिए ही यहाँ भेजा है।" इस प्रकार बातों-बातों में चर्चा शुरू हुई। चर्चा करते-करते श्रीजी ने पूछा, "हे भाई कंसरा! धर्म लेकर दीव बंदर में आये आपको कितना समय हुआ? आपकी दिनचर्या क्या है? धर्म के सत्संग द्वारा आपने कितनों को ज्ञान समझाया? इत्यादि ... इत्यादि ...।" इस प्रकार चर्चा करते-करते दोपहर हो गयी। घर के सभी लोग चर्चा में बैठे थे। चर्चा सुनते-सुनते भाई जयराम कंसरा अपनी भूल मानकर रो पड़े। अब दोपहर के भोजन-प्रसाद का समय हुआ। तब चर्चा बंद हुई।

ज. २२- चर्चा पूरी होने के पश्चात् दोपहर के भोजन-प्रसाद के पूर्व भाई जयराम कंसरा ने श्रीजी से स्नान करने की अर्ज की।

स. २३-श्रीजी के भोजन आरोग लेने के पश्चात् भाई जयराम कंसरा ने उनसे क्या करने के लिए विनयपूर्वक आग्रह किया?

स. २४-भाई जयराम कंसरा के विनयपूर्ण आग्रह को सुनकर श्रीजी साहेबजी ने उन्हें क्या प्रत्युत्तर दिया?

ज. २४- भाई जयराम कंसरा के विनयपूर्ण आग्रह को सुनकर श्रीजी साहेबजी ने प्रत्युत्तर में कहा, "अरे भाई कंसरा! मैं यहाँ सोने नहीं आया हूँ। →

स. २५-भोजन-प्रसाद लेने के पश्चात् श्रीजी ने जयराम भाई को कहाँ की, कौनसी चर्चा सुनायी?

ज. २५- भोजन-प्रसाद लेने के पश्चात् श्रीजी ने भाई जयराम द्वारा पौढ़ने की अर्ज करने पर पुनः चर्चा शुरू की और कहा, "भाई कंसरा! आपको इस दुस्तर माया से निकालने के लिए मैं आपके पास आया हूँ। श्री राजजी स्वरूप सद्गुरु ने आपका नाम लेकर →

स. २६-श्रीजी साहेबजी ने संसार में रहते हुए आत्मा के उद्धार के लिए भाई कंसरा को किस मार्ग पर चलने के लिए कहा?

ज. २६- श्रीजी साहेबजी ने संसार में रहते हुए आत्मा के उद्धार के लिए भाई कंसरा को स्मरण कराते हुए कहा, "हे जयराम भाई! व्रज में होते आप →

स. २७-भाई जयराम कंसरा को व्रजमण्डल में उनके द्वारा धनी के साथ किए गए प्रेम-व्यवहार का स्मरण कराते हुए श्रीजी स्वरूप ने क्या कहा?

ज. २७- भाई जयराम कंसरा को व्रजमण्डल के प्रेम-व्यवहार का स्मरण कराते हुए श्रीजी स्वरूप ने कहा, "वहाँ व्रज में भी यहाँ की तरह ही आपका कुटुम्ब-कबीला, परिवार-व्यवहार आदि सब कुछ था। →

ज. २३- श्रीजी को बड़े प्रेम से भोजन आरोगाने के पश्चात् भाई जयराम कंसरा ने "दूर से आये हैं, थक गये होंगे"- यह सोचकर कुछ देर विश्राम करने के लिए हाथ जोड़कर विनयपूर्वक आग्रह किया।

→ मैं तो आपकी भी नींद हराम करने आया हूँ। आप तो इस माया में बेहोश होकर कलियुग के कुम्भकर्ण बनकर सोये हैं। आपको जगाने और सचेत करने के लिए ही श्री राजजी ने मुझे आपके घर भेजा है और आप तो मुझे भी सुला रहे हैं? हम नहीं आये पौढ़ने अर्थात् मेरा यहाँ आने का उद्देश्य तो कुछ और ही है।"

→ आपको जगाने के लिए मुझे यहाँ भेजा है। देखो कंसरा! आप ब्रज और रास लीलाओं में होकर यहाँ आये हो। अतः याद करो कि आपने ब्रज में किस प्रकार का व्यवहार किया था? ब्रज की गोपियों का रूप धारण कर आपने सबके साथ किस मार्ग पर चलकर दिखाया था? आप अपने ब्रज के मार्ग का स्मरण करो।" इस तरह श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम को ब्रज की अपनी लीला का स्मरण कराते हुए भली प्रकार की चर्चा की।

→ क्या करते थे ? ब्रजमण्डल की अपनी लीला का स्मरण कर लो। जब आप ब्रज में गोपी के रूप में थे, तब अन्य गोपियों के साथ किस मार्ग पर चले थे, जिस पर चलकर माया से निर्लेप रह सके थे, बच सके थे, वही है-हमारे और आपके धाम जाने का मार्ग।"

→ घर का काम-काज भी कुछ कम नहीं था। नित्य प्रति काम-व्यवहार सँभालते हुए भी आपका मन किस तरह श्री कृष्णजी के साथ प्रेम में मग्न रहता था? किस तरह आप श्री कृष्ण के साथ प्रेम किया करते थे? किस तरह रात-दिन श्री कृष्ण के चिन्तन में तल्लीन रहते थे? मायावी कार्यों में संलग्न रहते हुए भी किस प्रकार आपका चित्त प्रियतम श्री कृष्णजी के चरणों से बँधा हुआ रहता था? इतना विशाल व्यवहार होते हुए भी प्रियतम श्री कृष्ण →

जी के साथ के प्रेम-भाव में आपने कभी भी कमी आने नहीं दी। खाते-पीते, उठते-बैठते, चलते-फिरते निरन्तर प्रियतम श्री कृष्ण जी के चरणों में आपका चित्त किस तरह बँधा रहता था? रात-दिन उनके ही गान, उनके ही ध्यान, उनके ही वार्तालाप में आप किस तरह निमग्न रहते थे? मायावी कार्य-व्यवहार में लगे रहते हुए भी क्या संसार का बन्धन वहाँ आपको बाँध सका था?

स. २८-तत्पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम कंसरा को व्रज से रास में जाते समय ब्रह्मात्माओं द्वारा चले गये एक-एक कदम का स्मरण किस प्रकार करवाया?

ज. २८- तत्पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम कंसरा को व्रज से रास में जाते समय ब्रह्मात्माओं द्वारा चले गये एक-एक कदम का स्मरण कराते हुए कहा, "जब हमारे प्रियतम धनी श्री कृष्ण ने ग्यारह वर्ष के पश्चात् बावनवें दिन की संध्या के समय वंशी-ध्वनि के माध्यम से हमें बुलवाया था, तब उस समय आपने किस तरह संसार सागर को मात्र गौ के बछड़े के चरण-चिन्ह में भरे जल के जितना समझकर उसका किस सरलता से परित्याग कर दिया था? पुनः संसार को तो आपने गौपदवच्छ कर ही दिया था, परन्तु

स. २९-तत्पश्चात् श्रीजी साहेबजी ने भाई जयराम कंसरा को उथला में उत्तीर्ण होने के बाद वृन्दावन रमण की बातें किस तरह याद दिलायीं?

ज. २९- श्रीजी साहेबजी ने भाई जयराम कंसरा को उथला में उत्तीर्ण होने के बाद वृन्दावन रमण की बातों को स्मरण कराते हुए कहा, "हे भाई जयराम! आप उन बातों को याद करो कि जब उथला की परीक्षा में हम सब उत्तीर्ण हो गए, तब हमारे प्रियतम श्री कृष्णजी ने हमें कैसे-किस तरह सुन्दर वृन्दावन के दर्शन कराये थे? आपको याद है, बालाजी ने वृन्दावन के एक-एक पेड़-पौधों के नाम ले-

→ पुनः जब-जिस दिन प्रियतम बछड़े लेकर वन में जाते थे, तब दिन का एक-एक क्षण आपके लिए कैसा व्यतीत होता था? जब तक प्रियतम धनी आपकी आँखों के सामने नहीं आ जाते थे, तब तक निरन्तर आपकी आँखों से अश्रु क्यों बहा करते थे? वहाँ व्रज में आपका प्रियतम के श्री चरणों में कैसा प्रेम था? कैसे दिन-रात आठों पहर सदैव आप श्री कृष्णजी की प्रेम तरङ्गों में उन्मत्त रहते थे? आप उन सब लीलाओं का स्मरण कर लो।"

→ घर के कुटुम्ब-परिवार को भी नहीं के समान मानकर परित्याग कर कैसे आप योगमाया के ब्रह्माण्ड में पहुँच गये थे? पुनः योगमाया के ब्रह्माण्ड में प्रवेश होने से पहले सीमा पर ही योगमाया शक्ति ने आपको किस तरह रोक लिया था और तब कालमाया का तन छोड़कर कैसे आपने योगमाया का शरीर धारण कर योगमाया के ही वस्त्राभूषणों का सिंगार किया था?

तत्पश्चात् जब हम और आप वृन्दावन पहुँचे ही थे, तब प्रियतम श्री कृष्णजी ने "हमारे अन्दर कालमाया का लेश-लगाव है या नहीं"- इस बात का निर्णय करने के लिए किस तरह उथला के बचन कहे थे? हमारे प्रियतम धनी ने हमें किस तरह ठुकराकर तुरंत व्रज घर लौट जाने को कहा था? आप उन सभी बातों को याद करो।"

→ लेकर वृन्दावन से हमारा परिचय कराया था? आप जरा दिमाग को कसरत कराकर याद करो कि उथला की परीक्षा में उत्तीर्ण होते ही बालाजी ने हमें किस तरह अपनाया था? तत्पश्चात् कैसे हमें वृन्दावन में घुमाया, फिराया? वृन्दावन के दर्शन कराने के बाद किस तरह धनी हमें वृन्दावन के बीच में ले गये, जहाँ रास लीला करना निश्चित किया था? वहाँ ले जाकर प्रियतम बालाजी ने कैसे हमें महारास लीला में प्रवेश कराया? किस प्रकार अपने प्रियतम श्री कृष्णजी के साथ बाथ लेकर हम विभिन्न प्रकार की रास की रामतों सहित नाचे-गाये, खेले-घूमे? आप याद करो कि आपने उस महारास लीला में कैसे रमण किया था?

→

→ पुनः महारास रमते-खेलते, नाचते-गाते जब हम सब प्रियतम के साथ इस तरह प्रेमोन्मत्त हो गये कि हमें दुःख-सुख, प्रेम-आनन्द का भी भान नहीं रहा, तब हमारी ऐसी हालत देखकर →

❖ जाति स्मरण बोध ❖

स. १-दीव बंदर में श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम कंसरा को अन्तर्ध्यान के बाद कहाँ के मूल सम्बन्ध का स्मरण कराया?

ज. १- दीव बंदर में श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम कंसरा को व्रज और रास लीला तथा रास लीला में भी अन्तर्ध्यान लीला का स्मरण कराने के →

स. २-मूल सम्बन्ध याद कराने के पश्चात् रास लीला के दौरान अन्तर्ध्यान हुए धनी को पुनः प्रकट करने के लिए की हुई लीला का वर्णन श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम कंसरा को किस तरह सुनाया?

ज. २- मूल सम्बन्ध याद कराने के पश्चात् रास लीला के दौरान अन्तर्ध्यान हुए धनी को पुनः प्रकट करने के लिए की हुई लीला का वर्णन भाई जयराम कंसरा को सुनाते हुए श्रीजी ने कहा, "रासमण्डल में रास रमते-रमते हे कंसरा! हम सब किस तरह प्रेम विभोर हो गए थे और जब यह बात मूल स्वरूप श्री राजजी ने देखी कि ये दोनों अक्षर ब्रह्म और सखियाँ अपनी सुध-बुध खो बैठे हैं। अतः इन्हें पूर्व स्मरण कराना अत्यंत जरूरी है, तब श्री राजजी ने अपना जोश खींच लिया और रास रमते-रमते हमारे प्रियतम श्री कृष्णजी हमारे बीच से अन्तर्ध्यान हो गये। इसका कारण यह था कि वे मूल अक्षर ब्रह्म को अक्षरातीत धाम के अन्दर हमारे और प्रियतम धनी के बीच होनेवाली आनन्द लीला का और हम सखियों को असत्, जड़, →

प्रियतम धनी अचानक किस तरह हमारे बीच से अदृश्य हो गये थे? अरे वंसरा! आप इन सब बातों को याद करो।"

-(प्रकरण २०, सवाल-जवाब नं. २९, कुल सं. ६७७+२९=७०६)।

❖ जाति स्मरण बोध ❖

→ पश्चात् मूल-श्री परमधाम की बातें बतायी कि मूल श्री परमधाम में हुआ प्रेम-सम्वाद ही अन्य ब्रह्मात्माओं सहित आपके भी खेल में आने का मूल कारण है। उक्त प्रेम-सम्वाद में अपने प्रियतम श्री राजजी के साथ आपने कैसे बचन कहे थे? उन बचनों को याद करो। पुनः श्री राजजी ने आपको क्या प्रत्युत्तर दिया था, वह भी याद करो।"

→ दुःखरूपी खेल का स्मरण कराना चाहते थे।

पुनः जब हम सखियाँ अत्यंत शोकाकुल हो उठीं और वृन्दावन के चप्पे-चप्पे को छान डाला, अपने प्रियतम बालाजी को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते विरह-विलाप करते सारा वृन्दावन घूमे-फिरे, परन्तु हमारे बाला श्री कृष्णजी हमें नहीं मिले, तब हम सबने ब्रज लीला का अनुकरण करने का निर्णय किया। ब्रज लीला की अनुकरण लीला करते-करते अन्त में बंशी-ध्वनि के माध्यम से हम ब्रज से वृन्दावन गए। पुनः नाटक में श्री कृष्ण बनी इन्द्रावती सखी ने दूर जाकर ऐसी बंशी बजाई कि इन्द्रावती सखी द्वारा बजाई गई बंशी-नाद को श्री कृष्णजी ने ही बजाई हुई बंशी की नाद समझकर आनन्द विभोर होकर हम सब इन्द्रावती सखी के पास दौड़ पड़े, तब अक्षरातीत धाम से श्री राजजी द्वारा खींचा हुआ जोश पुनः छोड़ते ही हमारे बाला प्रियतम श्री कृष्णजी उसी उमड़ते हुए प्रेमानन्द के बीच भजनानन्द स्वरूप के रूप में हमारे बीच प्रकट हुए। तत्पश्चात् अन्तर्ध्यान के पूर्व के रास से भी बेहतर सुखदायी रास-रमण कराकर श्री प्रियतम धनी ने हमारे अन्दर के अन्तर्ध्यान के दुःख, विरह और कष्ट को निर्मूल कर दिया।"

स. ३-महारास लीला रमण करने के पश्चात् जब सखियाँ अपने धनी श्री कृष्ण सहित स्नान करने जमुना तट पर गईं, तब वहाँ प्रेम की पराकाष्ठा में पहुँचे हमारे धनी श्री कृष्ण ने अपने प्रगाढ़ प्रेम का जो परिचय दिया, वे बातें श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम कंसरा को किस प्रकार स्मरण कराईं?

ज. ३- भाई जयराम कंसरा को प्रेम की पराकाष्ठा में पहुँचे हमारे धनी श्री कृष्णजी द्वारा दिए गए प्रगाढ़ प्रेम के परिचय की बातें स्मरण कराते हुए श्रीजी स्वरूप ने कहा, "महारास लीला समाप्त होने के पश्चात् हम सब बालाजी सहित श्री यमुना तट पर पहुँचे। जलक्रीड़ा सहित स्नान-लीला करने के लिए जब हम सब ने रास-रमण के दौरान पहने हुए कपड़ों को उतारकर श्री यमुना तट पर ढेर कर दिया और स्नान के कपड़े पहनकर श्री यमुनाजी में प्रवेश हुए तथा अपनी इच्छानुकूल बालाजी के साथ जलक्रीड़ा करने के पश्चात् बड़े प्रेम से बालाजी को स्नान कराया। पुनः बालाजी को स्नान कराते →

स. ४-पुनः भोजन-लीला के पश्चात् अपने धनी श्री कृष्णजी के साथ सखियों ने रास लीला के दौरान अन्तर्ध्यान होने के कारण विषय में जो प्रश्न पूछे तथा धनी श्री कृष्ण ने उनका जो प्रत्युत्तर दिया था, वे सारी बातें श्रीजी स्वरूप ने भाई कंसरा को किस तरह फटकारकर स्मरण करायीं?

ज. ४- भोजन-लीला के पश्चात् अपने धनी श्री कृष्णजी के साथ सखियों ने रास लीला के दौरान अन्तर्ध्यान होने के कारण विषय में जो प्रश्न पूछे थे, वे प्रश्न भाई जयराम कंसरा को स्मरण कराते हुए श्रीजी स्वरूप ने कहा, "हे कंसरा! रास रमते-रमते बीच में अन्तर्ध्यान होकर बालाजी ने हमें जो दुःख दिया था, उसे याद करते हुए इस विषय में आपने किस तरह बालाजी से प्रश्न किए थे? बालाजी के पास जब हम सब एकत्रित होकर बैठे थे, तब आपने धनीजी के →

→ समय हमें जिस सुख का अनुभव हुआ, वह तो अवर्णनीय है। तत्पश्चात् हम सब सखियाँ परस्पर एक-दूसरे को स्नान कराने लगीं। इस प्रकार स्नान करने के पश्चात् जब हम सब श्री यमुनाजी के बाहर आये, तब हे कंसरा! हम लोगों ने अपने बालाजी को कहाँ बैठा हुआ पाया था? वे बातें याद करो! वह कौनसा आसन था? स्नान करने के पूर्व रास-रमण के दौरान पहने हुए जो वस्त्र हमने खोलकर श्री यमुनाजी के तट पर रखे थे, उन्हीं कपड़ों का आसन बनाकर प्रियतम बालाजी बड़े प्रेम से विराजमान हुए थे। हमारे प्रति बालाजी के उस प्रेम को तो स्मरण करो! जलक्रीड़ा तथा स्नान के बाद हम सब श्री यमुनाजी के तट पर लता-द्रुम-बेलियों की छाया के नीचे लम्बी दुहरी पंक्ति में क्यों बैठे थे? उस यमुना तट पर दुहरी पंक्ति में बैठकर एक-एक चौकी पर चार-चार सखियों ने किस तरह भोजन किया था? याद करो, किस तरह हम सखियों को प्रेम से भोजन आरोगाने के लिए सौ सखियों को साथ लेकर इन्द्रावती सखी खाना परोसने में संलग्न हुई थी? हम सबने कैसे प्रेम-भाव से भोजन-लीला की थी? भाई कंसरा! आप उक्त सभी लीलाओं को क्रमबद्ध स्मरण में लीजिए।"

→ आगे प्रश्न रखा था कि हे बालाजी! रास रमते-रमते रंग में भंग करके अन्तर्ध्यान होकर आपने हमें विरह का दुःख क्यों दिया? उस समय का दुःख बारम्बार हमारे हृदय में उमड़-उमड़कर आता है। अतः आप जवाब दीजिए कि आपने ऐसा क्यों किया? तब हमारी शंका का सुन्दर बचनों में प्रेमपूर्वक समाधान करते हुए हमारे बालाजी ने हमें क्या जवाब दिया था? हे कंसरा! याद करो!! बालाजी ने कहा था कि हे मेरी प्यारी सखियों! मैं तो वृन्दावन छोड़कर अन्यत्र कहीं गया ही नहीं। रास रमते-रमते एक वृक्ष हमारे आड़े आ गया था। उस एक क्षण मात्र में कई युग व्यतीत हो गये हों, ऐसा तुम लोगों को लगा। किंतु यह सब प्रेम के कारण हुआ। तुम लोगों ने तो अपनी दशा बयान कर दी। अब मेरी हालत क्या हुई, सुनो! जब मैं वृन्दावन में था और मुझे तुमसे मिलने की इच्छा हुई, उस वक्त कटि से वंशी निकालकर मुख में लेकर बजाने में जितना समय →

लगा, उतने में तो मुझे ऐसा लगा कि मानो कई कल्प व्यतीत हो गए हों। यही तो है, प्रेम की रीत! क्षण मात्र समय बड़ा लम्बा लगने

स. ५- उक्त बातों के पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम कंसरा के आगे इस तीसरे-जागनी के ब्रह्माण्ड की रचना के कारण को स्पष्ट करते हुए किस तरह उन्हें फटकारकर स्मरण करने को कहा?

ज. ५- उक्त बातों के पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने भाई जयराम कंसरा से कहा, "हे भाई कंसरा! याद करो!! रास-रमण समाप्त होने के बाद जब विरह-विलास की बातें पूरी हुईं, तब हमें प्रियतम परमात्मा श्री कृष्ण ने कैसे परमधाम में जागृत होने की आज्ञा दी थी और तत्पश्चात् स्वप्नवत् संसार किस तरह भंग हो गया था? पुनः ब्रज और रास लीला के बाद भी जब हमारे दिल में असत्, जड़, दुःखरूपी खेल देखने की चाहना शेष रह गई थी अर्थात् ब्रज और रास-इन दोनों ब्रह्माण्डों में स्वातसी और राजसी सखियों की खेल देखने की चाहना तो पूरी हुई, किंतु हम छः हजार तामसी सखियों की अधूरी चाहना को किस तरह हमारे धामधनी ने रास-रमण लीला करके उठते ही

स. ६- श्रीजी स्वरूप द्वारा भाई जयराम कंसरा को जाति स्मरण एवम् बोध कराने हेतु की गई चर्चा का वहाँ के सुन्दरसाथ पर क्या असर हुआ?

ज. ६- दीव बंदर में श्रीजी स्वरूप द्वारा भाई जयराम कंसरा को जाति स्मरण एवम् बोध कराने हेतु की गई चर्चा के रस में श्रोताओं को जो आनन्द आया, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। श्रोतागण चर्चा में इतने तल्लीन हो गए कि श्रोता और वक्ता दोनों को ही समय की कुछ खबर नहीं पड़ी। सबके हृदय में प्रेम उमड़ आया। आत्मा में आत्मज्ञान की रोशनी इतनी बढ़ चली कि सबके अन्दर आत्मीय सम्बन्ध का प्रेम-भाव उमड़ पड़ा। वहाँ चर्चा सुनने आनेवाले

→ लगता है। एक क्षण में कई युग अथवा कई कल्प व्यतीत हो जाते हैं, ऐसा लगने लगता है।"

→ हमारी परात्मा द्वारा जान लिया था? हे भाई कंसरा! क्या आपको इन बातों की जानकारी है? अपनी आपबीती लीलाओं को आप याद कर लीजिए।

हमारी और आपकी इसी अधूरी चाहना के कारण यह तीसरा-जागनी का ब्रह्माण्ड रचना पड़ा। जागनी का ब्रह्माण्ड रचने का मूल कारण छः हजार तामसी सखियों की खेल देखने की चाहना अधूरी रह जाना ही है। अपनी इसी चाहना को निर्मूल करने के लिए ही हम और आप अर्थात् हम १२,००० ब्रह्मात्माएँ दूसरी बार इस तीसरे ब्रह्माण्ड में आई हैं। हे भाई कंसरा ! जिन त्रिगुणादि देवों द्वारा हमारे धनी श्री राजजी का हुकम इस सृष्टि का संचालन करवाता है, वे त्रिगुणादि देव तो आपके हाथ के खिलौने* - कठपुतली हैं और आप तो उन पूर्णब्रह्म अक्षरातीत श्री कृष्ण-श्री राजजी की अंगना हो। मैंने आपको आपकी आपबीती बातें क्रमशः बता दीं, जिससे कि विस्मृत हुई बातें पुनः आपके स्मृतिपटल पर अंकित हो आएँ। अतः आप इन आपबीती लीलाओं पर अच्छी तरह विश्वास करके इन्हें अपने स्मृतिपटल पर लाने की कोशिश क्यों नहीं करते?"

→ श्रोताओं के अहोभाग्य की सराहना कौन कर सके? यह नश्वर जिह्वा तो इस विषय में बिलकुल असमर्थ है।

---

* अहं ब्रह्मारहं विष्णुः शिवोऽहमितिमोहिता ।
न जानीमो वयं धातः परं वस्तु सनातनः ।।
-(देवी भागवत)।

भावार्थ :- मैं सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, सबका उत्पत्तिकर्ता हूँ और मैं विष्णु प्रकृति की व्यवस्था तदोगत बनाये रखने के लिए पालनकर्ता हूँ तथा मैं संहारकर्ता शिव हूँ। इस प्रकार हम सभी माया में मोहित हैं। अतः हमसे भी परे जो सनातन ब्रह्म हैं, वे हमारे सृजक होते हुए भी हम उन्हें नहीं जानते हैं।

स. ७- श्रीजी स्वरूप दीव बंदर कब आए थे और वहाँ कितने समय रहे?

ज. ७- श्रीजी स्वरूप अहमदाबाद से दीव बंदर वि. सं. १७२२ में पधारे →

स. ८- दीव बंदर के लोगों को श्रीजी की चर्चा कैसी लगी?

ज. ८- दीव बंदर में भाई जयराम कंसरा के घर में नित्य प्रति धूमधाम से चर्चा होती रही। श्रीजी द्वारा निःस्वार्थ आत्महितार्थ की हुई चर्चा की महिमा के विषय में श्रोतागण कहने लगे कि ऐसी रसमयी चर्चा न कभी किसी →

स. ९- दीव बंदर के श्रोताओं ने श्रीजी की चर्चा का लाभ किस प्रकार लिया?

ज. ९- दीव बंदर के श्रोताओं को श्रीजी स्वरूप की आत्मीय चर्चा इतनी मीठी लगी कि वे घर से भाग-भागकर आते थे, परंतु चर्चा से वापस घर जाना ही नहीं चाहते थे। श्रीजी द्वारा की हुई मधुर →

स. १०-दीव बंदर में दज्जालों ने कैसा शोर मचाया?

ज. १०- दीव बंदर में हो रही रसदार चर्चा के आनन्द को भंग करने के लिए कलियुगी वृत्तिवाले विघ्न पहुँचाने के लिए उठ खड़े हुए। कुवृत्तिवाले दज्जालों ने अपनी ताकत के अनुसार कोशिश तो →

स. ११-दीव बंदर में दज्जालों ने सुन्दरसाथ के दिल में कैसी खलबली मचा दी?

ज. ११- चुगलखोर की बातें सुनकर दीव बंदर के सुन्दरसाथ सोचने लगे, "अब क्या करें? पकड़े जायेंगे, तो क्या होगा?" सुन्दरसाथ में से →

स. १२-दो साल के अन्तराल में दीव बंदर में कितनी और कैसी-कैसी आत्माएँ धर्म में शामिल हुईं?

→ थे। दीव बंदर में सुन्दरसाथ की आत्म-जागृति करते-करते दो साल व्यतीत हुए। अतः श्रीजी स्वरूप दीव बंदर में वि. सं. १७२२ से वि. सं. १७२४ तक अर्थात् दो साल रहे।

→ ने की थी और न कोई सुन ही पाया था। इस चर्चा का पूरे शहर में इतना शोर पड़ा कि शहर में हर जगह श्रीजी और उनकी चर्चा का समाचार फैल गया। सभी लोग कहने लगे, "अरे! महात्माजी स्वयं तो अलौकिक हैं ही, चर्चा भी अलौकिक ही करते हैं।" इस प्रकार यह चर्चा सुनने हेतु लोग चारों ओर से भाग-भागकर आने लगे।

→ और रसदार चर्चा द्वारा सबके अन्तर पट खुल जाते थे। लोग अपने भाग्य की सराहना करते हुए कहते थे, "अरे! यह तो हमारे पूर्व जन्म के शुभ कर्मों के फल का प्रताप है कि हमें यहाँ ऐसी चर्चा सुनने का सौभाग्य मिला।" इस प्रकार श्रोतागण दिन-प्रतिदिन दुगुनी मात्रा में चर्चा का लाभ लेने लगे।

→ की, परंतु उनकी एक न चली। विरोधियों ने एक व्यक्ति को बहकाकर राजदरबार में चुगली लगाने के लिए तैयार किया। इस प्रकार चर्चा में आनेवाले श्रोताओं को डिगाने की बहुत कोशिशें कीं, परंतु उनकी सारी कोशिशें नाकामयाब रहीं।

→ कितनों ने तो चर्चा में आना ही छोड़ दिया। कितने वह गाँव छोड़कर दूसरे गाँव में अपने सगे-सम्बन्धियों के घर चले गए। किन्तु जिन्हें अपनाए हुए सद्धर्म के प्रति दृढ़ विश्वास था, वे भयभीत नहीं हुए। इस प्रकार सुन्दरसाथ के बीच बड़ी भारी खलबली मच गई।

ज. १२- दीव बंदर में लगभग पचास-साठ निसबती आत्माएँ श्री निजानन्द सम्प्रदाय-श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पर समर्पित होकर धर्म में शामिल हुईं। अन्य आत्माओं का तो पार ही नहीं है।

स. १३-दीव बंदर में आये हुए सुन्दरसाथ में से किन्हीं आठ-दस मुख्य सुन्दरसाथ के नाम पेश कीजिए।

ज. १३- दीव बंदर में श्री निजानन्द सम्प्रदाय-श्री कृष्ण प्रणामी धर्म में →

स. १४-"ए आये मेरे दुस्मन"-ऐसा कौन, किससे और क्यों कह रहे हैं?

ज. १४- *"ए आये मेरे दुस्मन"* -ये बातें दीव बंदर के धार्मिक कथाकार अथवा पण्डित लोग श्रीजी के प्रति कह रहे हैं क्योंकि श्रीजी स्वरूप के प्रति वे दुश्मन की दृष्टि रखते थे। इन कथाकारों-पण्डितों के →

स. १५-उक्त कलियुगरूपी दज्जालों के भयभीत होकर काँपने का कारण क्या था?

ज. १५- दीव बंदर में झूठे कलिकाल ग्रस्त स्वार्थी, पेटार्थु, थोथा-ज्ञान बघारकर पेट पालनेवाले पण्डित आदि जो भी व्यासासन पर बैठकर →

❖ ब्रह्ममुनियों की रक्षा ❖

स. १- दीव बंदर में सुन्दरसाथ पर आई हुई आपत्ति को देखकर श्री राजजी ने उन पर कैसी मेहेर की?

ज. १- दीव बंदर में नगर के ईर्ष्यालु कथाकारों ने चुगलखोर के माध्यम से जब सुन्दरसाथ को आपत्तियों के चंगुल में फँसाने की →

स. २- दीव बंदर में व्यासासन पर बैठे कथाकारों अथवा पण्डितों को प्रश्न कौन पूछते थे, जिसके कारण वे शान्ति धारण करके चुपचाप बैठ नहीं सके?

→ शामिल हुए सुन्दरसाथ में से मुख्य हैं-जीवा, जयराम भाई, रतनबाई, गणेश भाई, गंगादास, नरसिंहदास, गुवालजी, गरीबदास, वीरबाई, तेजबाई, गेहलबाई, चंपाबाई, सुहासन, बेलबाई और बालबाई आदि।

→ कथा-मण्डान के श्रोताओं को अब श्रीजी की चर्चा में रुचि आने लगी, जिससे उनका चर्चा-मण्डान खाली हो गया। अतः अपनी चर्चा-मण्डान के रक्षार्थ वे श्री प्राणनाथजी को अपना दुश्मन समझकर राजदरबार में उनकी चुगली लगाने का उपाय करने लगे। परन्तु उनका जोर न चला और वे हाथ पटककर पछताते ही रह गए।

→ स्वार्थपूर्ण चर्चा सुनाते थे, वे सब श्रीजी की चर्चा का प्रभाव और उनकी महिमा का गुणगान सुनकर भयभीत होकर काँपने और पछताने लगे क्योंकि उन्हें लगने लगा कि अब उनके झूठ पर से पर्दा उठ जाएगा अर्थात् आत्म-जागृति करनेवाले ज्ञान के आगे झूठ का जोर न चल पाने पर कलियुगरूपी दज्जाल डर गया।

-(प्रकरण २१, सवाल-जवाब नं. १५, कुल सं. ७०६+१५=७२१)।

❖ ब्रह्ममुनियों की रक्षा ❖

→ जालसाजी की, तब श्री राजजी ने दरबार में जाते हुए चुगलखोर को वास्तविकता समझाकर वापस लौटा दिया, जिससे चुगलखोर चुगली नहीं लगा सका। अतः वह आपत्ति आयी ही नहीं, जो षड्यन्त्रकारी कथाकारों ने सोची थी।

ज. २- दीव बंदर में व्यासासन पर बैठे कथाकारों अथवा पण्डितों को प्रश्न पूछनेवाले कोई दूसरे नहीं, बल्कि उनकी ही कथा-चर्चा सुनते आये श्रोतागण थे। श्रीजी स्वरूप की चर्चा-कथा सुनकर जब वे श्रोतागण समझदार बन गए, तब वे उक्त कथाकारों के →

→ चर्चा-मण्डान में श्रोता बनकर बैठ जाते और बीच में ही प्रश्न पूछ बैठते। उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों का जवाब जब उन पण्डितों-कथाकारों को नहीं आता था, तब सबके सामने अपनी इज्जत बचा पाना उनके लिए बड़ा मुश्किल हो जाता था। किंतु तब वे "यह वस्तु तुम्हें कहाँ मिली, मुझे भी वहाँ ले चलो" - ऐसा कहने →

स. ३- "अपने कथा-मण्डान में आनेवाले श्रोता ही हमें प्रश्न पूछकर लाजवाब बना देते हैं। अब हमें क्या करना चाहिए?" इस प्रकार की परिस्थिति सामने आने पर दीव बंदर के कथाकारों ने क्या षड्यंत्र रचा?

ज. ३- दीव बंदर के वक्ताओं के कथा-मण्डान में जब उक्त परिस्थिति आ गई, तब सभी कथाकारों ने सलाह-मशविरा कर श्रीजी साहेबजी को ही दीव बंदर से भगाने की ठान ली। उन्होंने वैसों →

स. ४- क्या वह चुगलखोर तुरन्त ही चुगली लगाने चल पड़ा?

ज. ४- नहीं! चुगलखोर ने कथाकारों से वैसे तो पहले ही ले लिये, किंतु वैसे लेने के कई दिनों अर्थात् दस-पन्द्रह दिनों के पश्चात् चुगलखोर →

स. ५- राजदरबार में चुगली लगाने जाते समय चुगलखोर किस गति से जा रहा था?

ज. ५- चुगलखोर बड़े सबेरे ही चुगली लगाने राजदरबार की ओर निकल →

स. ६- राजदरबार पहुँचते-पहुँचते चुगलखोर को कैसे, किस भेष में पुनः कौन मिला?

ज. ६- राजदरबार के पास पहुँचते-पहुँचते राजदरबार से ही निकलकर →

स. ७- पादरी भेषवाले व्यक्ति ने चुगलखोर को रोककर क्या पूछा?

→ के बदले "मेरी बिल्ली मुझे ही म्याऊँ" - ऐसा सोचकर दुःखी हो जाते थे। इसी कारण वे चुपचाप नहीं रह सके। उन्होंने श्रीजी के प्रति बैर दृष्टि रखते हुए एक चुगलखोर की तलाश की। आगे-पीछे, सोचे-समझे बिना ही वे श्रीजी को कष्ट पहुँचाने गए थे, परंतु कुछ नहीं कर पाये।

→ का लालच दिखाकर एक चुगलखोर को तैयार किया और उससे कहा, "तुम राजदरबार जाकर यह प्रार्थना-पत्र राजा को देकर कहना कि दीव बंदर में एक नये महात्मा आये हैं, जो सभी देवी-देवताओं की खण्डनी करते हैं। उसमें भी भगवान ईसा और ईसाई धर्म के पीछे तो हाथ धोकर पड़े हैं। मात्र इतना कहने के लिए हम तुम्हें हजार रुपये देंगे।" इस प्रकार उक्त षड्यंत्रकारी कथाकारों ने श्रीजी पर धर्मद्रोही, धर्म-निन्दक होने का आरोप लगाकर श्रीजी साहेबजी को दीव बंदर से निकालने का प्रबन्ध करने का निश्चय किया।

→ ने मन में विचार किया, "मुझे नमक का सीधा तो करना ही पड़ेगा।" अतः दस-पन्द्रह दिनों के पश्चात् चुगलखोर राजदरबार में चुगली लगाने गया।

→ पड़ा, जिससे उस पर किसी की नजर न पड़े। परंतु उसकी चाल निराली ही थी। वह पाँच कदम आगे दौड़ता, फिर पीछे फिरकर देखता। पुनः पाँच कदम आगे दौड़ता, फिर पीछे मुड़कर देखता। इस प्रकार भागते-भागते वह राजदरबार के पास पहुँच गया।

→ ईसाई पादरी के समान एड़ी तक का लम्बा सफेद जामा पहने हुए एक व्यक्ति चुगलखोर के सामने आ खड़ा हुआ। वह व्यक्ति श्री राजजी के जोश का स्वरूप था।

ज. ७- पादरी भेषवाले व्यक्ति ने चुगलखोर को रोककर पूछा, "अरे भाई! आप इतने सबेरे इस गति से भागते-भागते कहाँ जा रहे हैं?"

स. ८- उक्त प्रश्न के जवाब में चुगलखोर ने क्या कहा?

ज. ८- उक्त प्रश्न के जवाब में चुगलखोर ने उस व्यक्ति से कहा, "मैं राजदरबार में प्रार्थना दर्ज कराने जा रहा हूँ , क्योंकि हमारे दीव →

स. ९- चुगलखोर की बातें सुनकर उस व्यक्ति ने चुगलखोर से क्या कहा?

ज. ९- चुगलखोर की बातें सुनकर उस व्यक्ति ने चुगलखोर से कहा, "अरे भाई! उन महात्मा कथाकार के मुख से देवी-देवता और →

स. १०-"नहीं उन साधु सों पहिचान" - उक्त बात किसने, किससे और कब कही?

स. ११-पुनः चुगलखोर ने उस व्यक्ति से साधु-महात्मा से मिलन के विषय में क्या कहा?

ज. ११- चुगलखोर ने पादरी भेष में सामने आनेवाले व्यक्ति से कहा, →

स. १२-चुगलखोर की बातें सुनकर उस व्यक्ति ने चुगलखोर से क्या कहा?

ज. १२- चुगलखोर की बातें सुनने के पश्चात् उस व्यक्ति ने चुगलखोर से कहा, "आप अपनी आँखों से देखे बिना ऐसा भयंकर पाप →

स. १३-"तो क्या हाल तुम्हारा होवहीं "- उक्त वाक्य किसने और किससे कहा है?

ज. १३- *"तो क्या हाल तुम्हारा होवहीं "*- उक्त वाक्य पादरी के भेष में →

→ बंदर में एक नए कथाकार आये हैं। वे कथा-चर्चा के बहाने सभी देवी-देवताओं की निन्दा करते हैं। विशेषकर ईसाई धर्म के पीछे तो वे हाथ धोकर पड़े हैं। उनके द्वारा कहे गये निन्दनीय बचन तो सुनते भी नहीं बनते।"

→ ईसाई धर्म की निन्दा क्या आप ने स्वयं अपने कानों से सुनी है? न आपने उन महात्मा के दर्शन किये हैं और न उनकी चर्चा ही सुनी है। तो कहीं आप किसी के बहकावे में आकर सुनी-सुनाई बातों के पीछे तो नहीं दौड़ रहे हैं?"

ज. १०- *"नहीं उन साधु सों पहिचान"*- यह कथन चुगलखोर ने पादरी भेष में आए हुए व्यक्ति से तब कही, जब उस व्यक्ति ने चुगलखोर से पूछा, "क्या आपने उन महात्मा के दर्शन किये हैं अथवा उनके द्वारा कथा श्रवण की है?"

→ "आपकी बातें सही हैं। मैं किसी की कही-सुनी बातें लेकर ही जा रहा हूँ। मैंने न उन महात्मा के मुख से कभी चर्चा सुनी है और न उनके पास जाकर कभी उनके दर्शन ही किये हैं। मैं तो कभी उन कथाकार से मिला तक नहीं हूँ।"

→ करने क्यों जा रहे हैं? ये पुर्तगाली-फिरंगी गोरे लोगों का कानून बड़ा अत्याचारी होता है। आपकी शिकायत सुनते ही वे उस पर अमल करने लगेंगे और निर्दोष साधु-महात्मा को कष्ट पहुँचायेंगे। यदि दुःखी महात्मा के मुख से हाय निकल जायेगी, तो वह हाय किसे लगेगी? आप यह बहुत ही बुरा कार्य करने जा रहे हैं। अतः जरा सोच लें। महात्मा की हाय आपको महंगी पड़ सकती है।"

→ दर्शन देनेवाले व्यक्ति (जोश के स्वरूप) ने चुगलखोर से कहा, जिसका तात्पर्य है कि गलत कार्य करने के पश्चात् हमारे मन में कुछ ग्लानि और संताप तो अवश्य ही होता है और उसी में हम जल मरते हैं।

स. १४-पादरी भेषवाले व्यक्ति की बातें चुगलखोर को कैसी लगीं?

ज. १४- पादरी भेषवाले व्यक्ति द्वारा सूचित भविष्य-वचन चुगलखोर →

स. १५-"फेर देखे तो उत ना पावहीं" अर्थात् पीछे फिरकर किसने और क्या देखा तथा क्या पाया और क्यों?

ज. १५- उक्त बातें समझाकर वह पादरी के भेष में दर्शन देनेवाला व्यक्ति तो चला गया। चुगलखोर ने तुरन्त ही पीछे फिर कर देखा, तो →

स. १६- "खाड़ी गये उतर" अतः कौन खाड़ी उतर गये? पुनः सुन्दरसाथ में हलचल क्यों मच गई?

ज. १६- दीव बंदर के कुनीयती कथाकार, पण्डितों द्वारा फैलाई हुई चुगलखोर की अफवाही बातों से भयभीत सुन्दरसाथ में हलचल →

स. १७-इस हलचल के दौरान जब दीव बंदर के सुन्दरसाथ आपस में मिलते थे, तो कैसी बातें करते थे?

ज. १७- इस हलचल के दौरान जब दीव बंदर के सुन्दरसाथ परस्पर एक- →

स. १८-कौन श्री राजजी द्वारा ली गई इस परीक्षा की घड़ी में घबराये बिना निडर होकर रहे और क्यों?

ज. १८- श्री राजजी द्वारा ली गई इस परीक्षा की घड़ी में एक मात्र भाई →

स. १९-"दिखाए अजमाए इन" अर्थात् किसने, किसे और क्या दिखाते हुए आजमाया अथवा परीक्षा ली?

ज. १९- *"दिखाए अजमाए इन"* अर्थात् श्री राजजी ने सुन्दरसाथ-ब्रह्मात्माओं को खेल का प्रभाव, खेल की ताकत दिखाकर तीसरी →

→ को बहुत अच्छे लगे। उसके दिल को वे सदुपदेशरूपी वचन बड़े भले लगे। उसे यह सोचकर बड़ा सुख मिला कि वह झूठी शिकायत से बच गया तथा वह पूरी तरह सचेत हो गया।

→ *"फेर देखे तो उत ना पावहीं"* अर्थात् पाया कि वह व्यक्ति वहाँ नहीं है। तब सोचने लगा, "इतनी जल्दी वे कहाँ चले गये? देखते-देखते ही वे अदृश्य कैसे हो गये?" अतः चुगलखोर समझ गया, "अवश्य ही वे भगवान स्वरूप थे और मुझे बचाने आये थे।" वे जोश के स्वरूप वहाँ इसलिए नहीं मिले क्योंकि वे अन्तर्ध्यान हो चुके थे।

→ मच गई। अतः जो श्रोतागण श्रीजी साहेबजी की चर्चा श्रवण करने आते थे, वे *"खाड़ी गये उतर"* अर्थात् चारों ओर भागने लगे। कुछ लोग खाड़ी पार करके दीव बंदर की दूसरी ओर चले गये, जिससे कि वे फिरंगियों के पकड़ाव में न आ सकें।

→ दूसरे से मिलते थे, तो उनमें से कुछ लोग कहते थे, "हम तो कभी चर्चा में जाते ही नहीं थे।" कुछेक सुन्दरसाथ कहते थे, "अरे! हमने न तो आज तक कभी चर्चा सुनी ही है और न कभी सुनने जायेंगे ही।"

→ जयराम कंसरा और उनके घर के लोग ही दज्जाल से घबराये नहीं। वे निडर होकर डटे रहे क्योंकि उन्होंने अपनी आत्मा श्री राजजी के चरणों में समर्पित कर दी थी। वे अपने इश्क और ईमान के बलबूते पर निडर होकर खड़े रहे।

→ भोम के बचनों की याद दिलाते हुए आजमाया कि माया के विषय में श्री राजजी से तुमने तीजी भोम में क्या कहा था? "कहा करसी हमको माया"- ऐसा कहा था या नहीं? अब माया में आकर श्री राजजी के कहे प्रमाण सौ बार की जगह एक ही बार ली हुई परीक्षा में सुन्दरसाथ उत्तीर्ण नहीं हो पाये। खाड़ी उतर गये।

स. २०-निन्दक कथाकारों का मुँह काला होने का क्या कारण था-स्पष्ट करो?

ज. २०- "राजदरबार से जब पकड़ावा आयेगा, तब वह श्रोताओं सहित वक्ता को भी पकड़कर ले जायेगा"-ऐसा निश्चित कर उन →

स. २१-"भूल मानी भागते" अर्थात् किसने, किनके आगे भूल कबूल की और क्यों?

ज. २१- "भूल मानी भागते" अर्थात् हलचल के दौरान डर के मारे खाड़ी पार कर दूसरे गाँवों में अथवा सगे-सम्बन्धियों के पास चले जानेवालों ने श्रीजी साहेबजी के आगे उस समय डरकर भाग →

स. २२-अब इस घड़ी (समय) में श्रीजी साहेबजी क्या विचार करने लगे?

ज. २२- अब इस घड़ी (समय) में श्रीजी साहेबजी विचार करने लगे, "यहाँ जितनी आत्माओं की जागनी होनी थी, सब हो गयी। अब यहाँ →

स. २३-किस उपाय के लिए दीव बंदर में इस समय क्या अनहोनी हुई?

ज. २३- श्रीजी साहेबजी को दीव बंदर से निकालने के लिए ऊपरवाले ने →

स. २४-किसे छुड़ाने के लिए कौन, कहाँ से और कब निकल पड़े?

ज. २४- बन्धन में पड़े सुन्दरसाथ को अरबी डाकुओं से मुक्त कराने का →

स. २५-श्रीजी साहेबजी कहाँ-कहाँ होते हुए मांडवी (मंडई) बंदर पहुँचे? उनके साथ उस समय कौन भाई थे?

→ कथाकारों ने चुगलखोर तैयार किया था और कोलाहल मचा रहे थे, परन्तु वह सब मात्र झूठ साबित हुआ। ऐसा कुछ नहीं हुआ। अतः लज्जा के मारे निन्दकों के मुख पर कालिख लग गयी। सुन्दरसाथ पुनः पूर्ववत् ही चर्चा सुनने बैठने लगे और एक-दूसरे की नकल कर हँसी करने लगे।

→ जाने हेतु माफी माँगी। उन्होंने कबूल किया, "हम लोग ईमान के कच्चे रहे। आपका साथ छोड़कर हम बचने के लिए इधर-उधर भागते रहे, किंतु उलटे हम नादान साबित हुए। आपके साथ ही पकड़ाव में जाने की हिम्मत खोकर भाग जाने से क्या हम आपको छोड़कर धाम जा सकेंगे? ऐसे ईमान-विश्वास के आधार पर हम परमधाम कैसे जा सकेंगे? हमारी ऐसी अक्ल-बुद्धि को बारम्बार धिक्कार है।" इस प्रकार कहकर पछताने लगे।

→ रहना समय बरबाद करना ही होगा। मुझे यहाँ रहकर दीव बंदर का राज्य नहीं चलाना है। साकुण्डल और सकुमार को ढूँढ़ने का कार्य मुख्य है, जो यहाँ बैठे-बैठे नहीं होगा। यहाँ से कैसे निकलूँ? अलग-अलग स्थानों से ढूँढ़कर साथ को जगाना है। धाम की समस्त आत्माओं को एकत्रित करना है।"

→ एक उपाय सुझा दिया, जिससे यहाँ इस वक्त एक अनहोनी घटना घटी। वह विचित्र घटना यह थी कि अरबी डाकुओं ने दीव बंदर पर छापा मारा, जिसमें आठ-दस सुन्दरसाथ सहित श्री बाईज्यू भी बन्धन में पड़ गईं।

→ संकल्प लेकर श्रीजी साहेबजी दीव बंदर से चल पड़े। श्रीजी स्वरूप वि. सं. १७२२ में दीव बंदर आये थे और दो साल वहाँ रहकर वि. सं. १७२४ में वहाँ से चल पड़े।

ज. २५- श्रीजी साहेबजी बन्धन में पड़े सुन्दरसाथ को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते दीव बंदर से चलकर नबी, पोरबंदर, पाटन होते हुए आगे बढ़े। उक्त विभिन्न स्थानों में ऐसी असोच्य और भयंकर मोहजल की लहरें उठीं कि →

→ डकैतों की कहीं से कोई सूचना प्राप्त करने के कोई आसार नहीं दिखाई दे रहे थे। पाटन से पोरबंदर होते हुए श्रीजी कच्छ आये। →

स. २६-मांडवी बंदर में कौन धर्मप्रेमी सुन्दरसाथ रहते थे, जिनके घर में श्रीजी स्वरूप की पधरावनी हुई?

स. २७-प्रागमल भाई के घर में श्रीजी साहेबजी ने कैसी चर्चा की और क्यों?

ज. २७- प्रागमल भाई के घर में श्रीजी साहेबजी ने ज्ञानपूर्ण वचनों द्वारा अच्छी तरह सुन्दरसाथ को झकझोर कर उनकी मृततुल्य आत्मा को पुनः जागृत कर देनेवाली चर्चा की और कहा, "हे सुन्दरसाथजी! मायावी संसार में रहकर आप सबकी यह कैसी दुर्दशा हो गई है। →

स. २८-"ए काहू के रही है"- ऐसा किसने, किनसे तथा क्यों कहा?

ज. २८- *"ए काहू के रही है"*- ऐसा श्रीजी साहेबजी मांडवी बंदर के सुन्दरसाथ सहित प्रागमल भाई और कुंवरबाई को संबोधित करते →

स. २९-श्रीजी साहेबजी किन्हें संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि "तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये"?

ज. २९- प्रागमल भाई और कुंवरबाई-ये युगल दंपती मांडवी बंदर के सुन्दरसाथ समूह में अग्रगण्य थे। इसलिए इन अग्रणी प्रागमल भाई और कुंवरबाई को संबोधित करते हुए श्रीजी साहेबजी ने कहा, "अरे! आप दोनों को ऐसा नहीं करना चाहिए कि आप ब्रह्मात्माओं में होकर अपना मूल तीर्थस्थान श्री नवतनपुरी तथा गादीपति बिहारीजी को ही भूल जाओ। अपने अखण्ड धनी, →

→ इस समय उनके साथ थावर भाई भी हैं। इस प्रकार उक्त स्थानों से होते हुए श्रीजी साहेबजी मंडई (मांडवी) बंदर आ पहुँचे।

ज. २६- मांडवी बंदर में धर्मप्रेमी प्रागमल भाई और कुंवरबाई-ये युगल दंपती रहते थे। ये दोनों बड़े ही धर्मप्रेमी सुन्दरसाथ थे। ये दोनों सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के शिष्य-शिष्या थे।

→ अब तो अज्ञान की नींद से जागो। श्री परमधाम चलने की घड़ी आ गई है। कहाँ तक माया का खेल देखने के लिए आप सब संसार में पड़े रहेंगे?" ऐसी चर्चा श्रीजी स्वरूप ने वहाँ इसलिए की क्योंकि मांडवी बंदर में श्री सद्गुरु स्वरूप द्वारा जागृत अनेक सुन्दरसाथ रहते थे। वे सब श्री परमधाम की चर्चा एवम् चितवन तथा अपने मूल तीर्थस्थान को ही भूल चुके थे। माया के आकर्षक रूप के प्रति मनमोहित होकर वे माया में ही हिल-मिल गये थे। अतः उन्हें ज्ञान द्वारा पुनः जागृत करना अत्यंत आवश्यक था।

→ हुए कह रहे हैं। उनके उक्त कथन का तात्पर्य यह है, "अरे! यह ठगिनी मायावी सम्पदा जितनी भी बटोरी जाय, क्या किसी की होकर रही है? क्या कोई इन मायावी सम्पदाओं को साथ लेकर परलोक जा सका है? इस पर कैसे एतबार किया जा सकता है? इस माया में रहकर क्या आप सब भी जन्मते-मरते रहेंगे या धाम चलने की भी तैयारी करेंगे?"

→ तीर्थस्थान, अखण्ड धाम को विस्मृत कर, वहाँ की लीलाओं का ध्यान-सुमिरन छोड़कर अन्य मायावी मृगजल सदृश कार्यों में अपना अस्तित्त्व खो बैठना आपको शोभा नहीं देता? आप मुझे बताइये कि आप गादीपति बिहारीजी के दर्शन करने कितनी बार गये हो? आप जब तक वहाँ जाकर आत्मा समर्पित न करो, तब तक आपके लिए धाम दरवाजा बंद है। सद्गुरु के मूल शब्दों का स्मरण कीजिए कि सद्गुरु स्वरूप ने क्या बताया था? क्या आप लोगों को धाम नहीं जाना?"

स. ३०-श्रीजी साहेबजी मंडई बंदर में प्रागमल भाई और कुंवरबाई-इन युगल दंपती के घर कितने दिन रहे?

स. ३१-मंडई बंदर से श्रीजी साहेबजी बन्धन में पड़े लोगों को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते कहाँ गये?

स. ३२-कपाइये बंदर में कौन सुन्दरसाथ रहते थे? वहाँ श्रीजी साहेबजी कितने दिन रुके?

स. ३३-कपाइये बंदर में बड़े भाई-भाभी के घर में श्रीजी द्वारा कैसी चर्चा हुई?

स. ३४-श्रीजी साहेबजी किन-किन सुन्दरसाथ को जागृत करने के पश्चात् उन्हें समझाकर श्री बिहारीजी के दर्शन के लिए नवतनपुरी भेजते रहे?

स. ३५-बड़े भाई-भाभी को जागृत करने के पश्चात् श्रीजी स्वरूप कपाइये बंदर से कहाँ पहुँचे?

स. ३६-भूजनगर में कौन सुन्दरसाथ रहते थे, जिनके घर श्रीजी उतरे? पुनः भूजनगर में श्रीजी साहेबजी कितने दिन रहे?

स. ३७-श्रीजी द्वारा वैराग्यपूर्ण वचनों से की हुई चर्चा भूजनगर के श्रोताओं को कैसी लगी?

ज. ३०- श्रीजी साहेबजी मंडई बंदर में प्रागमल भाई और कुंवरबाई के घर में केवल एक ही दिन रहे और वहाँ मृतक समान पड़ी ब्रह्मात्माओं को तारतम ज्ञानामृत पिलाकर पुनः जीवित किया।

ज. ३१- मांडवी बंदर से बन्धन में पड़े लोगों की खबर पूछते-पूछते श्रीजी स्वरूप कपाइये बंदर की ओर चले गए।

ज. ३२- कपाइये बंदर में श्रीजी साहेबजी के ही बड़े भाई-भाभी श्री हरिवंश ठाकुर और मेघबाई रहते थे। उन्हें परमधाम सम्बन्धी आत्मा जानकर श्रीजी साहेबजी उनके निवास स्थान पर एक दिन ठहरे।

ज. ३३- कपाइये बंदर में बड़े भाई-भाभी के घर में खण्डनीपूर्ण वचनों द्वारा चर्चा करते हुए श्रीजी साहेबजी ने अपने भाई-भाभी सहित अन्य आत्माओं के दोषों पर प्रकाश डाला और तारतम ज्ञान द्वारा उनके मन की मलिनता को दूर किया।

ज. ३४- जागनी अभियान के दौरान श्रीजी साहेबजी ऐसे-ऐसे सुन्दरसाथ को, जो सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी द्वारा जागृत हैं, तीर्थस्थान श्री नवतनपुरी और सद्गुरु स्वरूप श्री बिहारीजी का महत्त्व समझाकर उन्हें पुनः जागृत कर गादीपतिजी के चरणों के दर्शनार्थ भेजते रहे।

ज. ३५- कपाइये बंदर स्थित अपने बड़े भाई और भाभी को समझाकर उन्हें श्री नवतनपुरी भेजने का अपना काम तमाम करने के पश्चात् भाई और भाभी से विदा लेकर श्रीजी साहेबजी सीधे कच्छ-भूजनगर स्थित हरिदासजी के पुत्र वृन्दावन भाई के निवास स्थान पर पहुँचे।

ज. ३६- भूजनगर में गुरु हरिदासजी के पुत्र वृन्दावन भाई रहते थे। श्रीजी साहेबजी उनके ही घर पधारे। वहाँ भी उनके आगमन से वृन्दावन भाई अति प्रसन्न एवम् प्रेम-विह्वल हो उठे। भूजनगर में श्रीजी साहेबजी सिर्फ दो दिन रहकर निकल गये।

ज. ३७- भूजनगर के सुन्दरसाथ के बीच श्रीजी के मुख से हृदयस्पर्शी शब्दों में की हुई चर्चा तथा सुन्दरसाथ के दुर्गुणों के लिए की गई भर्त्सना सुनकर भूजनगर के सुन्दरसाथ मर्माहत हुए। श्रीजी स्वरूप →

→ उन्हें पूर्ण वैराग्य की स्थिति में लाना चाहते थे। इसलिए ज्ञानमय →

स. ३८-श्रीजी साहेबजी ने चर्चा द्वारा सुन्दरसाथ के मन की मलिनता को दूर कर दिया। अतः सुन्दरसाथजी के मन में कैसी मलिनता थी?

ज. ३८- श्रीजी ने भूजनगर में की हुई चर्चा में सुन्दरसाथ को अपनी →

स. ३९-"बड़ा सुख पाया इन समै" अर्थात् कहाँ के सुन्दरसाथ ने चर्चा के माध्यम से बड़ा सुख प्राप्त किया?

स. ४०-भूजनगर से कहाँ-कहाँ होते हुए श्रीजी साहेबजी ठट्ठा नगर स्थित नाथा जोशी के घर पहुँचे?

ज. ४०- श्रीजी साहेबजी कच्छ-भूजनगर स्थित वृन्दावन भाई से विदा →

स. ४१-किनसे मिलते ही किनके अंदर के सांसारिक त्रिताप मिट गये?

स. ४२-"कौन भाग हैं हम"- इस प्रकार कहते हुए कौन अपने भाग्य की सराहना करने लगे और क्यों?

→ शब्दों के प्रयोग द्वारा बारम्बार उन्हें चोट पहुँचाने का उपाय करते थे। श्रीजी की चर्चा वहाँ के श्रोताओं को अत्यन्त ही मीठी लगी।

→ विभिन्न यात्राओं का संक्षिप्त ज्ञान करा दिया। सुन्दरसाथ को उन्होंने उनकी भूलों के प्रति सावचेत किया। धर्म विषयक उनके मन में जो भी शंका-उपशंकाएँ थीं, वे सभी शंका-उपशंकाएँ दीव बंदर के सुन्दरसाथ की वृद्धि की बातें सुनाकर दूर कर दीं। इस प्रकार मन की मलिनता दूर हो जाने से वृन्दावन भाई ने बड़े सुख का अनुभव किया।

ज. ३९- *"बड़ा सुख पाया इन समै"* अर्थात् कच्छ-भूजनगर स्थित श्री वृन्दावन भाई के घर की चर्चा में उपस्थित सुन्दरसाथ ने चर्चा के माध्यम से अवर्णनीय सुख का अनुभव किया।

→ लेकर नलिया पहुँचे। नलिया से चलकर नाथा जोशी के घर जाने के लिए श्रीजी का ठट्ठा नगर में आगमन हुआ। इस प्रकार श्रीजी स्वरूप ठट्ठा नगर स्थित नाथा जोशी के घर पहुँच गए।

ज. ४१- श्रीजी साहेबजी से मिलते ही ठट्ठा नगर स्थित धर्मप्रेमी नाथा जोशी भाई के दुस्तर संसार सागर के त्रितापरूपी सारे दुःख एवम् संताप मिट गये। वे अपनी आत्मा में परमानन्द का अनुभव करने लगे।

ज. ४२- *"कौन भाग हैं हम"*- इस प्रकार कहते हुए नाथा जोशी भाई अपने भाग्य को सराहने लगे। पुनः कहने लगे, "मैंने किस जन्म में न जाने क्या शुभ कर्म किये थे, जिसके फलस्वरूप अपने मुबारक चरण रखने के लिए श्रीजी साहेब स्वरूप मेरे घर पधारे।" इस प्रकार वे अपने-आप को अहोभाग्यशाली मानने लगे।

-(प्रकरण २२, सवाल-जवाब नं. ४२,कुल सं. ७२१+४२=७६३)।

❖ ठट्ठा नगर वृत्तान्त ❖

स. १- श्रीजी साहेबजी ठट्ठा स्थित नाथा जोशी के घर सर्वप्रथम कितने दिन रहे और वहाँ कैसी चर्चा की?

ज. १- श्रीजी साहेबजी भाई नाथा जोशी के घर पधारकर ठट्ठा के सुन्दरसाथ को उनकी आपबीती बातें याद कराते हुए कहने लगे, "धामधनी →

स. २- नाथा जोशी के घर दस-बारह दिन रहने के पश्चात् श्रीजी साहेबजी ठट्ठा नगर से लाठी बंदर क्यों गये?

ज. २- ठट्ठा नगर स्थित नाशा जोशी के घर दस-बारह दिन रहने के पश्चात् →

स. ३- लाठी बंदर में श्रीजी स्वरूप को कौन भाई मिले? उस समय श्रीजी साहेबजी लाठी बंदर में कहाँ विराजमान थे?

स. ४- श्रीजी साहेबजी लाठी बंदरगाह से नाव में बैठकर कहाँ जाने के लिए निकले और क्यों ?

स. ५- सत्रह दिन तक चले समुद्री तूफान के कारण क्या हुआ और तत्पश्चात् नाव किस ओर चल पड़ी?

ज. ५- जब श्रीजी साहेबजी लाठी बंदर से मसकत जाने के लिए नाव में →

स. ६- उक्त घटना अर्थात् नाव के सही दिशा में न चलने की वजह के विषय में श्रीजी स्वरूप ने क्या विचार किया और उक्त विचार कर श्रीजी साहेबजी किस ओर चल पड़े? तत्पश्चात् कौनसी घटना हुई?

❖ ठट्ठा नगर वृत्तान्त ❖

→ प्रियतम ने ही आपको इस नश्वर ब्रह्माण्ड का खेल दिखाया है और आप सब यहाँ खेल देखने के लिए आए हैं, न कि खेलने के लिए। अतः आप सब अपनी आपबीती बातों का स्मरण कीजिए।" इस प्रकार की चर्चा-कथा के माध्यम से सुन्दरसाथ को सावचेत करते हुए श्रीजी स्वरूप ठट्ठा नगर स्थित नाथा जोशी के घर सर्वप्रथम दस-बारह दिन रहे।

→ अरबी डाकुओं के छापे में पड़े सुन्दरसाथ का पता लगाने के ध्येय से श्रीजी साहेबजी ठट्ठा से लाठी बंदर जाने के लिए चले क्योंकि उन्हें लाठी बंदर से नाव में बैठकर मसकत जाना था।

ज. ३- लाठी बंदर में श्रीजी स्वरूप को बिश्वनाथ भाई मिले। उस समय श्रीजी साहेबजी लाठी बंदर स्थित देवे भाई की दुकान में बिराजमान थे। देवे भाई ने बड़े आदर-सत्कार के साथ उन्हें वहाँ उतारा था।

ज. ४- श्रीजी साहेबजी लाठी बंदरगाह से नाव में बैठकर बंधन में पड़े अपने साथियों की खोज के लिए समुद्र पार कर मसकत जाने के लिए निकले।

→ चढ़े, तब नाव कुछ दूर जाकर ही रुक गयी। ऐसा तूफान उठा कि नाव सत्रह दिन तक समुद्र में ही रुकी रही। तत्पश्चात् परमात्मा की कुछ ऐसी आज्ञा हुई कि नाव पुनः लाठी बंदर के किनारे लौट आई।

ज. ६- उक्त घटना अर्थात् सत्रह दिन तक तूफान के चलने और नाव के पुनः लाठी बंदर के किनारे लौट आने की वजह के विषय में श्रीजी साहेबजी ने यह विचार किया, "अभी मेरे लिए समुद्र पार कर मसकत जाने के लिए श्री राजजी की आज्ञा नहीं है। शायद ठट्ठा में कुछ कार्य शेष रह गया है।" ऐसा सोचकर वे नाव से उतर गए और ठट्ठा →

→ नगर की ओर चल पड़े। दस-पन्द्रह कदम ही चले थे कि अचानक हवामान अनुकूल हो गया और नाव देखते ही देखते आगे निकल →

स. ७-विश्वनाथ भाई ने श्रीजी को किस विषय की क्या सूचना दी?

ज. ७- विश्वनाथ भाई ने श्रीजी साहेबजी को बन्धन में पड़े लोगों के समाचार →

स. ८-जिन्दादास भाई और ठाकुरीबाई कौन हैं? दूसरी बार ठट्ठा में सर्वप्रथम धर्म में कौन शामिल हुए?

ज. ८- जिन्दादास भाई और ठाकुरीबाई ठट्ठा नगर के रहनेवाले थे। श्रीजी साहेबजी जब प्रथम बार ठट्ठा में दस-बारह दिन रहकर गए थे, तब उक्त दोनों जनों को श्रीजी के आगमन के विषय में पता नहीं चला →

स. ९-ठट्ठा नगर स्थित नाथा जोशी के घर में दूसरी बार कैसी चर्चा होने लगी?

ज. ९- दूसरी बार जब श्रीजी साहेबजी ठट्ठा नगर पधारे, तब पुनः वहाँ चर्चा का प्रवाह बह चला। श्रीजी साहेबजी आवेश में भरकर चर्चा →

स. १०-"सोर पड़ा सहर में" अर्थात् जब ठट्ठा नगर के कोने-कोने में चर्चा विषय की बातें पहुँचने लगी, तब वहाँ श्रोतागण किस तरह आने लगे?

ज. १०-*"सोर पड़ा सहर में"* अर्थात् जब ठट्ठा नगर के कोने-कोने में →

स. ११-जो कोई भी आकर श्रीजी की चर्चा सुनते थे, चर्चा सुनने के पश्चात् उनके मुख से क्या निकलता था?

ज. ११-आम लोगों के अलावा अनेकों साधु-संत भी श्रीजी की ख्याति अथवा →

→ गयी। अतः श्रीजी साहेबजी लाठी बंदर से वापस लौटकर ठट्ठा नगर स्थित नाथा जोशी के घर आ गये।

→ के विषय में सूचित करते हुए कहा, "बन्धन में पड़े लोगों की खबर ठीक है। चिन्ता करने की बात नहीं है। हम लोग जिस विषय में चिन्तित हैं, वैसा कुछ नहीं है। वहाँ सभी को व्यवस्थित सुविधा और इज्जत के साथ रखा गया है। ऐसा संदेश लानेवाले ने खबर देते हुए सूचित किया है।"

→ था। अतः जब दूसरी बार श्रीजी स्वरूप ठट्ठा वापस लौटे, तब उनके पुनरागमन की बात सुनते ही वे दोनों आकर श्रीजी स्वरूप से मिले। श्रीमती ठाकुरीबाई ने बड़ी श्रद्धापूर्वक चर्चा सुनी और उनके ऊपर श्रीजी की अपार कृपा हुई। वे तो सुन्दरसाथ समाज का प्रमुख अंग बन गयीं। दोनों ने चर्चा सुनकर धर्म ग्रहण किया। दूसरी बार ठट्ठा में धर्म समझकर धर्म ग्रहण करनेवालों में ये दोनों अग्रगण्य हैं।

→ करने लगे। श्री राजजी ने कृपा कर जिनका हाथ थाम लिया, वे प्रेम एवम् भक्तिपूर्ण होकर चर्चा के रस में ओत-प्रोत अथवा सराबोर हो जाते थे। ठट्ठा नगर में चर्चा की धूम मच गयी। शहर में चर्चा का बड़ा भारी शोर पड़ा। सबके सब आकर चर्चा सुनकर कृतार्थ बनने लगे।

→ चर्चा का शोर पड़ा, तब वहाँ श्रीजी साहेबजी के श्री मुख की चर्चा सुनने के लिए असंख्य लोग चारों ओर से भाग-भाग कर आने लगे। सबके कानों तक यह बात पहुँच गयी कि हमारे शहर में एक महान् साधु चर्चा के लिए पधारे हैं।

→ बड़ी-बड़ाई को सुनकर श्रीजी के दर्शन करने आने लगे। श्रीजी स्वरूप से चर्चा करके, वे बहुत ही प्रसन्न हो उठते थे। उन सबके मुख से यही निकलता था, "परमात्मा की हम पर बड़ी भारी कृपा है, जिससे ऐसे साधु की चर्चा सुनने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ।"

स. १२-चर्चा के ऐसे बोलबाले में अचानक श्रीजी को क्या सुनने में आया?

ज. १२- ठट्ठा नगर में चारों ओर श्रीजी की रसमयी चर्चा के बोलबाले की गुञ्ज उठ रही थी। तभी अचानक श्रीजी साहेबजी को एक बात →

स. १३-जब श्रीजी ने साधु चिन्तामणि की बात सुनी, तब उन्होंने क्या कहा?

ज. १३- जब श्रीजी ने साधु चिन्तामणि की बात सुनी, तब उन्होंने कहा, "वे तो यहाँ आयेंगे नहीं क्योंकि वे तो आश्रम खड़ा करके बैठे →

स. १४-तत्पश्चात् श्रीजी साहेबजी ने क्या किया?

स. १५-श्री प्राणनाथजी से मिलते ही साधु चिन्तामणि को कैसा अनुभव हुआ?

स. १६-श्रीजी से कुशल-क्षेम पूछने के पश्चात् साधु चिन्तामणि ने क्या कहा?

स. १७-"चिन्हार होए चरचा आतम"- यह वाक्य किसने और किससे कहा?

ज. १७- *"चिन्हार होए चरचा आतम* अर्थात् यदि आप ज्ञान का प्रकाश →

स. १८-पुनः साधु चिन्तामणि ने श्रीजी को अपना परिचय किस प्रकार दिया?

→ सुनने में आई कि ठट्ठा नगर में ही कुछ दूरी पर कबीर पंथ के एक प्रकाण्ड विद्वान साधु रहते हैं, जिनका नाम चिन्तामणि है। उनकी विद्वत्ता के विषय में सुनते ही श्रीजी ने स्वयं ही कहा, "हमें उनसे मिलना चाहिए।"

→ हैं। उनके पास सभी आते हैं और ज्ञान लेते हैं, तो मुझे ही उनके पास जाकर देखना और समझना है कि उनके ज्ञान में कहाँ का लक्ष्य, उपासना तथा चिन्तन बताया है। अतः इस विषय में उनसे मिलना और सत्संग करना जरूरी है।"

ज. १४- तत्पश्चात् दो-चार सुन्दरसाथ सहित एक दिन श्रीजी साहेबजी साधु चिन्तामणि से मिलने गए और जाकर उनसे मिले।

ज. १५- साधु चिन्तामणि जब श्रीजी साहेबजी से मिले, तब मिलते ही उन्होंने अपार सुख का अनुभव किया और हर्ष-उमंग के साथ श्रीजी से बातें करने लगे।

ज. १६- कुशल-क्षेम पूछने के पश्चात् साधु चिन्तामणि ने श्रीजी से कहा, "हे साधु महाराज! आप हमसे ज्ञान की चर्चा कीजिए क्योंकि आप अवश्य ही हमसे अधिक जानते हैं। अतः आप हमें चर्चा सुनाइए।"

→ देने आए हैं, तो हमें सुनाइए। यदि नहीं, आप लेने आए हैं अथवा मुझसे ग्रहण करना चाहते हैं, तो मैं आपको दूँगा। आप ग्रहण कर लीजिए। क्यों न हमारा और आपका आत्मीय परिचय ज्ञान के माध्यम से हो जाय।" - ऐसा श्रीजी साहेबजी से साधु चिन्तामणि ने कहा।

ज. १८- साधु चिन्तामणि ने श्रीजी स्वरूप के आगे अपने साधन पथ का परिचय देते हुए कहा, "आप कहें, तो हम आपको भगवान विष्णु के चतुर्भुज स्वरूप का दर्शन करा दें। यदि उनके दर्शन नहीं →

करने हों, तो ज्योति स्वरूप के अथवा सहस्त्र सिरवाले शेषशायी भगवान के दर्शन करा दूँ अथवा नहीं, तो प्रकाश में झिलमिल

स. १९- "ना तो तुम हमको दिखाओ" - यह बात किसने और किससे कही?

स. २०- साधु चिन्तामणि की उक्त बातें सुनकर श्रीजी स्वरूप ने क्या कहा?

ज. २०- साधु चिन्तामणि का उक्त परिचय सुनने के पश्चात् श्रीजी

स. २१- "हम लेने आये वस्त" - यह वाक्य किसने और किसके लिए कहा?

स. २२- पुनः श्रीजी साहेबजी ने साधु चिन्तामणि के आगे क्या आग्रह रखा?

स. २३- श्रीजी स्वरूप के आग्रह को सुनने के पश्चात् चिन्तामणि ने क्या कहा?

स. २४- वह कौनसी साखी थी, जिसने श्रीजी साहेबजी के अंदर जोश भर दिया?

ज. २४- कमाल की वह साखी निम्नलिखित है, जिसने श्रीजी के अंदर

स. २५- चिन्तामणि द्वारा कही हुई साखी सुनते ही श्रीजी साहेबजी को जोश क्यों आया?

ज. २५- चिन्तामणि कमाल की साखी द्वारा यह सिद्ध करना चाहता था

→ अनहद नाद का अनुभव करा दूँ या फिर अजपा जाप जपा दूँ। इतना मैं करा सकता हूँ।"

ज. १९- *"ना तो तुम हमको दिखाओ"* - यह बात साधु चिन्तामणि ने श्रीजी साहेबजी से कही।

→ साहेबजी ने उनसे कहा, "आपने जिन-जिनके दर्शन कराने की बात कही, आप मुझे उन्हीं से सम्बन्धित तत्त्व-ज्ञान की वस्तु बताने की कृपा करें अर्थात् उक्त पाँचों में से कौन कब तक रहते हैं? इन सबमें से मूल स्वरूप कौन हैं? आप मुझे माया और ब्रह्म का अलग-अलग निर्णय कर समझा दीजिए।"

ज. २१- *"हम लेने आये वस्त"* - यह वाक्य श्रीजी ने साधु चिन्तामणि से ज्ञानार्थ कहा।

ज. २२- श्रीजी साहेबजी ने साधु चिन्तामणि के आगे आग्रह रखा, " हे साधु चिन्तामणि! मैं आप से ज्ञान ग्रहण करने के उद्देश्य से आया हूँ। आप मुझे अपने ज्ञानपूर्ण बचनों द्वारा माया और ब्रह्म का निर्णायक ज्ञान देकर मेरे मन को प्रकाशित कीजिए।"

ज. २३- श्रीजी स्वरूप की उक्त जिज्ञासा जानने के पश्चात् ज्ञानबोध विषय में चिन्तामणि ने "कमाल की एक साखी" कही।

→ जोश भर दिया। जैसे -

कोड़ी ते हीरा भया, हीरा से भया लाल।
आधा भक्त कबीर है, पूरा भक्त कमाल।।

→ कि कबीर के माता-पिता कौड़ी रूप हैं। उनके द्वारा हीरारूपी पुत्र कबीर उत्पन्न हुए। हीरारूपी कबीर से लाल समान कमाल पैदा हुए। कबीर आधे ही भक्त हो पाए, किन्तु कमाल पूर्ण भक्त हुए। इस प्रकार कबीर और कमाल का निर्णय करते हुए जब →

→ चिन्तामणि ने कबीर को आधा भक्त कहा, तब तुरंत ही श्रीजी को जोश आ गया क्योंकि भूत-प्रेत के साधक कमाल को पूरा →

स. २६- उक्त साखी का अर्थ करते हुए विद्वान चिन्तामणि श्रीजी के आगे क्या कहने लगा? उन्होंने कौड़ी, हीरा और लाल किस-किसमें घटाया?

स. २७- "आधा भक्त कबीर है, पूरा भक्त कमाल" साधु चिन्तामणि के इस वाक्य ने श्रीजी को गहरी चोट क्यों पहुँचायी?

ज. २७- *"आधा भक्त कबीर है, पूरा भक्त कमाल"* साधु चिन्तामणि →

स. २८- "कहाँ मजल कबीर की, केती अकल कमाल" - इस महावाक्य के आशय एवम् तात्पर्य को श्रीजी ने विद्वान चिन्तामणि के आगे कैसे खुलस्त कर दिया? स्पष्ट करो।

ज. २८- *"कहाँ मजल कबीर की, केती अकल कमाल"* - इस महावाक्य के आशय एवम् तात्पर्य का खुलासा करते हुए श्रीजी ने विद्वान चिन्तामणि से कहा, "अरे मूढ़ाधीश चिन्तामणि! तुम →

स. २९- कबीर और कमाल के ज्ञान का सन्तुलनात्मक बोध कराने के पश्चात् श्रीजी ने पंडित चिन्तामणि को किसके द्वारा कबीर का परिचय दिया?

ज. २९- उक्त प्रकार से कबीर और कमाल के ज्ञान का सन्तुलनात्मक निर्णय करने के पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने चिन्तामणि को समझाते हुए कहा, "हे मूढ़ चिन्तामणि! तुम्हें तो धिक्कार है। वाह! दाना खाना कबीर का और गुणगान करना कमाल का? तुम्हें कबीर धर्म सिद्धान्त का प्रचारक-महन्त किसने बनाया? कबीर कौन →

→ भक्त कहना और परमात्मा के प्रेमी कबीर को आधा भक्त कहना ज्ञान का निचोड़ नहीं है।

ज. २६- उक्त साखी का अर्थ करते हुए विद्वान चिन्तामणि ने कबीर के पिताजी को कौड़ीरूप, कबीर को हीरारूप और कमाल को लालरूप अर्थात् कमाल को एक महत्त्वपूर्ण अमूल्य रत्न बताया।

→ के इस वाक्य ने श्रीजी को गहरी चोट पहुँचायी क्योंकि भक्ति मार्ग में अक्षर पुरुष के प्रत्यक्षकारी उच्च कोटि के भक्त कबीर को उसने आधा भक्त कहा था और स्मशान के भूत-प्रेत के साधक कमाल को पूरा भक्त कहा था। चिन्तामणि की ऐसी बिवेकहीन बातों को सुनकर श्रीजी को बड़ी गहरी चोट पहुँची।

→ कबीर धर्म के महन्त होकर बैठे हो और बिना बिचार-बिवेक किये इस तरह मनमानी बोलते हो? भक्ति मार्ग में अक्षर पुरुष के प्रत्यक्षकारी उच्च कोटि के भक्त कबीर को आधा भक्त कहना और उनका संतुलन स्मशान के भूत-प्रेत के साधक कमाल के साथ करके कमाल को पूरा भक्त कहना! तुम्हारी तो जबान खींचकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर देने चाहिए। तुम कोई विद्वान-जानकार नहीं। तुम जैसे महात्मा अथवा मठाधीश के साथ सत्संग करना और दर्शन करना तो नरकगामी होना है।"

→ हैं और उनका परिचय कितना ऊँचा है, इस बात को तुम कबीर के निम्न कीर्तन द्वारा तौल सकते हो। जैसे -

एक पलकतें गंग जो निकसी,
ह्वै गयो चहुँ दिस पानी ।
उहि पानी द्वै पर्बत ढ़ाँपे,
दरिया लहर समानी ।।१।।

→

अर्थात् अक्षर के एक पलक झपकते ही गंगा-मोहरूपी अंधकार अथवा फरामोशी उत्पन्न हुई। तात्पर्य-अक्षर के ऊपर पड़ी नींदरूपी फरामोशी ने उनकी आँखों की पलक को ढँक दिया। अतः चारों ओर अंधकार छा गया अर्थात् मोहतत्त्व-अज्ञान का विस्तार हुआ। चारों ओर मोहरूपी अंधकार छा जाना ही चारों ओर पानी-पानी होना है। उस मोहतत्त्वरूपी अज्ञानजन्य नींद ने दो पर्वत अर्थात् अक्षर और अक्षरातीत धाम को विस्मृत करा दिया अथवा ढँक दिया। मोहतत्त्वरूपी अज्ञानजन्य समुद्र में काम, क्रोध, लोभ, मोहरूपी भ्रम की लहरें उठकर उसी में समाने लगीं।

उड़ मक्खी तरवर चढ़ बैठी,
बोलत अमृत बानी ।
उहि मक्खी के मक्खा नाहीं,
विन पानी गर्भानी ।।२।।

उस मोहजल में से एक मक्खी-देवी-व्यष्टि ज्योति स्वरूप उत्पन्न हुई। यह मक्खीरूपी देवी, देव-दानव और चौरासी लाख योनियों में से, "चतुर्लक्षाणि मानवः" अर्थात् मनुष्यों की उत्तम योनि में उत्पन्न होकर अथवा मानव तनरूपी तरुवर पर बैठकर सबके अर्थात् व्यष्टि में समझें, तो वेद, पुराण, उपनिषद् आदि शास्त्र वक्ताओं की जबान पर और समष्टि में समझें तो विराट के सिर →

स. ३०-कबीर का कीर्तन सुनाने के पश्चात् श्रीजी साहेबजी ने चिन्तामणि से क्या कहते हुए विदा लिया?

ज. ३०- कबीर का कीर्तन सुनाने के बाद श्रीजी स्वरूप ने चिन्तामणि से →

स. ३१-श्रीजी साहेबजी के विदा होने के बाद चिन्तामणि ने अपने शिष्यों से क्या कहा?

ज. ३१- श्रीजी साहेबजी जब चिन्तामणि को कीर्तन सुनाकर उसकी चर्चा- →

→ पर बैठकर सरस्वती-गायत्री के रूप में अमृत वाणी-वेद का पाठ करने लगी। उस मक्खीरूपी देवी के मक्खारूपी देव नहीं हैं। किसी देवरूपी पुरुष के बिना ही इस मक्खीरूपी देवी ने गर्भ धारण किया।

तेहि गर्भ गुन तीनों जाये,
वह तो पुरुष अकेला ।
कहै कबीर या पदको बूझै,
सो सतगुरु मैं चेला।।३।।

उस मायारूपी देवी ने बिना पुरुष के ही क्रमशः तीन गुण स्वरूप तीन पुत्र-ब्रह्मा, विष्णु और महेश को उत्पन्न किया। उस मायारूपी देवी का पुरुष अर्थात् ब्रह्मरूप क्षर पुरुष तो अकेला ही रहा अर्थात् ब्रह्मरूप क्षर पुरुष की मदद के बिना ही मायारूपी देवी ने संसार का विस्तार किया। जो इन उक्त पदों का अर्थ कर उनका स्पष्टतः खुलासा करेगा, वे मेरे सद्गुरु हैं और मैं उनका चेला हूँ।

अतः उक्त पदों द्वारा कबीर साहेब ने पहले ही सद्गुरु श्रीजी साहेबजी को अपना गुरु और स्वयं को श्रीजी साहेबजी का चेला स्वीकार किया है। इस प्रकार चिन्तामणि को कबीर का कीर्तन सुनाकर श्रीजी साहेबजी वहाँ से चले गये।

→ कहा, "अरे चिन्तामणि! तुम्हारे जैसे महन्त के दर्शन सहित धर्म चर्चा-सत्संग करने से तो मेरा धर्म ही नष्ट हो जाएगा। अतः अब मैं तुम्हारा मुख भी देखना नहीं चाहता क्योंकि ऐसा करना मेरे धर्म में बाधक बनता है। मैं चलता हूँ।"

→ मण्डान से चले गए, तब चिन्तामणि ने अपने शिष्य मंडली के बीच कहा, "देखो! मेरे गुरु द्वारा कही हुई बात यहाँ मिल गई। वे व्यक्ति आ मिले। इनके बचनों को समझो। इनके बचन पार पहुँचानेवाले हैं। अतः जाओ और मेरी नोट-बुक ले आओ।"

स. ३२-श्रीजी स्वरूप द्वारा किए हुए उस कीर्तन के अर्थ के विषय में चिन्तामणि ने अपने शिष्य मंडली के बीच क्या कहते हुए उक्त अर्थ को प्रमाणित करनेवाली नोट-बुक मँगायी?

ज. ३२- श्रीजी स्वरूप द्वारा किए गए कीर्तन के अर्थ के विषय में चिन्तामणि →

स. ३३-जब श्रीजी साहेबजी साधु चिन्तामणि से विदा होकर वापस आए थे, तब कौनसा समय हुआ था?

स. ३४-श्रीजी साहेबजी के आने के बाद चिन्तामणि की वह रात कैसी कटी?

ज. ३४- श्री प्राणनाथजी जब चिन्तामणि से वार्तालाप कर कबीर के कीर्तन द्वारा उसे सूचित कर अपने ठिकाने पर गये और उनके जाने के →

स. ३५- एक पलकतें गंग जो निकसी,
ह्वै गयो चहुँ दिस पानी ।
उहि पानी द्वै पर्बत ढ़ाँपे,
दरिया लहर समानी ।।

अतः एक पलक क्या है और किसकी है? गंग क्या है? कहाँ से निकली?चारों ओर पानी-पानी कैसे हो गया? पुनः उस पानी ने किन दो पर्वतों को ढँक दिया? किसे दरिया कहा और लहर क्या है? दरिया में लहर कैसे समा गयी?

→ ने अपने शिष्य मण्डली के बीच कहा, "मेरे गुरुजी द्वारा कहा हुआ समय और वे व्यक्ति आ गये। मैं उक्त कीर्तन के विषय में आप सबसे कहते ही आया था न! अतः जाओ और जल्दी मेरी वह नोट-बुक ले आओ।" नोट-बुक आने पर उन्होंने अपने नोट-बुक की तिथि, तारीख, वर्ष, महीने और समय को आज की घटना से मिलाकर निश्चय कर लिया, "ये व्यक्ति वही हैं, जिनके विषय में मेरे गुरुजी ने मुझसे कहा था।"

ज. ३३- जब श्रीजी साहेबजी साधु चिन्तामणि से मिलकर वापस अपने डेरे में आए थे, तब संध्या का समय हो चुका था।

→ बाद जब चिन्तामणि ने अपने गुरु की भविष्यवाणी के साथ आज की घटना का मिलान करके देखा, तो चिन्तामणि की भूख और नींद दोनों हराम हो गयी। वे रात भर करवट बदलते रहे। जब सुबह ब्राह्ममुहूर्त हुआ, तीन बजे, तब चिन्तामणि श्रीजी से मिलने हेतु श्रीजी का डेरा ढूँढ़ते हुए, घर-घर में पूछते हुए चलने लगे।

ज. ३५- अक्षर के आँखों की पलक को ही एक पलक कहा है। मोहरूपी अंधकार अथवा फरामोशी ही गंग है। यह फरामोशी-गंगजी अक्षर की आँखों से निकली। अक्षर की आँखों पर पड़ी नींदरूपी फरामोशी ने उनकी आँखों की पलक को ढँक दिया, जिससे चारों ओर अंधकार छा गया अर्थात् मोहतत्त्व-अज्ञान का विस्तार हुआ। अज्ञान का विस्तार होना ही चारों ओर पानी-पानी होना है। उक्त अज्ञानजन्य नींद अर्थात् पानी ने अक्षर और अक्षरातीत धामरूप दो पर्वतों को ढँक दिया अर्थात् विस्मृत करा दिया। मोहतत्त्वरूपी अज्ञानजन्य नींद के विस्तार को ही दरिया कहा तथा उक्त दरिया में काम, क्रोध, लोभ, मोह, भ्रम आदि की लहरें उठकर पुनः उसी में समाने लगीं।

स. ३६- उड़ मक्खी तरवर चढ़ बैठी,
बोलत अमृत बानी ।
उहि मक्खी के मक्खा नाहीं,
विन पानी गर्भानी ।।

अतः उक्त दरिया में से जो मक्खी निकली, वह मक्खी क्या है? पुनः वह मक्खी उड़कर वृक्ष पर बैठ गयी। अतः वह कौनसा वृक्ष है? मक्खी वृक्ष पर कैसे जा बैठी ? वह मक्खी मधुर वचन कैसे बोलने लगी? उस मक्खी ने बिना मक्खा के अथवा बिना पानी के गर्भ कैसे धारण किया?

स. ३७- तेहि गर्भ गुन तीनों जाये,
वह तो पुरुष अकेला ।
कहै कबीर या पदको बूझै,
सो सतगुरु मैं चेला ।।

अतः उक्त मक्खी के गर्भ से कौन-कौनसे तीन गुण उत्पन्न हुए? जिस पुरुष को अकेला कहा है, वह पुरुष कौन है? किसे सद्गुरु कहा और कौन, किसका चेला बना?

स. ३८- "देखो शब्द आगे चला"- ऐसा कौन और किससे कह रहे हैं?

स. ३९- साधु चिन्तामणि को कौन व्यक्ति मिले और उनके अनुसार किनके वचन पार पहुँचानेवाले हैं?

ज. ३९- साधु चिन्तामणि के सद्गुरु ने उन्हें बनारस में पढ़ाते समय कबीर के उक्त कीर्तन के विषय में जिस पुरुष के मिलने की चर्चा की →

ज. ३६- उक्त अज्ञानजन्य नींद के विस्तारस्वरूप दरिया में से जो मक्खी निकली, वह मक्खी है-देवी व्यष्टि ज्योति स्वरूप । पुनः वह मक्खी अर्थात् व्यष्टि ज्योति स्वरूप देवी उड़कर अर्थात् देव, दानव, मानव और चौरासी लाख योनियों में उत्तम संकर्षण व्यूह के चेतनरूपी तरुवर पर बैठ गयी। यह संकर्षण व्यूह ही वृक्ष है। देवी व्यष्टि ज्योति स्वरूप जड़-चेतन की गाँठरूप होकर व्यष्टि में वेद, पुराण, उपनिषद् आदि शास्त्र वक्ताओं की जबान पर और समष्टि में विराट के सिर पर सरस्वती-गायत्री के रूप में बैठ गयी। वह मक्खी-व्यष्टि ज्योति स्वरूप देवी अर्थात् सरस्वती-गायत्री के दिमाग-जबान द्वारा अमृत वाणी-वेद पाठ करने लगी अथवा मधुर वचन बोलने लगी। उस मक्खी ने बिना मक्खा अर्थात् किसी देवरूपी पुरुष के स्पर्श बिना ही गर्भ धारण किया।

ज. ३७- उक्त मायारूपी देवी अर्थात् मक्खी ने बिना पुरुष के ही क्रमशः तीन गुण स्वरूप तीन पुत्र-ब्रह्मा, विष्णु और महेश को उत्पन्न किया। पुनः मायारूपी देवी का पुरुष अर्थात् ब्रह्मरूप क्षर पुरुष तो अकेला ही रहा। कबीर दासजी कहते हैं कि उक्त पदों का अर्थ कर जो स्पष्टतः खुलासा करेगा, वे मेरे सद्गुरु हैं और मैं कबीर, उनका चेला हूँ।

ज. ३८- *"देखो शब्द आगे चला"*- ऐसा साधु चिन्तामणि अपने शिष्य मण्डली के बीच कह रहे हैं।

→ थी, साधु चिन्तामणि के अनुसार उनके द्वारा कहे हुए पुरुष श्रीजी साहेबजी ही हैं। चिन्तामणि के अनुसार श्रीजी स्वरूप के मिलने के विषय में ही उनके गुरुजी ने उनसे कहा था और श्रीजी स्वरूप के वचन ही पार अर्थात् मोहसागर के पार पहुँचानेवाले हैं।

स. ४०-"मैं तुमसे कहता था" - ऐसा कौन और किससे कह रहे हैं तथा क्यों?

ज. ४०- *"मैं तुमसे कहता था"* - ऐसा साधु चिन्तामणि अपने शिष्यों →

स. ४१-"करी साथ से चर्चा तब" अर्थात् किसने, कहाँ, किनसे और कौनसी चर्चा की?

स. ४२-कल्लू मिश्र कौन थे और क्या करते थे? उनके घर कौन गये?

स. ४३-नाथा जोशी के घर श्रीजी की चर्चा विषय की बातें चिन्तामणि को किसने बताई? पुनः चिन्तामणि पता लेकर कहाँ गये?

ज. ४३- दूसरे दिन जब साधु चिन्तामणि श्रीजी साहेब का निवास स्थान →

स. ४४-वि. सं. १७२४ में श्रीजी साहेबजी कहाँ थे और क्या कर रहे थे?

❖ चिन्तामणि बोध ❖

स. १-श्रीजी स्वरूप जब साधु चिन्तामणि से विदा लेकर वापस आए, तब चिन्तामणि की हालत कैसी हुई?

ज. १- श्री प्राणनाथजी जब साधु चिन्तामणि से विदा लेकर वापस आए, उसके →

→ के आगे कह रहे हैं क्योंकि उक्त कीर्तन के विषय में वे अपने शिष्यों से पहले से ही यह कहते आए थे कि उक्त पदों का अर्थ करनेवाले कबीर साहेब के गुरु आगे चलकर उन्हें मिलेंगे। उनके बनारस के गुरुजी द्वारा कहे प्रमाण उन्हें वे स्वरूप मिल गए।

ज. ४१- *"करी साथ से चर्चा तब"* अर्थात् जब श्रीजी साहेबजी चिन्तामणि से मिलकर अपने डेरे पर आ गये, तब उन्होंने चिन्तामणि के साथ हुई चर्चा की बातें अपने सुन्दरसाथ के साथ की।

ज. ४२- कल्लू मिश्र ठट्ठा नगर के एक कथाकार थे। उनके पास भी श्रीजी साहेबजी एक दिन सत्संग करने गए थे। परन्तु वे सत्संग के लायक नहीं थे।

→ ढूँढ़ते-ढूँढ़ते, शहर के लोगों से पूछते-पूछते कल्लू मिश्र के घर पहुँचे, तब कल्लू मिश्र ने श्रीजी और सुन्दरसाथ की चर्चा विषयक बातें, जो नाथा जोशी के घर में हो रही थी, चिन्तामणि को श्रीजी के निवास स्थान के पता सहित बता दी। कल्लू मिश्र द्वारा कही बातें सुनकर चिन्तामणि नाथा जोशी के घर आये और श्रीजी से मिले।

ज. ४४- वि. सं. १७२४ में श्रीजी साहेबजी ठट्ठा नगर में सुन्दरसाथ को जागृत करने के कार्य में तल्लीन थे और धर्म अभियान का कार्य जोर-शोर से आगे बढ़ा रहे थे।

-(प्रकरण २३, सवाल-जवाब नं. ४४, कुल सं. ७६३+४४=८०७)।

❖ चिन्तामणि बोध ❖

→ बाद साधु चिन्तामणि को हर प्रकार से श्रीजी स्वरूप की पहचान हो गई कि ये मूल कबीर साहेब के गुरु हैं। यह विश्वास आते ही चिन्तामणि की वह रात बिन पानी की मछली के समान गुजरी।

स. २- जब साधु चिन्तामणि श्रीजी स्वरूप को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते नाथा जोशी के घर पहुँचे, तब उस समय श्रीजी साहेबजी क्या कर रहे थे?

स. ३- जब चिन्तामणि श्रीजी साहेबजी के पास आये, उस समय वे अकेले थे या उनके साथ अन्य शिष्य भी थे?

स. ४- दूसरे दिन से चिन्तामणि चर्चा में अकेले आते थे या उनके साथ उनके अन्य शिष्य भी आते थे?

स. ५- अपनी शिष्य मंडली के साथ श्रीजी की चर्चा चिन्तामणि कैसे सुनते थे?

ज. ५- चिन्तामणि की शिष्य मंडली चिन्तामणि को उनके मठ-मन्दिर में →

स. ६- "अपनी मूली गई भूल" अर्थात् कौन, क्या भूल गये और क्यों?

ज. ६- *"अपनी मूली गई भूल"* अर्थात् महन्त चिन्तामणि श्रीजी साहेबजी →

स. ७- साधु चिन्तामणि के सेवकों के बीच किस लिए खलबली मच गयी?

ज. ७- जब चिन्तामणि अपने गुरु की भविष्यवाणी साकार हो जाने पर सच्चाई की ओर दौड़ गये, तब उनके शिष्य मंडल में जो तत्त्व-ज्ञान से अधूरे →

स. ८- दो-तीन दिन श्रीजी साहेबजी की चर्चा सुनते ही किन्हें श्रीजी स्वरूप की पहचान हुई?

ज. ८- चिन्तामणि के जितने शिष्य चिन्तामणि के साथ श्रीजी साहेबजी →

ज. २- जब साधु चिन्तामणि श्रीजी साहेबजी को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते नाथा जोशी के घर पहुँचे, तब उस समय श्रीजी साहेबजी नाथा जोशी के घर अटारी पर बैठकर सर्व सुन्दरसाथ समुदाय के मध्य चर्चा कर रहे थे।

ज. ३- नहीं! प्रथम दिन जब साधु चिन्तामणि श्रीजी साहेबजी को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उनके पास पहुँचे, तब वे अकेले ही थे। उनके साथ अन्य कोई नहीं था।

ज. ४- दूसरे दिन से चिन्तामणि चर्चा में अकेले नहीं आते थे। चर्चा श्रवण के लिए उनके साथ उनके चेले भी आने लगे। थोड़ा-थोड़ा करते-करते चिन्तामणि के प्रति श्रद्धा-विश्वास रखनेवाले सभी शिष्य आने लगे।

→ जिस तरह आदर-सत्कार से बिठाती थी, वैसे ही यहाँ श्रीजी स्वरूप के चर्चा-मण्डान में भी गादी-तकिया लाकर सम्मानपूर्वक बिठाती थी और चिन्तामणि साधु भी महंत होकर गादी-तकिया लगाकर बैठते थे। अतः अपनी शिष्य मंडली के बीच वे महन्त के रूप में बैठकर श्रीजी के श्री मुख की चर्चा श्रवण करते थे।

→ की चर्चा सुनते-सुनते अपने कबीर सम्प्रदाय-सिद्धान्त को ही भूल गये। उन्हें इस बात का भी भान नहीं रहा कि वे कबीर सम्प्रदाय-समाज के महन्त हैं। वे श्रीजी साहेबजी की कथा-चर्चा में इस तरह तल्लीन हो गये।

→ लोग थे, वे कहने लगे, "स्वयं हमारे सम्प्रदाय के महन्त-हमारे गुरु ही दूसरे को गुरु मानकर उनकी चर्चार्थ दौड़ते हैं, ऐसे गुरु के पीछे कौन चलेगा?" इस बात को लेकर चिन्तामणि के समाज में खलबली मच गयी। जो सत्य के पक्ष में थे, वे लोग नाम, यश, प्रतिष्ठा को छोड़कर गुरु के पीछे-पीछे ज्ञान के पक्ष में आने लगे।

→ की चर्चा-श्रवण के लिए आते थे, उन्होंने दो-तीन दिन श्रीजी की चर्चा भली प्रकार ध्यान देकर सुनी। जब उन्हें भी सत्य की पहचान हो गयी, तब वे भी श्रीजी के चरणों में नतमस्तक हो गए।

स. ९- श्रीजी साहेबजी ने चिन्तामणि की चर्चा-मंडान के बीच खंडनी क्यों की?

ज. ९- श्रीजी के श्री मुख से निकले चर्चा के अपूर्व प्रकाश एवम् अत्यधिक ज्ञान को देखकर चिन्तामणि भाई के अन्दर का मूल सम्बन्ध तो अंकुरित हुआ, परन्तु उनके मन में अहंकार का भाव अब भी →

स. १०-"तब चिन्तामणी छाने कह्या" अर्थात् चिन्तामणि भाई ने क्यों छाने (एकान्त में) कहने को कहा?

ज. १०- *"तब चिन्तामणी छाने कह्या"* अर्थात् जब चर्चा-मंडान में प्रसंगवश थोथे ज्ञान द्वारा मात्र शिष्यों की संख्या बढ़ानेवाले लालची गुरुओं की बातें आई, जैसे - "गुरु लोभी शिष्य लालची, दोनों खेले दाव। दोनों बूड़े बापड़े, बैठ पत्थर के नाव।" तब इन →

स. ११-जब महन्त चिन्तामणि ने एकान्त में खंडनी करने का आग्रह किया, तब श्रीजी ने क्या कहा?

ज. ११- चिन्तामणि द्वारा उक्त प्रकार की विनय-प्रार्थना सुनकर श्रीजी →

स. १२-उस दिन जब चिन्तामणि अपनी शिष्य मंडली सहित घर गये, तत्पश्चात् रात को क्या घटना घटी?

ज. १२- उस दिन चर्चा-कथा श्रवण कर चिन्तामणि निश्चिंत होकर अपने घर गये। घर जाकर सोचा, "बिना हड्डी की जबान आज फिसल →

स. १३-उस रात श्रीजी स्वरूप के श्री मुख से चिन्तामणि को जागृत करने के लिए कितने कीर्तन उतरे?

स. १४-उक्त अवतरित कीर्तन कौन-कौनसे हैं और किन ग्रन्थों में मिलते हैं?

→ निहित था। अतः उस अहंकार को देखकर उसे मिटाने के लिए श्रीजी स्वरूप ने कुछ कठोर शब्दों में प्रमाण सहित उपदेश देते हुए चर्चा में कहा, "मिथ्या और आडम्बर से आत्मा जागृत नहीं हो सकती।" इस प्रकार के खंडनी के बचन श्रीजी ने चिन्तामणि के अंदर के विकार हटाने के लिए कहे थे, किंतु वे बचन उन्हें असहनीय हुए।

→ विषयों को चिन्तामणि ने अपने सिर पर ले लिया। अतः वे बचन उन्हें असहनीय हुए। चारों ओर बैठे उनके शिष्यों की नजर उन्हीं की तरफ थी। तब उन्हें लगा, उनकी शिष्य मंडली के बीच उनकी इज्जत-प्रतिष्ठा का ह्रास हो रहा है। तब वे वहाँ से उठ गए और श्रीजी के कानों में जाकर उन्होंने ऐसी खंडनीपूर्ण बातें छाने अर्थात् एकान्त में कहने के लिए विनय किया।

→ साहेबजी ने कहा, "मैं तुम्हारी लाज क्यों नहीं रखूँगा? मर्म की जो भी बात कहनी होगी, अब मैं परोक्षरूप से ही कह दूँगा। अब इसके उपरान्त मैं तुम्हारी इज्जत का जरूर ख्याल रखूँगा।"

→ गयी होगी। आगे से ऐसा नहीं होगा। ऐसा श्रीजी स्वरूप ने मुझे बचन दिया है।" अतः वे निश्चिंत होकर रात में सो गये। परन्तु रातों-रात श्रीजी के मुख से कुछ कीर्तन अवतरित हुए, जो चिन्तामणि के लिए ही थे।

ज. १३- उस रात श्रीजी स्वरूप के श्री मुख से चिन्तामणि भाई को जागृत करने के लिए उपदेशों से भरपूर कुल तीन कीर्तन अवतरित हुए।

ज. १४- उस रात चिन्तामणि को जागृत करने के लिए जो तीन कीर्तन अवतरित हुए, वे निम्नलिखित हैं।
जैसे - १) सुनो रे सत के बनजारे →

२) भाई रे बेहद के बनजारे
३) हो मेरी वासना तुम चलो अगम के पार

स. १५-दूसरे दिन प्रातः जब चिन्तामणि कथा श्रवण करने के लिए आये, तब श्रीजी ने उन्हें क्या करने के लिए कहा?

स. १६-उक्त अवतरित वाणी द्वारा कैसे श्रीजी ने चिन्तामणि की आत्मा को झकझोर डाला? स्पष्टतः विस्तारवत् समझाओ।

ज. १६- उक्त अवतरित प्रकरणों द्वारा श्रीजी स्वरूप ने चिन्तामणि की आत्मा को जागृत करने के लिए ज्ञानपूर्ण वचनों द्वारा झकझोरते हुए कहा -

सुनो रे सतके बनजारे, एक बात कहूँ समझाई ।
या फंद बाजी रची मायाकी, तामें सब कोई रह्या उरझाई।।

अर्थात् हे सत के लिए भटकनेवाली व्यापारी आत्माओं! सुनो!! एक अपूर्व बात तुम्हें समझाकर कहता हूँ। सृष्टिकर्ता जादूगर की माया ने अपने फंदे में फँसाने के लिए इस बाजीरूपी सृष्टि का विस्तार किया है, जिस जाली में हर कोई मछली की तरह उलझकर रह गये हैं। अर्थात् आँटीरूपी प्रेम-सम्वाद द्वारा ब्रह्मात्माओं ने खेल में आकर संसार में फाँसीरूपी पञ्चभौतिक तन धारण किया। इस फाँसीरूपी शरीर के गुण, अंग, इन्द्रियों को माया ने उलटी अर्थात् अपनी ओर उलटाकर धनी की ओर से विमुख बना दिया। अतः वे भी अब मायावी विषयों को ही चाहते हैं। बंध पर बंध अर्थात् उन शरीरधारी आत्माओं के ऊपर इस माया ने मर्यादारूपी बंधन लगा दिया है, जिसमें बँधकर कर्मरूपी विभिन्न बंधनों को निभाना पड़ता है। इस कर्मरूपी बारीक बंधन से कोई उबर नहीं पाये। इसका कारण है-कर्म, अकर्म और विकर्म। अतः

→ उक्त तीनों ही कीर्तन, श्री कुलजम स्वरूप साहेब के किरंतन ग्रन्थ में दर्ज किये गये हैं। अतः वहाँ इन्हें पढ़ा जा सकता है।

ज. १५- दूसरे दिन प्रातः जब चिन्तामणि भाई निश्चिंत होकर रोज की तरह चर्चा श्रवणार्थ आये, तब श्रीजी साहेबजी ने उन्हें सबके सामने उक्त अवतरित कीर्तनों की चौपाइयाँ क्रमशः पढ़ने की आज्ञा की।

→ "गहना कर्मणो गतिः" अर्थात् कर्म की गति बड़ी गहन है। यही आत्माओं के लिए फाँसीरूप बने हैं।

चौदे भवन लग एही अंधेरी, झूठेको खेल झुठाई ।
प्रगट नास व्यास पुकारे, सुकदेव साख पुराई ।।

अर्थात् इसी अज्ञानजन्य कर्म का बंधनरूपी अंधकार चौदहों लोकों में छाया हुआ है। पाताल से लेकर वैकुण्ठ तक के जीव इसी प्रकार मायावी अंधकार में भटक रहे हैं। झूठ का विस्तार भी झूठा ही होता है। यह प्रत्यक्ष नाशवन्त और अस्तित्त्वहीन है। इन बातों की साक्षी देते हुए व्यासजी और शुक मुनी ने भी आह्वान किया है।

लोक लाज मरजादा छोडी, तब ग्यान पदवी पाई ।
एक आग ज्यों छोटी बुझाई, त्यों दूजी मोटी लगाई ।।

अर्थात् लोक-लाज, मान-मर्यादा के बंधन से छूटकर ही सच्चे ज्ञानी का पद प्राप्त होता है। उसमें भी यदि अभिमान आ गया, तो वैसा ही हुआ कि एक छोटी-गृहस्थाश्रम-प्रवृत्ति मार्गरूपी अग्नि से निकलकर बच पाये, तो छोटी आग तो बुझ गई। परन्तु निवृत्ति मार्ग की मान-प्रतिष्ठारूपी बड़ी भयंकर ज्वालाओं में धधकते हुए जलने लगे ।

कोट सेवक करो नाम निकालो, इस्ट चलाओ बडाई ।
सेवा कराओ सतगुरु केहेलाओ, पर अलख न देवे लखाई ।। →

अर्थात् चाहे करोड़ों सेवक बनाकर स्वयं स्वामी कहलाओ, नाम, यश प्राप्त कर लो; पंथ चलाकर स्वयं इष्ट बन जाओ, शिष्य मंडली में सम्मान भी प्राप्त कर लो, सतगुरु बनकर सेवा करा लो, परन्तु वे अलख परब्रह्म प्रत्यक्ष नहीं होंगे।

अब छोडो रे मान गुमान ग्यान को, एही खाड बडी भाई ।
एक डारी त्यों दूजी भी डारो, जलाए देओ चतुराई ।।

अर्थात् सौ बात की एक ही बात की तरह अब सारे मान, अभिमान एवं ज्ञान के अहंकार व चमत्कार को तिलांजलि दे दो। सत्य की राह में ये सब बड़ी गहरी खाइयाँ हैं। जैसे एक को छोड़ा अर्थात् प्रवृत्ति मार्ग के लोक-लाज मर्यादारूपी बंधनों का परित्याग कर साधु बने और निवृत्ति मार्ग में आये, तो दूसरे अर्थात् मान, बड़ाई, गुमान के बंधन को टुकड़े-टुकड़े करने में भी विलम्ब मत करो। सारी चतुराई फूँक डालो।

सत चाहो सो सबदा चीन्हो, ओ आप न देवे देखाई।
जिन पाया तिन माहें समाया, राखत जोर छिपाई ।।

अर्थात् सत-ब्रह्म को चाहते हो, तो शब्दों को पहचानो। वह परमात्मा स्वयं तो प्रत्यक्ष नहीं होता। किंतु जिसने उन्हें पा लिया, वह उसके अन्तर में ही समा जाता है और पानेवाला उन्हें अच्छी तरह छिपाकर रखता है।

स. १७- किस समय चिन्तामणि ने सबके सामने अभिमानरूपी काले कुत्ते के सिर पर लाठी मारने को कहा?

ज. १७- चिन्तामणि के अन्य शिष्य भी उस दिन रोज की तरह ही ध्यान देकर चर्चा श्रवण कर रहे थे। चिन्तामणि भाई चौपाई का एक-एक चरण पढ़ते जा रहे थे और श्रीजी उसका अर्थ समझाते जा रहे थे। इस तरह वे दोनों क्रमबद्ध पढ़ते-समझाते हुए आगे बढ़

→ सुध सबे पाइए सबदों से, जो होवे मूल सगाई ।
खिन एक विलम न कीजे तब तो, लीजे जीव जगाई ।।

अर्थात् शब्दों के द्वारा ही अपने मूल घर का सम्बन्ध और अपने प्रियतम की सुधि भी मिलती है। यह मानव-जीवन देवदुर्लभ होते हुए भी क्षणभंगुर है। पल भर का भी भरोसा नहीं है। इसलिए क्षण भर भी देर न करो। अपने जीव को जगा लो।

पर मनुआ दिए बिन हाथ न आवे, सतकी बडी ठकुराई ।
महामत कहे सावचेत होइयो, मिल्या है अंकूरों आई ।।

अर्थात् अपने मन को समर्पित किए बिना उसे प्राप्त करना असंभव है क्योंकि सत्य वस्तु का महत्त्व अथवा महिमा भी बड़ी होती है। अतः जानो! समझो, तो पूर्व जन्म के अंकुर, संस्कार एवम् सम्बन्ध से ही ऐसा सुअवसर प्राप्त होता है।

भाई रे बेहद के बनजारे, तुम देखो रे मनुएका खेल ।
ए सब आग बिना दीया जले, याको रूई न बाती तेल ।।

अर्थात् हे असीम परमात्मा की खोज करनेवालों! हद-नश्वर जगत् के व्यापार को छोड़कर बेहद के बन जाओ। इस मन के खेल को देखो। इस खेल में बिना आग के दीये जलते हैं, जिनमें न तो रूई की बाती होती है और न ही तेल।

यह सुनते-सुनते अचानक ही चिन्तामणि बोल उठे, " अब मारों काले कुत्ते को, लाठी सिर ऊपर।"

→ रहे थे। जब दो कीर्तनों के ज्ञान को चिन्तामणि ने अर्थ सहित ग्रहण किया, तब अपने सेवकों के बीचों-बीच ही चिन्तामणि बोल उठा, "इस अभिमान-अहंकाररूपी काले कुत्ते के सिर पर ज्ञान का प्रहार कर इसे मेरे अन्दर से दूर कर दीजिए। आपने सही कहा था कि मैं बिना ज्ञान का अभिमानी हूँ। स्वयं अपने मुख से कबूल करते हुए कहा कि मैं बिलकुल खाली हूँ और ब्रह्मज्ञान से सर्वथा अनभिज्ञ अथवा मूढ़ हूँ।"

स. १८-सभी सेवकों के समक्ष चिन्तामणि ने सत्य वस्तु को कबूल करके अपना परिचय देते हुए क्या कहा, जिससे श्रीजी साहेबजी ने उसकी सराहना करते हुए उसे शाबाशी दी?

स. १९-श्रीजी स्वरूप ने इस समय चिन्तामणि को साधुवाद के साथ क्या-क्या कहा?

ज. १९- इस समय श्रीजी ने सुन्दरसाथ समूह के बीच चिन्तामणि को शाबाशी देते हुए कहा, "हे चिन्तामणि! तुम धन्य-धन्य हो। तुमने अपना सम्बन्ध पहचान लिया। ऐसे शब्द तो मोमिन-ब्रह्ममुनि ही कह सकते हैं।" तत्पश्चात् कहा, "हो मेरी वासना, तुम चलो अगम के पार अर्थात् हे चिन्तामणि! तुम मेरी ब्रह्मात्माओं की →

स. २०-तारतम ग्रहण करनेवाले अकेले चिन्तामणि ही थे या उनके अन्य शिष्य आदि भी थे?

ज. २०- श्रीजी स्वरूप द्वारा तारतम ग्रहण करनेवाले चिन्तामणि अकेले →

स. २१-श्रीजी स्वरूप ने चिन्तामणि सहित उसके शिष्यों को तारतम सुनाने से पहले जिन वस्तुओं का परित्याग कराया, वे निषेध वस्तुएँ कौन-कौनसी हैं?

ज. २१- श्रीजी स्वरूप ने चिन्तामणि सहित उनके शिष्यों को तारतम सुनाने से पहले जिन चार वस्तुओं का हाथ में पानी लेकर परित्याग कराया, वे चार वस्तुएँ निम्नलिखित हैं। यथा - →

स. २२-चिन्तामणि सहित उनकी शिष्य मंडली ने हाथ में पानी लेकर क्या संकल्प किया?

ज. १८- अपने सभी सेवकों के समक्ष चिन्तामणि ने सत्य वस्तु-ब्रह्मज्ञान को कबूल करते हुए कहा, "मैं ब्रह्मज्ञान-आत्मज्ञान से बिलकुल खाली हूँ, अनभिज्ञ हूँ, मूढ़ हूँ।" इस प्रकार चिन्तामणि द्वारा क्षीर-नीर का विवेचन कर निर्लज्ज रूपेण अपने सेवकों के बीच कहते ही श्रीजी ने उसकी सराहना की और सत्य-वस्तु का आह्वान करने के कारण उसे शाबाशी दी।

→ जमात में से हो। तुम्हारा मूल स्थान बेहद परे, अक्षर पार अक्षरातीत धाम है। तुम उस अगम के पार चलो, जहाँ किसी का भी पहुँचना संभव नहीं है। वहीं पहुँचकर तुम्हें चैन मिलेगा। तुम अपने दरबार-मूल घर की ओर देखो। अपनी सुरता को वहीं केन्द्रित करो। उस धाम की परम सत्ता और तुम्हारे बीच में कोई बाट, घाट अथवा तत्त्व नहीं है। तुम्हें तो बिना पाँव के विहंगम मार्ग द्वारा इस प्रिय पथ पर चलना है और निरंजन से परे सबसे न्यारे परमधाम में हमारे कंथ-प्रियतम धनी विराजमान हैं, उनसे मिलना है।"

→ नहीं थे। उनके साथ उनके जितने शिष्य चर्चा श्रवण करने आते थे, उन सभी ने एक साथ तारतम ग्रहण किया। यहाँ तारतम ग्रहण करने में लगभग साढ़े पाँच-छः सौ लोग थे।

→ एक हराम कहा मांस को, दूसरा हराम शराब ।
तीसरा औरत बिरानी तजे, सो पावे हैयाती आब ।।
चोरी झूठ बोलना, इनका छोड़ाया उदक ।
अब हम कबहूं ना करें, हम पाया बेशक हक ।।

अर्थात् सर्वप्रथम मांस त्याज्य है, दूसरे शराब, तंबाकू आदि मादक पदार्थों का भी परित्याग करना, तीसरे पराई स्त्री वर्जित है और चौथे चोरी करना एवम् झूठ बोलना भी मना है।

ज. २२- अपने शिष्यों सहित साधु चिन्तामणि ने हाथ में पानी लेकर संकल्प करते हुए कहा, "अब हमें निश्चय ही सत्य वस्तु प्राप्त हुई है। उक्त निषेध वस्तुओं का सेवन अब हम कभी नहीं करेंगे।"

स. २३-इस समय श्रीजी के श्री मुख से कैसी चर्चा हुई? फलस्वरूप सुन्दरसाथ की कैसी आमदनी हुई?

स. २४-पोहोकरना ब्राह्मण जात के चतुरदास नामक भाई कौन थे? वे वहाँ अर्थात् नाथा भाई के घर क्यों आते थे?

स. २५-इस घड़ी श्रीजी साहेबजी के चर्चा-मंडान में कहाँ की अथवा कौनसी लीला की चर्चा होती थी?

स. २६-कौन और किन विषयों की चर्चा सुनकर आश्चर्यचकित रह गये?

ज. २६- श्रीजी साहेबजी की चर्चा-मंडान में अखण्ड ब्रज और अखण्ड रास →

स. २७-कौन और कहाँ स्थित अपनी बखार में श्रीमद्भागवत की चर्चा किया करते थे, जहाँ उक्त चतुरा भाई भी चर्चा सुनने जाया करते थे?

स. २८-एक दिन चर्चा में पोहोकरना ब्राह्मण चतुरा ने कथाकार सेठजी से क्या पूछा?

ज. २८- एक दिन चर्चा सुनते समय चतुरदास ब्राह्मण ने कथाकार लक्ष्मण सेठजी से पूछा, "हे सेठजी! आपने चर्चा में कहा कि ब्रज और →

स. २९-पोहोकरना ब्राह्मण चतुरा के प्रश्न के जवाब में कथाकार सेठजी ने क्या उत्तर दिया?

ज. २९- चतुरदास ब्राह्मण के उक्त प्रश्न के जवाब में कथाकार लक्ष्मण सेठजी ने कहा, "अखण्ड ब्रज और रास लीला का स्थान यहीं →

ज. २३- इस समय ठट्ठा नगर में श्रीजी की चर्चा का प्रभावशाली दौर चला। इसके प्रतिफल अनेकों लोग निजधाम के निजानन्द समाज में शामिल हुए। सुन्दरसाथ की संख्या में पर्याप्त वृद्धि होती गयी।

ज. २४- पोहोकरना ब्राह्मण जात के चतुरदास नामक भाई नाथा जोशी के घर श्रीजी के लिए दूध पहुँचाने की सेवा करते थे। नित्य प्रति दूध रखकर वे श्रीजी साहेबजी की चर्चा ध्यानपूर्वक सुनते थे।

ज. २५- इस घड़ी श्रीजी साहेबजी के चर्चा-मंडान में श्रीमद्भागवत द्वारा अखण्ड व्रज और अखण्ड रास लीला की विवेचनपूर्वक चर्चा होती थी।

→ लीला का वर्णन सुनकर चतुरदास ब्राह्मण आश्चर्यचकित रह गये कारण अखण्ड व्रज और रास का ऐसा रसमयी और विवेचनयुक्त वर्णन उन्होंने आज तक कभी अपने कानों से नहीं सुना था।

ज. २७- ठट्ठा नगर में एक प्रकाण्ड विद्वान वैष्णव पंथी लक्ष्मण सेठ अपनी बखार में श्रीमद्भागवत की कथा-चर्चा किया करते थे। उनकी चर्चा-मंडान में भी चतुरा ब्राह्मण अखण्ड व्रज और रास लीला विषयक चर्चा सुनने बैठा करते थे।

→ रास-ये दोनों लीलाएँ अखण्ड हैं। अतः कहाँ अखण्ड हैं? इस नश्वर ब्रह्माण्ड में यह कैसे सम्भव है? कारण जब पाँच तत्त्वों और तीन गुणों से निर्मित इस ब्रह्माण्ड-चौदह लोकों का भी नाश होनेवाला है, तब इस अखण्ड व्रज और रास लीला का विशेष अविनाशी स्थान कहाँ रहेगा?"

→ मृत्युलोक के व्रजमण्डल और वृन्दावन में है। उन लीलाओं का दर्शन दिव्य दृष्टि मिलने पर किया जा सकता है। कथा-चर्चा सुनते-सुनते जब आत्मा निर्मल हो जाती है, तब दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है और दर्शन भी होते हैं।"

स. ३०-कथाकार लक्ष्मण सेठजी का प्रत्युत्तर सुनने के पश्चात् पुनः चतुरा ब्राह्मण ने उनसे क्या कहा?

ज. ३०- कथाकार लक्ष्मण सेठजी का उक्त प्रत्युत्तर सुनने के पश्चात् पुनः →

स. ३१-चतुरा ब्राह्मण ने कौनसी नई बातें कहीं, जिन्हें सुनकर कथाकार लक्ष्मण सेठजी चौंक उठे?

ज. ३१- चतुरा ब्राह्मण ने सेठजी से कहा, "पुनः सेठजी! यह भी समझा दीजिए कि हम तो श्रोता हैं, परंतु आप तो कथाकार-वक्ता हैं। →

स. ३२-तत्पश्चात् लक्ष्मण सेठ ने चौंककर चतुरा ब्राह्मण से क्या पूछा और कहा?

स. ३३-कथाकार सेठजी के पूछने पर चतुरा ब्राह्मण ने उन्हें क्या बताया?

ज. ३३- कथाकार लक्ष्मण सेठजी द्वारा उक्त बातें कहने पर चतुरदास →

❖ लालदास मिलाप ❖

स. १- "मोकों ले चलो तुम" - यह बात किसने, किससे और कब कही?

स. २- उक्त अर्ज के प्रत्युत्तर में किसने, किससे और क्या कहा?

ज. २- जब उक्त प्रकार से लक्ष्मण सेठ ने चतुरा ब्राह्मण से स्वयं को →

→ चतुरा ब्राह्मण ने उनसे कहा, "हे सेठजी! पाँच तत्त्वों और तीन गुणों से निर्मित इस नश्वर ब्रह्माण्ड में व्रज और रास का अखण्ड होना कैसे सम्भव है? पुनः दिव्य दृष्टि कैसे और कब मिलती है, जिससे दर्शन कर हम मुक्त हो सकें?"

→ अतः आपने आज दिन तक कितनी बार दिव्य दृष्टि प्राप्त कर उस अखण्ड व्रज और रास लीला के दर्शन किये हैं? हमें तो न जाने किस जन्म में दिव्य दृष्टि मिलेगी? इतने समय में आपको तो दिव्य दृष्टि अवश्य ही मिली होगी। आपने तो कई बार उन लीलाओं के दर्शन-पर्शन किए होंगे न?" यह बात सुनकर सेठजी चौंक उठे।

ज. ३२- तत्पश्चात् लक्ष्मण सेठ ने चौंककर आश्चर्यचकित स्वर में चतुरदास ब्राह्मण से पूछा, "तुम्हें यह बात कहाँ मिली? मुझे भी उस स्थान पर ले चलो।"

→ ब्राह्मण ने उन्हें बताया, "हे सेठजी! हमारे भाग्योदय के कारण एक नये महात्मा ठट्ठा नगर में आये हैं। वे अखण्ड व्रज और रास लीला के विवेचन सहित अभूतपूर्व चर्चा करते हैं। मुझे उनकी चर्चा द्वारा ही यह समझ प्राप्त हुई है।

-(प्रकरण २४, सवाल-जवाब नं. ३३, कुल सं. ८०७+३३=८४०)।

❖ लालदास मिलाप ❖

ज. १- जब पोहोकरना चतुरा ब्राह्मण की उक्त बातें सुनकर लक्ष्मण सेठ चौंक उठे, तब उन्होंने चतुरदास ब्राह्मण से अर्ज की, *"मोकों ले चलो तुम।"*

→ श्रीजी स्वरूप के पास ले चलने की अर्ज की, तब चतुरदास ब्राह्मण ने उनसे कहा, "मैं उन महात्माजी से बिना पूछे आपको वहाँ नहीं ले जा सकता हूँ।"

स. ३- चतुरा ब्राह्मण ने श्रीजी साहेबजी के आगे विनयपूर्वक क्या बात कही?

ज. ३- श्रीजी साहेबजी के आगे चतुरदास ब्राह्मण ने विनयपूर्वक कहा, →

स.४- उक्त प्रकार की बातें सुनते ही श्रीजी स्वरूप ने चतुरा ब्राह्मण से क्या कहा? श्रीजी की बात सुनते ही चर्चा में बैठे सुन्दरसाथ ने श्रीजी को किस बात के लिए और क्यों मना किया?

ज. ४- चतुरा ब्राह्मण की विनयपूर्वक अर्ज सुनते ही श्रीजी साहेबजी ने →

स. ५- उपस्थित सुन्दरसाथ की बातें सुनकर श्रीजी साहेबजी ने चतुरा से क्या कहा?

ज. ५- उपस्थित सुन्दरसाथ के मना करने पर भी श्रीजी स्वरूप ने चतुरा →

स. ६- "फेर मेहर करी उनके बाब" अर्थात् किसने और किस पर मेहेर की तथा "इसके उपरान्त भी" - ऐसा क्यों कहा गया है, क्या कारण है?

ज. ६- *"फेर मेहर करी उनके बाब"* अर्थात् श्रीजी स्वरूप ने लक्ष्मण →

स. ७- लक्ष्मण सेठ ने किस प्रकार आकर श्रीजी साहेबजी से भेंट की?

स. ८- श्री प्राणनाथजी के दर्शन करते ही लक्ष्मण सेठ के मन में क्या अनुभूति होने लगी?

→ "लक्ष्मण नाम के एक वैष्णवी सेठ आपके दर्शन करना चाहते हैं। वे धन में धनाढ्य में धनाढ्य हैं तथा ज्ञान में भी बड़े दिमागदार और प्रकाण्ड विद्वान हैं।"

→ आज्ञा दी कि उन लक्ष्मण सेठ को तुरन्त बुला लाओ। श्रीजी साहेबजी की उक्त आज्ञा सुनते ही वहाँ उस समय चर्चा में उपस्थित सुन्दरसाथ ने लक्ष्मण सेठ को बुलाने से मना कर दिया क्योंकि लक्ष्मण सेठ तो साधु-संतों को देखते ही दूर से पत्थर मारते थे। अतः सुन्दरसाथ कहने लगे, "वे यहाँ आकर भी ऐसा ही करेंगे और हलचल मचा देंगे।"

→ ब्राह्मण से कहा, "ऐसे पत्थर मारनेवाले तो आज तक एक भी नहीं आये हैं। अतः मैं उन्हें आने का आमंत्रण देता हूँ। उन्हें जरूर लेकर आना।"

→ सेठ पर मेहेर की । सुन्दरसाथजी द्वारा लक्ष्मण सेठ के स्वभाव की पहचान कराने के बाद भी श्रीजी साहेबजी ने लक्ष्मण सेठ को आमंत्रण देकर बुलवाया। इसीलिए *"इसके उपरान्त भी"*- ऐसा कहा गया है। ऐसा श्रीजी स्वरूप ने इसलिए किया क्योंकि कहते हैं कि नास्तिक भी आस्तिक का पूरक होता है, तो क्या पत्थर मारनेवाले पत्थर न मारनेवाले के पूरक नहीं हुए?

ज. ७- साधु-संतों अथवा आदरणीय लोगों से जिस प्रकार भेंट की जाती है, उसी प्रकार नीतिपूर्वक आकर लक्ष्मण सेठ ने श्रीजी साहेबजी से भेंट की क्योंकि वे तो वैष्णव धर्म के प्रकाण्ड विद्वान थे।

ज. ८- श्रीजी स्वरूप के दर्शन मात्र से ही सेठजी को अत्यधिक आनन्द प्राप्त हुआ। उनके मन का कलिमलरूपी कलुष कपूर की भाँति उड़ गया और उनके त्रितापरूपी सारे दुःख-संताप निर्मूल हो गये।

स. ९- सर्वप्रथम श्रीजी के श्री मुख से लक्ष्मण सेठ ने कितने समय तक चर्चा सुनी?

स. १०-चर्चा सुनकर सेठजी किस प्रकार घर लौटकर आये और श्रीजी के चरणों में वे क्या छोड़ आये?

स. ११-तत्पश्चात् लक्ष्मण सेठ पुनः चर्चा सुनने कितनी बार आये? क्या वे अन्य श्रोताओं की तरह नित्य प्रति आने लगे?

स. १२-"धाम में पैठे बिना विचार" - ऐसा किसने, किससे, कहाँ और क्यों कहा?

ज. १२- *"धाम में पैठे बिना विचार"* - ऐसा लक्ष्मण सेठ से जिन्दादास भाई ने कहा। एक दिन जब जिन्दादास भाई बाग में टहल रहे थे, उसी समय लक्ष्मण सेठ श्रीजी से मिलकर घर वापस आ रहे थे। →

स. १३-दूसरी बार लक्ष्मण सेठ ने श्रीजी साहेबजी के चरणों में क्या प्रश्न रखा?

स. १४-जब श्रीजी साहेब ने उक्त प्रश्न का उत्तर दृष्टान्त सहित देकर लक्ष्मण सेठ को स्पष्टतः समझा दिया, तब सेठजी की क्या हालत हुई?

ज. १४- सेठजी के उक्त प्रश्न के उत्तर में जब श्री प्राणनाथजी ने मारकण्डेय →

स. १५-उक्त प्रश्न के उपरान्त श्रीजी साहेबजी ने लक्ष्मण सेठ के आगे किन-किन ग्रन्थों के रहस्य खोलकर रख दिये?

ज. १५- उक्त प्रश्न के उपरान्त श्रीजी साहेबजी ने लक्ष्मण सेठ के आगे बड़े →

ज. ९- सर्वप्रथम श्रीजी के श्री मुख से लक्ष्मण सेठ ने डेढ़ घण्टे चर्चा सुनी।

ज. १०- चार घड़ी अर्थात् डेढ़ घण्टे चर्चा सुनकर लक्ष्मण सेठ जब घर लौटने लगे, तब उनका मन वहीं अर्थात् श्रीजी साहेबजी के चरणों में ही रह गया। बिना मन के ही वे अपने घर लौट आये।

ज. ११- तत्पश्चात् प्रकाण्ड विद्वान लक्ष्मण सेठ दो-चार बार पुनः श्रीजी के श्री मुख से चर्चा सुनने गये। अन्य श्रोताओं में और इनमें धरती-आसमान का अन्तर है। इनकी रीत तो न्यारी ही थी।

→ तब उनसे मिलते ही जिन्दादास भाई बोल उठे, "धाम में पैठे बिना विचार" अर्थात् विचार-विवेक किए बिना ही श्रीजी के धाम की जमात में शामिल हो गए? अतः जो वचन पहले सेठजी ने जिन्दादास भाई से कहे थे, जिन्दादास भाई ने वही वचन उन्हें वापस कर दिये।

ज. १३- दूसरी बार लक्ष्मण सेठ ने श्रीजी साहेबजी के चरणों में प्रश्न रखते हुए कहा, "अक्षरातीत धाम के मूल मिलावे की बैठक में बैठे-बैठे ही हम लोग यहाँ खेल में कैसे हैं? यह बात मेरी समझ में नहीं आई।"

→ ऋषि का दृष्टान्त देकर चर्चा की, तब उस चर्चा को सुनते ही लक्ष्मण सेठजी की आन्तरिक मर्मभेदी दृष्टि खुल गई तथा मन और ध्यान में एकाग्रता आ गई अर्थात् उन्हें श्रीजी स्वरूप की पहचान हो गयी।

→ विवेकमय तरीके से सुन्दर शब्दों में श्रीमद्भागवत महापुराण और श्रीमद्भगवद्गीता के गूढ़-गूढ़ रहस्यों को भी स्पष्ट करके लक्ष्मण सेठ के आगे रख दिये और उनके लिए पार के द्वार खोल दिये।

स. १६-अब लक्ष्मण सेठ श्रीजी साहेबजी को किस दृष्टि से देखने लगे?

स. १७-लक्ष्मण सेठ की लौकिक दृष्टि फिरते ही उनकी दृष्टि कहाँ पहुँच गयी?

स. १८-जब लक्ष्मण सेठ की आत्मा जागृत हो उठी और वे धर्म में शामिल हो गए, तब समाज के बीच क्या हलचल हुई? कलियुगरूपी दज्जाल क्यों काँपने लगा तथा इसके फलस्वरूप क्या हुआ?

ज. १८- जब लक्ष्मण सेठ की नजर में घर-संसार की सुध जाती रही, उनके दिल-दिमाग में बार-बार श्री परमधाम की याद आने लगी तथा →

स. १९-ठट्ठा नगर में किन-किनके कारण समाज में कितनी बार हलचल मची?

ज. १९- ठट्ठा नगर में एक बार कबीर सम्प्रदाय के महन्त चिन्तामणि के समय उनके समाज में भूकम्प-सी हलचल मची थी क्योंकि समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति अपने धर्म के विमुख होकर दूसरों के धर्म में →

स. २०-ठट्ठा नगर में कितने सुन्दरसाथ की जागनी हुई? किस-किस समाज के लोग निजानन्द सिद्धान्त में शामिल हुये?

ज. २०- ठट्ठा नगर में श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त-श्री कृष्ण प्रणामी धर्म में →

स. २१-"कलियुग डरा देख के" अर्थात् क्या देखकर कलियुगरूपी दज्जाल काँपने (डरने) लगे?

ज. २१- *"कलियुग डरा देख के"* अर्थात् श्रीमन्निजानन्द सम्प्रदाय - →

ज. १६- अब लक्ष्मण सेठ को अखण्ड वस्तु की प्राप्ति हो गई अर्थात् अब वे श्रीजी स्वरूप को साक्षात् परब्रह्म स्वरूप के रूप में देखने लगे।

ज. १७- श्री लक्ष्मण सेठ की आत्मा में अखण्ड ज्ञान का आवेश उतर आया। वे अपनी सुध-बुध भूल गए। उनमें जागृत बुद्धि प्रवेश हुई और उनकी दृष्टि श्री निजधाम में पहुँच गई।

→ अन्दर की मायावी दृष्टि हट गई, तब उनकी नजर मूल घर में स्थित उनकी परात्म स्वरूप पर जा टिकी। मूल मिलावे से लेकर आज तक की लीला उन्हें प्रत्यक्ष दिखाई देने लगी और वे धर्म में शामिल हुए। जैसे ही वे निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हुए, वैसे ही वैष्णव समाज में भूकम्प आ गया। कलियुगरूपी कुवृत्तिग्रस्त दज्जाल ईर्ष्या के कारण काँपने लगे और हमारे धर्म की विभिन्न प्रकार से कपोल-कल्पित निन्दा करने लगे। परन्तु फलस्वरूप उनका कुछ नहीं चल सका। सिर पटकते हुए रह गये।

→ शामिल हुए। दूसरी बार हलचल तब हुई, जब ठट्ठा नगर के वैष्णव समाज के प्रखर विद्वान कथाकार लक्ष्मण सेठ वैष्णव धर्म छोड़कर निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हुए। इस बार भी वैष्णव समाज में बड़ा भारी भूकम्प-सा उठा। दोनों ही समाज के प्रकाण्ड विद्वान तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होने के कारण उनके पीछे बहुत से लोग निजानन्द सिद्धान्त में शामिल हुए।

→ लगभग हजार-डेढ़ हजार सुन्दरसाथ शामिल हुए। कबीर सम्प्रदाय के लोग चिन्तामणि के माध्यम से आए, तो लक्ष्मण सेठ के पीछे उनके कइयों शिष्य शामिल हुए। यहाँ भारी संख्या में सुन्दरसाथ की जागनी हुई।

→ श्री कृष्ण प्रणामी धर्म नामक नये धर्म मार्ग में पुराने धर्मवाले भी आकर शामिल हुए, यह देखकर कलियुगी गुणों से ग्रस्त दज्जाल डरकर काँपने लगे कि कहीं हमारे समाज में शून्यता न आ जाय क्योंकि श्रीजी की कलिमलहारी चर्चा के अद्भुत प्रभाव के आगे इन स्वार्थी और ईर्ष्या रखनेवालों का कुछ नहीं चल सका।

स. २२-गोस्वामी बालक के पास रहकर ठट्ठा नगर के अन्य समाज के लोग कौनसा धन्धा करके सन्तुष्ट होने लगे?

ज. २२- वल्लभ सम्प्रदाय के गोस्वामी बालक के पास बैठकर ठट्ठा नगर के →

स. २३-दूसरी बार श्रीजी स्वरूप ठट्ठा में कितने समय तक रहे? तत्पश्चात् कहाँ जाने के लिए सोचने लगे?

स. २४-ठट्ठा नगर के सुन्दरसाथ को श्रीजी स्वरूप किस प्रकार सान्त्वना देकर वहाँ से निकले?

ज. २४- इस समय ठट्ठा नगर के सुन्दरसाथ को श्रीजी स्वरूप ने सान्त्वना देते हुए कहा, "मेरे प्यारे सुन्दरसाथजी! अब आप मुझे आगे जाने →

स. २५-"सरत थी वायदे" अर्थात् मसकत पहुँचने के लिए जो समय निर्धारित था, उसी समय पर श्री राजजी पहुँचा रहे हैं - ऐसा क्यों कहा है?

ज. २५- *"सरत थी वायदे"* अर्थात् ठट्ठा के सुन्दरसाथ से विदा लेकर श्रीजी स्वरूप लाठी बंदर आये और लाठी बंदर से नाव में बैठकर →

स. २६-"मानीं नाहीं कोय" अर्थात् किसने किसी का भी कहना नहीं माना और क्यों?

ज. २६- *"मानीं नाहीं कोय"* अर्थात् श्रीजी साहेबजी ने इस बार किसी भी सुन्दरसाथ का कहना नहीं माना क्योंकि ठट्ठा के सुन्दरसाथ →

स. २७-अन्ततोगत्वा श्रीजी साहेबजी कहाँ-से-कहाँ होते हुए नाव में बैठकर कहाँ पहुँचे?

ज. २७- अन्ततोगत्वा श्रीजी स्वरूप ठट्ठा स्थित नाथा जोशी के घर से →

→ लोग कई दिनों तक प्रणामी धर्म मार्ग की निन्दा करते रहे। तत्त्व की बात तो वे जानते नहीं थे। अतः श्रीजी की निन्दा-चुगली करके अपना क्रोध निकालते और आत्म-सन्तुष्टि करते थे।

ज. २३- दूसरी बार श्रीजी स्वरूप ठट्ठा नगर स्थित नाथा जोशी के घर दस महीने रहे। अब आगे प्रस्थान करने का मौसम आ गया। अतः वे पुनः वहाँ से लाठी होते हुए मसकत जाने की सोचने लगे।

→ की आज्ञा दें। न जाने श्री राजजी ने किस कार्य के लिए मेरा वहाँ पहुँचना अनिवार्य कर दिया है? मेरे वहाँ जाने के पीछे कोई विशेष कारण है।" इस तरह सुन्दरसाथ को समझाकर सान्त्वना देते हुए श्रीजी स्वरूप आगे चलने के लिए तैयार हुए।

→ दरिया (नदी) पार करके वे मसकत बंदर उतरे। इसी समय मसकत बंदर आ पहुँचने का वादा था क्योंकि एक बार पहले श्रीजी को लाठी बंदर से नाव में बैठने के बावजूद भी वापस लौटना पड़ा था। सत्रह दिन तक नाव के समुद्र के बीच में जाकर रुक जाने का कारण यही था कि उस समय ठट्ठा नगर में जागनी का कुछ कार्य बाकी रह गया था।

→ का कहना था, "यदि आप मात्र बन्धन में पड़े साथ को छुड़ाने के कार्य विशेष यहाँ से जा रहे हैं, तो बन्धन में पड़े साथियों को छुड़ाने का कार्य हम कर देंगे, लेकिन आप यहीं विराजमान रहिए। आपकी आज्ञा मुताबिक हम वह कार्य कर लेंगे।" किंतु श्रीजी का कहना था, "मेरा ही कोई काम वहाँ शेष पड़ा है। श्री राजजी किस कार्य के निमित्त मुझे वहाँ पहुँचाना चाहते हैं, कौन जाने?"

→ सुन्दरसाथ से विदा होकर पहले की तरह ही लाठी बंदर आये। वहाँ से नाव में बैठकर दरिया (नदी) पार मसकत बंदर में उतर गये। अब आगे मसकत में श्रीजी स्वरूप कहाँ रहे, वह वर्णन आयेगा।

-(प्रकरण २५, सवाल-जवाब नं. २७, कुल सं. ८४०+२७=८६७)।

❖ मसकत बंदर ❖

स. १- दरिया किनारे मसकत बंदर से उतरकर श्रीजी स्वरूप कहाँ चले गये अर्थात् कहाँ पहुँच गये?

स. २- अचानक बीच बाजार में श्रीजी स्वरूप से कौन आकर मिले, जिन्होंने श्रीजी स्वरूप से कुशल-क्षेम पूछा?

स. ३- वे भाई किस लिए श्रीजी साहेब का आदर-सत्कार करने लगे?

ज. ३- मावजी भाई ने लौकिक सम्बन्ध के कारण श्री प्राणनाथजी का →

स. ४- मावजी भाई की दुकान में कौन-कौन सुन्दरसाथ आकर श्रीजी स्वरूप से मिले, जिन्होंने श्री बाईज्यूराज की खबर श्रीजी को दी?

ज. ४- मावजी भाई की दुकान में श्रीजी साहेबजी से विश्वनाथ भाई आकर मिले। उन्होंने श्री बाईज्यूराज की खबर श्रीजी स्वरूप →

स. ५- मावजी भाई ने उस समय श्री प्राणनाथजी की कैसी सेवा की?

ज. ५- मावजी भाई ने इस समय श्री प्राणनाथजी सहित समस्त सुन्दरसाथ →

स. ६- कौन अपने बड़प्पन और अवस्था को भी भूलाकर भोजन परोसने की सेवा करने लगे?

स. ७- कौन अपने पुत्र को दुकान का कार्य सौंपकर चर्चा श्रवण करने लगे?

❖ मसकत बंदर ❖

ज. १- लाठी बन्दर से नाव में बैठकर श्रीजी स्वरूप मसकत बंदर उतर गए। दरिया के किनारे पर स्थित बाजार में ही मावजी भाई की दुकान थी। अतः श्रीजी स्वरूप उनकी दुकान में रुक गये।

ज. २- अचानक बीच बाजार में श्रीजी स्वरूप से मावजी भाई आकर मिले। उन्होंने श्रीजी साहेबजी से कुशल-क्षेम पूछा और आने का कारण जानने के पश्चात् उनसे कहा, "आप भले पधारे।"

→ आदर-सत्कार किया क्योंकि मावजी भाई भी ठाकुर और श्री मेहराज भी ठाकुर थे। अतः लौकिक नाता जानकर बड़ा आदर-सत्कार किया।

→ को दी। पुनः रूपा और राधाबाई ने भी, जो श्री बाईज्यूराज के साथ बन्धन में थीं, श्रीजी स्वरूप को श्री बाईज्यूराज की खबर दी। इन दोनों बहनों ने श्रीजी के अंदर के श्री बाईज्यूराज प्रति के चिन्ताजनक विषयों को पूरी तरह से हल कर दिया। रूपा और राधाबाई की बातों को सुनकर श्रीजी साहेबजी श्री बाईज्यूराज के प्रति निश्चिन्त हो गए।

→ को ठहराने की अच्छी व्यवस्था कर दी। वहाँ सभी सुन्दरसाथ जब इकट्ठे मिलकर बैठे, तो बड़े प्रसन्न हुए। स्थान-स्थान से आए लोग श्रीजी साहेबजी को अपनी-अपनी आपबीती सुनाने लगे।

ज. ६- समस्त सुन्दरसाथ को सम्मान सहित भोजन का आमंत्रण देकर स्वयं मावजी भाई अपना बड़प्पन और अपनी अवस्था को भी भूलाकर आनन्द-मग्न होकर भोजन परोसने की सेवा करने लगे।

ज. ७- मावजी भाई अपने पुत्र कान्हजी को दुकान का कार्य सौंपकर स्वयं चर्चा सुनने बैठ गये और चित्त देकर चर्चा श्रवण करने लगे।

स. ८- भोजनोपरान्त मावजी भाई की दुकान में श्रीजी साहेबजी ने क्या किया?

ज. ८- भोजन-प्रसाद का कार्यक्रम पूरा होने के पश्चात् श्रीजी साहेब →

स. ९- मसकत बंदर में सुभानुल-हक स्वरूप श्रीजी की कैसी दयावन्त चर्चा हुई?

ज. ९- मसकत बंदर स्थित मावजी भाई की दुकान में ठट्ठा के विवरण को →

स. १०-मावजी की दुकान में उस समय किनके माध्यम से चर्चा में अखण्डानन्द का विस्तार हुआ?

स. ११-इस समय मावजी भाई की दुकान में चर्चा सुनने में वे कौन-कौन थे, जो चर्चारस में तल्लीन होकर बंदीखाने के दुःख भूल गये?

ज. ११- इस समय मावजी भाई की दुकान में चर्चा सुनने में बन्धन से →

स. १२-किस-किस का दिल चर्चा-श्रवण करते-करते श्री राजजी की ओर रोशन हुआ?

स. १३-मावजी भाई के डेरे पर कैसी चर्चा होती थी? उस चर्चा द्वारा किन्हें श्रीजी स्वरूप की पहचान होने लगी?

ज. १३- मावजी भाई के डेरे पर बड़ी मीठी-मधुर चर्चा होती थी। सुन्दरसाथ →

स. १४-मावजी भाई की हवेली में चर्चा श्रवणार्थ मात्र मावजी भाई के घर-परिवार के लोग ही बैठते थे या अन्य बाहर के लोग भी आते थे?

ज. १४- मावजी भाई की हवेली में बड़ी रोचक और आनन्दमयी चर्चा →

→ मावजी भाई की दुकान में पुनः चर्चा करने बैठ गये तथा सबको ठट्ठा में हुए सुन्दरसाथ के जागरण-कार्य सहित अन्य समाचार सुनाने लगे।

→ लेकर सुभानुल-हक की सभा की तरह अर्थात् मूल मिलावे की बैठक में प्रेम-सम्वाद के दौरान अक्षरातीत श्री राजजी द्वारा कहे हुए प्रशंसनीय वचनों की ही तरह कृपालु श्रीजी साहेबजी के मेहेर की ऐसी बरसात हुई कि सभी लोग आनन्द विभोर हो गये।

ज. १०- मावजी की दुकान में श्रीजी साहेबजी के मुखारविंद से परमधाम की चर्चा का बड़ा भारी प्रवाह उमड़ पड़ा और श्रोताओं के हृदयमण्डल में अखण्डानन्द का विस्तार हुआ।

→ छुटकर आये विश्वनाथ भाई सहित रूपा और राधाबाई भी थे। इन्होंने जब श्रीजी के श्री मुख से अखण्डानन्द प्रदान करनेवाली चर्चारस का पान किया, तो वे बंदीखाने में सहन किए सारे दुःख-कष्ट भूल गये।

ज. १२- चर्चा श्रवण करते-करते रूपाबाई और राधाबाई के मन में श्री राजजी का स्वरूप समा गया और उनका मन बड़ा देदीप्यमान हो उठा।

→ चर्चारस का पान कर तृप्त हो रहे थे। इस वक्त मावजी भाई ने भी मन लगाकर चर्चा सुनी, जिसके प्रतिफल उन्हें श्रीजी साहेबजी के स्वरूप की पहचान होने लगी।

→ होती थी। श्री प्राणनाथजी की इस रसमयी चर्चा का समाचार विचित्ररूप से पूरे मसकत में फैलने लगा। यह समाचार सुनकर उनके दर्शन एवम् प्रवचन-श्रवण के आकांक्षी बनकर दूर-दूर से लोग आने लगे।

स. १५-इस प्रकार मसकत में चर्चा का प्रबल दौर कितने दिनों तक जोर-शोर से चला?

ज. १५- इस प्रकार मसकत बंदर स्थित मावजी भाई की हवेली में श्री →

स. १६-चर्चा के प्रबल प्रभाव को देखकर कलियुगरूपी दज्जाल क्या सोचने और करने लगा?

ज. १६- चर्चा के प्रबल प्रभाव को देखकर कलियुगरूपी दज्जाल मन ही →

स. १७-कलियुग कैसे लोगों के बीच बैठकर निन्दा करने लगा और मन में क्या विचार कर डरने लगा?

ज. १७- कलियुग अपने अधीन रहनेवाले अपने सेना के लोगों के बीच →

स. १८-"ए क्या करें मुझको" - ऐसा कौन और किनके लिए कह रहे हैं?

स. १९-कलियुगरूपी दज्जालों ने यहाँ श्रीजी से भिड़ने के लिए क्या किया?

स. २०-मावजी भाई की हवेली में रात-दिन किस प्रकार व्यतीत होते थे?

ज. २०- मावजी भाई की हवेली में नित्य प्रति आनन्दमयी हँसी-विनोदपूर्ण →

स. २१-मावजी भाई की दुकान में कौनसे दो-चार कीर्तन अवतरित हुये?

स. २२-कैसे जन्म को बिना विचारे गँवार-अज्ञानी लोग गँवा रहे हैं?

→ प्राणनाथजी की चर्चा का प्रबल दौर दस-बीस दिनों तक चला। इस दौरान चर्चा द्वारा श्रोताओं को जिस आनन्द की अनुभूति हुई, वह तो अवर्णनीय है।

→ मन सोचने लगा, "ये हमें मारने के लिए आये हैं।" अतः दज्जालों ने अपने अस्त्र-शस्त्र सँभाल लिये और चर्चा श्रवण करने बैठे लोगों के मन में बैठकर शोर-शराबा कर उत्पात मचाने लगे।

→ बैठकर निन्दा करने लगा और मन में यह सोचकर डरने लगा, "मैं अपनी पूरी शक्ति लगाकर इन महात्मा से भिड़ जाऊँगा, तब वे मेरा क्या बिगाड़ सकेंगे? न जाने ये महात्मा मुझे मारने का विचार मन में लेकर कहाँ से आ गये हैं?"

ज. १८- *"ए क्या करें मुझको"* - ऐसा कलियुगरूपी दज्जाल श्री प्राणनाथजी के प्रति कह रहा है।

ज. १९- कलियुगरूपी दज्जालों ने यहाँ श्रीजी से भिड़ने के लिए उपद्रवी लोगों के मन में बैठकर उन्हें श्रीजी से भिड़ने के लिए तैयार किया।

→ वातावरण में श्री परमधाम की चर्चा अथवा परब्रह्म परमात्मा का स्तुति-गान और कीर्तन होते रहता था। रात-दिन भजन-कीर्तन, उत्सव-रसोई और चर्चा-कथा में व्यतीत होता था।

ज. २१- मावजी भाई की हवेली में श्री प्राणनाथजी द्वारा १) तू दुनी को कहा पुकारहीं २) रे हो दुनिया बावरी ३) रे मन तू भूल न महामत इत्यादि दो-चार प्रकरण अवतरित हुए।

ज. २२- हीरे सदृश देवदुर्लभ मानव जन्म को बिना विचारे माया के परवश होकर दुनिया के अज्ञानी-गँवार लोग मूर्खों की तरह कौड़ियों के मोल गँवा रहे हैं।

स. २३-"सब स्याने अपने काम में लगे" - यह वाक्य कौन कह रहे हैं और "अपने काम में लगे" - ऐसा किसके लिए कहा है?

स. २४-उक्त अवतरित कीर्तनों की कथा-चर्चा द्वारा किसका काम बन गया?

स. २५-इन कीर्तनों को श्रवण करने से किनकी आत्मा जागृत हो गई और वे धर्म में शामिल हुए?

स. २६- किन लोगों को श्री राजजी के चर्चा के सिवाय कुछ और सूझता ही नहीं था?

ज. २६- मावजी भाई की हवेली में कितने ही दूर-दूर के सुन्दरसाथ आकर →

स. २७-"हुई खण्डनी मावजी पर" अर्थात् मावजी भाई पर खण्डनी क्यों हुई?

ज. २७- श्रीजी साहेबजी की नजर में मावजी भाई मान-अभिमानरूपी विकार से ग्रस्त हो गये थे। अतः एक दिन चर्चा में श्रीजी ने मान-अभिमान मनुष्य के भजन, भक्ति और सेवा को विफल करनेवाला →

स. २८-खण्डनीपूर्ण वचनों को सुनकर मावजी भाई ने क्या निश्चय किया?

ज. २८- खण्डनीपूर्ण वचनों को सुनने के पश्चात् मावजी भाई ने यह निश्चय →

स. २९-"जब सोया रात को" अर्थात् रात में सोये हुए मावजी भाई को अचानक क्या हुआ?

ज. २३- *"सब स्याने अपने काम में लगे"* - यह वाक्य महामति श्री प्राणनाथजी इस मायावी दुनिया से कह रहे हैं। *"अपने काम में लगे"* - ऐसा अपने आपको बुद्धिमान् समझनेवालों को, जो अपने-अपने कार्यों में मग्न हैं, उन्हें कहा गया है।

ज. २४- उक्त अवतरित कीर्तनों द्वारा अलौकिक प्रभावयुक्त कथा-चर्चा सुनकर मावजी भाई का काम बन गया। उक्त अवतरित वाणी द्वारा की गई भावमयी चर्चा उन्हें अत्यंत मीठी लगी।

ज. २५- उक्त कीर्तनों की भावमयी चर्चा श्रवण करने से मावजी भाई की आत्मा जागृत हो उठी और तत्पश्चात् वे भी कृष्ण प्रणामी धर्म में शामिल हो गए।

→ एकत्रित होते गए। वे रात-दिन चर्चा-कथा रस का पान करते थे। अब उन्हें परमात्मा श्री राजजी की चर्चा के सिवाय कोई और कार्य सूझता ही नहीं था।

→ विकार है और उसे छोड़ देने के विषय में कुछ कड़े शब्दों का प्रयोग किया क्योंकि इसी कारण मावजी भाई नामक सुन्दरसाथ कसौटी पर पूरे नहीं उतर पाए थे। किंतु खण्डनी के वचनों को सुनकर मावजी भाई के अंदर के अवगुण उनके अपने ही मन में खटक गए। खण्डनी के उन शब्दों में उन्होंने अपना ही अपमान हुआ देखा।

→ कर लिया, "अब से मैं उनके पास चर्चा सुनने नहीं जाऊँगा। स्वामीजी ने मुझमें ऐसा क्या दोष देख लिया कि मेरे लिए ऐसे कटु शब्दों का प्रयोग किया।" ऐसा विचार कर वे रात्रि को अपनी दुकान में जाकर सो गये।

ज. २९- *"जब सोया रात को"* अर्थात् रात में सोये हुए मावजी के मुख पर स्वप्न में स्वयं परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने जोर का एक तमाचा दे दिया। इससे वे अत्यंत भयभीत होकर काँप उठे।

स. ३०-"क्यों रीस करी इन सों"-ऐसा किसने, किससे कहा? पुनः किसने, किससे रीस की?

स. ३१-तमाचा मारनेवाले स्वरूप ने मावजी भाई से क्या-क्या कहा?

ज. ३१- तमाचा मारनेवाले स्वरूप ने मावजी भाई से कहा, "श्री मेहराज →

स. ३२-मावजी भाई जब रात को चौंककर उठ गए, तब उन्होंने क्या किया और तत्पश्चात् वे कहाँ गए?

ज. ३२- मावजी भाई जब रात को चौंककर उठ गए, तब अपने गाल पकड़कर →

स. ३३-"मुझे तमाचा मार के"- ऐसा कौन, कहाँ और किससे कह रहे हैं?

स. ३४-श्रीजी साहेब के चरणों में प्रणाम करते हुए मावजी भाई ने क्या-क्या कहा?

ज. ३४- जब मावजी भाई रात को तमाचा खाकर चौंककर उठ गए, तब श्रीजी साहेबजी को सोते से उठाकर उनके चरणों में गिरकर रोते- →

स. ३५- अतः तमाचा खाने के बाद मावजी भाई कैसे बदल गये?

ज. ३५- अहोभाग्यवान् मावजी भाई उक्त प्रकार से तमाचा खाने के पश्चात् बड़ी लगन से चर्चा सुनने लगे। वे बड़े पक्के और प्रवीण बन →

स. ३६-मावजी भाई के परिवार के लोगों का मावजी भाई से अप्रसन्न होने का क्या कारण था?

ज. ३०- *"क्यों रीस करी इन सों"* - ऐसा श्री राजजी ने तमाचा मारकर मावजी भाई से कहा। चर्चा में खण्डनीपूर्ण बचन सुनकर मावजी भाई ने श्रीजी स्वरूप पर रीस की।

→ से तुम क्यों रुष्ट हुये? उनके सदुपदेशों को तुमने ध्यान से क्यों नहीं सुना? जाओ, तुम फिर वहीं जाओ! उनके स्वरूप की पहचान करो, नहीं तो दूसरा तमाचा भी देना पड़ेगा!!"

→ रोने लगे। उनके कानों में श्री राजजी के शब्द अब भी गुंजायमान हो रहे थे। रात्रि अभी भी शेष थी। किंतु वे उठकर उसी समय श्री प्राणनाथजी के पास गये और बाहर से द्वार खटखटाने लगे। श्रीजी को नींद से जगाया। श्रीजी ने जब दरवाजा खोला, तब मावजी भाई रोते-रोते विनयपूर्ण शब्दों में उनकी मनुहार करने लगे।

ज. ३३- *"मुझे तमाचा मार के"* - यह वाक्य मावजी भाई ने श्रीजी साहेबजी से तब कही, जब वे रात को उठकर श्रीजी साहेबजी के शयन के कमरे में गये थे।

→ रोते उन्होंने रात का सारा वृत्तान्त सुनाते हुए कहा, "स्वयं श्री राजजी ने तमाचा मारकर मेरा मुँह आपकी ओर फिरा दिया। मैं अपनी खण्डनी सुनकर आपसे विमुख हो गया था। सुन्दरसाथ में रहकर भी मैं कच्चा ही रह गया। मैं आपके स्वरूप की पहचान नहीं कर सका।"

→ गये। उन्हें चर्चा का ऐसा रंग लगा कि चर्चा सुनते-सुनते श्रीजी स्वरूप के प्रति उनका विश्वास अविकल्परूप से दृढ़ हो गया। अब वे अपने धामधनी और वहाँ के परिवार-सुन्दरसाथ की ऐसी सेवा करने लगे कि उनकी सेवा देखकर कलियुग भी काँप उठा।

ज. ३६- जब मावजी भाई की आत्मा पूरी तरह जागृत हो उठी, तब "सेवा जैसे पदार्थ के अलावा आत्मा को मूल मिलावे में पहुँचाने का →

→ अन्य कोई साधन नहीं है "- ऐसा समझकर वे अपना रात-दिन उत्सव-रसोई, कथा-चर्चा, भजन-कीर्तन में खर्च करने लगे। →

स. ३७-मावजी भाई के लिए कलियुगरूपी दज्जाल कौन-कौन बने और क्यों?

ज. ३७- मावजी भाई की आत्मा का जागृत होना, पुनः उन्हें सेवा-भाव →

स. ३८-क्या मावजी भाई के घर-परिवार के लोग शोर मचाकर भी मावजी भाई का कुछ बिगाड़ सके?

ज. ३८- उक्त प्रकार की सोच-समझ के माध्यम से मावजी भाई के घर-परिवार के लोग शोर मचाकर भी मावजी भाई का बाल तक →

स. ३९-कुटुम्ब-परिवार के विरोधी हो जाने पर भी मावजी भाई कैसे रहते थे?

ज. ३९- उपरोक्त प्रकार से घर-परिवार के सभी सदस्यों द्वारा विरोध करने पर भी मावजी भाई अपने पथ से तनिक भी विचलित नहीं हुए। →

स. ४०-इस समय मावजी भाई की हवेली में चर्चा सुनकर कितने सुन्दरसाथ जागृत हुये?

स. ४१-मसकत बंदर में श्रीजी साहेबजी को पहचानकर धर्म-सिद्धान्त में शामिल हुए सुन्दरसाथ में से किन्हीं बीस साथ के नाम गिनाओ।

ज. ४१- मसकत बंदर में श्री विश्वनाथ भाई, रूपा और राधाबाई, प्रधान →

→ यह देखकर उनके माता-पिता, पुत्र, पत्नी सभी अप्रसन्न हो गए और सोचने लगे, "अब यह हम सबको भी वीतराग-संन्यासी बना देगा। यह इन पर अपनी पूरी दुकान ही लुटा देगा।"

→ की महानता का महत्त्व समझ आना ही दज्जालों के लिए काल-रूप बना। अतः घर-परिवार के सभी लोग जैसे-माता-पिता, पुत्र-पुत्री, बहू-बेटे, पत्नी आदि सबने कलियुगरूपी दज्जाल का रूप धारण कर लिया और उनका विरोध करने लगे क्योंकि उन्हें लगा कि अब वे सब कुछ लुटाकर उन सबको सड़क पर उतार देंगे।

→ बाँका नहीं कर सके। वे न उनका कुछ बिगाड़ सके और न उन्हें बदल ही सके। वे अपने-अपने नसीब को कोसते रहे। छाती कूटे, हाथ मले, पैर पछाड़े, परंतु मावजी भाई नहीं हिले। वे अपने ही रंग में रंगे रहे।

→ घर-परिवार के सदस्यों के विरोध का उन पर जरा-सा भी प्रभाव नहीं पड़ सका। अपने पूर्ण विश्वास के बल पर उन्होंने कलियुगी वृत्तियों को पछाड़ दिया। अब वे सदैव अपनी परमधाम की लीलाओं में प्रेमोन्मत्त हो भाविक दशा में रहने लगे।

ज. ४०- इस समय मावजी भाई की हवेली में चर्चा सुनकर लगभग सौ-सवा सौ सुन्दरसाथ श्रीमन्निजानन्द धर्म सिद्धान्त में शामिल हुये।

→ भाटिया, खट्टू भाई, राजोबाई, हीरजी भाटिया, मावजी भाई, नारायणजी कायस्थ, जीवा भाई, संगजी भाई, रामजी भाई, मावजी भाई के पुत्र कान्हजी, हीराबाई, गंगाबाई, लक्ष्मण भाई, मानजी भाई, जीवा भाई, रूपजी भाई और वेरसी भाई आदि सुन्दरसाथ श्रीजी साहेबजी को चर्चा द्वारा पहचानकर निजानन्द सिद्धान्त में शामिल हुए।

स. ४२-मसकत बंदर में मावजी की हवेली में होनेवाली इस समय की चर्चा में श्रोता अथवा सुन्दरसाथ कैसे सुखों का अनुभव करते थे?

ज. ४२- मसकत बंदर में मावजी भाई की हेवली में श्रीजी साहेब के श्री →

स. ४३-मसकत बंदर के सुन्दरसाथ के दिल में नित्य प्रति कैसे प्रेम-भाव, हर्ष-उमंग की वृद्धि होने लगी?

ज. ४३- कुलि कलिंगा दज्जालों के ऐसे विरोध के बावजूद भी मसकत →

स. ४४-"क्यों होत न खबरदार" - ऐसा कौन और किससे कह रहे हैं?

ज. ४४- *"क्यों होत न खबरदार"*- ऐसा अरबी डाकुओं के दरोगा श्री →

स. ४५-दरोगा के उक्त प्रश्न के उत्तर में श्रीजी साहेबजी ने क्या कहा?

ज. ४५- दरोगा के उक्त प्रश्न के उत्तर में श्रीजी साहेबजी ने कहा, "तुम मुझे उस बात के लिए खबरदार होने को कहते हो? पहले तुम स्वयं तो खबरदार हो जाओ। ऊपरवाले से डरते हो या नहीं? कैसा कमाई-धन्धा तुम्हारे नसीब में लिखा है? कैसी कमाई से तुम अपना जीवन व्यतीत कर रहे हो? क्या कभी तुमने अपने →

स. ४६-"ओ कादर है भरतार" - ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा?"

स. ४७-किसे श्रीजी की चर्चा मीठी और प्यारी लगती थी, जिससे वह रोज चर्चा में आता था?

ज. ४७- ऊपरवाले खुदा-परमात्मा के प्रति श्री प्राणनाथजी का इतना अटूट →

→ मुख से महत्त्वपूर्ण विषयों पर होनेवाली रसमयी चर्चा द्वारा समस्त सुन्दरसाथ को जो आनन्दानुभव प्राप्त होता था, उसका वर्णन नहीं हो सकता, वह तो अवर्णनीय और शब्दातीत है। उन सुन्दरसाथ के अहोभाग्य की सराहना करना भी अतुलनीय है।

→ बंदर में मावजी भाई की हवेली में धूम मच रही थी। वहाँ नित्य प्रति उत्सव-रसोई, भजन-कीर्तन, कथा-चर्चा होते रहती थी। सुन्दरसाथ नित्य नवीन चर्चारस में तल्लीन और धाम लीला में मग्न रहते थे।

→ प्राणनाथजी के पास आकर कहते हैं। उनके कहने का तात्पर्य यह है, "आप बंधन में पड़ी तेजकुँवरी के हकदार हैं। अतः आप उन्हें बंधन से छुड़वाने के प्रति खबरदार क्यों नहीं होते?"

→ बारे में सोचा है? अरे भाई! पुकारना हो, माँगना हो या चाहे खबरदार ही करना हो, तो ऊपरवाले खुदा को पुकार!! वे सामर्थ्यवान् स्वामी जिनका हाथ सदैव हमारे सिर पर रहता है, वे सदैव सावधान, तत्पर और खबरदार रहते हैं। अतः उनसे कहो, वे जो माँगोगे देंगे। मुझे उस लड़की की जरा-सी भी चिंता नहीं है। तुम्हें हाथ ही फैलाना है, तो उनके आगे फैलाओ! मुझ जैसे के आगे हाथ फैलाओगे, तो क्या मिलेगा?"

ज. ४६- *"ओ कादर है भरतार"*- ऐसा श्री प्राणनाथजी ने अरबी डाकुओं के दरोगा से कहा क्योंकि वह श्री बाईज्यूराज के ऊपर लगाया हुआ "कर" माँगने आया था।

→ विश्वास देखकर दण्ड माँगने आया दरोगा परास्त हो गया। श्रीजी साहेब की चर्चा उसे अत्यंत मीठी और प्यारी लगती थी। अब वह कर वसूलने के बहाने नित्य प्रति आकर श्रीजी के दर्शन करता और चर्चा सुनने में तल्लीन हो जाता।

स. ४८-बंदीखाने का दरोगा जब चर्चा सुनकर परास्त हो गया, तब वह क्या करने लगा?

ज. ४८- बंदीखाने का दरोगा श्रीजी से परास्त हो जाने के पश्चात् नित्य प्रति →

स. ४९-चर्चा सुनकर बंदीखाने का दरोगा परवरदिगार परमात्मा का उपकार क्यों मानता था?

स. ५०-श्रीजी साहेब श्री प्राणनाथजी वि. सं. १७२८ में कहाँ थे और क्या कर रहे थे?

स. ५१-अरबी डाकुओं का मूल केन्द्र कहाँ था?

स. ५२-"अरबी डाकुओं के बन्धन में पड़े लोगों को उनकी जाति के नातेदार समझकर विभिन्न लोगों ने छुड़वा लिया, परन्तु एक लोहाणा बालिका को छुड़वानेवाला कोई नहीं है"- यह बात किसने सुनी?

स. ५३-उक्त बात सुनते ही सेठ भैरव ठक्कर को क्या विचार आया और तब उन्होंने क्या किया?

ज. ५३- उक्त प्रकार की सच्ची खबर सुनते ही भैरव सेठ का दिल पिघल गया। वे सोचने लगे, "यदि मेरे जीते-जी एक लोहाणा बालिका वह भी ठक्कर जाति की, बन्धन में ही रह जाएगी, तो मेरी तो →

स. ५४-सेठ भैरव ठक्कर को उनके कर्मचारियों ने क्या सूचित किया?

ज. ५४- जब सेठ भैरव ठक्कर के कर्मचारियों ने अरबी डाकुओं के मूल →

→ अपने थाने के प्रधान व्यक्ति के आगे "उस लड़की के हकदार से पैसा उठाने जा रहा हूँ "- यह बहाना करके श्रीजी की चर्चा-मण्डान में आता और आकर दर्शन कर चर्चा सुनने बैठ जाता।

ज. ४९- बंदीखाने का दरोगा चर्चा सुनकर पानी-पानी हो जाता था और श्रीजी के ऊपर खुदा-परमात्मा की पूर्ण मेहेर है-ऐसा जानकर ऊपरवाले के प्रति आभार प्रकट करता था।

ज. ५०- श्रीजी साहेब श्री प्राणनाथजी वि. सं. १७२८ में मसकत बंदर स्थित मावजी भाई की हवेली में जागनी का कार्य करते हुए वहाँ के सुन्दरसाथ को धाम की राह और बातों की जानकारी करा रहे थे।

ज. ५१- अरबी डाकुओं का मूल केन्द्र मसकत में ही था।

ज. ५२- "अरबी डाकुओं के बन्धन में पड़े लोगों को अपनी-अपनी जाति का समझकर विभिन्न लोगों ने छुड़वा लिया, परन्तु एक लोहाणा बालिका को छुड़वानेवाला कोई नहीं है" - यह बात अबासी बंदर के लोहाणा सेठ भैरव ठक्कर ने सुनी।

→ नाक ही कट जाएगी। मेरा कमाया हुआ धन इस कार्य में न लगे, तो ऐसे धन का क्या लाभ? मैं अब यह नेक कार्य जरूर करूँगा। यहाँ तो एक तीर से तीन पक्षी गिरेंगे। नाम में नाम, धर्म में धर्म और परोपकार में भी परोपकार। वाह रे वाह !!" तब उन्होंने आदमी भेजा।

→ केन्द्र मसकत बंदर में आकर पूछताछ की, तब उन्हें पता चला कि उस बालिका को छुड़वाने के लिए दण्ड के रूप में सत्तर हजार लहारी (लारी) का भुगतान करना पड़ेगा। इस बात की सूचना उन्होंने अपने सेठजी को दी।

स. ५५-अब कार्य-कारणवश श्रीजी साहेबजी मसकत बंदर स्थित मावजी भाई की हवेली से कहाँ जा रहे हैं?

ज. ५५- अब कार्य-कारणवश श्रीजी साहेबजी मसकत बंदर स्थित मावजी →

❖ अबासी बंदर वृत्तान्त ❖

स. १-अबासी बंदर के सेठ कौन थे, कैसे थे और वे किस बात के प्रति खबरदार हुए?

स. २-भैरव सेठ ने अपने कर्मचारी को मसकत क्यों-किस लिए भेजा था?

स. ३-भैरव सेठ ने किसे और कहाँ से छुड़ाया और तत्पश्चात् उन्हें कहाँ ले आये?

स. ४-भैरव सेठ ने एक तो श्री बाईज्यूराज को बंधन से छुड़ाने का कार्य किया। पुनः दूसरा कार्य क्या किया?

ज. ४- भैरव सेठ ने एक तो सत्तर हजार लहारी का भुगतान कर तेजकुँवरी को बन्धन से छुड़ाया। पुनः दूसरा कार्य उन्होंने यह किया कि तेजकुँवरी को अपने घर में पधराकर उनसे श्रीजी साहेबजी का →

स. ५-भैरव सेठ श्री प्राणनाथजी को अबासी बन्दर किस प्रकार ले गये?

स. ६-"बताए दिया खेस" अर्थात् किसने, किनको अपना खेस (अपनी जाति का) जानकर अपनी सारी हकीकत बता दी?

→ भाई की हवेली से भैरव सेठ का आमंत्रण स्वीकार कर अबासी बंदर जा रहे हैं। भैरव सेठ ने आदर-सत्कार के साथ उन्हें बुलवाया है।

-(प्रकरण २६, सवाल-जवाब नं. ५५, कुल सं. ८६७+५५=९२२)।

❖ अबासी बंदर वृत्तान्त ❖

ज. १- अबासी बंदर के सेठ का नाम है-भैरव ठक्कर। वे अबासी बंदर के राजा के समान एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। वे ठक्कर जाति की बालिका तेजकुँवरी को बंदीखाने से छुड़ाने के विषय में खबरदार हुए।

ज. २- भैरव सेठ ने अपने कर्मचारी को मसकत में अरबी डाकुओं के बन्धन में पड़ी तेजकुँवरी ठक्कर को छुड़ाने के विषय में खबर लेने के लिए भेजा था।

ज. ३- भैरव सेठ ने तेजकुँवरी-श्री बाईज्यूराज को अरबी डाकुओं के बन्धन से सत्तर हजार लहारी का भुगतान कर छुड़ाया और अपने घर अबासी बंदर ले आये।

→ परिचय प्राप्त कर श्री प्राणनाथजी को अपने यहाँ-अबासी बंदर आने का आमंत्रण दिया। उन्होंने श्री प्राणनाथजी को मसकत से अबासी बंदर बड़ी इज्जत और मान-सम्मान सहित गाजे-बाजे, भजन-कीर्तन के साथ बुलवाया और पधराकर चर्चा-कथा करवाने का बड़ा भारी प्रबन्ध किया। उनके ऐसे व्यवस्थित प्रबन्ध द्वारा हजारों आत्माएँ श्रीजी की चर्चा-सुख से लाभान्वित होने लगीं।

ज. ५- भैरव सेठ भजन-कीर्तन, रामत आदि गाते-गवाते बड़े आदर-सत्कार के साथ श्री प्राणनाथजी को अबासी बंदर स्थित अपने घर ले गये।

ज. ६- *"बताए दिया खेस"* अर्थात् सेठ भैरव ठक्कर को श्री प्राणनाथजी (श्री मेहराज ठक्कर) ने अपनी सारी हकीकत सहित देश-विदेश →

→ का समाचार बता दिया क्योंकि सेठजी ने अपनी जाति का दावा →

स. ७-किसने और किसको अपने घर के नजदीक में उतारा दिया?

स. ८-"तहाँ पधराये श्री राज" अर्थात् श्रीजी स्वरूप को भैरव सेठ ने कहाँ पलंग बिछवाकर पधराया?

स. ९-भैरव सेठ ने श्रीजी साहेबजी को घर में पधराकर कैसा प्रबन्ध कर दिया?

ज. ९- भैरव सेठ ने एक ओर तो श्रीजी साहेबजी को सुन्दरातिसुन्दर बड़ा →

स. १०-स्वयं भैरव सेठ चर्चा श्रवणार्थ कहाँ और कैसे अर्थात् किस प्रकार बैठते थे?

स. ११-अब अबासी बंदर स्थित भैरव सेठ के घर में कैसी चर्चा -कथा होने लगी?

ज. ११-अब अबासी बंदर स्थित भैरव सेठ के घर में अत्यंत रोचक ढंग से व्रज लीला की रसमयी चर्चा की धूम मच गई। भैरव सेठ सपरिवार ध्यानपूर्वक श्रवणों द्वारा चर्चा का रसपान करने लगे। इस चर्चा →

स. १२-किसने और किस वक्त श्रीजी साहेबजी से भोजन के लिए विनती की?

ज. १२-जब रसोई में भोजन तैयार हुआ तथा दो पहर का समय पहुँच →

→ लेकर उनसे पूछताछ की थी। अतः श्री मेहराज ठक्कर ने भी उन्हें ठक्कर जाति का जानकर ही प्रत्युत्तर दिया।

ज. ७- सेठ भैरव ठक्कर ने महामति श्री प्राणनाथजी को अपने घर के नजदीक में ही बैठने का प्रबन्ध मिला दिया।

ज. ८- *"तहाँ पधराये श्री राज"* अर्थात् भैरव सेठ ने एक बड़े हॉल में बढ़िया-से एक अत्यंत सुंदर से पलंग पर गादी-तकिये लगवाकर श्रीजी साहेबजी को उस पर आसीन किया।

→ पलंग बिछवाकर गादी पर आसीन कराया, तो दूसरी ओर श्रीजी साहेबजी के साथ आये सुन्दरसाथ जमात के लिए भोजन की व्यवस्था भी कर दी। अब एक ओर शारीरिक भूख मिटाने की व्यवस्था होने लगी, तो दूसरी ओर आत्मीय भोजन अर्थात् चर्चा का कार्य आरम्भ हो गया।

ज. १०-उक्त प्रबन्ध के पश्चात् स्वयं भैरव सेठ चर्चा श्रवणार्थ सपरिवार सबसे आगे श्रीजी साहेबजी के पास में ही बैठते थे।

→ द्वारा सेठजी को अपूर्व आनन्द की अनुभूति हुई। यह चर्चा दो पहर तक चलती। किसी को भी समय का ध्यान न रहता। बोधदायिनी मधुर-मीठी चर्चा के पश्चात् किसी के भी मन में किन्हीं शंका-उपशंकाओं का स्थान ही नहीं रह जाता था। इस प्रकार अबासी बंदर में चर्चा-कथा का सुखमय आनन्ददायी प्रवाह निरंतर चलता रहा।

→ चुका, तब भैरव सेठ ने चर्चा बन्द करके श्रीजी से भोजन करने की विनती की। उस समय श्रीजी साहेब चर्चा से उठे। भैरव सेठ भोजन करने के लिए घर तो गये, परंतु उनके मन में आनन्द की लहर उठ रही थी।

स. १३-चर्चा सुनकर भैरव सेठ अपने घर तो गये, परंतु कैसे-किस प्रकार गये?

स. १४-दोपहर में भोजनोपरान्त श्री प्राणनाथजी क्या करने लगे? वहाँ उस समय चर्चा के लिए ललचाते हुए कौन आये?

ज. १४- इस प्रकार दोपहर में भोजन ग्रहण करने के पश्चात् श्रीजी साहेब →

स. १५-पुनः चर्चा कब से शुरू होती थी और कब तक होती थी?

स. १६-किस समय की चर्चा के पश्चात् व्रज लीला के रसमयी कीर्तन शुरू होते थे?

ज. १६- रात तक चली चर्चा के पश्चात् व्रज लीला की रसमयी रामतों का →

स. १७- उस दिन रात्रि की चर्चा कब तक चली? चर्चा से उठकर भैरव सेठ घर कब गये?

स. १८-भैरव सेठ के चर्चा सुनकर घर जाने के पश्चात् यहाँ चितवनि कब तक चलती रही?

स. १९-चितवनि करते-करते कितना समय हुआ? तत्पश्चात् लोग किस लिए उठने लगे?

स. २०-इस समय यहाँ चर्चा-कथा श्रवण करनेवालों की दशा कैसी हुई?

ज. २०- इस समय यहाँ चर्चा-कथा श्रवण करनेवाले श्रोताओं में से कई →

ज. १३- चर्चा सुनकर भैरव सेठ घर तो गये, परंतु उनके मन में चर्चा की अनूठी अनुभूति होने लगी। मीठी अनुभूतियों को लेकर वे अधिकाधिक प्रसन्नता के साथ आनन्दपूर्वक घर गये।

→ पुनः चर्चा के आसन पर ही विराजमान हुए। भोजनोपरान्त सुन्दरसाथजी भी पुनः आकर बैठ गए। इस समय यहाँ इधर-उधर के अन्य लोग भी कथा-चर्चा श्रवण करने की लालच से इकट्ठे हो गये।

ज. १५- भोजनोपरान्त पुनः करीब दो-ढाई बजे चर्चा-कथा शुरू होती थी। यह चर्चा क्रमशः चलते-चलते रात तक चलती थी।

→ वर्णन शुरू होता था। सुन्दरसाथ मग्न होकर उन प्रकरणों के लय-ताल के साथ झूमते हुए कीर्तन करने लगते थे। काफी रात इसी आनन्द में व्यतीत हो जाती थी।

ज. १७- उस दिन रात्रि की चर्चा लगभग सुबह पाँच-साढ़े पाँच बजे तक चली। "अब उठ जाना चाहिए"-ऐसा विचार कर सुबह साढ़े पाँच-पौने छः बजे भैरव सेठ भी घर चले गए।

ज. १८- भैरव सेठ के घर चले जाने के पश्चात् परमधाम की चितवनि तो प्रातः काल तक चलती रही।

ज. १९- चितवनि करते-करते प्रातः काल हो गया। अतः अब लोग उठने लगे क्योंकि अब मंगला-आरती का समय होने वाला है। दातौन-पानी आदि नित्य-कर्म करके तैयार होना है।

→ साथी श्री मुख की चर्चा श्रवण करते-करते वहीं सो गये, तो कई अब भी श्रीजी के पास ही बैठे हुए हैं। कोई तो श्रीजी स्वरूप के दर्शन के लिए आ रहे हैं। यहाँ कुछ देर के लिए चर्चा स्थगित हुई।

स. २१-इसके पश्चात् पुनः कब से चर्चा शुरू हुई? इस चर्चा में चर्चा श्रवणार्थ कौन-कौन आये?

ज. २१- जब भैरव सेठ उठकर नित्य-कर्म आदि से निवृत्त होकर पुनः →

स. २२-इस चर्चा श्रवण से किस-किस की क्या-क्या दशा हुई?

स. २३-दूसरे दिन प्रातःकालीन चर्चा में भैरव सेठ के साथ कैसे लोग आये और क्यों ?

स. २४-मुलतान शहर के व्यापारी कैसे थे? वे किस धर्म के थे और किसके चेले थे?

स. २५-उन मुलतानी भाइयों से श्रीजी ने किस धर्मग्रन्थ से और कौनसी चर्चा की, जिससे उनका मन निःशंक हो गया?

स. २६-कौन लोग किस लिए श्रीजी साहेबजी के चरणों में झुक गये?

स. २७-"उनके मूल में जितना अंकुर था, उतना ही उन्होंने प्राप्त किया"- इस कथन का क्या तात्पर्य है? ऐसा क्यों कहा है?

स. २८-जब तेजबाई श्रीजी के दर्शन करने आई, उस समय चर्चा-मण्डान में किसके द्वारा धूम मच रही थी?

→ महाप्रभु के दर्शनार्थ आये, तब पुनः चर्चा शुरू हुई। इस समय चर्चा श्रवणार्थ भैरव सेठ सहित उनके कई कुटुम्बीजन एवम् सम्बन्धी लोग भी आए।

ज. २२- इस समय चर्चा श्रवणार्थ पधारे हुए लोगों के चर्चा सुनकर जीवन भर के त्रितापरूपी दुःख-संताप मिट गये। मन के जो भी मायावी शोक थे, वे दूर हो गये।

ज. २३- दूसरे दिन प्रातःकालीन चर्चा में भैरव सेठ के साथ मुलतान शहर के दो मुलतानी व्यापारी चर्चा श्रवणार्थ श्रीजी के पास आए। वे व्यापार के सम्बन्ध में भैरव सेठ से मिलने आये थे। वे भी सेठजी के साथ चर्चा-श्रवणार्थ श्रीजी के पास आ गये।

ज. २४- वे मुलतान शहर के मुलतानी व्यापारी योगारम्भ विद्या में निपुण थे। वे संत गुरु नानकजी के शिष्य थे तथा सिख धर्म के अनुयायी थे।

ज. २५- मुलतान देश के उक्त मुलतानी भाइयों को श्रीजी ने संत कबीर की एक साखी द्वारा चर्चा सुना दी। जिन प्रकरणों का अर्थ वे नहीं समझ पा रहे थे, उन्हीं प्रकरणों के रहस्य का खुलासा हो जाने से उनका मन निःशंक हो गया।

ज. २६- मुलतान देश के मुलतानी व्यापारी नानक के शिष्य थे। वे कुछ दिनों तक श्रीजी की चर्चा सुनने के उपरान्त उनकी दिव्य वाणी से प्रभावित होकर उनके चरणों में झुक गये।

ज. २७- *"उनके मूल में जितना अंकुर था, उतना ही उन्होंने प्राप्त किया"* - इस कथन का तात्पर्य यह है कि वे मूल सम्बन्ध के मुताबिक समझकर भी श्रीजी को अपना नहीं सके। योगारम्भ ज्ञान के वशीभूत होने के कारण वे सम्बन्धी के ज्ञान का पूर्ण लाभ नहीं ले सके।

ज. २८- जिस दिन अबासी शहर की महिलाओं में प्रसिद्ध और अग्रगण्य तेजबाई श्रीजी स्वरूप के दर्शन करने आई, उस समय चर्चा-मण्डान में नरसी भगत के एक कीर्तन को गाकर सुन्दरसाथ →

रसमग्न हो रहे थे। तेजबाई भी आकर उस कीर्तन में विहार कर

स. २९-कौन स्वयं चर्चा के रंग में रंग गई और अपने परिवार को भी वहीं ले आई?

स. ३०-तेजबाई की भाव-दशा को देखकर अन्य कौन स्त्रियाँ सत्संग में आने लगीं? पुनः किनका चित्त श्री राजजी के चरणों में रमने लगा?

स. ३१-किन्हें चर्चा का अनूठा रंग लग गया और उनके रात-दिन चर्चा में ही मग्न रहने के कारण उनका घर डामाडोल हो गया?

ज. ३१- तेजबाई के पीछे-पीछे चलनेवाली भणसाली सखियों को चर्चा

स. ३२-एक दिन श्री प्राणनाथजी ने भैरव सेठ से किस विषय में और क्या पूछा?

ज. ३२- भैरव सेठ के घर में चल रही चर्चा द्वारा कितने लोगों की आत्मा जागृत हो चुकी थी। कितनों का जीवन कृतकृत्य हो चुका था।

स. ३३-"कौन सी राखें वस्त" - यह वाक्यांश कौन, किससे और क्यों कह रहे हैं?

ज. ३३- *"कौन सी राखें वस्त"* - यह वाक्यांश श्रीजी साहेबजी भैरव सेठ से कह रहे हैं क्योंकि भैरव सेठ ने तेजकुँवरी को बन्धन से छुड़वाया, श्रीजी स्वरूप को मसकत से अबासी बंदर बुलवाया,

स. ३४-"सो ग्रहों तुम चित्त में" अर्थात् कौन, किसे और क्या ग्रहण करने को कह रहे हैं?

→ तृप्त हो गई।

ज. २९- अबासी बंदर के महिलाओं की अग्रगण्य तेजबाई भी चर्चा और कीर्तन के रंग में रंग गई। वह स्वयं तो उस रस में मग्न हुई ही, साथ ही अपने परिवार के लोगों को भी वहीं ले आई।

ज. ३०- तेजबाई की आत्मीय भाव-दशा को देखकर उनके प्रति विश्वसनीय भणसाली जाति की सखियाँ भी सत्संग-चर्चा में आने लगीं। यह कीर्तन-चर्चा उन्हें अत्यंत प्यारी लगने लगी। इन सखियों का चित्त श्री राजजी के चरणों में रम गया।

→ की ऐसी लगन लगी कि वे बार-बार दौड़कर चर्चा में ही आतीं। घर में उनका मन ही नहीं लगता था। वे दिन-रात चर्चा-कीर्तन में ही बैठी रहतीं। घर का सारा कार्य-व्यवहार उनसे छूट गया और इस कारण उनका घर-व्यवहार डामाडोल होने लगा।

→ परन्तु चर्चा-मण्डान के सिरदार भैरव सेठ तो चर्चा में मौज-मजे के लिए ही आते थे। उनकी आत्मा में जागृति न आते देखकर श्रीजी साहेबजी ने उनसे कहा, "हे सेठजी! चर्चा-कथा श्रवण से सबकी आत्माओं का कार्य बन चुका है। परन्तु आपकी आत्मा में तो छींट तक नहीं लगती। आपने तो मुझे ऋणी बना दिया है।"

→ श्रीजी स्वरूप द्वारा सबकी आत्मा में जागृति लायी। इस प्रकार भैरव सेठ ने श्रीजी स्वरूप को ऋणी बना दिया। अतः श्रीजी स्वरूप ने कहा, "हे सेठजी! आपने मुझ पर जो ऋण चढ़ाया है, उसका बदला चुकाये बिना न मैं यहाँ रह सकता हूँ और न ही यहाँ से जा सकता हूँ।"

ज. ३४- *"सो ग्रहों तुम चित्त में"* अर्थात् श्रीजी स्वरूप भैरव सेठ से आत्म-ज्ञान ग्रहण करने को कह रहे हैं। वे कहते हैं, "अरे भैरव →

→ ठक्कर! आपने हमें यहाँ बुलवाया, अपना धन खर्च करके तेजकुँवरी को बन्धन से छुड़वाया। इस समय भी हमारी सहायता एवम् सुन्दरसाथ की सेवा करके हमें ऋणी बना दिया। मैं आपके इस उपकार का बदला चुकाने के लिए क्या भेंट दूँ? आप जो →

स. ३५-श्रीजी की उपरोक्त बातें सुनकर सेठजी ने नम्रता और दीनतापूर्वक क्या कहा?

ज. ३५- श्रीजी साहेबजी की उपरोक्त बातें सुनकर भैरव सेठ ने बड़ी नम्रता →

स. ३६-भैरव सेठ की उक्त बातें सुनते ही श्रीजी साहेबजी ने उनसे क्या कहा?

ज. ३६- भैरव सेठ की उक्त बातें सुनते ही श्रीजी साहेबजी ने उनसे कहा, "आज तक मेरी चर्चा आपने अपनी तरफ से सुनी। अब आपको मेरे तरफ से सुननी होगी। आप केवल कुछ बातों का पथ्य-परहेज ले लो। घर बैठे-बैठे सहजता से ही आपको परमात्मा के चरण- →

स. ३७-"तब अपना परहेज तोड़ियो" - यह बात कौन और किससे कह रहे हैं? क्यों?

स. ३८-श्रीजी की उक्त प्रकार की बातें सुनकर भैरव सेठ ने उनसे क्या-क्या पूछा?

ज. ३८- श्रीजी स्वरूप की उक्त प्रकार की बातें सुनकर भैरव सेठ ने उनसे →

स. ३९-कौन-कौनसी बातों का श्रीजी साहेब ने भैरव सेठ को परहेज करवाया?

ज. ३९- श्रीजी साहेब ने भैरव सेठ को निम्नलिखित चार बातों का परहेज करवाया। जैसे- →

→ कहिए, मैं वही वस्तु देने का प्रयास करूँगा, जिससे मैं उऋण बन पाऊँ। मेरे पास जो अखण्ड, अलौकिक निधि है, मैं वही आपके सामने रख देता हूँ। उसे मन लगाकर ग्रहण करने से आपका आत्म-कल्याण हो सकता है।"

→ एवम् दीनतापूर्ण शब्दों में कहा, "हे प्रभु! आप महानातिमहान हैं, जो मुझ जैसे व्यसनी और नालायक व्यक्ति पर कृपा करके मेरे आत्मोद्धार की चिन्ता की। पुनः इतना ज्ञान सुनाने पर भी और ज्ञान सुनाने तथा मेरे प्रति मेहनत करने का विचार किया।"

→ शरण प्राप्त हो जायेंगे। मैं आपसे मुझे एक माह का समय देने का अनुरोध करता हूँ। इन वस्तुओं का परित्याग कर आप मेरे पास बैठो। मैं आपको वह ज्ञान-चर्चा सुनाता हूँ, जिससे आपको प्रभु के चरण प्राप्त हो जायें। पुनः यदि इस अवकाश में कार्यसिद्धि न हो, तो आप अपना संकल्प तोड़ देना और हमें विदा कर देना। हम अपने ठिकाने चले जायेंगे और आप पुनः पूर्ववत् ही मायावी सुख के उपभोग में लिप्त हो जाना।"

ज. ३७- *"तब अपना परहेज तोड़ियो"* - यह बात श्रीजी साहेबजी भैरव सेठ से कह रहे हैं क्योंकि यदि परहेज सहित मेहनत करने पर भी आत्म-जागृति नहीं हुई, तो माया ही सही!

→ पूछा, "मुझे किन-किन बातों का परहेज करना होगा? क्या मुझसे आपके द्वारा कहे परहेज महीने भर पालन किये जा सकेंगे? आप बताइये कि मुझे कौन-कौनसी वस्तुओं का परित्याग करना होगा?"

→ **पीना तमाखू छोड़ दो, और मांस मछली सब।**
सराब और सब कैफ़, परदारा चोरी न कब।।

अर्थ :- एक तो तम्बाकू पीना छोड़ दो। दूसरे मांस-मछलीयुक्त सामिष भोजन का परित्याग कर दो। तीसरे शराब एवम् अन्य →

→ सभी दुर्व्यसनों को त्याग दो। चौथा-पराई स्त्री और चोरी जैसे दुष्कर्मों के कभी निकट न जाओ। इस वक्त आप इतनी ही बातों →

स. ४०-परहेज करने की वस्तुओं के विषय में सुनने के पश्चात् भैरव सेठ ने श्रीजी साहेबजी से क्या कहा?

ज. ४०- श्रीजी साहेबजी के श्री मुख से परहेज की बातें सुनकर सेठ भैरव →

स. ४१-"हमको कह दिखाओ तुम" - ऐसा कौन, किससे और क्यों कह रहे हैं?

ज. ४१- *"हमको कह दिखाओ तुम"* - ऐसा सेठ भैरव ठक्कर श्रीजी साहेबजी से कह रहे हैं क्योंकि भगवान की चरण प्राप्ति के लिए →

स. ४२-भैरव सेठ ने अपनी दीन-धर्म की दृढ़ता के प्रति सबको किस तरह विश्वास दिलाया?

ज. ४२- भैरव सेठ के सामने हुक्का रखा था। अतः दीन-धर्म के प्रति →

स. ४३-भैरव सेठ ने जब अपनी रसोई अलग पकाने का समाचार भेजा, तब वह समाचार सुनते ही उनकी घरवाली-सेठानी क्या कहने लगी?

ज. ४३- सेठ भैरव ठक्कर ने जब अपने घर की पाकशाला में अपनी रसोई →

स. ४४-"भैरों सेठें खीझकर कहा" अर्थात् सेठजी ने खीझकर किससे और क्या कहा?

ज. ४४- *"भैरों सेठें खीझकर कहा"* अर्थात् सेठजी ने विरोध करनेवालों में से विशेषकर सेठानीजी से खीझकर कहा, "मैं मरनेवाला नहीं →

→ का परहेज करो। आपको इतने से ही "ब्रह्म तत्त्व" की प्राप्ति हो जायेगी और आप नित्यानन्द में प्रवेश हो जाओगे।

→ ठक्कर कहने लगे, "यह सब तो बहुत ही सहज है। यह पथ्य मुझे मंजूर है। इतने ही परिश्रम से यदि अपनी आत्मा जाग जाए, तो मुझे फिर और क्या चाहिए। आप कृपा करके मुझे सत्य ज्ञान की पहचान करा दीजिए।"

→ इतना परहेज तो सरलातिसरल है। वे कहते हैं, "इतना करने से यदि आत्मा जागृत हो जाती है, तो मैं क्यों न करूँ? मैं जरूर करूँगा। आप मेरे प्रति कृपा करके मेरी आत्मा को ज्ञान देकर जागृत कर दीजिए!!"

→ अपनी दृढ़ता पर सबको विश्वास दिलाने के लिए उन्होंने तुरन्त सामने रखा हुआ हुक्का पटककर फोड़ दिया और चार वस्तुओं का पथ्य ले लिया। अब वे मन लगाकर चर्चा श्रवण करने लगे।

→ अलग पकाने का आदेश दिया, तब सेठानी सहित घर में रहनेवाले सभी कुटुम्बीजन बड़बड़ाने लगे और सेठानी कहने लगी, "हमारे घर में न जाने ये कौन आ गया है? वे उन्हें उन्हीं वस्तुओं का परहेज करवा रहे हैं, जिन पर इनका शरीर निर्भर है। बिना जाने-बूझे इनसे ये सभी चीजें क्यों छुड़वा दीं। कदाच सेठजी चले जायेंगे, तो विधवा तो मुझे ही होना पड़ेगा न!"

→ हूँ। अन्य बहुत-सी चीजें खाने की छूट है। तू बिना विचारे-समझे क्यों बड़बड़ाती है? मैंने तो कुछ ही दिनों के लिए यह पथ्य लिया है। इस अवकाश में यदि मुझे ब्रह्ममुनि समुदाय में प्रवेश न मिले, तो मैं पुनः यह सब खाना-पीना आरम्भ कर दूँगा।"

स. ४५-श्रीजी ने कितने दिनों का परहेज करने को कहा था? पुनः कितने दिनों तक परहेज सहित चर्चा सुनने के पश्चात् भैरव सेठ ने अपने ही मुख से क्या कहा?

ज. ४५- श्रीजी साहेबजी ने एक महीने का परहेज करने को कहा था।

स. ४६-"वस्त भई मोहे प्रापत, पाया माया माहें भेद" भैरव सेठ द्वारा कहे इस कथन का क्या तात्पर्य है अर्थात् भैरव सेठ को किस वस्तु की प्राप्ति हुई अथवा उसने माया में कौनसा भेद प्राप्त किया?

ज. ४६- श्रीजी साहेबजी ने भैरव सेठ से एक महीने की मुद्दत ली थी।

स. ४७-अखण्ड वस्तु प्राप्त कर लेने के पश्चात् भैरव सेठ की आत्मा किस लिए उतावली हो उठी?

ज. ४७- जब अबासी बंदर के भैरव ठक्कर सेठ की आत्मा जागृत हो उठी, उन्होंने अखण्ड वस्तु प्राप्त कर ली, तब उनकी आत्मा उतावली

स. ४८-भैरव सेठ के धर्म में दीक्षित होते ही अबासी बंदर में कैसी हलचल मच गई तथा कलियुगी प्रवृत्तिवालों को क्या दिखाई देने लगा?

स. ४९-भणसाली जाति के लोग क्या कहते हुए किसकी निन्दा करने लगे और क्यों?

ज. ४९- भणसाली जाति के लोग, "ब्रह्ममुनियों के ये गुरु न जाने कहाँ से

स. ५०-यहाँ इस समय जो दो जन धर्म में दीक्षित हुए, वे दोनों कौन-कौन थे?

→ परन्तु उक्त प्रकार से परहेज में रहकर चर्चा सुनते-सुनते तीसरे ही दिन सेठजी स्वयं अपने मुख से बोल उठे, "हे प्रभु! मैंने चारों वस्तुओं को निषिद्ध समझकर उन्हें जीवनभर के लिए त्याग दिया है क्योंकि "वस्त भई मोहे प्रापत" अर्थात् मुझे अखण्ड वस्तु की प्राप्ति हो गई है। माया के भीतरी खोखलेपन के मर्म को मैंने जान लिया है।"

→ परन्तु उक्त चार वस्तुओं का परहेज करते हुए चर्चा सुनते-सुनते तीसरे ही दिन भैरव सेठ अपने ही मुख से बोल उठे ***"वस्त भई मोहे प्रापत, पाया माया माहें भेद"***। अतः उन्हें तीन ही दिन में तारतम की चर्चा द्वारा अखण्ड वस्तु अर्थात् माया-मिथ्यारूप ब्रह्माण्ड के बीच श्रीजी स्वरूप के अन्दर अद्वैत ब्रह्म अक्षरातीत श्री राजजी के साक्षात्कार हो गए।

→ होने लगी कि "काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलय होयेगा, बहुरि करेगा कब?" अर्थात् उनके ऊपर तारतम ग्रहण कर अपनी जमात में शामिल होने की धुन सवार हो गयी क्योंकि उन्हें ज्ञात हो गया था कि पानी के बुलबुले सदृश इस अनिश्चित, क्षणभंगुर शरीर का क्या भरोसा?

ज. ४८- सेठ भैरव ठक्कर जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति के सुन्दरसाथ जमात में दीक्षित होने का शुभ समाचार अबासी बंदर में फैलते ही सारे शहर में शोर मच गया। कलियुगी प्रवृत्तिवालों को सामने अपनी मृत्यु दिखाई देने लगी। अतः वे कोलाहल करते हुए छटपटाने लगे।

→ आ गये हैं? हमारे घर के लोग तो इनके पास भागे चले जा रहे हैं।" इस प्रकार कहते हुए श्रीजी स्वरूप की निन्दा करने लगे क्योंकि उनके घर के लोग बार-बार रोकने पर भी श्रीजी स्वरूप की चर्चा-मण्डान में दौड़ जाते थे।

ज. ५०- यहाँ इस समय जो दो जन धर्म में दीक्षित हुए, वे दोनों थे - गोवर्धन भाई और सुखीबाई।

स. ५१-"हमारी लड़ाई तुमसे होय" - यह वाक्यांश कौन, किससे कह रहे हैं?

स. ५२-भणसाली भाइयों की उक्त बातें सुनकर सेठजी ने उनसे क्या कहा?

ज. ५२- भणसाली भाइयों की उक्त बातें सुनकर भैरव सेठ ने उनसे कहा, "आप सब स्वयं अपनी-अपनी पत्नियों को रोककर रखो। हम →

स. ५३-"न आप सुनो न देओ सुनने" - यह वाक्य किसने, किससे और किस लिए कहा?

स. ५४-"ए सब करत है कलिजुग" - यह कथन किसने, किससे कहा तथा इस कथन का क्या तात्पर्य है?

ज. ५४- *"ए सब करत है कलिजुग"* - यह कथन सेठ भैरव ठक्कर ने भणसाली भाइयों से कहा। वे उक्त कथन के माध्यम से भणसाली भाइयों से यह कह रहे हैं, "अरे भणसाली भाइयों! आप लोग कैसे →

स. ५५-भैरव सेठ की उक्त बातें सुनकर भणसाली लोग लज्जित और नाराज क्यों हुए?

ज. ५५- भैरव सेठ के मुख से अपनी ही पत्नियों के दुश्मन बनकर आये →

स. ५६-घर में आकर भणसाली लोग अपनी-अपनी पत्नियों से क्या कहते हुए झगड़ने लगे?

ज. ५६- घर आकर भणसाली लोग अपनी-अपनी पत्नियों से झगड़ते हुए →

ज. ५१- जब अबासी बंदर के भणसाली जाति की स्त्रियाँ चर्चा में इस तरह तल्लीन हो गईं कि उनसे घर का काम-काज (व्यवहार) छूट गया, तब उन सबके पति मिलकर भैरव सेठ के पास आए और कहने लगे, *"हमारी लड़ाई तुमसे होय।"*

→ किसी को बुलाने, तो जाते नहीं। अपने स्वार्थ अर्थात् आत्म-कल्याण की भावना से वे सब यहाँ आती हैं। अरे भाइयों! जहाँ परमात्मा की चर्चा होती है, वहाँ आने के लिए हम किसी को कैसे रोक सकते हैं? यहाँ आत्म-जागृति का कार्य होता है। इस बात की पहचान हो जाने पर ही तो लोग यहाँ आते हैं।"

ज. ५२- *"न आप सुनो न देओ सुनने"* - यह वाक्य सेठ भैरव ठक्कर ने भणसाली भाइयों से कहा क्योंकि वे उनके पास अपनी पत्नियों को चर्चा-श्रवण से वंचित कराने के लिए आये थे।

→ हो? अपनी ही पत्नियों के आत्मकल्याणार्थ बाधक बन रहे हो? न स्वयं कथा श्रवण करते हो और न दूसरों को ही सुनने देते हो। शायद आपकी बुद्धि पर बैठा कलियुग ही आपको अच्छे कार्य की ओर प्रवृत्त होने नहीं देता। नहीं तो, आप सब अपनी ही अर्धांग के दुश्मन बनकर क्यों आते। क्या आप सब उनकी भलाई और कल्याण नहीं चाहते? यहाँ क्या कार्य हो रहा है, विचार-विवेक तो करो!!!"

→ विषय में ऐसे स्पष्ट बचनों को सुनकर भणसाली भाइयों का मुँह बन्द हो गया। वे भैरव सेठ के सामने बहुत ही लज्जित और बेइज्जत हुए। यसर्थ खिसियाकर सब-के-सब अपने-अपने घरों को लौट गए।

→ कहने लगे, "तुम लोग वहाँ क्यों जाती हो? अरे सुनो! स्त्रियों को रात्रि के समय घर छोड़कर जाना शोभा नहीं देता। तुम्हें स्त्री होकर ऐसा नहीं करना चाहिए।"

स. ५७-भणसाली भाइयों को उन्हीं की पत्नियों ने क्या उत्तर दिया? उनका अपनी पत्नियों पर जोर चल सका या नहीं?

ज. ५७- भणसाली भाइयों को उन्हीं की पत्नियों ने उत्तर दिया, "हमसे →

स. ५८-भणसाली स्त्रियों ने अपने-अपने पतियों को चर्चा श्रवण विषय में क्या-क्या कहा?

ज. ५८- भणसाली स्त्रियों ने अपने-अपने पतियों को चर्चा श्रवण विषय →

स. ५९-"ए तो पूर्व अंकूर तें"-यह वाक्यांश किसने, किससे कहा?

स. ६०-अंत में भणसाली स्त्रियों ने अपने पतियों को फटकारते हुए क्या कहा?

ज. ६०- अंत में भणसाली स्त्रियों ने अपने पतियों को फटकारते हुए कहा, "आप लोग हमारे सहायक हैं या हमारे दुश्मन हैं? आप लोग →

स. ६१-जब भणसाली भाई अपनी-अपनी पत्नियों पर अधिकार नहीं जता पाये, तो वे आपस में सलाह-मशविरा करके पुनः कहाँ गये?

स. ६२-तेजबाई अबासी बंदर की स्त्रियों में किस विषय में अग्रगण्य थीं?

ज. ६२- तेजबाई भौतिक क्षेत्र में गाँव की स्त्रियों को व्यवहारिक सलाह →

स. ६३-इन भणसाली भाइयों का तेजबाई के घर जाने का मुख्यातिमुख्य कारण क्या था?

→ कोई अनुचित कार्य तो हुआ नहीं है। हम तो वहाँ केवल भगवान की कथा-चर्चा सुनने ही जाती हैं। एक तो इस प्रदेश में कभी कोई साधु-संत चर्चा करने आते नहीं! क्या आज तक यहाँ कोई साधु आए हैं? ये तो हमारा सौभाग्य है कि ऐसी वाणी सुनानेवाले साधु आज यहाँ आए!" इस प्रकार उनका अपनी पत्नियों पर कोई जोर नहीं चल सका।

→ में कहा, "अरे! आप लोग सुनिये!! हमारे पूर्व जन्म के संस्कार एवम् पुण्यों के फलस्वरूप ही हमें श्री भगवान के चरणों में शरण मिली है, उसमें भी आप लोग दुश्मनों की तरह हमारी राह में विघ्न डालते और बाधक बनते हो?"

ज. ५९- "ए तो पूर्व अंकूर तें" - यह वाक्यांश भणसाली स्त्रियों ने अपने-अपने पतियों से कहा।

→ हमसे ऐसा क्यों कहते हैं? देखिये! हम लोग भगवान के चरणों में अपनी आत्मा सौंप चुके हैं। आपके भाग की यह देह ही शेष है। यदि आप कहें, तो हम इसे भी छोड़ देती हैं। आप हमारा क्या कर लोगे? हम तो आपके रोकने से रुकेंगी नहीं! हम तो वहाँ चर्चा में जायेंगी और अवश्य जायेंगी!!!"

ज. ६१- जब अपनी पत्नियों के आगे भणसाली भाइयों की जोर-जबरदस्ती नहीं चली, तब वे सब परस्पर सलाह-मशविरा करके शहर के महिलाओं की प्रमुख तेजबाई के पास चले गये।

→ तो देती ही थीं, किंतु उनकी आध्यात्मिक मार्ग की भगवान के कथा श्रवण विषयक बातों की सलाह भी गाँव की स्त्रियों को जँचती थी। वे भी सभी स्त्रियों के अपने प्रति के श्रद्धा-विश्वास को देखकर सबको स्त्री मर्यादा के अनुकूल ही सलाह देती थीं।

ज. ६३- इन भणसाली भाइयों का तेजबाई के घर जाने का मुख्यातिमुख्य कारण तेजबाई को ही चर्चा श्रवण में जाने से रोकना था क्योंकि →

→ उन्हीं के पीछे-पीछे उनकी स्त्रियाँ घर का काम-धन्धा छोड़-छाड़कर →

स. ६४-तेजबाई के घर जाकर भणसाली भाइयों ने उनसे क्या कहा?

ज. ६४- भणसाली भाइयों ने तेजबाई के घर जाकर उनसे कहा, "इस शहर →

स. ६५-भणसाली भाइयों की बातें सुनकर तेजबाई ने उनसे कैसी बात की?

ज. ६५- भणसाली भाइयों की बातें सुनकर तेजबाई ने उनसे कहा, "तुम मुझे रोकने क्यों आए हो? क्या तुम मेरी वृद्धावस्था को भी नहीं देखते? ऐसी अवस्था में भी मैं परमात्मा की कथा-चर्चा न सुनूँ, तो क्या करूँ? मेरे वहाँ जाकर कथा-चर्चा सुनने से तुम लोगों →

स. ६६-"मेरी मानो तो अपनी-अपनी स्त्रियों के साथ आकर तुम लोग भी चर्चा-कथा सुनो।" - यह उपदेश भणसालियों को किसने दिया तथा तत्पश्चात् क्या कहा?

ज. ६६- "मेरी मानो तो अपनी-अपनी स्त्रियों के साथ आकर तुम लोग →

स. ६७-सच्ची कथा के दुश्मन इन भणसाली भाइयों की तीनों जगह जीत हुई या हार हुई?

ज. ६७- भगवान की सच्ची कथा के दुश्मन-कलियुगी वृत्तिवाले भणसाली भाइयों की तीनों ओर से हार हुई। वे तीनों जगह बेइज्जत तथा →

स.६८- अबासी बंदर में कितने लोग श्रीमन्निजानन्द सिद्धांत में शामिल हुए?

→ चर्चा श्रवण के लिए भागती हैं।

→ की सभी स्त्रियाँ आप पर श्रद्धा-विश्वास रखतीं हैं और आप इन सबमें अग्रगण्य हैं। अतः हम आपसे हाथ जोड़कर विनती करते हैं कि आप उन साधु-महात्मा के सत्संग में न जाइये। आपके पीछे-पीछे हमारी पत्नियाँ भी काम-धन्धा छोड़कर दौड़ पड़ती हैं।"

→ का पारा क्यों चढ़ा?" तब वे भणसाली लोग कहने लगे, "हम आपको क्यों रोकने लगे? परन्तु आपके पीछे लगकर शहर की सभी महिलायें कथा-चर्चा में चली जाती हैं। इसलिए आप हम पर एहसान करके उस जगह चर्चा सुनने न जाएँ।" तब तेजबाई ने कहा, "तुम लोग अपनी-अपनी स्त्रियों को रोको। मैं तो वहाँ चर्चा सुनने जाऊँगी... जाऊँगी .... और अवश्य जाऊँगी। तुम सब जो करना चाहो, कर सकते हो!!"

→ भी चर्चा-कथा सुनो।" - यह उपदेश भणसालियों को तेजबाई ने दिया तथा तत्पश्चात् कहा, "देखो! एक दिन तुम लोगों को भी तो मरना होगा न? ऐसी चर्चा-कथा इस जीवन में बार-बार नसीब नहीं होगी। अपनी पत्नियों को रोकने के बदले स्वयं भी आकर सुनोगे, तो तुम्हारा भी जीवन सार्थक बन जाएगा और तुम्हारा आत्मकल्याण भी होगा।"

→ तिरस्कृत हुए और काला मुँह लिए घर लौट आए। तत्पश्चात् ऊपरवाले से प्रार्थना करने लगे, "हे प्रभु! ये महात्मा शीघ्रातिशीघ्र हमारा देश अबासी बंदर छोड़कर चले जाएँ। हमारी पत्नियाँ काम-धन्धों में लग जाएँ।" ऊपरवाले से इस प्रकार प्रार्थना करते हुए घर में बैठकर छाती पीटने और हाथ मलते रहने के अलावा वे और कुछ भी नहीं कर सके।

ज. ६८- बीतककार श्री लालदासजी कहते हैं, "अबासी बंदर में कितनी ही संख्या में सुन्दरसाथ धर्म में शामिल हुए। सबके नाम यहाँ कहाँ तक गिनाऊँ?"

स. ६९-अबासी बंदर में जागृत हुई आत्माओं में से किन्हीं बारह आत्माओं के नाम गिनाओ।

ज. ६९- अबासी बंदर में जागृत आत्माओं में से मुख्यातिमुख्य आत्माएँ →

स. ७०-भैरव सेठ के जागृत होने के पश्चात् चर्चा-कथा उत्सव-रसोई एवम् भजन-कीर्तनादि में कैसी वृद्धि हुई?

ज. ७०- सेठ भैरव ठक्कर की आत्म-जागृति के पश्चात् अबासी बंदर में धूम मच गई। वहाँ के जन-जन में श्री प्राणनाथजी के आगमन →

स. ७१-"चित राज को साथ तरफ" अर्थात् क्या देखकर श्रीजी का चित्त सुन्दरसाथ में बँध गया?

स. ७२-भैरव ठक्कर ने सुन्दरसाथ की सेवा कैसे-किस प्रकार की?

स. ७३-अबासी बंदर में भैरव सेठ के संरक्षण में श्री प्राणनाथजी कितने महीने रहे?

स. ७४-श्रीजी स्वरूप द्वारा अबासी बंदर से जागनी अभियान आगे बढ़ाने की अनुमति माँगने पर सुन्दरसाथ क्या करने लगे?

ज. ७४- जब श्रीजी साहेबजी ने उक्त स्थिति में पहुँचने पर अबासी बंदर →

स. ७५-श्रीजी द्वारा चलने की अनुमति माँगने की बात सुनते ही सुन्दरसाथ रोते-रोते श्रीजी से क्या कहने लगे?

→ निम्नलिखित हैं। जैसे- सेठ भैरव ठक्कर, देवचन्द्र भाई, अमरिया भाई, फूलबाई, लच्छीबाई, सखीबाई, तेजबाई, किशनीबाई, जशोदाबाई, रत्नबाई, इन्द्रावतीबाई और राधाबाई आदि।

→ एवम् बोध की चर्चा व्यापकरूप में पसर गई। नित्य प्रति बढ़ती संख्या को देखकर सुन्दरसाथ के मन में उमंग समाता ही नहीं था। दिन-रात वाणी चर्चा, धाम की चितवनि एवम् ध्यान आदि चलते रहता था। घर-घर में उत्सव-रसोई, भजन-कीर्तन, कथा-चर्चा की उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।

ज. ७१- *"चित राज को साथ तरफ"* अर्थात् कइयों सुन्दरसाथ को स्नेहपूर्वक इकट्ठे रहते हुए देखकर श्रीजी साहेबजी का उनके प्रति लगाव बढ़ गया और चित्त उनसे बँध गया।

ज. ७२- सेठ भैरव ठक्कर ने सुन्दरसाथ की सम्मानपूर्वक आदर-सत्कार के साथ भलीभाँति सेवा की। उन्होंने अपना मन श्रीजी साहेबजी के चरणों में बाँध लिया। श्रीजी ने भी स्नेहपूर्वक उनका हाथ थामकर उन्हें आत्मीय बल प्रदान किया।

ज. ७३- अबासी बंदर में सेठ भैरव ठक्कर के संरक्षण में श्रीजी साहेब अपने जागनी अभियान के कार्यक्रम के साथ दो-तीन मास रहे। परन्तु वे दो-तीन मास वहाँ के सुन्दरसाथ के लिए दो-तीन दिन सदृश गुजर गये।

→ के सुन्दरसाथ से जागनी अभियान को आगे बढ़ाने के लिए वहाँ से निकलने की अनुमति माँगी और अपना आगामी कार्यक्रम बताया, तब उक्त बातें सुनते ही श्रीजी के वियोग की कल्पना से दुःखी होकर सभी सुन्दरसाथ रोने लगे।

ज. ७५- श्रीजी द्वारा चलने की अनुमति माँगने की बात सुनते ही सुन्दरसाथ कहने लगे, "परमधाम के सम्बन्ध एवं स्नेह की पहचान कराकर →

→ आप अब हमें अकेला व असहाय छोड़कर कैसे जा सकते हैं? →

स. ७६-इस समय श्री प्राणनाथजी क्या सोच-विचार करने लगे?

ज. ७६- इस समय श्री प्राणनाथजी सुन्दरसाथ की हालत को देखते हुए विचार करने लगे, "यदि मैं अबासी बंदर एक वर्ष और रहूँ, तो →

स. ७७-पुनः दूसरी ओर श्रीजी के चित्त में श्री सद्गुरु स्वरूप की कौनसी बात खटकती रही?

स. ७८-सद्गुरु की मुख्य भविष्यवाणी क्या-क्या थी और उस विषय में क्या अथवा कितनी पूरी हुई?

ज. ७८- श्री सद्गुरु स्वरूप की मुख्य भविष्यवाणियों में से एक भविष्यवाणी साकुण्डल और सकुमार सखी को जगाना एवम् छत्तीस हजार →

स. ७९-सुन्दरसाथ के लगाव और श्री सद्गुरु स्वरूप की भविष्यवाणी की जिम्मेदारी को पूरा करने के विषय में श्रीजी स्वरूप ने क्या विचार किया?

ज. ७९- सुन्दरसाथ के लगाव और श्री सद्गुरु स्वरूप की भविष्यवाणी →

स. ८०-नित्य प्रति श्रीजी साहेबजी अबासी बंदर से निकलने के विषय में क्यों सोचते रहते?

स. ८१-श्रीजी की यह हालत देखकर श्री राजजी की उन पर कैसी प्रेरणा हुई?

ज. ८१- श्री प्राणनाथजी परमधाम का आनन्द सुन्दरसाथ में बाँटते-बाँटते उनके प्रेम में ही बँध गये। दिल में तो है, "मुझे जगह-जगह जाकर →

→ हमारा ध्यान अब आपमें बस गया है। इसके अतिरिक्त अब कोई और काम हमें सूझता ही नहीं।"

→ सुन्दरसाथ की जागनी का भारी कार्य होगा। एक से सुनकर दूसरे, दूसरे से सुनकर तीसरे चले आ रहे हैं।" इस प्रकार सुन्दरसाथ का प्रेम ही उन्हें आकृष्ट कर रहा था।

ज. ७७- पुनः दूसरी ओर श्रीजी स्वरूप के चित्त में सुन्दरसाथ के जागनी-कार्य में विशेषकर श्री सद्गुरु स्वरूप द्वारा सौंपी हुई बड़ी जिम्मेदारी अर्थात् "साकुण्डल और सकुमार नामक ब्रह्मात्माओं को ढूँढ़ना है।"- यही बात विशेषरूप से खटकती रही।

→ आत्माओं का मेला करना भी थी। उनमें से अब तक एक का भी पता नहीं था। अतः श्रीजी स्वरूप सोचने लगे, "यदि ये आत्माएँ देश-विदेश में हैं, तो मेरे यहाँ रहने से श्री सद्गुरु स्वरूप का सारा भविष्य चौपट हो जायेगा।"

→ की जिम्मेदारी को पूरा करने के विषय में श्रीजी स्वरूप ने विचार किया, "अरे! मैं तो एक ही बंदरगाह में टिक गया। क्या मुझे यहाँ राज्य करना है? इधर सुन्दरसाथ हैं कि वे मुझे आज एक दिन के लिए भी छोड़ते नहीं हैं। इस समय वे मुझे जाने नहीं देंगे। मुझे यहाँ से निकलना तो जरूर है, पर कैसे?"

ज. ८०- नित्य प्रति श्रीजी साहेबजी अबासी बंदर से निकलने के विषय में प्रियतम श्री राजजी की ओर से आज्ञा प्राप्त करने के उद्देश्य से सोचते रहते थे।

→ परमधाम की भूली-भटकी आत्माओं को ढूँढ़कर माया से निकालना है।" परन्तु निकल नहीं पा रहे थे। उनकी यह हालत श्री राजजी ने देख ली और समझ भी गये। तब श्री राजजी की प्रेरणा हुई और अबासी बंदर में एक अफवाह फैल गई।

स. ८२-"तब आई बातिन और" अर्थात् श्रीजी के लिए यहाँ कौनसी बातुनी मेहेर हुई, जिसके फलस्वरूप अबासी बंदर में एक अफवाह फैल गई?

स. ८३-किस बात को लेकर भैरव सेठ बड़े संकोच में पड़ गये?

ज. ८३- भैरव सेठ इस बात को लेकर बड़े संकोच में पड़ गये, "अब राज्य में आमदनी का नया स्त्रोत बनाने के लिए जनगणना करके जन-जन पर कर (टैक्स) लगेगा, यह समझकर घर-घर के लोग दूसरे- →

स. ८४-अचानक उक्त प्रकार की आपत्ति टूट पड़ने पर भैरव सेठ ने श्रीजी से क्या कहा?

ज. ८४- अचानक उक्त प्रकार की आपत्ति टूट पड़ने पर भैरव सेठ ने श्रीजी साहेबजी के पास जाकर कहा, "इस विषय में मैं क्या करूँ? →

स. ८५-अब यहाँ भैरव सेठ ने सुन्दरसाथ को किस बात की सूचना दी?

ज. ८५- भैरव सेठ ने सुन्दरसाथ समाज को यह सूचित किया, "सुन्दरसाथजी! →

स. ८६-इस समय अबासी बंदर के सुन्दरसाथ ने श्रीजी स्वरूप और श्री बाईज्यूराज की किस तरह विदाई की?

ज. ८६- इस समय अबासी बंदर के सुन्दरसाथ ने श्रीजी स्वरूप और श्री बाईज्यूराज की विदाई करते समय अपने-अपने अंकुर मुताबिक हाथ चालाकी की। धामधनी स्वरूप श्रीजी साहेब ने धामधनी का ज्ञानोपदेश देकर आत्माओं की जागनी की। उसके बदले में ब्रह्मात्माओं ने जितना धन कमाया था, उसमें से तीन भाग श्रीजी →

ज. ८२- *"तब आई बातिन और"* अर्थात् श्रीजी साहेबजी की आन्तरिक इच्छापूर्ति के लिए अबासी बंदर शहर में सरकार की तरफ से एक अफवाह फैल गई कि आमदनी का नया स्त्रोत बनाने के लिए अब से जन-जन पर कर (टैक्स) लगाया जाएगा। यह अफवाह श्रीजी के लिए श्री राजजी की बातुनी मेहेर थी।

→ तीसरे गाँव में भाग-भागकर छिप रहे हैं। इस हालत में यदि मेरे घर की जाँच की जायेगी, तो मेरे घर में उपस्थित सभी श्रोताओं की संख्या मेरे नाम पर लिख दी जायेगी। मैं तो जिन्दगी भर यह कर (टैक्स) चुकाते-चुकाते न जाने किस दशा में पहुँच जाऊँगा। अब मैं क्या करूँ?"

→ आप ही कोई उपाय बता दीजिये।" तब श्रीजी ने कहा, "इसका एक ही उपाय है कि आप मुझे यहाँ से विदा कर दीजिये। तब जमात भी छूट जायेगी। जब तक आप मुझे यहाँ रखेंगे, जमात बढ़ती ही चली जायेगी।" यह सुनकर भैरव सेठ ने रोते-रोते श्रीजी स्वरूप की विदाई करने का निश्चय किया।

→ धामधनी श्रीजी साहेबजी कल हमारे बीच से विदा होकर जा रहे हैं। अतः आप सभी सुन्दरसाथ कल श्रीजी स्वरूप को विदा करने के लिए "विदाई समारोह" में उपस्थित हों।"

→ स्वरूप को समर्पित कर दिया और एक भाग रखा। ईश्वरी आत्माओं ने कमाये हुए धन में से आधा भाग दिया और आधा रखा। पुनः जो जीवात्मा में थे, उन्होंने अपनी कमाई का तीन भाग रख लिया और सिर्फ एक ही भाग श्रीजी स्वरूप को अर्पण किया। इसका अर्थ है कि सभी ने अपने-अपने अंकुर मुताबिक हाथ चालाकी की अर्थात् सोना-चाँदी, रुपया-पैसा, कपड़ा-लत्ता आदि देने में अंकुर मुताबिक उदारता दिखायी।

स. ८७- "जैसा जिनका अंकूर" -इस वाक्यांश का खुलासा कर समझाओ कि उक्त वाक्यांश का क्या तात्पर्य है?

ज. ८७- *"जैसा जिनका अंकूर"* -इस वाक्यांश का सही अर्थ जवाब नं. ८६ में खुलस्त किया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि →

स. ८८-यहाँ सुन्दरसाथ ने श्रीजी स्वरूप की जैसी विदाई की, उस विदाई की शोभा कहाँ होने को कही है?

स. ८९-अबासी बंदर से विदा होकर श्री प्राणनाथजी ने किस ओर प्रस्थान किया?

स. ९०-इसके उपरान्त श्रीजी स्वरूप कहाँ-किस जगह ठहरे हैं?

ज. ९०- अबासी बंदर से बसरा की ओर जानेवाली नाव में बैठकर श्रीजी स्वरूप कोग बंदर पहुँचे। वहाँ से वे पुनः लाठी बंदर उतरे। पुनः →

❖ नलिया की ओर ❖

स. १- नाथा जोशी ने क्या सुना, जिसे सुनते ही वे सुन्दरसाथ सहित देवे भाई की दुकान पर दौड़ पड़े?

ज. १- इस बक्त ठट्ठा नगर के नाथा जोशी भाई ने सुना, श्रीजी साहेबजी →

स. २- अन्य सुन्दरसाथ कहाँ के थे, जो श्रीजी स्वरूप के आगमन की बात सुनते ही दौड़ते हुए आकर रास्ते में मिले?

ज. २- अन्य सुन्दरसाथ ठट्ठा नगर के ही थे, जो चिंतामणि और लक्ष्मण →

→ जिनके पास जैसी कमाई थी, उन्होंने उसमें से अंकुर मुताबिक आदान-प्रदान किया। श्रीजी साहेब ने अखण्ड आत्मीय ज्ञान द्वारा आत्म-जागृति कर धामधनी से सम्बन्ध चौकस करा दिया और इसके बदले में सुन्दरसाथ ने अपनी लौकिक कमाई में से अंकुर मुताबिक भेंट कर श्रीजी की विदाई की।

ज. ८८- यहाँ अर्थात् जागनी के ब्रह्माण्ड में अबासी बंदर के जिन-जिन सुन्दरसाथ ने तारतम ज्ञान द्वारा जागृत होकर अपने धनी के प्रति अपनेपन का पालन किया, उनकी शोभा "मूल मिलावे" में होने को कही है।

ज. ८९- अबासी बंदर स्थित सेठ भैरव ठक्कर के घर में उपस्थित सुन्दरसाथ सहित सेठ और सेठानीजी से विदा होकर नौका में बैठकर श्री प्राणनाथजी बसरा बंदरगाह की ओर चल पड़े।

→ लाठी बंदर में देवे भाई की दुकान में चार दिन ठहरे। यह समाचार सुनते ही ठट्ठा नगर के सुन्दरसाथ सहित नाथा जोशी दौड़कर आये। सभी सुन्दरसाथ मिलकर श्रीजी स्वरूप को अब पुनः ठट्ठा ले जायेंगे।

-(प्रकरण २७, सवाल-जवाब नं.९०, कुल सं. ९२२+९०=१०१२)।

❖ नलिया की ओर ❖

→ हमसे विदा लेकर मसकत गये थे और अब वे अबासी बंदर से बसरा होते हुए पुनः लाठी बंदर स्थित देवे की दुकान में विराजे हुए हैं। यह बात सुनते ही नाथा जोशी भाई सुन्दरसाथ को लेकर देवे की दुकान पर दौड़ पड़े।

→ सेठ के साथ निजानन्द सिद्धान्त में शामिल हुए थे। वे श्रीजी के पुनरागमन का समाचार सुनते ही श्रीजी स्वरूप के दर्शन के लिए देवे भाई की दुकान की ओर दौड़ पड़े। वहाँ पहुँचते-पहुँचते रास्ते में ही मिल गये।

स. ३- ठट्ठा नगर नाथा जोशी के घर जाते-जाते बीच में किसने श्रीजी स्वरूप को अपने घर में पधराया?

ज. ३- देवे भाई की दुकान से गाते-बजाते श्रीजी स्वरूप और श्री बाईज्यूराज को नाथा जोशी अपने घर ले जा रहे थे। नाथा जोशी →

स. ४- कौन स्वयं श्रीजी स्वरूप एवम् जमात के लिए बाजार से शाक-तरकारी एवम् भोजन सामग्री लाने के लिए दौड़-भाग करने लगी?

ज. ४- अब ठाकुरीबाई ने अपने घर में सुन्दरसाथ सहित श्रीजी साहेबजी →

स. ५- श्री प्राणनाथजी के साथ सुन्दरसाथ भी कहाँ भोजन करने बैठ गये?

स. ६- अन्य सुन्दरसाथ ने इस समय किस प्रकार ठाकुरीबाई की मदद की?

स. ७- ठट्ठा के सुन्दरसाथ को श्रीजी स्वरूप ने कहाँ का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया?

स. ८- किस विषय में सुन्दरसाथजी ने श्री राजजी की अनुकम्पा की बरसात हुई, ऐसा माना?

ज. ८- उपरोक्त स्थानों का वृत्तान्त सुनकर वहाँ जागृत हुए इतने →

स. ९- कहाँ की बातें सुनकर सुन्दरसाथ का मनोबल और बढ़ गया और उन्हें अपने धर्म मार्ग की उत्तमता एवम् महानता समझ में आ गई?

→ के घर पहुँचने से पहले ही बीच रास्ते पर जिन्दादास भाई और ठाकुरीबाई ने आकर श्रीजी स्वरूप से प्रेमपूर्वक अर्ज की कि वे इस बार उनके घर पधारें। नाथा जोशी राजी-खुशी से श्रीजी स्वरूप और बाईज्यूराज को ठाकुरीबाई के घर पधराने ले गये।

→ को पधराया है, तो क्या वह चैन से बैठ सकेगी? अतः ठाकुरीबाई स्वयं ही बाजार से शाक-तरकारी एवम् भोजन सामग्रियाँ लेने चली गई। ठाकुरीबाई की सहायता के लिए सुन्दरसाथ भोजन पकाने की सेवा में लगे। ठाकुरीबाई व्यवस्था मिलाने के लिए बहुत ही दौड़-धूप करने लगी।

ज. ५- श्रीजी साहेब-श्री प्राणनाथजी एवम् बाईज्यूराज-श्री तेजकुँवरी-बाई सहित सेवा-कार्य में तत्पर अन्य सभी सुन्दरसाथ ठाकुरीबाई के घर भोजन करने साथ ही बैठ गये।

ज. ६- ठट्ठा नगर स्थित ठाकुरीबाई के घर सुन्दरसाथ में बड़ा हर्ष-उल्लास उत्पन्न हो रहा था। स्थान-स्थान पर सुन्दरसाथ में आनन्द बरस रहा था और अपने-अपने घरों से लोग खाने-पीने की विभिन्न सामग्रियाँ ला-लाकर श्रीजी स्वरूप सहित साथ को परोस रहे थे।

ज. ७- ठट्ठा के सुन्दरसाथ को श्रीजी स्वरूप ने मसकत और अबासी बंदर का संपूर्ण वृत्तान्त सुनाया।

→ सुन्दरसाथ की जागनी लीला के विषय में ठट्ठा के सुन्दरसाथ ने श्री राजजी की कृपा अथवा प्रियतम की अनुकम्पा मानी और श्रीजी साहेब को पुनः अपने मध्य अपने पास पाकर अपने जीवन को कृतकृत्य समझा।

ज. ९- अबासी बंदर में सुन्दरसाथ के उत्साह-उमंग की बातें सुनकर ठट्ठा नगर के सभी सुन्दरसाथ का मनोबल और बढ़ गया तथा उन्होंने कबूल किया कि श्री प्राणनाथजी ने परमधाम पहुँचने की जो राह बतायी है, वह सीधी और सरल होने के साथ-साथ सर्वोत्तम और महान् भी है।

स. १०-कहाँ के सुन्दरसाथ श्रीजी स्वरूप के दर्शनार्थ उमड़ पड़े और श्रीजी के दर्शन कर उनका सारा शोक निर्मूल हो गया?

स. ११-तीसरी बार श्रीजी स्वरूप ठट्ठा नगर में कब आये और ठट्ठा से आगे जाने की इच्छा होते हुए भी श्रीजी स्वरूप को स्वीकृति क्यों नहीं मिली?

स. १२-विशेषकर तीसरी बार ठट्ठा नगर में श्रीजी स्वरूप का आगमन किन सुन्दरसाथ के लिये हुआ था?

ज. १२- ठट्ठा नगर में श्रीजी स्वरूप का आगमन तीसरी बार विशेषकर मटहरी के सुन्दरसाथ के लिए हुआ था क्योंकि ठट्ठा के सुन्दरसाथ →

स. १३-मटहरी के सुन्दरसाथ में से श्रीजी साहेबजी के तीसरी बार ठट्ठा नगर में आगमन पर श्रीजी के श्री मुख की चर्चा सुनकर धर्म ग्रहण करनेवालों में से किन्हीं पन्द्रह सुन्दरसाथ के नाम गिनाओ।

स. १४-मटहरी के सुन्दरसाथ के लिए श्रीजी स्वरूप द्वारा कैसी चर्चा हुई, जिससे कलियुग चमक उठा?

ज. १४- मटहरी के लगभग सत्तर-पचहत्तर सुन्दरसाथ में से ऊपर के जवाब में मात्र पन्द्रह के नाम गिनाये गये हैं। ये सुन्दरसाथ मटोद (मटहरी) से ठट्ठा नगर आये थे। इन सुन्दरसाथ के लिए पूर्णब्रह्म परमात्मा →

ज. १०- ठट्ठा नगर के वे सुन्दरसाथ, जो कबीर और वैष्णव मार्गी चिन्तामणि और लक्ष्मण सेठ की जागनी के दौरान धर्म में शामिल हुए थे, श्रीजी के दर्शनार्थ उमड़ पड़े। निजधाम की अपनी संगी आत्माओं के मध्य विराजमान परमात्मा स्वरूप श्रीजी को देखकर उनका सारा त्रिताप-शोक जाता रहा।

ज. ११- श्रीजी साहेब तीसरी बार ठट्ठा नगर में वि. सं. १७२८ में वैशाख महीने में आये। वहाँ के सुन्दरसाथ के प्रेम के कारण वहाँ से आगे जाने की इच्छा होते हुए भी श्रीजी स्वरूप को सुन्दरसाथ से स्वीकृति लेना बड़ा भारी पड़ रहा था। सुन्दरसाथ श्रीजी के जाने की बात सुनते ही रोने लगते थे।

→ की संगत द्वारा श्रीजी का बताया हुआ ज्ञान सुनकर मटहरी के बहुत से सुन्दरसाथ श्रीजी स्वरूप के इंतजार में थे कि "कब वे अबासी से लौटेंगे।" अतः उन सुन्दरसाथ का नसीब ही श्रीजी को पुनः ठट्ठा खींच लाया था।

ज.१३- मटहरी के सुन्दरसाथ में से श्रीजी साहेबजी के तीसरी बार ठट्ठा नगर में आगमन पर श्रीजी स्वरूप के श्री मुख की चर्चा सुनकर धर्म ग्रहण करनेवालों में हैं-प्रथम भक्तिदास, साहजी, अड़न, मकरन्द भाई, जेठमल, बालचन्द, दयाल भाई, धर्मदास, सुखानन्द, टोडरमल, श्यामलजी, पारन, मोटन, तुलसी और गोवर्धन भाई।

→ की जोरदार चर्चा हुई, जिसे देखकर कलियुगी वृत्तिवाले लोग पूर्ण ईर्ष्यालु बनकर धर्म मार्ग पर चलनेवाले सुन्दरसाथ को सताने और भटकाने के लिए निन्दा करने लगे। इस समय यहाँ कलियुग ने खूब शोर मचाया। इन कलियुगी वृत्तिवालों के कारण यहाँ सुन्दरसाथ को अनेक कष्टों का सामना भी करना पड़ा।

स. १५-श्रीजी साहेबजी ने ठट्ठा नगर से किस विषय में किनको पत्र लिखकर भेजा?

ज. १५- श्रीजी साहेबजी ने ठट्ठा से धर्म-प्रचार आदि विषयों की खबर लिखकर एक चिट्ठी तैयार की, जिसमें दीव बंदर से लेकर ठट्ठा नगर, मसकत पुनः अबासी आदि स्थानों में धर्म में शामिल हुए →

स. १६-उक्त चिट्ठी लेकर श्री ५ नवतनपुरी स्थित गादीपति बिहारीजी के पास कौन गये?

स. १७-दूसरी बार श्री नवतनपुरी भेजी गयी चिट्ठी में क्या खुशखबरी लिखी गयी, जिसे पढ़कर बिहारीजी ने अपने आने की खबर भेजी?

ज. १७- पुनः दूसरी बार श्री नवतनपुरी गादीपति बिहारीजी के पास भेजी गयी चिट्ठी में यह खुशखबरी लिखी थी, "सुन्दरसाथ की ओर से →

स. १८-श्री नवतनपुरी चिट्ठी भेजकर श्रीजी साहेबजी ने सुन्दरसाथ से कहाँ जाने के लिए विदाई माँगी?

ज. १८- श्यामलदास भाई के हाथों श्री नवतनपुरी चिट्ठी भेजकर श्रीजी स्वरूप ने सुन्दरसाथ से सुदामापुर जाने के लिए विदाई माँगी। ठट्ठा से विदा लेकर लक्ष्मणपुर जाकर श्रीजी स्वरूप ने वहाँ के →

स. १९-श्रीजी स्वरूप सुदामापुर-लक्ष्मणपुर कब गये अर्थात् प्रथम चिट्ठी भेजने के बाद या दूसरी चिट्ठी भेजने के बाद?

स. २०-इस बार ठट्ठा में श्रीजी साहेबजी कितने महीने रहे? पुनः कहाँ के लिए प्रस्थान किया?

→ सुन्दरसाथ की संख्या सहित सारा वृत्तांत लिखा था। पुनः उस पत्र में श्रीजी स्वरूप ने आगे नलिया होते हुए सूरत की ओर जाने की अपनी इच्छा भी प्रकट की थी और दर्शन देने के लिए "महन्त श्री बिहारीजी" को नलिया आने का आग्रह भी किया था। इसी पत्र में श्रीजी ने अन्य शहरों एवम् गाँवों में रहनेवाले सुन्दरसाथ के जागृत होकर अपने श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त में शामिल होने तथा उनकी संख्या की चर्चा भी की थी।

ज. १६- उक्त चिट्ठी पहुँचाने के लिए श्री ५ नवतनपुरी धाम स्थित गादीपति श्री बिहारीजी के पास श्यामलदास भाई गये। परन्तु महन्त श्री ने नलिया आने से मना कर दिया।

→ प्राप्त सोने-चाँदी के हार, कपड़ा-लत्ता आदि वस्तुएँ एवम् नगदी का बोझ लेकर मैं कहाँ-कहाँ फिरूँ? अतः मैं ये सभी वस्तुएँ आपके चरणों में समर्पित करने की इच्छा रखता हूँ। अतः आप श्री नलिया अवश्य पधारें। इस बात के लिए विशेष आग्रह कर रहा हूँ।" ऐसी खुशखबरी सुनकर महन्त श्री बिहारीजी तो तुरन्त नलिया आने के लिए राजी हो गये।

→ सुन्दरसाथ को धाम की चर्चा सुनाकर माया के दलदल-कीचड़ से निकाला। लक्ष्मणपुर से लौटकर जब श्रीजी स्वरूप ठट्ठा पहुँचे थे, तब श्यामलदास भी श्री ५ नवतनपुरी जाकर दर्शन कर लौट आये थे। पुनः लक्ष्मणपुर के सुन्दरसाथ की जागनी के संदेश सहित खुशखबरीयुक्त चिट्ठी विश्वनाथ भाई के हाथों श्री ५ नवतनपुरी भेजी गयी।

ज. १९- श्रीजी साहेबजी सुदामापुर-लक्ष्मणपुर श्री ५ नवतनपुरी धाम स्थित गादीपति बिहारीजी के पास प्रथम चिट्ठी भेजने के बाद गए थे। दूसरी चिट्ठी भेजने के बाद श्रीजी स्वरूप सुन्दरसाथ से विदा लेकर नलिया चले।

ज. २०- इस बार श्री प्राणनाथजी ठट्ठा नगर में सिर्फ एक महीना रहे। तत्पश्चात् उन्होंने महन्त श्री बिहारीजी के स्वागत के लिए कच्छ-नलिया बंदर की ओर प्रस्थान किया।

स. २१-श्रीजी साहेबजी को ठट्ठा नगर के सुन्दरसाथ से किस विषय में और क्यों रद्दबदल करनी पड़ी?

ज. २१- श्रीजी साहेबजी के वियोग को देखकर ठट्ठा नगर के सुन्दरसाथ में धाम का अधिकाधिक प्रेम उमड़ पड़ा। वे श्रीजी स्वरूप से धाम के नाते का दावा लेकर उनके प्रेम को ठुकराकर न जाने की विनती करते रहे और पुनः पुनः रोते रहे। श्रीजी स्वरूप के तीन-तीन बार नाथा जोशी के घर में और वहाँ के साथ के बीच रहने →

❖ निष्कासित धारा का प्रत्यागमन ❖

स. १- श्रीजी साहेब-श्री प्राणनाथजी के ठट्ठा से नलिया आ पहुँचते ही, इस बात की सूचना सबसे पहले किसने सुनी? श्रीजी के आगमन का इंतजार कौन कर रहे थे?

स. २- धारा भाई जब नलिया आकर श्रीजी से मिले, तब उन्होंने श्रीजी स्वरूप से क्या कहा?

स. ३- धारा भाई ने श्रीजी के चरणों में अपनी धर्म विषयक रामकहानी किस तरह सुनायी?

ज. ३- धारा भाई ने श्रीजी साहेबजी के चरणों में अपनी धर्म-कहानी सुनाते हुए कहा, "मैं खंभालिया में सुन्दरसाथ के बीच रहता था। जब सूरजी भाई मसकत से अपने घर-खंभालिया आये, तब वहाँ बहुत से सुन्दरसाथ इकट्ठा होने लगे। वहाँ पूरे जोर-शोर से चर्चा होने लगी। अनेक नये-नये सुन्दरसाथ आने लगे। मेरे परिवार के लोग भी श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त में शामिल हुए। वहाँ श्री राजजी महाराज-श्री कृष्णजी की दर्शन लीला होती थी। →

→ से सुन्दरसाथ में श्रीजी के प्रति प्रेम ज्यादा बढ़ गया। तब उनके प्रेम को अचानक इस प्रकार ठुकराकर चलते न बनने के कारण कुछ समय तक श्रीजी स्वरूप एवम् सुन्दरसाथ के बीच सद्गुरु द्वारा दी हुई जिम्मेदारी निभाने के विषय में रदबदल चलती रही। अन्ततोगत्वा रोते-रोते भी सुन्दरसाथ को विदाई तो स्वीकार करनी ही पड़ी। अब श्रीजी स्वरूप कच्छ-नलिया की ओर महन्त श्री के उतरने का प्रबन्ध करने हेतु ठट्ठा से चल पड़े।

-(प्रकरण २८, सवाल-जवाब नं.२१, कुल सं. १०१२+२१=१०३३)।

❖ निष्कासित धारा का प्रत्यागमन ❖

ज. १- "श्रीजी साहेब-श्री प्राणनाथजी ठट्ठा से कच्छ-नलिया आ गये हैं"-इस बात की सूचना सबसे पहले खंभालिया निवासी धारा भाई को हुई। इसका कारण यह था कि वे वर्षों से "श्रीजी स्वरूप कब लौटेंगे", इसी बात का इंतजार कर रहे थे।

ज. २- धारा भाई जब खंभालिया से भागते-भागते नलिया आकर श्रीजी साहेबजी से मिले, तब मिलने के पश्चात् उन्होंने धर्म विषय की अपनी सारी रामकहानी श्रीजी स्वरूप को सुना दी।

→ उस लीला के प्रभाव से सुन्दरसाथ की संख्या में वृद्धि होती गई। मुझे वहाँ आवेश आता था और दैनिक श्री कृष्णजी के दर्शन होते थे। मैं परमधाम की लीला एवम् श्री राजजी के स्वरूप का विस्तृत वर्णन करने लगा। यह देखकर वहाँ के सुन्दरसाथ मेरी पूजा करने लगे। उन्होंने मुझे गादी पर बिठा दिया और मेरी विधिवत् सेवा करने लगे।

यह बात जब बिहारीजी ने सुनी, तो उनके मन में ईर्ष्या आ गयी। यह बात सुनते ही उन्होंने नागजी भाई द्वारा चिट्ठी लिखवाकर सूरजी भाई को नवतनपुरी बुलवाया। सूरजी भाई चिट्ठी मिलते ही डरते-डरते दौड़कर नवतनपुरी गादीपति बिहारीजी →

→ के पास पहुँच गये। पहुँचने पर महन्त श्री बिहारीजी ने सूरजी भाई से खंभालिया के सुन्दरसाथ की खबर पूछी। सूरजी भाई ने खंभालिया में जैसा हो रहा था, वे सारी बातें श्री बिहारीजी को सुना दी। सूरजी भाई की बात सुनकर श्री बिहारीजी आग-बबूला हो गये। उन्होंने कहा यह तो गोलों-क्षुद्रों का धर्म शुरू हो गया। लगता है खंभालिया में सब पर माया हावी हो गयी है। इस प्रकार बहुत खण्डनी करने के बाद बिहारीजी ने कहा कि तुम्हारे गाँव-घरों में कलियुग आ गया है।

अब तुरन्त जाकर तुम धारा भाई को उसके परिवार सहित साथ-समुदाय से पृथक कर दो। सुन्दरसाथ समाज में वह कदापि रहने न पावे। यदि तुम तुरंत जाकर यह कार्य नहीं करोगे अर्थात् धारे को धर्म से नहीं निकालोगे, तो हमारा-तुम्हारा भी परमधाम का सम्बन्ध नहीं रह जायेगा। कदाच मैंने सुना कि सूरजी ने धारा को सुन्दरसाथ समुदाय से अलग नहीं किया है, तो तुम्हें ही सुन्दरसाथ समाज और श्री परमधाम से निकाल दिया जायेगा। उक्त बातों से डरकर सूरजी भाई ने नवतनपुरी महन्त श्री गादीपति बिहारीजी की आज्ञानुकूल मुझे सपरिवार सुन्दरसाथ समाज, धर्म और धाम से बहिष्कृत कर दिया। मैं परिवार सहित बहुत रोया-धोया, परंतु सूरजी भाई ने सुन्दरसाथ समाज के बीच में कहा कि जितना कहना-सुनना, रोना-धोना, विनती-प्रार्थना करना हो, नवतनपुरी जाकर गादीपति श्री बिहारीजी से करो। तब मैं परिवार सहित श्री बिहारीजी के पास गया। वहाँ जाकर →

स. ४- जब सूरजी भाई मसकत से खंभालिया लौटे, तब वहाँ क्या होने लगा था?

स. ५- उस वक्त खंभालिया में साथ समूह में कौन-कौन शामिल हुये?

→ मैंने अपनी गलती कबूल की, माफी माँगी, रोया-धोया, उपवास रहा। परन्तु महन्त श्री ने मेरी एक न सुनी। तब मैं वापस घर लौट आया। आज वर्ष दिन होने आया है। मैं धाम-धर्म, सुन्दरसाथ, तिलक-प्रसाद आदि से वंचित हूँ। अब तक मैं आप का ही इंतजार कर रहा था। आप विदेश-मसकत, अबासी आदि स्थानों में थे। "कब वापस आएँगे"- यह सोचकर इंतजार करते बैठा था। जब मैंने सुना कि आप नलिया आ पहुँचे हैं, तब मैं आपके पास भागते-भागते आ गया। अब आपके चरण छोड़कर मैं कहीं नहीं जाऊँगा। आप जैसा जानिए, वैसा कीजिए। मुझे धर्म से मत निकालिए। मुझे धर्म में शामिल कर लीजिए।" इस तरह कहते हुए रोते-रोते धारा भाई श्रीजी से शरण माँगने लगे। इस प्रकार की घटना को सुनकर श्रीजी ने धारा भाई को धैर्य धारण कराते हुए एक युक्ति सिखाई, "तुम ऐसा करना। श्री बिहारीजी यहाँ आ रहे हैं। मैं उन्हें समझाकर तुम्हारा कार्य करूँगा। परन्तु तुम अभी मंडई बंदर जाकर बैठो। जब श्री बिहारीजी नाव से उतरेंगे, तब उन्हें प्रणाम कर दौड़कर मेरे पास आना और श्री बिहारीजी के आने का संदेश समस्त सुन्दरसाथ के बीच खुश होकर मुझे सुनाना। तब मैं भी खुश होकर तुमसे कहूँगा कि माँगो ... माँगो ...! आपको क्या माँगना है!! तब तुम सबके सामने मुझसे कहना कि मुझे और कुछ नहीं चाहिए। बस आप मुझे सद्गुरु स्वरूप बिहारीजी के चरणों में शामिल कर लीजिए। मुझे धर्म में शामिल कर लीजिए।" यह युक्ति सिखाकर श्रीजी स्वरूप ने धारा भाई को मंडई बंदर भेज दिया।

ज. ४- जब सूरजी भाई मसकत से खंभालिया लौटे, तब वहाँ बहुत से सुन्दरसाथ इकट्ठे होने लगे और पूरे जोर-शोर से कथा-चर्चा होने लगी।

ज. ५- उस वक्त खंभालिया में अनेकों नये-नये सुन्दरसाथ और धारा भाई के परिवार के लोग भी साथ समूह में शामिल हुये।

स. ६- खंभालिया में धारा भाई के माध्यम से कैसी-कैसी प्रभावकारी लीला होती थी?

स. ७- धारा भाई के ऊपर खंभालिया में श्री राजजी की कैसी मेहेर हुई?

ज. ७- श्री राजजी महाराज की मेहेररूपी वर्षा के कारण ही धारा भाई →

स. ८- खंभालिया के सुन्दरसाथ धारा भाई के प्रति क्या-क्या करने लगे? उनमें से मुख्य भाई कौन हैं?

स. ९- उक्त बातें किसने सुनी और सुनने के बाद क्या किया?

स. १०- "यह पन्थ गोलों का" - यह वाक्यांश किसके श्री मुख का है तथा इस वाक्यांश का क्या तात्पर्य है?

ज. १०- *"यह पन्थ गोलों का"* - यह वाक्यांश महन्त श्री बिहारीजी के श्री मुख का है। इस वाक्यांश का तात्पर्य यह है, "महन्त श्री →

स. ११- सूरजी भाई को भेजी हुई चिट्ठी में श्री बिहारीजी ने सूरजी भाई के प्रति क्या लिखवाया था?

स.१२- महन्त श्री बिहारीजी की चिट्ठी पाते ही सूरजी भाई डरते-डरते महन्त श्री के पास क्यों पहुँचे?

ज. ६- खंभालिया में धारा भाई के माध्यम से श्री राजजी अर्थात् श्री कृष्णजी की दर्शन-लीला होती थी। जब धारा भाई को आवेश आता था, तो वे आवेश में श्री परमधाम पचीस पक्ष की चर्चा-कथा के माध्यम से सुन्दरसाथ को पचीस पक्ष में भ्रमण कराते थे।

→ सुन्दरसाथ को पचीस पक्ष में भ्रमण और दर्शन लीला कराते थे। अन्यथा श्री राजजी की मेहेर बिना कोई अनपढ़ व्यक्ति पचीस पक्ष का ज्ञान और श्री राजश्यामाजी के स्वरूप का सिंगार-वर्णन कर सके, ऐसा कदापि नहीं हो सकता।

ज. ८- धारा भाई के ऊपर श्री राजजी की कृपा देखकर खंभालिया के सुन्दरसाथ धारा भाई की पूजा करने लगे। उन्होंने धारा भाई को गादी पर बैठाया और विधिवत् धारा भाई की सेवा करने लगे। इस बात में सूरजी भाई का मुख्य हाथ था।

ज. ९- उक्त बातें नवतनपुरी स्थित गादीपति महन्त श्री बिहारीजी के पास पहुँची। उक्त बातें सुनते ही उन्होंने अपने हजूरी नागजी भाई द्वारा एक चिट्ठी लिखवाकर सूरजी भाई को नवतनपुरी बुलवाया।

→ कहना चाहते थे कि धारा भाई ग्वाला जाति के हैं। इसलिए धारा भाई को गादी पर बिठाकर पूजनीय स्वरूप मानने के कारण अब तो श्री कृष्ण प्रणामी-श्री निजानन्द सम्प्रदाय क्षुद्रों का धर्म बन गया। अब सुन्दरसाथजी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के बदले धारा अर्थात् ग्वालों का नाम जपने लगेंगे।"

ज. ११- सूरजी भाई को भेजी गई चिट्ठी में गादीपति बिहारीजी ने सूरजी भाई के प्रति यह लिखवाया था, "यह पत्र मिलते ही आप तुरन्त जामनगर-नवतनपुरी आना।"

ज. १२- नवतनपुरी से गादीपति महन्त श्री बिहारीजी की चिट्ठी मिलते ही सूरजी भाई डरते-डरते भागते हुए नवतनपुरी महन्त श्री के पास पहुँचे क्योंकि धारा भाई को गादी पर बैठाने में मुख्य हाथ उन्हीं का था।

स. १३-नवतनपुरी पहुँचते ही बिहारीजी ने सूरजी भाई से क्या पूछा?

स. १४-प्रत्युत्तर में सूरजी भाई ने गादीपति बिहारीजी से क्या कहा?

स. १५-इस पर गादीपति बिहारीजी ने सूरजी भाई के बातों की खण्डनी करते हुए क्या कहा?

ज. १५- तब श्री बिहारीजी ने गादीपति का कर्तव्य निभाते हुए सूरजी भाई →

स. १६-पुनः बिहारीजी ने सूरजी भाई को धारा भाई के विषय में किस बात की जिम्मेदारी सौंपी?

ज. १६- उपरोक्त प्रकार से खण्डनी करने के पश्चात् श्री बिहारीजी ने →

स. १७-कदाच सूरजी भाई बिहारीजी द्वारा दी हुई जिम्मेदारीरूपी आज्ञा का पालन न करते, तो उस विषय में बिहारीजी ने क्या करने को कहा था?

ज. १७- कदाच सूरजी भाई बिहारीजी द्वारा सौंपे हुए कार्य को अपनी →

स. १८-तब सूरजी भाई ने श्री बिहारीजी के चरणों में क्या प्रतिज्ञा की? उन्होंने बिहारीजी के कहे प्रमाण धारा को निकालने का निर्णय क्यों लिया?

ज. १८- सूरजी भाई के ऊपर उक्त प्रकार की जिम्मेदारी आते ही उन्होंने श्री बिहारीजी के चरण पकड़कर यह प्रतिज्ञा की, "मैं आपके →

ज. १३- जैसे ही सूरजी भाई नवतनपुरी गादीपति श्री बिहारीजी के सामने आए, बिहारीजी ने उनसे पूछा, "अरे! खंभालिया के सुन्दरसाथ का क्या समाचार है?"

ज. १४- प्रत्युत्तर में सूरजी भाई ने गादीपति बिहारीजी से कहा, "अहो! खंभालिया के सुन्दरसाथ पर तो श्री राजजी महाराज ने बड़ी ही कृपा की है। वहाँ के सभी सुन्दरसाथ बड़े आनन्द-मंगल से समय व्यतीत कर रहे हैं।"

→ के बातों की खण्डनी करते हुए कहा, "तुम सब माया के वशीभूत हो चुके हो। प्रत्यक्षरूप में तुम्हारे गाँव और घर-घर में कलियुग छा गया है। अब आगे हमारा धर्म गोलों-क्षुद्रों का धर्म कहलायेगा।"

→ सूरजी भाई से कहा, "अब तुरन्त जाकर तुम धारा भाई को सुन्दरसाथ समूह से निकाल दो। वह सुन्दरसाथ में कदापि रहने न पावे। उसे परिवार सहित साथ समुदाय से ही पृथक कर दो। इस कार्य की जिम्मेदारी मैं तुम्हें सौंपता हूँ।"

→ जिम्मेदारी समझकर पूरा नहीं करते, तो इस विषय में बिहारीजी ने उन्हें पहले ही सतर्क करते हुए कह दिया था, "तब तुम्हारा भी परमधाम का सम्बन्ध नहीं रह जायेगा और बदले में तुम्हें भी सुन्दरसाथ समाज से निकाल दिया जायेगा।"

→ कहे प्रमाण धारे को सपरिवार सुन्दरसाथ समाज से निकाल दूँगा।" इस समय उन्होंने बिहारीजी के कहे प्रमाण धारा भाई को सुन्दरसाथ समाज से निकाल देने का निर्णय लिया क्योंकि यदि वे उस समय धारा भाई को सुन्दरसाथ समाज से निकालने की बिहारीजी की आज्ञा को ठुकरा देते, तो श्री बिहारीजी उन्हें भी सुन्दरसाथ समाज से दूर कर देते।

स. १९-बिहारीजी से उक्त बातचीत करके सूरजी भाई ने खंभालिया आकर क्या किया?

ज. १९- बिहारीजी से उक्त बातचीत करने के पश्चात् सूरजी भाई →

स. २०-उस वक्त सूरजी भाई के आगे रोते-रोते किसने और क्या विनती की?

ज. २०- उस वक्त सुन्दरसाथ समाज के बीच में धारा भाई की पत्नी और →

स. २१-उक्त बातों का जवाब देते हुए सूरजी भाई ने बेनीबाई से क्या कहा?

स. २२-सूरजी भाई की बातें सुनकर धारा भाई सपरिवार कहाँ गये?

स. २३-नवतनपुरी जाकर धारा भाई ने सद्गुरु स्वरूप श्री बिहारीजी के चरणों में क्या बातें रखीं?

ज. २३- "सद्गुरु चरण को क्षेत्र है, जहाँ जाय सब शोक" अतः धारा भाई ने नवतनपुरी जाकर श्री सद्गुरु स्वरूप गादीपति श्री बिहारीजी →

स. २४-अन्त में धारा भाई श्री बिहारीजी के पास से किस प्रकार अथवा किस भरोसे से वापस आये?

ज. २४- अन्त में धारा भाई ने सोचा, "यहाँ रोने और माथा पटकने से कोई सुननेवाला नहीं है। किसी के पत्थर दिल के पिघलने की →

स. २५-"अब मैं आपके चरणों के आश्रय में हूँ। आप जो चाहे, सो कीजिए।" - ऐसा किसने, किससे कहा?

ज. २५- नलिया में श्रीजी साहेबजी (श्री मेहराज) के चरणों में अपनी राम- →

→ खंभालिया लौट आये और खंभालिया के समस्त सुन्दरसाथ को आमंत्रित कर उन्होंने सबके सामने नवतनपुरी गादीपति श्री बिहारीजी के हुकम को जाहिर कर दिया। तत्पश्चात् गादीपतिजी की तरफ से धारा भाई को परिवार सहित सुन्दरसाथ समाज से अलग कर दिया।

→ बहन बेनीबाई ने रोते-रोते सूरजी भाई से यह विनती की, "हम तो बेकसूर हैं! बिना गुनाह के ही हमें आप सुन्दरसाथ समाज से क्यों अलग कर रहे हैं। गादी पर बैठे, तो धारा भाई थे न! हम दोनों ने क्या किया था?"

ज. २१- उक्त प्रकार की बातें सुनकर सूरजी भाई ने बेनीबाई से कहा, "मैं कहाँ यह सब करना चाहता हूँ? आपको जो कुछ कहना हो, आप श्री नवतनपुरी जाकर गादीपति श्री बिहारीजी से कहिए।"

ज. २२- सूरजी भाई की सलाह के अनुसार धारा भाई सपरिवार नवतनपुरी गादीपति महन्त श्री बिहारीजी के पास पहुँचे।

→ के चरणों में जाकर अपनी गलती के प्रति माफी माँगी। बिहारीजी के चरणों में सपरिवार साष्टाङ्ग होकर विनती की। बहुत रोए-धोए, कइयों पुकार की, विनती चढ़ायी, उपवास किये; परन्तु सब व्यर्थ हुआ। गादीपति बिहारीजी का पत्थर दिल पिघला ही नहीं।

→ संभावना नहीं है। अब एक श्री मेहराज के चरण-शरण के सिवाय, दूसरा कोई उपाय नहीं दिखता।" यह सोचकर धारा भाई निश्चिन्त होकर खंभालिया स्थित अपने घर वापस लौट आये और श्रीजी स्वरूप के लौटने का इंतजार करने लगे।

→ कहानी सुनाने के पश्चात् निम्न कथन धारा भाई ने श्रीजी से कहा, "हे प्रभु! अब मैं आपके चरणों के आश्रय में हूँ। आप जो चाहे, सो कीजिए।"

स. २६-धारा भाई की सारी रामकहानी सुनने के बाद श्रीजी साहेब ने धारा भाई से क्या कहा?

ज. २६- अपनी सारी रामकहानी श्रीजी के चरणों में रखते हुए धारा भाई पछताते-पछताते रोने लगे। तब उनकी विकट रामकहानी सुनकर श्रीजी साहेबजी ने धारा भाई को एक युक्तिपूर्ण उपाय बताया, →

स. २७-"जाए खबर देऊँ मैं " - इस वाक्यांश के तात्पर्य को खुलस्त कीजिए।

ज. २७- *"जाए खबर देऊँ मैं "*- इस वाक्यांश का तात्पर्य यह है कि श्रीजी ने धारा भाई को धर्म में शामिल करने के लिए एक युक्ति सोची, जिसके अनुसार जब धारा भाई दौड़कर गादीपति बिहारीजी के नलिया आने की, मंडई बंदर पर उतरने की खुशखबरी देकर श्रीजी को ऋणी बना देंगे, तब उन्हें बख्शिश देने के विषय में श्रीजी उनसे कहेंगे, "धारा भाई! माँगो .... माँगो!!! जो माँगना हो माँगो।" तब धारा भाई श्रीजी से बिहारीजी के चरणों में शरण →

स. २८-श्रीजी ने महन्त श्री बिहारीजी को नलिया आने का कितनी बार आग्रह किया था? पुनः दूसरी बार के आग्रह पर बिहारीजी नलिया आने के लिए तैयार क्यों हो गए?

ज. २८- श्रीजी साहेबजी ने नवतनपुरी सद्गुरु स्वरूप महन्त श्री बिहारीजी →

स. २९-दूसरी चिट्ठी में क्या खुशखबरी लिखी थी, जिसे सुनते ही बिहारीजी नलिया आने के लिए राजी हो गये?

ज. २९- श्रीजी द्वारा लिखी हुई प्रथम चिट्ठी के उत्तर में महन्त श्री ने लिखा था, "दरिया प्यासे को ढूँढ़ते नहीं दौड़ता। प्यासे को प्यास बुझाने के लिए दरिया के पास दौड़ना पड़ता है।" यसर्थ श्रीजी ने दूसरी चिट्ठी में प्यास में वृद्धि करते हुए लिखा था, "आपका दर्शन तो →

→ "तुम मंडई बंदर में बिहारीजी का इंतजार करना। नाव से उतरते ही उन्हें प्रणाम करके उनके आगमन का समाचार मुझे देना और मैं कहूँगा कि "धाराभाई! माँगो .... माँगो ....!! जो माँगना हो माँगो!!! मैं मेरा जीव भी न्योछावर कर दूँ!!" यह कहकर तुम्हें तथास्तु कर दूँगा।" इस प्रकार युक्तिपूर्ण उपाय बताकर श्रीजी स्वरूप ने धारा भाई को मंडई बंदर जाने की आज्ञा दी।

→ माँगेंगे और श्रीजी से कहेंगे, "मुझे धाम-धर्म में शामिल करा दीजिए।" इसी बहाने श्रीजी स्वरूप धारा भाई को "तथास्तु" कह देंगे। इस प्रकार बचनबद्ध होने का बहाना कर श्रीजी स्वरूप धारा भाई को धर्म में शामिल करने की बिहारीजी से बिनती करेंगे और कहेंगे, "हे सद्गुरु स्वरूप! धारा भाई को धर्म में शामिल करने के विषय में आप मेरे बचनों को तो रख लीजिए। मैं बचन हार चुका हूँ।" कदाच बिहारीजी धारा भाई को माफ न भी करें, तो भी मेरे बचन तो अवश्य रखेंगे। इस कथन का यह तात्पर्य था। किंतु दोनों ही बरबाद हो गया।

→ को नलिया आने के लिए दो बार आग्रह किया था। प्रथम आग्रह के प्रत्युत्तर में बिहारीजी ने लिखा था, "दर्शन करना हो, तो आप स्वयं आइये। दरिया प्यासे के पीछे कभी नहीं दौड़ता।" दूसरी बार जब श्रीजी ने धन-संपत्ति आदि का प्रलोभन दिया, तब तुरन्त दरिया प्यासे के पीछे उमड़ पड़ा अर्थात् बिहारीजी नलिया आने को राजी हो गये।

→ मात्र एक बहाना है। विशेष बात यह है कि जगह-जगह के सुन्दरसाथ ने विदाई में दिये हुए हीरों के हार, सोना, चाँदी, कपड़ा-लत्ता, नगदी पैसों आदि से भरी गठरी लेकर मैं कहाँ-कहाँ फिरूँ? अतः मैं ये सभी चीजें आपके चरणों में रखना चाहता हूँ। आपके पास रहेगा, तो सद्गुरु की गादी, मंदिर संचालन में काम आयेगा। यह सोचकर आपसे नलिया आने का आग्रह किया था। परंतु आपने आने से मना कर दिया। यदि बने, तो आप आ जाइये। मैं →

→यहाँ से सूरत की ओर जाऊँगा।" तब बिहारीजी प्यास बुझाने →

स. ३०-बिहारीजी जब मंडई बंदर पहुँचकर नाव से उतरे, तब नाव से उतरते ही सर्वप्रथम उन्हें किसने प्रणाम किया?

स. ३१-"गादीपति श्री बिहारीजी नाव से मंडई बंदर पर उतर गए हैं।" - यह समाचार श्रीजी को किसने दिया?

स. ३२-जब धारा भाई श्रीजी साहेबजी को बिहारीजी के आगमन की खबर देने पहुँचे, उस समय श्रीजी क्या कर रहे थे?

स. ३३-उक्त खुशखबरी सुनते ही श्रीजी स्वरूप ने धारा भाई से क्या कहा? श्रीजी स्वरूप के कहने पर धारा भाई ने क्या माँगा?

ज. ३३- उक्त खुशखबरी सुनते ही श्रीजी साहेबजी ने आवेश में आकर धारा भाई से कहा, "माँगो .... माँगो.....! धारा भाई माँग लो!! →

स. ३४-इस समय सूरत से कितने जन, कौन-कौन और किस लिए श्रीजी के पास आये?

ज. ३४- इस समय सूरत से नलिया श्रीजी साहेबजी के दर्शनार्थ आठ-नौ जन आये। वे अपने परिवार को साथ लेकर आये थे, जिनके →

स. ३५-पुनः नवतनपुरी महन्त श्री बिहारीजी के साथ कितने जन और कौन-कौन नलिया आए थे?

→ के लिए भागते-भागते नलिया आ पहुँचे।

ज. ३०- बिहारीजी जब मंडई बंदर पहुँचकर नाव से उतरे, तब उतरते ही सर्वप्रथम धारा भाई ने उनके चरणों में प्रणाम किया। उनके साथ अन्य जो-जो सुन्दरसाथ थे, उन्हें भी प्रणाम करने के पश्चात् दौड़ते-दौड़ते धारा भाई श्रीजी स्वरूप के पास आये।

ज. ३१- "गादीपति सद्गुरु स्वरूप श्री बिहारीजी मंडई बंदर पर नाव से उतर गए हैं।" - इस बात का समाचार श्रीजी साहेबजी को धारा भाई ने आकर दिया।

ज. ३२- जब धारा भाई श्रीजी को बिहारीजी के मंडई बंदर नाव से उतरने की खबर देने पहुँचे, उस समय श्रीजी स्वरूप सुन्दरसाथ के बीच चर्चा कर रहे थे। उसी बीच में श्रीजी स्वरूप को धारा भाई ने शुभ समाचार दिया।

→ मैं तुम्हें इस खुशखबरी के बदले जो माँगोगे, सो भेंट करूँगा।" तब धारा भाई ने हाथ जोड़कर कहा, "मुझे सद्गुरु स्वरूप गादीपति श्री बिहारीजी के चरणों में शरण दिलवा दीजिए और सुन्दरसाथ समाज में शामिल कर लीजिए।" तब समस्त सुन्दरसाथ के बीच ही श्रीजी स्वरूप ने धारा भाई को कह दिया, "तथास्तु! तुम्हारा कार्य हो जायेगा।"

→ नाम निम्नलिखित हैं। जैसे-एक आकिल भगवान, दूसरे नागजी और नाहना भाई, तीसरे वल्लभ भाई और चौथे धनजी भाई। इनके साथ सुन्दरबाई, रतनबाई, मटाबाई और लालोबाई आदि भी श्रीजी स्वरूप के दर्शनार्थ आये थे।

ज. ३५- पुनः नवतनपुरी सद्गुरु स्वरूप महन्त श्री बिहारीजी के साथ संगजी, अखई, हरवंश और लाला भाई आये थे। ये चारों सदैव श्री बिहारीजी के साथ ही रहते थे।

स. ३६-श्रीजी स्वरूप की मन लगाकर सेवा करनेवाले सेवकों में किस-किसका नाम है?

स. ३७-श्रीजी स्वरूप को ठट्ठा नगर से नलिया पहुँचाने कौन-कौन आये थे?

स. ३८-खंभालिया से धारा भाई के साथ कितने जन और कौन-कौन नलिया आये थे?

स. ३९-श्रीजी के पास नलिया में कहाँ-कहाँ के और कितने सुन्दरसाथ का समूह इकट्ठा हुआ?

स. ४०-बिहारीजी के आगमन का समाचार मिलते ही श्रीजी ने किस प्रकार बिहारीजी की अगवानी करके उन्हें हवेली में पधराया?

ज. ४०- अपने धर्म के मूल स्थान श्री नवतनपुरी धाम के गादीपति श्री बिहारीजी के आगमन की बातें सुनते ही श्रीजी स्वरूप जिस →

स. ४१-श्रीजी साहेबजी ने महन्त श्री बिहारीजी को किस हवेली में पधराया था?

ज. ४१- श्रीजी ने नलिया के कामदार से एक हवेली की माँग की थी। उस →

स. ४२-समस्त सुन्दरसाथ सद्गुरु स्वरूप गादीपति श्री बिहारीजी की सेवा कैसे कर रहे थे?

ज. ३६- श्रीजी साहेब श्री प्राणनाथजी की मन लगाकर सेवा करनेवाले सेवकों में एक हैं तेजबाई, दूसरी हैं रूपाबाई और तीसरी हैं राधाबाई।

ज. ३७- श्रीजी साहेब को ठट्ठा नगर से नलिया तक पहुँचाने के लिए नाथा जोशी और खेमा भाई आये थे।

ज. ३८- खंभालिया से धारा भाई और उनकी पत्नी के साथ दस जन नलिया आये थे, जिनके नाम हैं-सूरजी, हरजी, थिरदास, जीवराज, अजबाई, हरवंश, नरहर भाई और उनकी पत्नी।

ज. ३९- श्रीजी साहेबजी के पास नलिया में चार दिशाओं से चार समाज आकर इकट्ठे हुए थे। जैसे-ठट्ठा नगर के सुन्दरसाथ, खंभालिया के सुन्दरसाथ, नवतनपुरी के सुन्दरसाथ और सूरत से आये सुन्दरसाथ।

→ स्थिति में थे, वैसे ही दौड़ पड़े। अपने पास के सभी सुन्दरसाथ सहित भजन-कीर्तन, बाजे-गाजे के साथ गाते-बजाते श्रीजी स्वरूप ने गादीपति बिहारीजी की अगवानी की और उन्हें उस हवेली में इज्जत और आदर-सत्कार के साथ पधराया, जो हवेली उन्होंने नलिया के कामदार से दावे के साथ माँगकर ली थी।

→ कामदार से उनका जातीय सम्बन्ध था। अतः उसने भी अपना खास सम्बन्ध मानकर श्रीजी को वह स्थान दे दिया। उसी हवेली में श्रीजी स्वरूप ने धूमधाम से गादीपति श्री बिहारीजी को पधराया था।

ज. ४२- यहाँ हवेली में समस्त सुन्दरसाथ अपने धर्मतीर्थ श्री नवतनपुरी धाम के गादीपति श्री बिहारीजी की सेवा साक्षात् श्री राजजी स्वरूप मानकर अत्यधिक स्नेहपूर्वक कर रहे थे।

स. ४३-श्रीजी द्वारा अपनी विभिन्न यात्राओं का वृत्तान्त सुनाने पर श्री बिहारीजी क्यों हँसने लगे?

ज. ४३- अब एकान्त में श्रीजी स्वरूप श्री बिहारीजी को, जब से अलग हुए अर्थात् वि. सं. १७२० से लेकर वि. सं. १७२८ तक की →

स. ४४-चारों ओर से एकत्रित हुए सुन्दरसाथ नलिया में श्रीजी स्वरूप के श्री मुख की चर्चा सुनकर क्या अनुभव करते थे?

स. ४५-सुन्दरसाथ के चर्चा श्रवण, उत्सव-रसोई और परस्पर प्रेम-भाव के कारण किसमें वृद्धि होती गई?

स. ४६-इस समय श्रीजी साहेबजी द्वारा चर्चा का प्रवाह निरन्तर कैसा हो रहा था?

ज. ४६- इस समय हवेली में श्रीजी स्वरूप द्वारा नित्य-निरन्तर बड़ी रोचक चर्चा का प्रवाह चल रहा था। ऐसी चर्चा श्रोताओं को जीवन में →

स. ४७-एक दिन श्रीजी स्वरूप ने किन-किन को श्री बिहारीजी की सेवा विषय में एकान्त में समझाया और उन्हें श्री बिहारीजी की किस तरह किस भाव से सेवा करने को कहा?

ज. ४७- श्रीजी साहेब स्वरूप श्री मेहराजजी ने एक दिन रूपाबाई, →

स. ४८-"तुम मेरी न काढ़ियो खोर" - यह वाक्यांश किसने, किससे और क्यों कहा?

→ विभिन्न यात्राओं का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाने लगे। परंतु धर्म की उन्नति और सुन्दरसाथ की संख्या में वृद्धि जैसी सुखदायी बातें बिहारीजी को अच्छी नहीं लगीं। "यह महराज मेरे आगे अपना बड़प्पन छाँट रहा है"-यह सोचकर बिहारीजी अन्दर-ही-अन्दर मन-ही-मन में हँसने लगे।

ज. ४४- चारों ओर से एकत्रित हुए सुन्दरसाथ श्रीजी की चर्चा सुनकर अपूर्व सुख की अनुभूति करते थे। वे उस रसमयी चर्चा के रस में डूबकर मायावी संसार में आकर अब तक देखे सारे दुःख-कष्ट भूल जाते थे।

ज. ४५- श्रीजी स्वरूप के श्री मुख की चर्चा द्वारा प्रत्येक सुन्दरसाथ के मन में उमंग दौड़ पड़ती। नित्य प्रति नई-नई उत्सव-रसोई होती थी। सभी सुन्दरसाथ हवेली में परस्पर मेल-जोल से रहते थे, जिससे सुन्दरसाथ के उत्साह में वृद्धि होती गई।

→ पहली बार नसीब हुई थी, जिस चर्चा में भावों की प्रत्यक्ष अनुभूति हुआ करती थी। जो एक बार भी इस चर्चा को श्रवण कर लेता, उसका चित्त स्वतः ही माया की ओर से हटकर धामधनी की तरफ लग जाता था।

→ राधाबाई और श्री तेजबाई-बाईज्यूराज-इन तीनों को एकान्त में बिठाकर समझाते हुए कहा, "तुम तीनों इस समय गादीपति श्री बिहारीजी की धाम के धनी मानकर सेवा करो। तुम लोग उन्हें साक्षात् सद्गुरु स्वरूप समझकर उनकी आज्ञानुसार सेवा में डटे रहो। श्री बिहारीजी की भलीभाँति सेवा होगी, तो मैं समझूँगा कि तुमने मेरा ही कार्य कर दिया।"

ज. ४८- *"तुम मेरी न काढ़ियो खोर"* - यह वाक्यांश श्रीजी साहेबजी ने तीनों सेवा-भावी बहनों को समझाते हुए कहा। उन्होंने उन तीनों को समझाते हुए कहा, "देखो! कदाच गादीपति बिहारीजी →

→ की आज्ञा को तुमने शिरोधार्य नहीं किया, तो फिर तुम्हारा मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं रह जायेगा। मैं तुमसे दूर हो जाऊँगा। पुनः उनकी सेवा करते समय सावधानी से काम लेना। उनका दिमाग गरम है। लापरवाही करके काम बिगाड़ोगे, तो पीछे पछताना पड़ेगा। किसी भी बात को लेकर उनका दिमाग गरम नहीं होने →

स. ४९-यहाँ गादीपति स्वरूप और सुन्दरसाथ में परस्पर एकत्व बढ़ाने के लिए श्रीजी स्वरूप ने चर्चा के माध्यम से सुन्दरसाथ को गादीपति स्वरूप के प्रति किस प्रकार की भावना रखने और सेवा करने को कहा?

ज. ४९- श्रीजी साहेबजी ने यहाँ सभी सुन्दरसाथ को चर्चा के माध्यम से अपने धर्म, मूल स्थान तीर्थ स्वरूप नवतनपुरी और सद्गुरु स्वरूप गादीपति श्री के महत्त्व के विषय को खुलासा करते हुए इस तरह →

स. ५०-श्री बिहारीजी और श्रीजी साहेबजी एक स्थान पर एकान्त में बैठकर किन विषयों पर सलाह-मशविरा करने लगे?

ज. ५०- श्री बिहारीजी और श्रीजी साहेबजी अब एकान्त में बैठकर सद्गुरु →

स. ५१-श्रीजी स्वरूप ने श्री नवतनपुरी गादीपति श्री बिहारीजी और उनके साथ आए लोगों को किस प्रकार सम्मानित किया?

ज. ५१- श्रीजी साहेबजी ने महन्त श्री बिहारीजी और उनके साथ आए →

स. ५२-श्री बिहारीजी को इतना प्रसन्न करने के बाद और प्रसन्न करने के लिए श्रीजी स्वरूप ने कहाँ तक किया?

ज. ५२- महामति श्री प्राणनाथजी ने गादीपति श्री बिहारीजी को इतना →

→ देना। देखो! मैंने अच्छी तरह समझाकर अपनी जिम्मेदारी सौंप दी है। बाद में तुम लोग मुझे किसी भी प्रकार से दोषी ठहराते हुए ऐसा नहीं कहना कि वे ऐसे गुस्सेवाले हैं, ऐसा तो आपने हमसे कहा ही नहीं था। ऐसा कहने का समय न आने पाये। अतः वे जब तक यहाँ रहेंगे, तब तक तुम तीनों मेरे कहे प्रमाण सावधानी से सेवा में डटे रहना।"

→ समझाया कि जिससे सुन्दरसाथ के दिल-दिमाग में अपने तीर्थस्थान, सद्गुरु की गादी और गादीपति सद्गुरु स्वरूप श्री बिहारीजी के प्रति धार्मिक लगाव, प्रेम, श्रद्धा और अपनेपन में वृद्धि हो जाये। इस प्रकार श्रीजी स्वरूप निरन्तर चर्चा के माध्यम से सुन्दरसाथजी को महन्त श्री गादीपति के प्रति धामधनी श्री राजजी का भाव रखने के लिए प्रबोध करते रहे तथा महन्त श्री गादीपति और सुन्दरसाथ को अपना जानकर उनमें परस्पर अपनत्व बढ़ाने की कोशिश करते रहे।

→ स्वरूप के भविष्य विषयक वचनों को पूरा करने के विषय में सलाह-मशविरा करने लगे। तीर्थ-धाम श्री नवतनपुरी के अध्यक्षरूप गादीपति श्री बिहारीजी के आगे श्रीजी साहेबजी ने धर्म-प्रचार, प्रसार विषयक प्रस्ताव रखते हुए पूछा, "अब जागनी कार्य की शुभ घड़ी आ गयी है। हमें इसके आगे क्या कार्य करना चाहिए?"

→ सुन्दरसाथ को विभिन्न प्रकार के वस्त्राभूषण पहनाकर सम्मानित किया। किसी को आभूषण भेंट दिये, तो किसी को वस्त्र; किसी को बर्तन दिये, तो किसी को कुछ अन्य वस्तुएँ। इस प्रकार श्रीजी स्वरूप ने श्री नवतनपुरी से आये लोगों को विभिन्न साज-सिंगार, धन-सम्पत्ति आदि से सम्मानित किया।

→ प्रसन्न करने के बाद और प्रसन्न करने के लिए अपने पास अन्य जो भी सामग्रियाँ बचीं थीं, वे सब भी बिहारीजी के सम्मुख लाकर रख दीं। नगद-रुपये, कपड़े और आभूषण आदि सब कुछ गादीपति श्री बिहारीजी को समर्पित करके श्रीजी स्वरूप स्वयं एक धोती →

→पहनकर अलग खड़े हो गये। पहनी हुई धोती के सिवाय श्रीजी →

स. ५३-पुनः श्री बाईज्यूराज को मिली हुई सारी सामग्रियाँ भी श्रीजी स्वरूप ने क्या जानकर गादीपति बिहारीजी को सौंप दी?

स. ५४-हर प्रकार से प्रसन्न करने के बाद श्रीजी साहेब ने एक दिन श्री बिहारीजी से क्या विनय किया ?

ज. ५४- उक्त प्रकारेण हर ओर से प्रसन्न करने के पश्चात् एक दिन श्रीजी साहेबजी ने श्री सद्गुरु स्वरूप गादीपति श्री बिहारीजी से विनयपूर्वक कहा, "मैं धारा भाई का ऋणी बन गया हूँ। इन्होंने ही सर्वप्रथम आपके आगमन का शुभ समाचार मुझे दिया था। →

स. ५५-श्रीजी साहेबजी की सम्पूर्ण बातें सुनने के पश्चात् महन्त श्री बिहारीजी ने क्या कहा?

ज. ५५- श्रीजी साहेबजी की सम्पूर्ण बातें सुनने के पश्चात् महन्त श्री बिहारीजी ने कहा, "मैं आपकी यह प्रार्थना कदापि नहीं सुनूँगा। आज के बाद दुबारा यह बात आप मुझसे कभी न कहना। यह →

स. ५६-दूसरी बार कितने दिनों बाद पुनः श्रीजी स्वरूप ने धारा भाई के विषय में बिहारीजी से प्रार्थना की?

ज. ५६- पुनः दूसरी बार चार-छः दिन बाद श्रीजी स्वरूप ने पुनः श्री →

स. ५७-पुनः श्रीजी साहेबजी ने श्री बिहारीजी से धारा भाई की बहन और धर्मपत्नी के विषय में क्या कहा?

ज. ५७- श्री बिहारीजी के चरणों में श्रीजी ने धारा भाई की बहन और →

→ स्वरूप ने अपने पास कुछ नहीं रखा।

ज. ५३- पुनः श्री बाईज्यूराज को मिले हुए आभूषणों और उनके सिंगार की वस्त्रादि सभी सामग्रियों को भी श्रीजी स्वरूप ने श्री बिहारीजी को परमात्मा स्वरूप जानकर सौंप दी।

→ आपके पहुँचने की बधाई लेकर जब वे आये, तो मैंने उन्हें खुशी के मारे फूला न समाकर वचन दे दिया था। ऐसी बधाई के लिए यदि मैं अपने प्राण भी निछावर कर देता, तब भी धारा भाई के एहसान की बराबरी नहीं हो सकती थी। मैं उनसे वचन हार चुका हूँ। अतः मेरे वचन की लाज रखने के लिए अब मैं आपसे इतनी ही प्रार्थना करता हूँ कि आप इन्हें सुन्दरसाथ समाज में पुनः शामिल कर लीजिए। इन्होंने अपनी भूल मानकर आपके चरणों में अपनी आत्मा सौंप दी है।"

→ मेरी आज्ञा है। आप पुनः धारे के विषय की ऐसी प्रार्थना मेरे पास कभी मत लाइयेगा।" पुनः बहुत ही नाराज होकर कहा, "मैं इन्हें कभी भी धाम के साथ में पुनः प्रविष्ट नहीं करूँगा। इनके कार्य से मैं बहुत दुःखी हूँ। इन्हें मैं कभी भी अपने संरक्षण में नहीं ला पाऊँगा।"

→ बिहारीजी से धारा भाई के विषय में यह प्रार्थना की, "हे सद्गुरु स्वरूप! आप धारा भाई को सुन्दरसाथ समाज में सम्मिलित करने के सम्बन्ध में एक बार पुनः कुछ विचार करने की अवश्य कृपा करें।"

→ धर्मपत्नी के विषय में आग्रहपूर्वक यह विनती की, "हे सद्गुरु स्वरूप! धारा भाई की बहन बेनीबाई और धर्मपत्नी ने कौनसा अपराध किया है, जिसके कारण आपने इन दोनों को भी सुन्दरसाथ समाज से पृथक कर दिया?"

स. ५८-किनके ऊपर और किस प्रकार का अनर्थ हुआ? महन्त श्री बिहारीजी के किस निर्णय से सुन्दरसाथ भी दुःखी हुए?

ज. ५८- धारा भाई से भूल हुई, किंतु उनके साथ-साथ उनकी धर्मपत्नी →

स. ५९-श्रीजी स्वरूप की उक्त बातें सुनकर श्रीजी स्वरूप के प्रति गादीपति बिहारीजी ने कैसी बातें कही, जिन्हें सुनकर वहाँ उपस्थित सुन्दरसाथ ने श्रीजी को बिहारीजी के आगे धारा भाई की बात पुनः रखने के लिए मना कर दिया?

ज. ५९- श्रीजी स्वरूप की उक्त बातें सुनकर श्री बिहारीजी ने कहा, "मैंने →

स. ६०-उपस्थित सुन्दरसाथ ने श्रीजी साहेबजी से किस विषय में विनती की?

ज. ६०- गादीपति श्री बिहारीजी की उक्त बातें सुनकर वहाँ उपस्थित →

स. ६१-उक्त प्रकार की घटना घटने के पश्चात् किसने और क्यों महन्त श्री बिहारीजी की सेवा करना और उनके पास जाना ही छोड़ दिया?

ज. ६१- उक्त प्रकार की घटना घटने के पश्चात्, "ऐसे पत्थर सदृश →

स. ६२-उक्त प्रकार की चर्चा, उत्सव, रसोई, आग्रह-विनय आदि घटनाएँ कहाँ घटीं?

ज. ६२- उक्त प्रकार की चर्चा-कथा, उत्सव-रसोई, आग्रह-विनय आदि घटनाएँ डेढ़ महीने तक नलिया की उसी हवेली में घटीं, जिस →

→ और बहन को भी महन्त श्री बिहारीजी ने सुन्दरसाथ समाज से निष्कासित कर दिया। अतः धारा भाई की धर्मपत्नी और बहन बेनीबाई के साथ बड़ा अनर्थ हुआ। गादीपति बिहारीजी के उक्त निर्णय से सभी सुन्दरसाथ भी दुःखी हुए।

→ पहले भी आपको मना किया था। किंतु आप सब मिलकर बार-बार वही बात दोहरा रहे हो। यदि आप सब मिलकर लाख बार भी मुझसे धारे के विषय में अर्ज करें, तब भी मेरा एक ही उत्तर रहेगा। मैं धारा को सुन्दरसाथ समाज में सम्मिलित करने की बात को कभी स्वीकार नहीं कर सकता।" उक्त बातें सुनकर वहाँ उपस्थित सुन्दरसाथ ने श्रीजी स्वरूप से गादीपति बिहारीजी के आगे धारे की बात पुनः कभी भी रखने को मना कर दिया।

→ सुन्दरसाथ ने श्रीजी साहेबजी से यह विनय किया, "आप तो बिहारीजी के स्वभाव को जानते ही हैं। फिर भी आप बार-बार उनके आगे धारा भाई के विषय में अनुरोध क्यों करते हैं? आप अपने लिए ही सही, इनसे डरकर तो चलिए!"

→ दिलवाले और दुर्वासा ऋषि की तरह नाराज होनेवाले गादीपति श्री बिहारीजी की सेवा करने से तो अच्छा, हाथ बाँधकर बैठी रहूँ।" ऐसा सोचकर रूपाबाई का मन श्री बिहारीजी की सेवा से उचाट होने लगा। अतः उन्होंने श्री बिहारीजी की सेवा तो क्या, उनके पास जाना भी छोड़ दिया।

→ हवेली में श्रीजी साहेबजी ने गादीपति श्री बिहारीजी को पधराया था।

-(प्रकरण २९, सवाल-जवाब नं.६२, कुल सं. १०३३+६२=१०९५)।

❖ नाद और बिन्दु में भेद ❖

स. १- नलिया में श्रीजी साहेबजी की चर्चा का प्रकाश देखकर श्री बिहारीजी के मन में क्या हुआ?

स. २- महन्त श्री बिहारीजी उक्त बातों को लेकर महज सोचते ही नहीं रह गए, अपितु चिन्तातुर भी हुए। अतः क्यों?

ज. २- श्रीजी स्वरूप की प्रभावशाली चर्चा को सुनकर महन्त श्री महज →

स. ३- नाद पुत्र और बिन्दु पुत्र कौन-कौन हैं और किनके पुत्र हैं? पुनः ये दोनों एकान्त में क्यों बैठे?

स. ४- श्रीजी ने सुन्दरसाथ की जागृति के लिए महन्त श्री के आगे क्या प्रस्ताव रखा?

ज. ४- एकान्त बैठक में श्रीजी स्वरूप ने गादीपति श्री बिहारीजी के →

स. ५- श्रीजी साहेबजी के प्रस्ताव के विरुद्ध होकर महन्त श्री बिहारीजी ने उनसे क्या कहा?

ज. ५- श्रीजी स्वरूप का उक्त प्रस्ताव सुनकर श्री बिहारीजी ने उनसे कहा, "स्थान-स्थान पर भटक-भटककर लोगों से मिलना निजानन्द धर्म में समर्पित होनेवालों की राह नहीं है। पिताजी →

स. ६- गादीपति श्री बिहारीजी ने श्रीजी साहेबजी को हल्लार देश-गुजरात अथवा कच्छ में ही क्या करने को कहा?

❖ नाद और बिन्दु में भेद ❖

ज. १- नलिया की हवेली में श्रीजी के ज्ञान की चर्चा का प्रकाश देखकर श्री बिहारीजी के मन में सन्देह उत्पन्न हुआ।

→ सोचते ही नहीं रह गए, अपितु चिन्तातुर भी हुए क्योंकि उन्हें यह लगने लगा "यह मेहराज निश्चय ही मेरी गादी और मेरा प्रभुत्व छीन लेगा। यह बात बड़ी गहनशील है। इसे मेरे बिना अन्य कौन समझ सकता है?"

ज. २- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के नाद पुत्र श्री मेहराज हैं और बिन्दु पुत्र श्री बिहारीजी हैं। ये उभय पुत्र श्री सद्गुरु स्वरूप के श्रीमन्निजानन्द सम्प्रदाय के भविष्य के विषय में सलाह-मशविरा करने के लिए ही एकान्त में बैठे।

→ आगे सुन्दरसाथ की जागनी विषयक प्रस्ताव रखते हुए कहा, "आप आज्ञा दीजिए कि सुन्दरसाथ की जागनी के लिए हमें अब और क्या करना चाहिए? अब हम दोनों को मिलकर माया में मोहित, भूली-भटकी धाम की आत्माओं को ढूँढ़कर निकालना और उन्हें माया से मुक्त कराने के लिए प्रयास करना चाहिए।"

→ निजानन्दाचार्य सद्गुरु स्वरूप को जब से तारतम मिला, तब से क्या वे धामस्थ आत्माओं को जागृत करने के लिए नवतनपुरी छोड़कर अन्यत्र कहीं गए थे? जो आत्माएँ उनसे आकर मिली, उन्हें ही वे तारतम देकर जागृत करते थे। अतः हमें इस तरह भटकना और संसार को त्यागकर साधु-सन्तों के समान त्यागी वेश नहीं लेना चाहिए।"

ज. ३- गादीपति श्री बिहारीजी ने श्रीजी साहेबजी के विभिन्न स्थानों पर जाकर धर्म के प्रचार-प्रसार के कार्य को सिद्धान्त के विरुद्ध बताते हुए कहा, "यदि आप हल्लार-गुजरात प्रदेश में नहीं रहना →

→ चाहते, तो कच्छ में चले जाइये। अपितु हमारी आज्ञा मानिए →

स. ७- महन्त श्री बिहारीजी की उक्त सलाहयुक्त बातें सुनने के पश्चात् श्रीजी साहेबजी ने उन्हें क्या जवाब दिया?

ज. ७- श्रीमन्निजानन्द स्वामी सद्गुरु स्वरूप की गादी पर आसीन हुए महन्त श्री बिहारीजी की उक्त बातें सुनकर श्री मेहराज (श्रीजी स्वरूप) ने उनसे कहा, "अरे! आपको क्या मालूम? हमें सद्गुरु →

स. ८- श्रीजी साहेबजी ने सांसारिक कार्य-व्यवहार विषयक अपना दृढ़ निश्चय श्री बिहारीजी को किस प्रकार सुना दिया?

ज. ८- श्रीजी साहेबजी ने अपनी आन्तरिक दृढ़ता श्री बिहारीजी के आगे →

स. ९- श्रीजी स्वरूप ने महन्त श्री बिहारीजी को सद्गुरु के भविष्य-भावी योद्धाओं जैसे-साकुण्डल और सकुमार को ढूँढ़ने के विषय में क्या सलाह दी और किस लिए हाथ जोड़कर आग्रह किया?

ज. ९- श्रीजी स्वरूप ने महन्त श्री बिहारीजी को सद्गुरु के भविष्य-भावी योद्धाओं जैसे साकुण्डल और सकुमार को ढूँढ़ने के विषय →

स. १०-सुन्दरसाथ की जागनी के लिए बाहर निकलने के विषय में श्रीजी स्वरूप श्री बिहारीजी को किस प्रकार धैर्य दिलाते और कमर बँधाते रहे?

ज. १०- सुन्दरसाथजी की जागनी के लिए बाहर निकलने के विषय में श्रीजी स्वरूप ने श्री बिहारीजी को धैर्य बँधाते हुए कहा, "आप →

→ और आप पुनः किसी राजा या दीवान के पास जाकर कोई काम ढूँढ़ लीजिए।"

→ श्री देवचन्द्रजी ने जो अखण्ड ज्ञान प्रदान किया है, उसी से हमारे अन्तःकरण में परमधाम की जागृत बुद्धि उत्पन्न हो गई है। उस जागृत बुद्धि के प्रकाश द्वारा हम बड़े-से-बड़े राजाओं और दीवानों को भी उपदेश देंगे और वे राजा तथा दीवान आपकी सेवा करते हुए सदा आपकी आज्ञा में डटे रहेंगे।"

→ प्रकट करते हुए कहा, "अब मैं सांसारिक कार्य-व्यवहार को किसी भी तरह नहीं अपना सकता। मैंने चौदह लोक अथवा समस्त ब्रह्माण्ड को ही तुच्छ समझकर त्याग दिया है। उन कार्यों को अब पुनः मैं कभी भी हाथ में नहीं लूँगा!!"

→ में सलाह देते हुए कहा, "जब ये दोनों ब्रह्मात्माएँ जागृत होकर निजधाम की जमात में शामिल हो जायेंगी, तभी सबके अन्दर की अज्ञान की रात्रि मिटेगी और प्रभात हो पायेगा। सबको आत्म-जागृत करने का ज्ञान प्राप्त होगा। इसलिए हम दोनों को मिलकर एक स्थान से दूसरे और दूसरे स्थान से तीसरे स्थान पर जाकर आत्माओं की जागृति करनी चाहिए। श्री देवचन्द्रजी द्वारा प्रदत्त दिव्य ज्ञान का प्रकाश फैलाना ही हमारा परमधर्म है। अतः क्यों न हम दोनों इकट्ठे ही बाहर निकलें?"

→ देखिए न! संसार में अनेकों मत-पंथ प्रचलित हैं। किंतु उन सबके सिद्धान्त कल्पना पर आधारित हैं। इन सम्प्रदायों की न नीचे मूल जड़ है और न ऊपर फल ही है। ऐसे बिना जड़ और फलवाले धर्म जब इस तरह फैल रहे हैं, तो हमारे पास तो परमधाम की अखण्ड ज्ञानरूपी निधि है। फिर निश्चित ही स्वयं श्री राजजी हमारे रक्षक हैं। अतः ऐसे ज्ञान का प्रचार-प्रसार हम क्यों न करें, →

→ जिसका मूल अखण्ड और त्रिकाल सत्य परमधाम है। जागनी लीला के लिए परमधाम के ज्ञान का इतना विस्तार होना चाहिए कि उसे सभी लोकों के धर्म से श्रेष्ठ और उत्तमातिउत्तम सिद्ध →

स. ११-महन्त श्री बिहारीजी के मन की भावना को जानकर श्रीजी साहेबजी ने उनसे क्या कहा?

ज. ११- गादीपति श्री बिहारीजी के मन की भावना को जानकर श्रीजी ने उनसे कहा, "आप अपने मन में लेश मात्र भी शंका न आने दें। मैं आपको ऊँचे आसन पर आसीन करके स्वयं आपकी सेवा में सावधान रहकर कार्य करूँगा। धर्म समझने के लिए आनेवाले सभी लोगों से चर्चा मैं करूँगा। उनकी शंकाओं का समाधान भी →

स. १२-उक्त प्रकार से सान्त्वना देते हुए डेढ़ माह तक समझाने के बाद श्री बिहारीजी ने श्रीजी स्वरूप को क्या जवाब दिया?

ज. १२- उक्त प्रकार से श्री बिहारीजी को धैर्य बँधाते और निडर बनाते-बनाते जब डेढ़ माह व्यतीत हो गए, तब श्रीजी को उन्होंने यह जवाब दिया, "मेरा आपके जैसे बाहर निकलना कैसे सम्भव हो →

स. १३-अन्त में बिहारीजी ने श्रीजी स्वरूप के आगे किस प्रकार परमात्मा के प्रति का विश्वास जता दिया?

ज. १३- अन्त में बिहारीजी ने श्रीजी स्वरूप के आगे परमात्मा प्रति का विश्वास जताते हुए कहा, "अरे मेहराज! मुझे तो परमात्मा श्री →

स. १४-उक्त प्रकार श्री बिहारीजी को हिम्मत बँधाते हुए सद्गुरु का भविष्य सिद्ध करने के विषय में श्रीजी स्वरूप और गादीपति बिहारीजी के बीच कितने दिनों तक वार्तालाप चलता रहा?

→ किया जा सके।" इस प्रकार हिम्मत दिलाते और कमर बँधाते हुए श्रीजी स्वरूप ने श्री बिहारीजी से आग्रह किया कि वे उनके साथ चलें।

→ मैं करूँगा। जब वे हमारा सिद्धान्त समझकर आपके दर्शन के जिज्ञासु और ब्रह्मज्ञान-ब्रह्ममंत्र के अधिकारी पात्र बन जायेंगे, तब मैं उन्हें आपके चरणों में आपके दर्शन का पुण्य फल प्राप्त कराने के लिए आपके पास भेजूँगा। योग्य पात्र को उचित उपदेश-ज्ञान देकर ही मैं आपके समीप दर्शन करने के लिए भेजूँगा। वे आपको ब्रह्मरूप समझकर बड़ी श्रद्धा, विश्वास एवम् दृढ़ता से आपकी सेवा करेंगे।"

→ सकता है? मेरे साथ बोझल रंगबाई भी तो हैं! रंगबाई के साथ उनकी माताजी और परिवार के अन्य लोग भी हैं!! वे सब लोग मेरे साथ नहीं चल सकते। इसलिए आपकी तरह स्वतंत्र होकर चलना मुझसे नहीं बन सकेगा। आपकी श्रीमती तेजकुँवरी तो पतली हैं। इसलिए आपके लिए संभव है। मेरे साथ तो रंगबाई बोझल हैं। इसलिए मेरा निकलना असंभव है।"

→ राजजी के प्रति पूर्ण विश्वास है। पुनः हमारे पियाजी तो सभी प्रकार से सामर्थ्यशाली हैं। उनकी आज्ञा एवम् कृपा से सुन्दरसाथ स्वयं ही आकर इकट्ठे हो जायेंगे। पियाजी को जो करना होगा, सो करेंगे। मैं तो इसी विश्वास के साथ जीता हूँ।"

ज. १४- उक्त प्रकार से श्री बिहारीजी को हिम्मत बँधाते-बँधाते और सद्गुरु का भविष्य सिद्ध करने के विषय में नलिया की हवेली में श्रीजी स्वरूप और श्री बिहारीजी के बीच डेढ़ महीने तक वार्तालाप चला, परंतु कहा-सुना सब कुछ व्यर्थ गया।

स. १५-इस डेढ़ महीने के दौरान अन्य उन सुन्दरसाथ के विषय में भी महन्त श्री बिहारीजी से अर्ज होती रही, जिन्हें महन्त श्री बिहारीजी ने धर्म से बाहर कर दिया था, परन्तु क्या महन्त श्री बिहारीजी ने श्रीजी की बातों पर अमल किया? यदि नहीं, तो क्यों?

ज. १५- इस डेढ़ महीने के दौरान अन्य उन सभी सुन्दरसाथ के विषय में →

स. १६-रूपाबाई के विषय में श्री बिहारीजी को क्यों शंका हुई? इसका क्या कारण था?

ज. १६- रूपाबाई पहले शुरूआत में श्री बिहारीजी की सेवा में अन्य दोनों सेविकाओं से भी आगे थी। महन्त श्री की नजर में वही जँची हुई →

स. १७-इस वक्त श्री बिहारीजी के प्रति श्रीजी स्वरूप का दिल क्यों टूट गया?

ज. १७- महन्त श्री बिहारीजी के ऐसे विचार और गरीब सुन्दरसाथ के प्रति की कठोरता को देखकर श्रीजी के मन में यह बात उभरने →

स. १८-यहाँ दोनों-श्रीजी स्वरूप और श्री बिहारीजी के दिल में किन-किन विषयों में अन्तर पड़ गया?

ज. १८- महन्त श्री के मन में श्री मेहराज के प्रति यह विचार आने लगा, "श्री मेहराज मुझे नीचा साबित करने के लिए बार-बार मेरे हुकम को ठुकराते हुए धारे की बात रखते हैं। सुन्दरसाथ के बीच मुझे निष्ठुर और निर्दयी सिद्ध करने की कोशिश कर रहे हैं।" पुनः →

स. १९-श्रीजी ने किस विषय में अपने मन को समझाकर शुद्ध कर लिया और कैसे?

→ भी श्रीजी स्वरूप गादीपति श्री बिहारीजी से बारम्बार विनती करते रहे, जिन्हें श्री बिहारीजी ने तनिक-सी भूल होने पर भी धाम-समुदाय से अलग कर दिया था, परन्तु उनकी भी बातों को श्री बिहारीजी ने स्वीकार नहीं किया। सुन्दरसाथ भी "किसी भी बात को अमल में लेने से महन्त श्री का हुकम विफल हो सकता है"-यह सोचकर शान्त रहे। किंतु गादीपति बिहारीजी भी अपने हठ के सम्राट बने रहे और उन्होंने श्रीजी स्वरूप की किसी भी बात पर अमल नहीं किया।

→ थी। किंतु जिस दिन श्रीजी स्वरूप ने धोती पहनकर धारा भाई विषयक अपनी विनती बिहारीजी के आगे रखी और श्री गादीपति स्वरूप ने उनकी विनती ठुकरा दी, उस दिन से रूपाबाई ने बिहारीजी को पत्थर दिलवाला समझकर उनकी सेवा तो क्या उनका मुँह तक नहीं देखा। उनके पास जाना ही छोड़ दिया।

→ लगी, "श्री बिहारीजी के अन्दर सद्गुरु धनी का जोश तो क्या, नाम मात्र के लिए भी पिता का गुण भी होता, तो वे उनके बेटे तो साबित होते। मेरा मन बारम्बार इस बात को अस्वीकार क्यों करता है?" इस प्रकार नलिया में घटे विभिन्न काण्डों द्वारा श्री बिहारीजी के प्रति श्रीजी का दिल टूट गया।

→ श्रीजी साहेब के दिल में श्री बिहारीजी के प्रति यह शंका उत्पन्न हुई, "सद्गुरु की गादी पर बैठकर सुन्दरसाथ को जागृत कर बढ़ाने के बदले श्री बिहारीजी तो उन्हें धर्म से निकालने लगे। अन्य की बात तो सुनी ही नहीं, परंतु मेरे वचनों को भी अनसुना कर दिया। स्वयं तो विचार-विवेक करते नहीं हैं और मेरा कहना भी मानते नहीं हैं।" इस प्रकार यहाँ से उक्त दोनों प्रचारकों के बीच धर्म प्रचार-प्रसार के विषय में मतभेद हो चला।

ज. १९- दोनों अग्रगण्य प्रचारकों-श्री बिहारीजी और श्रीजी स्वरूप के बीच धर्म सिद्धान्त के आधार पर हुए वार्तालाप में जो मतभेद →

→उत्पन्न हुआ, इस विषय में श्रीजी के दिल में श्री बिहारीजी के प्रति जो संदेह उठा था, उनके अपने मन में महन्त श्री बिहारीजी →

स. २०-अब श्रीजी स्वरूप और बिहारीजी हवेली छोड़कर किस ओर चलने के लिए निकले?

ज. २०- नलिया की हवेली से निकलकर अब श्रीजी साहेबजी और महन्त →

स. २१-मंडई बंदर के बाग में किन-किन की जमात एकत्रित हुई?

स. २२-महंत श्री बिहारीजी मंडई बंदर से नाव में बैठकर कहाँ गये?

स. २३-श्री बिहारीजी ने खंभालिया उतरने के पश्चात् कौनसा धर्म-कार्य किया और तत्पश्चात् वे आगे बढ़े?

ज. २३- जब बिहारीजी श्रीजी स्वरूप से विदा लेकर मंडई बंदर से नाव →

स. २४-खंभालिया के राजा के आगे श्री बिहारीजी ने श्री मेहराज ठाकुर के विषय में क्या फरियाद की?

स. २५-श्री बिहारीजी की फरियाद सुनते ही खंभालिया के मंत्री ने क्या प्रबन्ध कर दिया?

→ के प्रति जो भावना उत्पन्न हुई थी, उन सभी भावनाओं को श्रीजी स्वरूप ने अपना अवगुण समझकर निकाल दिया और अपने मन को शुद्ध कर लिया।

→ श्री बिहारीजी मंडई बंदर पहुँच गये। वहाँ एक बाग में जगह लेकर ठहरने की व्यवस्था कर ली गई। यहाँ जगह-जगह से आकर सुन्दरसाथ निजधाम के साथ-समुदाय में शामिल हुए।

ज. २१- मंडई बंदर के बाग में श्रीजी की, महन्त श्री बिहारीजी की, धारा भाई की और सूरत की जमात एकत्रित हुई।

ज. २२- नवतनपुरी गादीपति श्री बिहारीजी श्रीजी साहेबजी एवम् अन्य सुन्दरसाथ से विदाई लेकर मंडई बंदर से नाव में बैठकर खंभालिया गए क्योंकि उन्हें खंभालिया से जामनगर-नवतनपुरी जाना था।

→ में बैठकर खंभालिया उतरे, उसी समय उनके दिमाग में कलियुगरूपी शैतान बैठ गया। श्रीजी के प्रति उनके दिल में जलन और ईर्ष्या उमड़ आयी। अतः उन्होंने एक व्यक्ति को राजदरबार में भेजकर श्रीजी स्वरूप के विरुद्ध चुगली लगवा दी।

ज. २४- श्री बिहारीजी ने एक व्यक्ति द्वारा खंभालिया के राजदरबार में यह फरियाद भिजवा दी, "श्री मेहराज ठाकुर अपनी सोलह साल की पत्नी सहित कल या परसों खंभालिया उतर रहे हैं। जो करना हो, सो कर लो।"

ज. २५- श्री बिहारीजी की फरियाद सुनते ही खंभालिया के मंत्री ने श्री मेहराज सहित जमात को पकड़ने के लिए जगह-जगह पर चौकियाँ बिठा दीं।

स. २६-जब सुन्दरसाथ नलिया से खंभालिया जाने के लिए नाव में सवार हुए, तब क्या हुआ?

ज. २६- श्रीजी स्वरूप की जमात जब सूरत की जमात के साथ सूरत →

स. २७-यह खतरे की घण्टी विशेषकर किनके लिए बजी थी और तब उन्होंने क्या किया?

ज. २७- यह खतरे की घण्टी (अपशकुन) विशेषकर श्रीजी स्वरूप के लिए →

स. २८-"सकुन मोकों ना भयो" - यह वाक्यांश किनके श्री मुख का है तथा अपशकुन के कारण किन्हें रुकना पड़ा?

स. २९-नाव में कौन-कौन सवार थे? नाव से उतरते ही उन्हें कहाँ जाना पड़ा? अन्त में राजदरबार के कर्मचारियों को किन पर और किस आधार पर शंका हुई?

ज. २९- नाव में सूरत के स्वयंपाकी जमात सहित श्री बाईज्यूराज भी थीं। नाव से उतरते ही ये सबके सब खंभालिया के राजदरबार के →

स. ३०-सूरत के स्वयंपाकी सुन्दरसाथ किस विषय में तुरन्त सावधान हुए?

ज. ३०- सूरत के स्वयंपाकी सुन्दरसाथ सहित जब बाईज्यूराज को राजदरबार में ले जाया गया, तब सूरत के स्वयंपाकी जमात तुरन्त →

स. ३१-दूसरे दिन खंभालिया के मंत्री को किस प्रकार पकड़े हुए लोगों को छोड़ना पड़ा? उन्होंने उन सबको छोड़ने के लिए क्या शर्त रखी थी?

→ जाने के लिए मंडई बंदर से नाव में सवार हुई, तब श्रीजी सबसे पीछे खड़े थे और जैसे ही वे नाव में चढ़ने लगे, वैसे ही उन्हें छींक आ गई। श्रीजी स्वरूप ने इसे अपशकुन माना और अपना पैर नाव से बाहर निकाल लिया।

→ बजी थी। अतः छींक आते ही श्रीजी स्वरूप ने वह रास्ता छोड़ दिया और अपना रास्ता बदल दिया। कलियुगी वृत्तिवालों का यहाँ कुछ नहीं चल सका।

ज. २८- *"सकुन मोकों ना भयो"* - यह वाक्यांश श्रीजी साहेबजी के मुखारविन्द का है तथा अपशकुन के कारण श्रीजी स्वरूप को रुकना पड़ा।

→ कर्मचारियों द्वारा पकड़ लिये गये। सभी को राजदरबार में जाना पड़ा। बाईज्यूराज को मेहराज की पत्नी समझकर चुगलखोर द्वारा कही बातों के आधार पर राजदरबार के कर्मचारियों ने शंका की। परन्तु सूरत के सुन्दरसाथ होशियार रहे। वे बाईज्यूराज को राजदरबार में अपनी बहन साबित कर दूसरे ही दिन राजदरबार से निकल आये।

→ राजदरबार के कर्मचारियों द्वारा की जानेवाली पूछताछ के प्रति सावधान हो गये। राजदरबार का मंत्री बाईज्यूराज को मेहराज की पत्नी समझकर पकड़ना चाहता था, परंतु सूरत के स्वयंपाकियों ने उन्हें अपनी बहन साबित कर दिखाया। इस तरह उन्होंने सावधानी से बाईज्यूराजजी को बचा लिया।

ज. ३१- मेहराज क्षत्रिय जाति के अर्थात् ठाकुर हैं। अतः यदि श्री बाईज्यूराज उनकी पत्नी हों, तो क्षत्रिय जाति की स्त्री के हाथों का बना हुआ खाना सूरत के स्वयंपाकी ब्राह्मण, जो मात्र अपने हाथों से बनी वस्तु ग्रहण करते हैं, क्षत्राणी के हाथों का तो कभी →

→ नहीं ग्रहण करेंगे। भले वे अपनी जान दे देंगे, परंतु उनके हाथ का भोजन वे कभी ग्रहण नहीं करेंगे। अतः राजदरबार के शासकों ने सूरत के स्वयंपाकी ब्राह्मणों को छोड़ने के लिए उनके आगे यह शर्त रखी, "यदि ये तुम्हारी बहन हैं, तो इनके हाथों से बनाया →

स. ३२-मंडई बंदर से तो श्रीजी स्वरूप और सुन्दरसाथ अलग-अलग चले थे। पुनः कहाँ पहुँचकर मिले और किनके घर में पहुँच गये?

ज. ३२- मंडई बंदर से तो श्रीजी स्वरूप और सूरत की जमात अलग-अलग चले थे। परन्तु श्रीजी ने उनसे कहा था कि वे कच्छ की खाड़ी उतरकर धोराजी आएँगे और वे सब खंभालिया उतरकर →

❖ सूरत आगमन ❖

स. १- "श्रीजी साहिब जी खुस्की चले" - यह वाक्यांश किसकी तरफ का है और इस वाक्यांश का क्या तात्पर्य है?

ज. १- *"श्रीजी साहिब जी खुस्की चले"* - यह वाक्यांश बीतककार श्री लालदासजी की ओर का है। इस कथन का तात्पर्य यह है →

स. २- कहाँ के सुन्दरसाथ श्रीजी से मिलने धोराजी आये थे, जबकि श्रीजी स्वरूप वहाँ पहले से ही विराजमान थे?

स. ३- श्रीजी के आगमन की खबर सुनते ही कौन भाई बैलगाड़ी लेकर श्रीजी को ले जाने के लिए दौड़ पड़े?

→ भोजन तुम्हें ग्रहण करना होगा।" तब स्वयंपाकी ब्राह्मणों ने कहा, "क्यों नहीं!" दूसरे ही दिन प्रहरी बैठा दिए गए। बाईज्यूराजजी ने अपने हाथों से भोजन बनाया और सभी स्वयंपाकी ब्राह्मणों ने पेट भरकर खाया। यह साबित हो जाने पर खंभालिया के मंत्री को उन्हें तुरंत ही छोड़ना पड़ा।

→ धोराजी में उनका इंतजार करें। उन्हें दो दिन लगेंगे और सब सुन्दरसाथ एक ही दिन में पहुँच जाएँगे। परंतु राजदरबार में सूरत की जमात को एक दिन रुकना पड़ा। यसर्थ दोनों जमात एक ही दिन धोराजी गाँव में मिली। तब यहाँ से श्रीजी धोराजी अर्थात् अपने ससुराल प्रेमजी थावर के घर पहुँचे और श्री बाईज्यूराज-तेजकुँवरी अपने माता-पिता के घर अर्थात् अपने पीहर पहुँची। -(प्रकरण ३०, सवाल-जवाब नं.३२, कुल सं. १०९५+३२=११२७)।

❖ सूरत आगमन ❖

→ कि जब श्रीजी स्वरूप छींक आने के कारण मंडई बंदर से खंभालिया की ओर न जाकर जमात से अलग हुए, तब वे मंडई से खुश्की की राह चलकर कच्छ की खाड़ी उतरे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने साधु भेष धारण किया और वे धोराजी जानेवाले मार्ग की ओर चल पड़े।

ज. २- सूरत के सुन्दरसाथ श्रीजी साहेबजी के साथ हुए सलाहानुसार खंभालिया से चलकर धोराजी पहुँचे थे, जबकि श्रीजी साहेबजी वहाँ पहले से ही विराजमान थे।

ज. ३- श्रीजी साहेबजी के धोराजी आगमन का समाचार सुनकर प्रेमजी थावर भाई बैलगाड़ी लेकर श्रीजी स्वरूप को ले जाने के लिए शीघ्र ही चल पड़े और राह में मिलकर सुन्दरसाथ सहित श्रीजी साहेबजी को गाड़ी पर बिठाकर घर ले आये।

स. ४- कौन भाई श्रीजी की सेवा में कितने दिन रहे? श्रीजी स्वरूप धोराजी से कहाँ आये ?

स. ५- घोघे बंदर में श्रीजी स्वरूप कितने समय रहे और वहाँ से पुनः कहाँ गए तथा वहाँ कितने समय रहे?

स. ६- सुहाली से सूरत आकर श्रीजी स्वरूप किनके घर में अथवा कौन पुरा में रहे और कितने दिन?

स. ७- मोहनदास अमीन के घर से पुनः श्रीजी साहेबजी की पधरावनी किसके घर हुई?

ज. ७- मोहनदास अमीन कबीर सम्प्रदाय के थे। चर्चा में जब श्रीजी स्वरूप ने कबीर के कीर्तन विषय बल देकर कहा, तो मोहनदास →

स. ८- सूरत स्थित सैयदवाड़ा में श्रीजी साहेबजी कितने समय तक रहे?

स. ९- मोहनदास अमीन के घर में किसके आधार पर और कैसी चर्चा हुई, जिसे सुनकर कलियुग जाग उठा?

ज. ९- मोहनदास अमीन के घर में कबीर के कीर्तन के माध्यम से →

स. १०- मोहनदास अमीन के घर से श्रीजी स्वरूप कहाँ-किनके घर गये? उस भाई ने श्रीजी स्वरूप की किस भाव से और कैसी सेवा की?

ज. ४- खुश्की जाते समय श्रीजी के साथ पदमसी भाई भी थे। वे दस दिनों तक श्रीजी साहेबजी की सेवा में संलग्न रहे। तत्पश्चात् श्रीजी स्वरूप धोराजी से घोघे बंदर आ गये।

ज. ५- श्रीजी स्वरूप घोघे बंदर में एक सुन्दरसाथ के घर तीन दिन रहे। पुनः घोघे से वे सुहाली गये। सुहाली में श्रीजी स्वरूप एक दिन भी रुके बिना वहाँ से सूरत पहुँचे।

ज. ६- श्रीजी साहेबजी सूरत के सुन्दरसाथ सहित सुहाली से सूरत आये। वहाँ वे सैयदपुरा में भगवान भाई और मोहनदास अमीन के घर कुछ दिन रहे क्योंकि मोहनदास अमीन ने श्रीजी स्वरूप से अपने घर में पधरावनी करने का आग्रह किया था।

→ अमीन के कुछ दोस्तों को वे बातें अपने धर्म की खण्डनी लगी। तब उनके कारण मोहनदास अमीन भ्रम में पड़ गये। उनके पास में ही शिवजी भाई रहते थे। जब उन्हें इस बात का पता चला, तो उन्होंने तुरंत ही श्रीजी को अपने घर में पधराया।

ज. ८- सूरत स्थित सैयदवाड़ा में श्रीजी साहेबजी शिवजी भाई के घर सुन्दरसाथ के बीच सत्रह महीने रहे।

→ बोधदायिनी चर्चा हुई थी। इस चर्चा को सुनकर मोहनदास के धर्म-सम्बन्धी विद्वानों के दिल में बैठा कलियुग शोर मचाने लगा। उन कलियुगग्रस्त जनों को श्रीजी की चर्चा मीठी न लगकर खण्डनीयुक्त लगी।

ज. १०- मोहनदास अमीन के घर से श्रीजी साहेबजी सैयदपुरा में ही रहनेवाले शिवजी भाई के घर आये। शिवजी भाई ने श्रीजी स्वरूप को परमात्मा स्वरूप जानकर भलीभाँति प्रेम-भाव से उनकी सेवा की।

स. ११-श्रीजी साहेबजी ने किन्हें-किन्हें समझाकर श्री नवतनपुरी गादीपतिजी के दर्शनार्थ भेजा?

स. १२-शिवजी और रामजी भाई को क्या कहकर श्रीजी स्वरूप ने गादीपति बिहारीजी के पास अर्थात् नवतनपुरी भेजा था?

ज. १२- श्रीजी साहेबजी ने शिवजी भाई और रामजी भाई से कहा, "तुम →

स. १३-क्यों अथवा किस कारण से श्रीजी स्वरूप ने रामजी भाई को पत्र के साथ नवतनपुरी गादीपति बिहारीजी के पास भेजा?

ज. १३- रामजी भाई ने श्रीजी स्वरूप से विनती करते हुए यह कहा था, "प्रभु! मैं लक्ष्मीजी द्वारा श्रापित जीव हूँ। किंतु अपने मूल तीर्थस्थान के दर्शन करने की उत्कट इच्छा रखता हूँ। अपने सद्गुरु स्वरूप से मिलना तो चाहता हूँ, परंतु मैं गरीब क्या करूँ? मुझमें तीर्थ में जाकर न रसोई-पानी देने की ताकत है और न सद्गुरु स्वरूप के चरणों में रखने के लिए मेरे पास भेंट आदि ही है। अतः इन सबके →

स. १४-शिवजी भाई नवतनपुरी गादीपति श्री बिहारीजी से कैसे मिले और क्या किया?

ज. १४- शिवजी भाई धनाढ्य थे। अतः जामनगर-नवतनपुरी पहुँचकर →

स. १५-रामजी भाई जब श्रीजी स्वरूप द्वारा लिखा पत्र लेकर नवतनपुरी गादीपति श्री बिहारीजी के दर्शनार्थ गये, तब गादीपति बिहारीजी ने उन्हें धाम के अन्दर तक प्रवेश करने नहीं दिया-क्यों?

ज. ११- श्रीजी साहेबजी ने पहले के साथी अर्थात् श्री सद्गुरुजी द्वारा जागृत दो भाइयों को समझा-बुझाकर सद्गुरु स्वरूप गादीपतिजी के दर्शनार्थ चिट्ठी सहित भेजा। उन दो भाइयों के नाम हैं-शिवजी भाई और रामजी भाई।

→ दोनों गादीपति श्री बिहारीजी के दर्शन करने जाओ। जब तक तुम उनके चरणों में प्रणाम नहीं करोगे, तब तक तुम्हें न तो अलौकिक आनन्द प्राप्त होगा और न ही तुम्हारी आत्मा जागृत (पवित्र) हो पाएगी।" यह सुनते ही शिवजी भाई गादीपतिजी के दर्शनार्थ नवतनपुरी चल पड़े।

→ बिना खाली हाथ जाकर क्या करूँ ? जाने के लिए तो अपने पैरों से चलकर जा सकता हूँ।" तब श्रीजी स्वरूप ने उन्हें समझाते हुए कहा, "परमात्मा को श्रद्धा-भाव चाहिए। प्रेम सहित "पत्रं पुष्पं फलं तोयम्" आदि कुछ भी चढ़ा देना। परमात्मा तो "भावग्राही जनार्दन" अर्थात् भाव के भूखे हैं। मैं एक पत्र लिख देता हूँ। यह पत्र लेकर जाओ और महंत श्री बिहारीजी को प्रणाम कर उनसे आशीर्वाद लेकर अपनी आत्मा पवित्र कर लौटना।" इस तरह चिट्ठी देकर रामजी भाई को श्रीजी ने नवतनपुरी भेजा। चिट्ठी में लिख दिया था, "यह भाई गरीब हैं। परंतु श्रद्धा और भक्तिभावी हैं। अतः इन्हें समझाकर आशीर्वाद दीजियेगा।"

→ उन्होंने श्री बिहारीजी को श्रीजी द्वारा लिखा हुआ पत्र दे दिया। उनके चरणों में साष्टाङ्ग प्रणाम किया और उन्हें पाँच मोहरें भेंट कीं। तत्पश्चात् श्री बिहारीजी से आशीर्वाद प्राप्त कर उन्होंने अपनी आत्मा को निर्मल-पवित्र किया।

ज. १५- पुनः दो चार दिनों के पश्चात् जब रामजी भाई भी चिट्ठी लेकर नवतनपुरी गादीपतिजी के दर्शनार्थ पहुँचे और गादीपति बिहारीजी के हाथों में वह पत्र दिया, तब पत्र पढ़ते ही गादीपति बिहारीजी ने उन्हें वह पत्र वापस कर दिया क्योंकि रामजी भाई कर्म के हारे →

→अर्थात् गरीब और "पत्रं पुष्पं फलं तोयम्" वाले थे। श्री सद्गुरु स्वरूप बिहारीजी ने उन्हें अन्दर प्रवेश तक नहीं करने दिया, तो सुन्दरसाथ में सम्मिलित करना तो दूर रहा और आशीर्वाद तो →

स. १६-अत्यन्त गरीबी और नम्रतापूर्वक मनुहार करने तथा उपवास रहने पर भी रामजी भाई को नवतनपुरी गादीपतिजी के पास से निराश होकर क्यों लौटना पड़ा?

ज. १६- श्री रामजी भाई द्वारा अत्यन्त भयभीत होकर विनम्रतापूर्वक →

स. १७-रामजी भाई ने श्रीजी स्वरूप से क्या कहा और क्या दिया, जिससे श्रीजी स्वरूप बहुत दुःखी हुये?

ज. १७- अन्त में रामजी भाई ने वापस आकर श्रीजी द्वारा लिखा हुआ पत्र श्रीजी को लौटा दिया और नवतनपुरी का सम्पूर्ण वृत्तान्त श्रीजी →

स. १८-यहाँ श्रीजी स्वरूप को गादीपति बिहारीजी के प्रति और गादीपति बिहारीजी को श्री मेहराज के प्रति किस बात पर शंका हुई?

ज. १८- श्रीजी साहेबजी के मन में गादीपति बिहारीजी के प्रति धारा भाई और रामजी भाई के काण्ड से संदेह उत्पन्न हुआ। परन्तु गादीपति →

स. १९-पुनः श्रीजी साहेबजी ने सुना कि गादीपति बिहारीजी उनसे दुःखी हैं। अतः श्री बिहारीजी श्रीजी स्वरूप से क्यों दुःखी थे?

ज. १९- गादीपति श्री बिहारीजी के श्रीजी साहेबजी से दुःखी होने का कारण यह था कि श्री बिहारीजी ने जिन-जिन सुन्दरसाथ को →

स. २०-किस विषय को लेकर श्रीजी साहेबजी ने सबके सामने घोषणा कर दी?

→ कहाँ-का-कहाँ जा पड़ा। उन्होंने उनका पत्र तक स्वीकार नहीं किया क्योंकि सद्गुरु स्वरूप श्री बिहारीजी को गरीबी धारण करनेवालों की जरूरत नहीं थी।

→ मनुहार करने और तीन दिन तक निराहार गादीपति बिहारीजी के द्वार पर ही पड़े रहने पर भी गादीपति बिहारीजी ने उन पर दया-कृपा नहीं की। अतः रामजी भाई को उनके पास से निराश होकर ही लौटना पड़ा।

→ स्वरूप को सुना दिया, जिसे सुनकर श्रीजी स्वरूप अत्यधिक दुःखी हुए। गादीपति श्री बिहारीजी का सुन्दरसाथ के प्रति यह व्यवहार देखकर श्रीजी स्वरूप के मन में उनके प्रति पुनः संदेह उत्पन्न हुआ।

→ बिहारीजी के मन में श्रीजी साहेबजी के प्रति इस बात को लेकर संदेह उत्पन्न हुआ कि उनके द्वारा निकाले गए धारा भाई और रामजी भाई को श्री मेहराज ने अब भी अपने पास रखा है। अतः उन्हें लगा कि इन बातों से स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो जाता है कि मेहराज उनकी आज्ञा न मानकर स्वयं अपना सम्मान बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं।

→ धर्म सिद्धान्त और सुन्दरसाथ समाज से दूर किया था, उन्हें मेहराज ने अपने से दूर करने के बदले अपना लिया था। श्रीजी स्वरूप श्री मेहराज ने गादीपति के विचार-विवेक के विरुद्ध कार्य किया। अतः इस बात को लेकर श्रीजी साहेबजी के प्रति गादीपतिजी दुःखी थे।

ज. २०- जब श्रीजी साहेबजी को पता चला कि गादीपति बिहारीजी के उनसे दुःखी और नाराज होने का कारण श्रीजी का धारा भाई →

→ और रामजी भाई के प्रति का अपनापन ही है, तब श्रीजी साहेबजी ने सुन्दरसाथ समाज के आगे यह घोषणा कर दी कि-

"जो कोई लूला पांगला साथ,
इन्द्रावती न छोड़े तिनको,
पहुँचावे पकड़ हाथ।।" →

स. २१-इस प्रकार के वातावरण के चलते एक दिन कौनसे भाई सूरत आये?

स. २२-वे भाई इस समय कहाँ से सूरत आ पहुँचे और सेवा का सम्पूर्ण दायित्व अपने सिर पर ले लिया?

स. २३-किनका इस संसार में मानव तन धारण करना सफल हुआ ? क्यों?

ज. २३- गोवर्धन भाई ने धाम के आत्माओं की आवश्यकताओं की पूर्ति →

स. २४-सूरत शहर में श्रीजी की चर्चा का समाचार कैसे फैल गया?

ज. २४- एक कान-दो कान करते-करते सूरत शहर में सबके कानों तक →

स. २५-सूरत में चल रही श्रीजी साहेबजी की चर्चा में कैसे-कैसे लोग आने लगे और पुनः किस प्रकार वापस जाते थे?

ज. २५- मदीना कहलानेवाले सूरत शहर में चर्चा का पड़घा पड़ने से →

स. २६-श्रीजी के चर्चा की प्रशंसा सुनकर सूरत के दो कैसे प्रकाण्ड विद्वान श्रीजी के दर्शनार्थ आये?

→ अर्थात् जो भी सुन्दरसाथ सांसारिक दृष्टि से लूले-लँगड़े अथवा असहाय हैं और गादीपति श्री बिहारीजी द्वारा ठुकराये गये हैं, उन्हें तो मैं बिलकुल छोड़ूँगा ही नहीं। सर्वप्रथम मैं उन्हीं असहाय, दुःखी और गरीब सुन्दरसाथ की बाँह पकड़ूँगा और वह भी ढूँढ़-ढूँढ़कर ! तथा अन्य से पहले मैं उन्हें अपनाऊँगा और अपनी शरण में लूँगा।

ज. २१- इस प्रकार के वातावरण के चलते अचानक अबासी बंदर से गोवर्धन भाई सूरत आ पहुँचे और यहाँ आकर वे भी सुन्दरसाथ में मिलकर रहने लगे।

ज. २२- गोवर्धन भाई सूरत के ही मूल निवासी थे। वे किसी काम-धन्धे के सिलसिले में अबासी गये थे। सूरत लौटकर उन्होंने श्रीजी साहेब की सम्पूर्ण सेवा का दायित्व अपने सिर पर ले लिया।

→ हेतु जितना भी धन व्यय होता था, वह व्यय भी अपने सिर पर ले लिया था। अतः इस तरह संसार में उनका मानव तन धारण करना सफल हुआ।

→ श्रीजी की अपूर्व-अकथनीय चर्चा की बातें पहुँच गईं। यह अवर्णनीय और अभूतपूर्व चर्चा सुनने और चर्चा-कर्ता के दर्शनार्थ आठों दिशाओं से श्रोतागण दौड़-दौड़कर आने लगे।

→ अधिकाधिक संख्या में लोग चर्चा सुनने आने लगे। जो कोई भी किसी प्रकार की शंका-उपशंका आदि लेकर चर्चा में आते थे, वे श्रीजी के दर्शन मात्र से ही निःशंक होकर लौट जाते थे।

ज. २६- कभी न हिलनेवाले प्रकाण्ड विद्वान, वेदान्ती भीम भट्ट और श्याम भट्ट भी श्रीजी स्वरूप की निःशंक चर्चा का बोलबाला सुनकर श्रीजी के दर्शनार्थ दौड़ आये। जब उन्होंने श्रीजी स्वरूप के दर्शन →

→कर उनके श्री मुख से उत्कट दर्जे की चर्चा श्रवण की, तो उनके →

स. २७-श्रीजी स्वरूप के श्री मुख की अपूर्व चर्चा सुनकर श्याम भट्ट और भीम भट्ट क्या करने लगे और क्या कहने लगे?

ज. २७- श्रीजी स्वरूप के श्री मुख की अपूर्व और उत्कट दर्जे की चर्चा →

स. २८-उक्त दोनों प्रकाण्ड विद्वान भाइयों के गुरु कौन थे और कैसे थे?

स. २९-किन्होंने इस बात पर विचार किया कि आत्मा की खोज करनेवालों में विकार नहीं होता?

ज. २९- विद्वान वेदान्ती श्याम भट्ट और भीम भट्ट ने इस बात पर बिचार →

स. ३०-श्रीजी साहेबजी की चर्चा सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य होता था, इस बात का क्या कारण था?

ज. ३०- विभिन्न मत-मतान्तर से चर्चा श्रवण करने के लिए आये हुए →

स. ३१-चर्चा सुनते-सुनते श्याम भट्ट क्या विचार करने लगे?

ज. ३१- चर्चा सुनते-सुनते श्याम भट्ट यह विचार करने लगे, "इन महात्मा →

स. ३२-श्रीजी स्वरूप की चर्चा के विषय में श्याम भट्ट ने भीम भाई से क्या कहा?

ज. ३२- श्याम भट्ट श्रीजी साहेबजी की चर्चा के विषय में विचार करते →

स. ३३-वेदान्त के प्रकाण्ड विद्वान श्याम भट्ट के अनुसार श्रीजी स्वरूप उनके वेदान्त के रहस्यों से बढ़कर बोधदायक किस मत का प्रकाश करते थे?

→ मन में श्रीजी के प्रति अत्यधिक प्रेम उत्पन्न हो गया।

→ सुनकर वेदान्त के प्रकाण्ड विद्वान श्याम भट्ट और भीम भट्ट उनके प्रेम के वशीभूत होकर बार-बार उनके दर्शन के लिए आने लगे। उन्हें चर्चा में बड़ा आनन्द मिलने लगा और वे कहने लगे, "श्रीजी को उन्होंने साक्षात् पूर्णब्रह्म के स्वरूप में पहचान लिया है।"

ज. २८- उक्त दोनों प्रकाण्ड विद्वान भाइयों के गुरु एक धुरन्धर विद्वान वेदान्ती साधु थे, जिनका नाम था-संन्यासी शंभूनाथ। वे वेदान्त को ही परमविद्या मानते थे।

→ किया कि आत्मा की खोज करनेवाले खोजियों की दृष्टि और मन में विकार नहीं होता। वे सबको आत्मीय भाव और दृष्टि से देखते हैं।

→ विद्वानों और ज्ञानीजनों को श्रीजी की चर्चा सुनकर बड़ा आश्चर्य होता था क्योंकि श्रीजी स्वरूप एकपक्षीय चर्चा नहीं करते थे। वे सर्वदेशी चर्चा करते थे। अतः सर्वग्रन्थों से चर्चा सुनकर विभिन्न मत-मतान्तर के लोग बड़े आश्चर्यचकित रह जाते थे।

→ के अन्दर हमारे वेदान्त का सम्पूर्ण ज्ञान तो है ही, परंतु इनकी चर्चा तो वेदान्त से भी पार पहुँचा देती है। अन्य किसी की बातों से इन्हें कोई लगाव ही नहीं है।"

→ हुए सोचते हैं। पुनः पास में बैठे भीम भट्ट से कहते हैं, "आप भी सावधान होकर इनकी चर्चा सुनिये और उस पर विचार भी करिये।"

ज. ३३- वेदान्त के प्रकाण्ड विद्वान श्याम भट्ट के अनुसार स्वामी श्री प्राणनाथजी उनके वेदान्त के तत्त्वों से भी अनभिज्ञ नहीं थे। बल्कि वेदान्त के रहस्यमय विषयों को स्पष्ट करते हुए वे आगे →

→ की लीलाओं का भी स्पष्टतः वर्णन करते थे। वेदान्त से भी बढ़कर →

स. ३४-श्रीजी की चर्चा पर विचार करते-करते एक दिन उक्त दोनों विद्वानों में से किस भाई की दृष्टि खुल गई?

ज. ३४- उपरोक्त प्रकार से श्रीजी की चर्चा पर विचार-विवेक करते- →

स. ३५-तत्पश्चात् भीम भट्ट श्याम भट्ट को सम्बोधित करते हुए क्या कहने लगे? पुनः किस भाई को कूटस्थ अक्षर ब्रह्म से परे अक्षरातीत ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त हुआ?

स. ३६-"जब नींद उड़ी अक्षर की" - यह वाक्यांश किनका है?

स. ३७-"संसार के अन्य ज्ञानीजनों को त्रिदेवा का ज्ञान नहीं। परन्तु ये महात्मा तो अक्षर के भी परे की बातें कह रहे हैं।"-ऐसा किसने, किससे कहा?

स. ३८-आत्म-दृष्टि खुल जाने से कौन भाई अपने पूरे परिवार सहित श्रीजी के चरणों में समर्पित हो गये?

स. ३९-"पहिले गुरु से तोड़ के" अर्थात् उक्त दोनों वेदान्तियों की अपने पहले गुरु से सम्बन्ध तोड़ने की वजह क्या थी?

ज. ३९- जब वेदान्त के प्रकाण्ड विद्वान भीम भट्ट और श्याम भट्ट को श्रीजी साहेबजी का ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ, तब उन्होंने सोचा, "ब्रह्मज्ञान तो हमारे गुरुजी को भी चाहिए न!" ऐसा समझकर वे अपने गुरु से मिलने गए, तो गुरुजी उन पर भड़क गये। वे वेदान्त ज्ञान के →

→ अत्यंत बोधदायक और निराला ही प्रकाश दिखाते थे।

→ करते एक दिन भीम भाई की अन्तर दृष्टि खुल गई। उनके सम्मुख कूटस्थ अक्षर ब्रह्म से परे अक्षरातीत के ज्ञान का भोर प्रत्यक्ष प्रकाशित हो गया।

ज. ३५- तत्पश्चात् भीम भट्ट श्याम भट्ट को सम्बोधित करते हुए कहने लगे, "हम लोग परमात्मा को सर्व व्यापक मानकर घट-घट में उनकी स्थापना करते थे।" इस प्रकार भीम भाई को अक्षर परे अक्षरातीत ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त हो गया।

ज. ३६- *"जब नींद उड़ी अक्षर की"* - यह वाक्यांश भीम भट्ट का है।

ज. ३७- "संसार के अन्य ज्ञानीजनों को तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश और महाविष्णु आदि देवों की वास्तविकता अतः यथार्थता का भी बोध नहीं है। चौदह लोक ब्रह्माण्ड के ज्ञान की तो उन्हें गन्ध तक नहीं है। परन्तु ये महात्मा तो अक्षर ब्रह्म से भी परे की अखण्ड लीला का ज्ञान दे रहे हैं।"- ऐसा भीम भट्ट ने श्याम भट्ट से कहा।

ज. ३८- अतः "बिचार बिचार बिचारहीं, बेधे सकल संधान" की तरह विचार करते-करते भीम भाई की आत्म-दृष्टि खुल गई और वे अखण्ड लीला का प्रत्यक्ष अनुभव करने लगे। तत्पश्चात् वे अपने पूरे परिवार सहित श्रीजी साहेबजी के चरणों में समर्पित हो गये।

→ चक्कर में ही उलझे रहे। अपने शिष्यों की बात उन्होंने सुनी ही नहीं। वे तो "इन दोनों ने गुरु बदल लिया है "-यह सुनकर आग-बबूला हो उठे और "इन दोनों का मुख देखना भी पाप है"- यह समझकर दुर्वासा ऋषि बन गये। यसर्थ ये दोनों भाई *"पहिले गुरु से तोड़ के"* अर्थात् अपने पहले गुरु शंभूनाथजी से सम्बन्ध तोड़कर आगे बढ़े और ब्रह्मज्ञान की शरण में आत्मा समर्पित कर श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त में शामिल हो गए।

स. ४०-वेदान्त के इन दोनों प्रकाण्ड ज्ञानियों के निजधाम मार्ग पर प्रतिष्ठित होने पर क्या हुआ?

स. ४१-दोनों भाइयों को चर्चा में ऐसा क्या मिला, जिससे वे सुन्दरसाथ की सेवार्थ रात-दिन वहीं रहने लगे?

स. ४२-सूरत में किस धर्म मार्ग का बोलबाला था?

स. ४३-गोविन्द व्यास नामक विद्वान कौन थे और क्या करते थे?

स. ४४-ब्रह्मसृष्टियों के लिए वल्लभाचार्य ने श्रीमद्भागवत की "सुबोधिनी" नामक टीका में कितने प्रश्न बनाकर रखे हैं?

स. ४५-गोविन्द व्यासजी भागवत के उक्त ४० रहस्यमयी प्रश्नों को समझाने में क्यों असमर्थ थे?

स. ४६-उक्त बात की जानकारी श्रीजी साहेबजी को किसने दी?

स. ४७-"ए लियो चाहिये इन सें" - यह वाक्यांश किनके श्री मुख का है और उन्होंने किनसे कहा है?

ज. ४७- *"ए लियो चाहिये इन सें"* - यह वाक्यांश श्रीजी साहेबजी के →

ज. ४०- जब वेदान्ती श्याम भट्ट और भीम भट्ट अपने निजधाम धर्म मार्ग पर प्रतिष्ठित हुए, तब उनके साथ अन्य बहुत से वेदान्ती श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-श्रीमन्निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हुए।

ज. ४१- उक्त दोनों भाइयों को चर्चा द्वारा अखण्ड आनन्द की अपूर्व अनुभूति हुई। अतः अब ये दोनों भाई सुन्दरसाथ की सेवा के लिए दिन-रात वहीं-श्रीजी स्वरूप के पास ही रहने लगे। यह देखकर वेदान्ती समाज में खलबली मच गई।

ज. ४२- मदीना कहलानेवाले सूरत शहर में चारों ओर प्रायः वैष्णव धर्म का ही बोलबाला था। वैष्णव धर्म में भी वल्लभाचार्य के धर्म का अधिक प्रभाव था।

ज. ४३- सूरत में वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के कथाकारों में से एक गोविन्द व्यासजी थे। वे सुबोधिनी टीका के पक्के और सच्चे कथाकार थे तथा सुबोधिनी टीका द्वारा ही वे चर्चा-कथा करते थे।

ज. ४४- ब्रह्मात्माओं के लिए वल्लभाचार्यजी ने श्रीमद्भागवत की "सुबोधिनी" नामक टीका में कुल चालीस प्रश्न बनाकर रखे हैं।

ज. ४५- भागवत के वे ४० प्रश्न ब्रह्मात्माओं के लिए ही थे। यसर्थ उन प्रश्नों के रहस्यमय अर्थ गोविन्द व्यासजी तो क्या अन्य कोई भी नहीं खोल सका था। वे प्रश्न हद के नहीं अपितु बेहद के थे। अतः बिना तारतम के उन्हें कोई खोल नहीं सकता था।

ज. ४६- वल्लभाचार्य ने श्रीमद्भागवत की "सुबोधिनी" नामक टीका में जो चालीस प्रश्न रखे हैं, उन्हें कोई भी पण्डित अथवा कथाकार खोल नहीं पाया है।"-इस बात की जानकारी श्रीजी साहेबजी को दलाल वल्लभ भाई ने दी।

→ श्री मुख का है और यह वाक्यांश श्रीजी स्वरूप दलाल वल्लभ से कह रहे हैं। उक्त कथन का तात्पर्य है, "वे चालीस प्रश्न उतारकर ले आना चाहिए।"

स. ४८-किसने सुबोधिनी टीका के वे चालीस प्रश्न उतारकर श्रीजी स्वरूप के हाथ में दिये?

स. ४९-श्रीजी साहेबजी ने किसके द्वारा गोविन्दजी को जागृत किया?

स. ५०-जब वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के सुबोधिनी ग्रन्थ के कथाकार गोविन्द व्यासजी सुबोधिनी टीका के चालीस प्रश्नों द्वारा ही अपनी आत्म-जागृति कर श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त में शामिल हुए, तब वैष्णव समाज में कैसी हलचल मची?

स. ५१-जब गोविन्द व्यास द्वारा निजानन्द सम्प्रदाय में दीक्षित होने से उनके प्रति जो जितने भी श्रद्धालु भक्त थे, वे लोग भी उनके साथ श्री कृष्ण प्रणामी धर्म में शामिल हो गये, तब वैष्णव समाज में कैसी हलचल मच गई?

ज. ५१- जब गोविन्द व्यास द्वारा निजानन्द सम्प्रदाय में दीक्षित होने से →

स. ५२-कैसी-कैसी नीयत लेकर वैष्णव समाज के लोग श्रीजी की चर्चा सुनने के बहाने आते थे?

स. ५३-पुनः श्रीजी की चर्चा सुनने से उक्त वैष्णवी लोगों की क्या दशा हो जाती थी?

स. ५४-इन वैष्णवी लोगों की ईर्ष्यालु नीयत के कारण वल्लभाचार्य की सुबोधिनी टीका के विषय में श्रीजी के श्री मुख से कौनसा प्रकरण उतरा?

ज. ४८- श्रीमद्भागवत की सुबोधिनी नामक टीका के अन्दर से वे चालीस प्रश्न उतारकर श्रीजी साहेबजी के हाथ में दलाल वल्लभ ने दिये।

ज. ४९- व्यासासन पर बैठकर "सुबोधिनी" टीका से श्रीमद्भागवत की चर्चा करनेवाले कथाकार गोविन्द व्यासजी को श्रीजी साहेब ने श्रीमद्भागवत के ही चालीस प्रश्नों द्वारा जागृत किया।

ज. ५०- जब गोविन्दजी को श्रीजी स्वरूप की चर्चा द्वारा श्रीमद्भागवत की सुबोधिनी टीका में रखे चालीस प्रश्नों का रहस्य खुल गया, तब वे तुरंत ही श्रीजी के चरणों में समर्पित हो गए। अन्य जो वैष्णवी गोविन्द व्यासजी के प्रति श्रद्धा-विश्वास रखते थे, वे सब भी गोविन्दजी के साथ ही निजानन्द धर्म सिद्धान्त में दीक्षित हो गए। तब समाज में भूकम्प-सी हलचल मच गई।

→ उनके प्रति जो जितने भी श्रद्धालु भक्त थे, वे लोग भी उनके साथ श्री कृष्ण प्रणामी धर्म में शामिल हो गये, तब वैष्णव समाज के बहुत से लोगों के एक साथ श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त में शामिल होने पर कलियुग की सेना अर्थात् सभी ईर्ष्यालु लोग एक होकर श्रीजी से नाराज हो गये और उनकी निन्दा करने लगे। इस प्रकार समाज में बड़ी भारी हलचल मच गई।

ज. ५२- कितने वैष्णव लोग ईर्ष्यालु दृष्टि से श्रीजी की चर्चा में विघ्न डालने की नीयत लेकर आते थे, परन्तु श्रीजी के दर्शन और उनकी चर्चा सुनकर नि:शंक होकर लौट जाते थे।

ज. ५३- घर से तो ये वैष्णवी निन्दक चुगली करने और कुनीयत लेकर आते थे। परन्तु जब वे महाप्रभु श्रीजी स्वरूप के दर्शन कर उनकी बोधदायी चर्चा सुनकर नि:शंक हो जाते थे, तब वे अपने सौभाग्य पर पूर्णब्रह्म की दया का आभार मानकर कृतकृत्य हो जाते थे।

ज. ५४- इन वैष्णवी लोगों की ईर्ष्यालु नीयत के कारण वल्लभाचार्य की श्रीमद्भागवत की सुबोधिनी टीका के विषय में श्रीजी के श्री मुख से "मीठी वल्लभाचारज बान" नामक कीर्तन अवतरित हुआ।

स. ५५-उक्त अवतरित प्रकरणों को पढ़कर वैष्णव लोग क्या कहने लगे?

ज. ५५- उक्त "मीठी वल्लभाचारज बान" नामक प्रकरण द्वारा चर्चा →

स. ५६-श्रीजी के प्रति कुभावनाग्रस्त होकर आनेवाले को किस तरह वापस लौटना पड़ता था?

ज. ५६- श्रीजी के प्रति कुभावनाग्रस्त होकर दर्शन करने के बाद भी निन्दा करने के लिए कमर बाँधकर आये वैष्णवी लोगों को श्रीजी स्वरूप →

स. ५७-"इनकी निंदा जो करे" - यह वाक्यांश कौन, किनसे और क्यों कह रहे हैं?

ज. ५७- *"इनकी निंदा जो करे"*- यह वाक्यांश निन्दा करने की नीयत →

स. ५८-इस समय कौन भाई किनके साथ श्रीजी के दर्शनार्थ आये थे और उन्हें क्या पहचान हुई?

स. ५९-इस प्रकार उक्त दोनों समाजों में जब श्रीजी की अलौकिक चर्चा के बोलबाले की धूम मच रही थी, उसी समय श्री बिहारीजी ने नवतनपुरी से क्या भेजा?

स. ६०-महन्त श्री गादीपति ने उस चिट्ठी में "बन्धेज" बनाकर क्या आदेश किया था?

स. ६१-उक्त बन्धेज में क्या-क्या लिखा था तथा उन्हें पालन करने का क्या परिणाम हो सकता था?

ज. ६१- उक्त बन्धेज-प्रतिबन्ध में जो तीन बातें लिखी थीं, →

→ सुनकर कितने वैष्णवी श्रीजी की प्रशंसा करने लगे, तो कितने उनकी निन्दा करने लगे, परन्तु उस प्रकरण के मर्मभेदी ज्ञान के कारण बहुत से वैष्णवी लोग श्रीजी स्वरूप को पहचानकर उनकी शरण में आ गये।

→ के श्री मुख से चर्चा सुनने के बाद स्वयं ही यह कहना पड़ता था, "इन स्वरूप की जो निन्दा करेगा, वह अवश्यमेव ही नष्ट हो जायेगा। ये बड़े महान् साधु हैं। निश्चित ही ये परब्रह्म की ओर ले जानेवाले,उनके पास पहुँचानेवाले हैं।"

→ से आनेवाले वैष्णवी लोग निन्दा सुनने की चाहना रखनेवाले अन्य वैष्णवी जनों से कह रहे हैं क्योंकि उन्होंने श्रीजी के दर्शन करके चर्चा के वचनों द्वारा श्रीजी स्वरूप को पहचान लिया था और उनकी कुभावनाएँ अब बदल चुकी थीं।

ज. ५८- इस समय भगवान भाई की संगत से मानिकजी भी श्रीजी स्वरूप के दर्शन करने आए थे। उन्होंने श्री मुख की चर्चा सुनते ही श्रीजी साहेब स्वरूप की पहचान कर ली।

ज. ५९- उक्त प्रकार से जब यहाँ सूरत में वेदान्ती समाज और वैष्णव समाज-इन दोनों समाजों में श्रीजी की अपूर्व और अलौकिक चर्चा के बोलबाले की धूम मच रही थी, तभी नवतनपुरी गादीपति श्री बिहारीजी की ओर से एक चिट्ठी आई।

ज. ६०- महन्त श्री गादीपति बिहारीजी ने उस चिट्ठी में लिखा था, "मैंने यहाँ तीन बातों पर प्रतिबन्ध लगाया है। अतः मेहराज! तुम भी जहाँ-जहाँ जाओ, वहाँ इन तीनों बातों के प्रतिबन्ध का पालन करते जाना और समाज को भी कराना।"

→ उनमें से पहली थी -

"एक तो नीच जात को, सुनाइयो नहीं तारतम"

अर्थात् नीच जाति की आत्माओं को तारतम न सुनाया जाय।

→

दूसरी थी -

"दूजे विधवा स्त्रीय को"

अर्थात् विधवा स्त्रियों को भी तारतम न सुनाया अथवा दिया जाय और तीसरी थी -

"तीजे कहें हम तुम"

स. ६२-उक्त बन्धेज का पालन करना श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त के अनुकूल था या प्रतिकूल था? क्यों?

ज. ६२- निजानन्द स्वामी सद्गुरु स्वरूप द्वारा प्रदत्त निजानन्द सिद्धान्त

स. ६३-उक्त बन्धेज के विषय में श्रीजी साहेबजी ने गादीपति श्री बिहारीजी को क्या प्रत्युत्तर दिया?

ज. ६३- उक्त बन्धेज के विषय में श्रीजी साहेबजी ने गादीपति श्री बिहारीजी को प्रत्युत्तर देते हुए चिट्ठी में लिखा, "यह धर्म सिद्धान्त सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी प्रदत्त है। उन्होंने आपके और मेरे सामने खोजीबाई नामक स्त्री को तारतम दीक्षा दी थी। आपके दो बन्धेजों का प्रत्युत्तर तो इसी में है। अतः आप विचार कर लीजिए। तीसरा

स. ६४-"श्री देवचन्द्रजी ए राह चलाए" - यह वाक्यांश किनके श्री मुख का है और इस वाक्यांश का तात्पर्य क्या है?

ज. ६४- *"श्री देवचन्द्रजी ए राह चलाए"* - यह वाक्यांश श्रीजी साहेबजी के श्री मुख का है, जिसका तात्पर्य यह है कि निजानन्द

स. ६५-"या लीला के प्रताप थें" - इस वाक्यांश का तात्पर्य खुलस्त करो? यहाँ श्रीजी साहेबजी ने श्री बिहारीजी को क्या समझाया?

ज. ६५- *"या लीला के प्रताप थें"* - इस वाक्यांश का तात्पर्य है कि

→ अर्थात् तारतम प्रदान करने का अधिकार मात्र श्री मेहराज-श्रीजी स्वरूप और श्री बिहारीजी के सिवाय अन्य किसी को न हो। किन्तु उक्त तीनों ही बन्धेज निजानन्द सिद्धान्त के विरुद्ध थे, जिन्हें पालन करने से नीच जाति और विधवा स्त्रियों में पड़ी ब्रह्मात्माएँ तारतम मंत्र और ज्ञान से वंचित रह जातीं।

→ के अनुसार अक्षरातीत धाम से आई ब्रह्मात्माएँ चारों वर्णों और तीनों लिंगों में उतरी हैं। यसर्थ उक्त बन्धेज का पालन करना श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त के अनुकूल नहीं, प्रतिकूल था।

→ बन्धेज भी श्री सद्गुरु स्वरूप के भविष्य "पसरसी चौदे भवन" के प्रतिकूल है अर्थात् हमारे सिद्धान्त का विस्तार चौदह लोकों में महाप्रलय तक होनेवाला है। अतः तारतम दीक्षा देने का कार्य सिर्फ आप और मैं ही करेंगे ? क्या! यह कैसे संभव है क्योंकि क्या आप और मैं महाप्रलय तक अजर-अमर रहनेवाले हैं? यसर्थ ये तीनों प्रतिबन्ध निजानन्द सिद्धान्त के विरुद्ध होने के कारण इन पर अमल करना संभव नहीं है। अतः आप भी ये प्रतिबन्ध समाज से हटा दीजिए।"

→ सिद्धान्त के संस्थापक सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी हैं। अतः उनके सिद्धान्तों को बदलने का अधिकार किसी को नहीं है। चाहे वह मैं होऊँ, आप-गादीपति बिहारीजी हों अथवा अन्य कोई भी हो। इस सिद्धान्त का मात्र प्रचार-प्रसार करने का ही अधिकार हमें प्राप्त है, न कि बदलने का!

→ ब्रह्मात्माओं की लीला का ज्ञान संसार को तारतम द्वारा प्राप्त करना है। ब्रह्मात्माओं द्वारा की गई ब्रह्मलीला के प्रभाव से सारी सृष्टि की आत्माएँ मुक्ति प्राप्त करेंगी। यहाँ श्रीजी साहेबजी ने श्री बिहारीजी को समझाते हुए कहा, "देखिए! यह लीला महाप्रलय तक चलती रहेगी। अतः तारतम दीक्षा का कार्य मात्र हम और →

→ आप कहाँ तक करेंगे? इस लीला अवधि को देखकर आप स्वयं ही विचार-विवेक कीजिए कि आपके द्वारा लगाया हुआ प्रतिबन्ध →

स. ६६-क्या श्रीजी स्वरूप और गादीपति बिहारीजी महाप्रलय तक अजर-अमर इस धरती में जीते रहेंगे?

स. ६७-श्रीजी स्वरूप और गादीपति बिहारीजी को सद्गुरु श्रीमन्निजानन्द स्वामी द्वारा बताये मार्ग को अनुसरण करने का अधिकार है या उनकी राह को बदलने का अधिकार है?

स. ६८-क्या श्री परमधाम की आत्माएँ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण में ही हैं, क्षुद्र वर्ण और स्त्री जाति में नहीं आई हैं?

ज. ६८- नहीं ! श्री परमधाम की आत्माएँ केवल हिंदू और मुसलिम जाति →

स. ६९-गादीपति बिहारीजी द्वारा भेजे गए बन्धेजरूपी प्रतिबन्ध को पालन करने से अर्थ होता या अनर्थ?

स. ७०-उक्त बन्धेजों के जवाब के साथ नवतनपुरी गादीपति श्री बिहारीजी के पास क्या भेजा गया?

ज. ७०- उक्त बन्धेजयुक्त श्री बिहारीजी के पत्र के प्रत्युत्तर में श्रीजी ने →

स. ७१- श्रीजी स्वरूप की चिट्ठी पढ़कर गादीपति बिहारीजी खुश हुए या दुःखी हुए? उन्होंने कलश ग्रन्थ को क्या नाम दिया?

→ (बन्धेज) समाज के लिए पालने योग्य है या अयोग्य?"

ज. ६६- मनुष्य की आयु कलिकाल में केवल सौ साल ही मानी गयी है। अतः श्रीजी स्वरूप और गादीपति बिहारीजी महाप्रलय तक कदापि इस धरती में अजर-अमर नहीं रहेंगे।

ज. ६७- श्रीजी स्वरूप और गादीपति बिहारीजी को सद्गुरु श्रीमन्निजानन्द स्वामीजी ने सिद्धान्त पर चलने का तथा सैद्धान्तिक नियमों का अनुसरण करने और कराने का ही अधिकार दिया है, न कि बदलने का। अतः उनके द्वारा बताये मार्ग को अनुसरण करना है, न कि बदलना है।

→ के ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण में ही नहीं, अपितु क्षुद्र वर्ण और स्त्री जाति में भी आई हैं। यदि ऐसा नहीं होता, तो सद्गुरुजी मुसलिम धर्म की खोजीबाई नामक विधवा स्त्री की परमधाम की वासना "रईबाई" की परख क्यों बताते?

ज. ६९- गादीपति बिहारीजी द्वारा भेजे गए बन्धेजरूपी प्रतिबन्ध को पालन करने से अनर्थ हो जाता। सद्गुरु श्रीमन्निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी का सिद्धान्त और भविष्य जड़-मूल से उखड़ जाता।

→ सैद्धान्तिक सार समझानेवाले एक पत्र सहित उन्हीं दिनों पूर्ण हुआ कलश ग्रन्थ भी भेज दिया, जिससे सद्गुरु स्वरूप की गादी पर आसीन श्री बिहारीजी के आन्तरिक विचारों की जानकारी भी मिल सके।

ज. ७१- श्रीजी स्वरूप द्वारा भेजी गई सिद्धान्त बोधी चिट्ठी पढ़कर गादीपति श्री बिहारीजी अत्यन्त दुःखी हुए क्योंकि उनके अज्ञानजन्य और सिद्धान्त विरोधी बन्धेजों को श्रीजी स्वरूप ने अस्वीकार कर दिया। पुनः इसी बात का गुस्सा उतारते हुये श्री बिहारीजी ने →

→कलश ग्रन्थ को "क्लेश ग्रन्थ" नाम दे दिया और अन्दर का गुस्सा पी गये। वे इतने से ही शांत थोड़ी हो सकते थे। अतः →

स. ७२-श्रीजी साहेबजी की चिट्ठी के प्रत्युत्तर में गादीपति बिहारीजी ने कैसी चिट्ठी भेजी?

ज. ७२- श्रीजी साहेबजी की चिट्ठी के प्रत्युत्तर में गादीपति श्री बिहारीजी ने दुर्वासा ऋषिवत् रोषातुर होकर श्रीजी स्वरूप को सूरत में पुनः एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा था, "आज से तुम्हारा और हमारा मार्ग अलग होता है। आज हमारा सम्बन्ध उस सीमा पर आ पहुँचा है, जहाँ उसे निभाना असंभव हो जाता है। मैंने तुम्हें पहचान →

स. ७३-श्रीजी साहेबजी को धर्म-समाज से निकालने का श्री बिहारीजी ने क्या कारण बताया?

ज. ७३- गादीपति श्री बिहारीजी के अनुसार श्रीजी साहेबजी को धर्म-सिद्धान्त से बहिष्कृत करने के पीछे यह कारण था, "एक तो मेरे द्वारा भेजे हुए तीनों बन्धेजों को श्री मेहराज ने लागू नहीं किया। →

स. ७४-जब गादीपति बिहारीजी की चिट्ठी आई, तब श्रीजी साहेबजी क्या विचार करने लगे?

ज. ७४- जब गादीपति श्री बिहारीजी की ओर से उक्त प्रकार की चिट्ठी आयी, तब उसे पढ़कर श्रीजी ने बिचार किया, "यह कैसा समय →

स. ७५-"ए काम नहीं सैयन" - यह वाक्यांश किनके श्री मुख का है और इसका क्या तात्पर्य है?

ज. ७५- *"ए काम नहीं सैयन"* - यह वाक्यांश श्रीजी साहेबजी के श्री मुख का है, जिसका तात्पर्य है कि ऐसा कार्य रतनबाई सखी का →

→ उन्होंने श्रीजी स्वरूप के पत्र का प्रत्युत्तर लिखकर ही चैन की साँस ली।

→ लिया है। मैं जिन-जिन सुन्दरसाथ को समाज से अलग करता हूँ, तुम उन्हें अपनी शरण में ले जाते हो। इन बातों से यह स्पष्ट हो गया है कि तुम मेरे विमुख चल रहे हो। अब मुझमें तुम्हारा विश्वास नहीं रह गया है। यसर्थ मैं तुम्हें सुन्दरसाथ समाज-धाम के ब्रह्ममुनियों की जमात से बहिष्कृत करता हूँ। अब तुम्हारे और हमारे बीच कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है। आज से पत्र-व्यवहार करने की भी कोई आवश्यकता नहीं है।"

→ दूसरा-मैंने सुन्दरसाथ समाज और धाम से जिन-जिन लोगों जैसे-धारा भाई, रामजी भाई आदि को बहिष्कृत किया था, उन्हें श्री मेहराज ने मेरे विपरीत होकर धर्म-समाज में पुनः शामिल कर लिया और उन्हें श्री राजजी के चरणों में शरण दे दी। मेरी हर बातें ठुकराकर मुझे समाज के बीच नीचा साबित करने के अपराध के कारण ही मैंने मेहराज को धाम और धर्म-समाज से दूर किया है।"

→ आ गया? हमें एक-दूसरे से अलग होना पड़ा? श्री बिहारीजी को मेरे प्रति ऐसे कठोर वचन लिखकर नहीं भेजने चाहिए थे। मैंने कोई अपराध तो नहीं किया था? सद्गुरुजी के सिद्धान्त के अन्दर आनेवाले पालनीय नियमों को प्रकाशित करके ही तो भेजा था! फिर ऐसा क्यों ?"

→ नहीं हो सकता। ऐसा कार्य तो जीवों में भी निम्न दर्जे का जीव ही कर सकता है। मेरे ऊपर उन्होंने यह भस्मासुर का-सा कार्य किया है। सन्त शिरोमणि तुलसीदासजी ने ठीक ही कहा है, "मान पाई अभिमान काहूं न होई" गादीपति होकर बिहारीजी ऐसा कार्य करते हैं! अब उन्हें कौन समझाये?"

स. ७६-श्री बिहारीजी द्वारा भेजी गई चिट्ठी स्वयं श्रीजी ने पढ़ने के पश्चात् वही चिट्ठी पढ़ने और विचार-विवेक करने के लिए किसे दी?

स. ७७-इस समय सूरत के सुन्दरसाथ ने मिलकर श्री बिहारीजी द्वारा भेजी गई चिट्ठी के विषय में क्या विचार-विमर्श किया?

स. ७८-"बैठे श्री देवचन्द्रजी किनके हिरदे"- यह वाक्यांश किनका है और इस वाक्यांश का क्या तात्पर्य है?

ज. ७८- *"बैठे श्री देवचन्द्रजी किनके हिरदे"* - यह वाक्यांश सूरत में उपस्थित सुन्दरसाथ समाज का है। इस वाक्यांश का तात्पर्य है कि क्या गादीपति बिहारीजी श्री देवचन्द्रजी के कार्य को आगे →

स. ७९-"तुम लेओ हक सिर काम" - ऐसा कौन और किससे कह रहे हैं तथा इस वाक्य का क्या तात्पर्य है?

ज. ७९- गहन विचार-विवेक और परस्पर सलाह-मशविरा करने के पश्चात् सूरत के समाज के अग्रगण्य सुन्दरसाथ मिलकर श्रीजी साहेबजी के पास आए और कहने लगे, "आप श्री सद्गुरु स्वरूप की आज्ञा लेकर ब्रह्मात्माओं की जागनी का कार्य अब स्वयं सँभालिए। सुन्दरसाथ की जिम्मेदारी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने आपको दी है। श्री बिहारीजी के समझाने पर आज तक कोई भी इस धर्म पर विश्वास नहीं ला पाया है। उनकी चर्चा द्वारा किसी को भी पूर्णब्रह्म →

ज. ७६- श्री बिहारीजी द्वारा भेजी गई चिट्ठी स्वयं पढ़कर श्रीजी साहेबजी ने वही चिट्ठी सूरत में उस वक्त उपस्थित सुन्दरसाथ समाज के हाथ में सौंप दी और समाज से कहा, "जो होना होता है, वह तो होकर ही रहता है। जो कार्य नलिया में ही होनेवाला था, वह यहाँ इस प्रकार आकर घटा।"

ज. ७७- इस समय सूरत के सुन्दरसाथ ने मिलकर श्री बिहारीजी द्वारा भेजी गई चिट्ठी के विषय में यह विचार-विमर्श किया, "अब, श्री देवचन्द्रजी अपनी मूल शक्तियों सहित किनके दिल में विराजमान हुए हैं, इस बात को निश्चित करना अत्यंत जरूरी है।"

→ बढ़ा रहे हैं? आज तक श्री सद्गुरु द्वारा जागृत किये सुन्दरसाथ को धर्म-समाज से अलग करने के सिवाय उन्होंने क्या किया है? समझा-बुझाकर भेजे हुए सुन्दरसाथ में भी वे विभिन्न प्रकार की शंका-उपशंकाएँ भरकर वापस भेज देते हैं और अन्त में धर्म-सिद्धान्त विरोधी सिद्धान्तों का पालन न करने पर श्रीजी साहेबजी को भी धर्म, धाम और समाज से निकाल दिया ! तो क्या सद्गुरु स्वरूप बिहारीजी के अंदर विराजमान हैं ?"

→ परमात्मा की पहचान नहीं हो पायी है। जिन-जिनको आप समझा-बुझाकर आशीर्वाद लेने उनके पास भेजते हैं, वे-वे वहाँ से निराश होकर और शंका लेकर ही लौटते हैं। अतः अब आप किस सोच में हैं? अब तो आपको दीन इसलाम-निजानन्द धर्म का कार्य अपने सिर पर लेना ही होगा। *"तुम लेओ हक सिर काम"* ऐसा सूरत के अग्रगण्य सुन्दरसाथ ने श्रीजी साहेबजी से कहा। इसका वास्तविक तात्पर्य यह है कि सूरत के सुन्दरसाथ ने यहाँ श्रीजी से कहा "जो जिम्मेदारी सद्गुरु स्वरूप ने आपके सिर पर दी थी और जिसे आपने अठारह साल पहले श्री बिहारीजी के सिर पर दे दी थी, उसे पुनः अब आप अपने सिर पर ले लीजिए।"

स. ८०-सूरत के अग्रगण्य सुन्दरसाथ ने अपने निर्णय के पश्चात् श्रीजी साहेबजी से क्या पूछा?

ज. ८०- सूरत के अग्रगण्य सुन्दरसाथ ने निर्णय लेने के पश्चात् श्रीजी स्वरूप से पूछा, "अच्छा! आप अब यह बताइये कि आपने श्री बिहारीजी को गादी पर सद्गुरु स्वरूप के कहने पर बैठाया था या आपने स्वयं ही उन्हें वह अधिकार देकर सुन्दरसाथ को उनके हाथों में सौंप दिया था? आप जिन्हें-जिन्हें समझाकर, विश्वास दिलाकर श्री बिहारीजी के पास आशीर्वाद लेने भेजते हैं, क्या श्री बिहारीजी उन्हें भी सँभाल पा रहे हैं? आप स्वयं ही विचार कर →

स. ८१-अन्ततोगत्वा सूरत के सुन्दरसाथ ने मिलकर क्या करने का सोचा? वे श्री राजजी महाराज के दर्जे में सिंहासन पर श्री मेहराज को आसीन कराने क्यों गए?

ज. ८१- अन्त में श्रीजी साहेबजी को सुन्दरसाथ की बातों का समर्थन करना ही पड़ा। वे सोचने लगे, "सुन्दरसाथ के जागनीरूपी कार्य-भार की जिम्मेदारी जाहिर में भी अपने सिर पर लेना जरूरी है। बातुनी अर्थ में तो मैं वह जिम्मेदारी निभा ही रहा था। परन्तु सुन्दरसाथ बातुनी अर्थ को समझ नहीं पाए।" इधर सुन्दरसाथ विचार करने लगे, "श्री बिहारीजी ने जाहिरी गादी का अधिकार →

स. ८२-सिंहासन पर श्रीजी साहेबजी को बैठाकर उनकी आरती करने और निछावर होने का यश यहाँ सूरत में किन्हें प्राप्त हुआ?

ज. ८२- श्रीजी साहेब को सिंहासन पर आसीन कराकर आरती के रूप में अपने-आप को उनके चरणों में निछावर करने का श्रेय-यश सर्वप्रथम भीम भाई को मिला। उन्होंने पहले श्रीजी साहेब को उठाकर सिंहासन पर आसीन कराया और श्री बाईज्यूराजजी के →

→ देख लीजिए कि निजानन्द स्वामी श्री सद्गुरु स्वरूप ने आपके सिर पर सुन्दरसाथ की जो जिम्मेदारी दी थी, उसे श्री बिहारीजी के माथे पर किसने थोपा था? इस प्रकार सुन्दरसाथ की जिम्मेदारी आपने उनके सिर पर देकर सुन्दरसाथ को न घर का, न घाट का छोड़ा, क्यों ? श्री बिहारीजी को सद्गुरु की गादी पर आसीन कर आपने ही उन्हें यह दर्जा दिया था। यह जिम्मेदारी और अधिकार देकर आप सुन्दरसाथ पर अत्याचार क्यों करवा रहे हैं ? बिहारीजी द्वारा सुन्दरसाथ पर जो भी अत्याचार हो रहा है, उन सबकी जिम्मेदारी आपके ऊपर है।"

→ लेकर अनर्थ को बढ़ावा दिया। परन्तु अब हमें श्रीजी स्वरूप को गादीपति बनाना चाहिए। परन्तु किसी भी सिद्धान्त में तो एक ही गुरुगादी होती है।" यसर्थ सुन्दरसाथ में गादी की जो मान्यता है, सो बनी रहे, इस दृष्टि से सूरत के साथ ने एक सिंहासन तैयार कर उस सिंहासन पर श्री मेहराज को श्री राजजी का दर्जा देकर आसीन कराने का निर्णय किया। पुनः श्री बाईज्यूराज को भी श्यामाजी की जगह पर बैठाकर दोनों स्वरूपों की आरती उतारकर निछावर आदि किया और श्री मेहराज को श्री प्राणनाथजी की पदवी से विभूषित कर जयकारे के साथ समाज में उन्हें श्री प्राणनाथ घोषित कर दिया।

→ हाथ से उनकी आरती कराई। तत्पश्चात् श्री बाईज्यूराज को श्री श्यामाजी का दर्जा देकर उन्हें भी सिंहासन में श्रीजी स्वरूप के साथ जोड़ी में बैठाया। अब "श्री राजजी और श्री श्यामाजी" इन युगलस्वरूप की सर्वप्रथम भीम भाई ने बड़े प्रेम से आरती की। भीम भाई के पश्चात् अन्य समस्त सुन्दरसाथ ने क्रमशः श्री युगलस्वरूप की आरती-निछावर करके अपने जीवन को कृतकृत्य किया। अब श्री बिहारीजी द्वारा सुन्दरसाथ पर की हुई प्रताड़नाएँ दिन-प्रतिदिन घटती गयीं।

स. ८३-इस समय सूरत के सुन्दरसाथ ने श्री मेहराज ठाकुर के प्रति किस नाम से जयकारा लगाया?

ज. ८३- इस समय सूरत के सुन्दरसाथ ने सिंहासनासीन श्री मेहराज के प्रति श्री प्राणनाथ नाम से जयकारा लगाया अर्थात् संसार में →

स. ८४-सूरत के अग्रगण्य और विद्वान सुन्दरसाथ ने समाज के बीच श्रीजी स्वरूप को किस पदवी से विभूषित कर जय-ध्वनि लगाई?

ज. ८४- सूरत के अग्रगण्य और विद्वान सुन्दरसाथ ने कलियुग के अन्त में →

स. ८५-"अब जागनी के कार्य-भार की जिम्मेदारी श्रीजी स्वरूप ने अपने सिर पर ग्रहण कर ली है" - इस बात की सूचना कहाँ-किनके पास भेजी गयी?

ज. ८५- श्री बिहारीजी को गादीपति के स्थान पर आसीन कराकर उनके →

स. ८६-उस पत्र में श्रीजी साहेबजी की ओर से महन्त श्री बिहारीजी को कैसी बातें लिखी गई?

ज. ८६- उक्त पत्र में श्रीजी साहेबजी की ओर से महन्त श्री बिहारीजी को ऐसा लिखा गया, "तुम हमको काढ़े साथ से" अर्थात् आपके बनाये अथवा लगाए गए "बन्धेज" के विषय सिद्धान्त के अनुकूल न होने के कारण मैंने आपको सत्य वचनों की सलाह दी थी। परंतु वे सत्य बातें आपको कड़वी लगीं, जिसके बदले में आपने रोषातुर होकर आगे-पीछे देखे बिना "भस्मासुर" स्वरूप धारण कर लिया और मुझे ही साथ से निकाल दिया। अब आपके और →

स. ८७-श्रीजी साहेब को ऐसा कार्य करने और इस प्रकार की सूचना देने पर किसने मजबूर किया?

→ फँसी धाम की हम समस्त आत्माएँ, जो माया के चंगुल में फँसकर अनाथ हो चुकी थीं, उन्हें सनाथ बनानेवाले होने के कारण ही आपको हम "प्राणनाथ" की पदवी से विभूषित करते हैं। आप हमारी आत्मा-प्राण के नाथ अर्थात् हमारे धनी हैं।

→ आनेवाले बुद्ध और कल्कि अवतार में से अक्षरातीत से आये हमारे श्री प्राणनाथजी स्वरूप कल्कि अवतार हैं, ऐसा निश्चित कर "प्राणनाथ प्यारे की जय" इस प्रकार की घोषणा की। चारों ओर इस जयकारे की ध्वनि गूँज उठी। चारों ओर श्रीजी स्वरूप की जय-जयकार होने लगी।

→ प्रतिनिधि के रूप में धर्म-प्रचार करते हुए श्रीजी स्वरूप जिन चौदह नियमों का पालन करते आये थे, वे सब नियम सुन्दरसाथ ने छुड़वा दिये। "सुन्दरसाथ की वह जिम्मेदारी जो अब तक श्री बिहारीजी के सिर पर थी, वे सब यहाँ श्रीजी स्वरूप ने अपने सिर पर ले ली है।" - इस बात की सूचना नवतनपुरी गादीपति श्री बिहारीजी के पास भेज दी गयी।

→ मेरे बीच दया करने जैसा रहा ही क्या? आपके द्वारा मुझे समाज से अलग कर देने के कारण मैंने भी आज से धर्म का सम्पूर्ण कार्य-भार अपने सिर पर ले लिया है। यदि धर्म का यह कार्य-भार मैंने अपने स्वार्थवश लिया हो, तो मैं जहाँ-जहाँ जाऊँगा, सभी कार्यक्षेत्रों में मेरी हार होगी और यदि सुन्दरसाथ की जिम्मेदारी का कार्य-भार मैंने परमार्थ (सुन्दरसाथ) के लिए लिया होऊँगा, तो मैं जहाँ-जहाँ जाऊँगा, मेरी विजय होगी। यह सब आप गादी पर बैठे-बैठे रंगबाई के साथ देखते रहियेगा। मैं अब रणभूमि में उतर रहा हूँ!! आप अच्छी तरह से देखना!!!"

ज. ८७- श्रीजी साहेबजी को ऐसा कार्य करने और इस प्रकार की सूचना देनेवाला पत्र लिखने पर गादीपति श्री बिहाराजी के भस्मासुर व्यवहार ने मजबूर किया।

स.८८- श्रीजी स्वरूप ने श्री बिहारीजी से किस विषय का निर्णय करने के लिए जामनगर में बैठे-बैठे इंतजार करने को कहा?

ज. ८८- उक्त जागनी कार्य की जिम्मेदारी श्रीजी स्वरूप ने नाम, यश, कीर्ति अथवा स्वार्थवश ली हो, तो वे जहाँ-जहाँ जायेंगे, वहाँ- →

स. ८९-इस वक्त लालदासजी कहाँ-से-कहाँ पहुँचे और वहाँ क्या करने लगे?

स. ९०-किस वि.सं. में श्री लक्ष्मण सेठ सुदामापुर गये थे?

स. ९१-सुदामापुर के भीमजी और पीताम्बरजी- इन दोनों भाइयों ने थोड़ी चर्चा कहाँ सुनी थी?

स. ९२-लक्ष्मण सेठ ने इन दोनों भाइयों को पूरी चर्चा सुनाकर कहाँ समझदार बनाया था?

स. ९३-भीमजी और पीताम्बरजी-ये दोनों भाई किनके हाथों श्रीमन्निजानन्द सम्प्रदाय में दीक्षित हुए थे?

स. ९४-इन दोनों भाइयों द्वारा तारतम ग्रहण करने के पश्चात् विट्ठलेश्वर गोसाईं के लोग क्यों नाराज हुए?

ज. ९४- ये दोनों भाई वैष्णव समाज के बड़े प्रतिष्ठित और धर्म के थंभरूप →

→ वहाँ असफल रहेंगे और यदि उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि परमार्थ (सुन्दरसाथ) और श्री सद्गुरु स्वरूप की आज्ञा पालन करने के लिए उक्त पद स्वीकार किया हो, तो वे जहाँ-जहाँ जायेंगे; सफलता प्राप्त करेंगे। श्रीजी स्वरूप ने श्री बिहारीजी से इसी विषय का निर्णय करने के लिए जामनगर में बैठे-बैठे इंतजार करने को कहा।

ज. ८९- इस समय श्री लालदासजी ठट्ठा नगर से चलकर पोरबंदर स्थित अपने घर सुदामापुर पहुँचे और वहाँ अपने निजानन्द धर्म के कार्य में प्रवृत्त हो गए।

ज. ९०- वि. सं. १७२७ में लक्ष्मण सेठ अपने घर सुदामापुर गये थे।

ज. ९१- सुदामापुर के प्रतिष्ठित श्री भीमजी और पीताम्बर भाई-इन दोनों ने पहले ठट्ठा नगर में लक्ष्मण सेठ के द्वारा कुछ दिन तारतम की चर्चा सुनी थी।

ज. ९२- उक्त दोनों भाई कार्य-कारणवश चर्चा-श्रवण छोड़कर ठट्ठा नगर से सुदामापुर अपने घर आ गये। पुनः उन्हें लक्ष्मण सेठ ने इस वक्त पोरबंदर में ही चर्चा सुनाकर समझदार और परिपक्व बनाया था।

ज. ९३- वैष्णव सम्प्रदाय के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में भीमजी और पीताम्बरजी ने लक्ष्मण सेठ द्वारा पूरी तरह धर्म सिद्धान्त समझकर लक्ष्मण सेठ अर्थात् लालदासजी महाराज द्वारा ही श्रीमन्निजानन्द सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की थी।

→ अर्थात् बड़े धनाढ्य थे। ऐसे लोग यदि अपने वर्षों से पालन करते आए धर्म से विमुख हो जायें, तो पूर्व धर्म की खती तो होनी ही थी। यसर्थ विट्ठलेश्वर गोसाईं-वल्लभ सम्प्रदाय के महन्त उनसे बड़ा नाराज हुए।

स. ९५-"ए कौन मारग पैदा भयो" - यह वाक्यांश कौन और कहाँ कह रहे हैं?

ज. ९५- *"ए कौन मारग पैदा भयो"* - यह वाक्यांश सुदामापुर के वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के वैष्णव अनुयायिओं में हलचल मच →

स. ९६-कहाँ श्री लालदासजी के चर्चा-कथा की धूम मच गयी, जिससे वैष्णव लोग निन्दा करने लगे?

ज. ९६- जब श्री लालदासजी ठट्ठा नगर से अपने नगर सुदामापुर गये, तब देखा कि भीम भाई और पीताम्बर भाई तो उनके धर्मज्ञान प्रति ठट्ठा नगर से ही जिज्ञासु-पिपासु थे। अतः पोरबंदर-सुदामापुर में जब उक्त दोनों भाइयों ने श्री लालदासजी से पूरी तरह धर्म-सिद्धान्त समझकर तारतम ग्रहण किया, तब उनके साथ उनके →

स. ९७-वैष्णव लोग क्यों ईर्ष्या के परवश होकर श्री लालदासजी की निन्दा करने लगे?

ज. ९७- सुदामापुर-पोरबंदर में श्री लालदासजी श्री राजजी के प्रत्यक्ष दर्शन द्वारा जोर-शोर से चर्चा करते थे। वहाँ श्री राजजी-श्री कृष्णजी →

स. ९८-पुनः श्री लालदासजी पर किन-किन बातों का आक्षेप लगाकर वैष्णवी लोग श्री निजानंद सिद्धान्त का प्रचार करते थे?

ज. ९८- वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के वैष्णवी लोग चर्चा श्रवण के बहाने श्री लालदासजी के चर्चा-मण्डान में आकर बैठते थे। जब श्री राजजी-श्री कृष्णजी प्रत्यक्ष आरोगने के लिए आते थे, तब श्री राजजी द्वारा वरण किए गए आभूषणों में से घुँघरू की आवाज सुनाई देती थी। इसी बात को वैष्णवी लोग निन्दा का विषय बनाकर श्री →

→ जाने के कारण वहाँ के गादीपति गुरु चिन्तित और आश्चर्यवत् होकर कहने लगे। वे कहने लगे, "न जाने कौनसा नया धर्म मार्ग उत्पन्न हुआ है कि सभी लोग उसमें शामिल होते चले जा रहे हैं। अरे ! हमारे लक्ष्मण सेठ, भीम और पीताम्बर जैसे उग्र विद्वान भी वहाँ चले गये।" इस प्रकार वे अपने मठों-मंदिरों एवम् घर-घर में लोगों से कहने लगे।

→ अन्य वैष्णवी दोस्त और सम्बन्धी भी निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल होने लगे। लालदास महाराज यहाँ पूर्ण वैराग्य के साथ चर्चा करते थे। अतः यहाँ चर्चा की बड़ी धूम मच गई और श्रोताओं के जमात में वृद्धि होती गई। मानो यहाँ चर्चा का सागर उमड़ पड़ा हो। बहुत से लोग लालदासजी महाराज से मंत्र ग्रहण कर निजानन्द सम्प्रदाय में दीक्षित हुए। तब वैष्णव लोग निन्दा करने लगे, परंतु उनका कुछ जोर नहीं चल सका।

→ के मेहेर की निरन्तर वर्षा होती रही और प्रत्यक्ष लीला होने लगी। यह बात दज्जालों-ईर्ष्यालु दृष्टि रखनेवालों के लिए निन्दा का विषय बन गयी और वे तरह-तरह की बातें बनाकर श्री लालदासजी महाराज और उनके धर्म की निन्दा करने लगे।

→ लालदासजी पर आक्षेप लगाते हुए कहते थे, "यह प्रणामी लक्ष्मण सेठ ने तो कोई चूहों का धर्म चलाया है। वे चूहों के पैर में घुँघरू बाँध देते हैं और फिर पर्दा लगा देते हैं। तब थाल धराकर कहते हैं कि देखो! हमारे राजजी-श्री कृष्णजी प्रत्यक्ष भोग आरोग रहे हैं। न जाने यह कैसा विचित्र धर्म मार्ग चल पड़ा है।" ऐसा आक्षेप-आरोप लगाकर वैष्णवी लोग मनमानी कुछ भी बोलते थे और ईर्ष्यावश उक्त प्रकार के अपशब्दों का प्रयोग करके निजानन्द धर्म का प्रचार करते थे। चमड़ी की दृष्टि और कुभावना रखनेवाले लोग प्रत्यक्ष लीला के प्रति उक्त प्रकार से कहने लगे।

स. ९९-क्या पूछने पर ये निन्दनीय वैष्णवी लोग उत्तर नहीं दे पाते थे और क्यों?

ज. ९९- ये निन्दक वैष्णवी लोग प्रतिदिन शहर भर में घूम-घूमकर निन्दा →

स.१००-पोरबंदर-लक्ष्मणपुर में लालदासजी की चर्चा सुनकर लोगों में क्या-क्या भाव उत्पन्न होते थे?

ज.१००-पोरबंदर-लक्ष्मणपुर में जो लोग ब्रह्मज्ञान के जिज्ञासु-पिपासु थे, →

स.१०१- लालदासजी किन प्रश्नों को लेकर रात-दिन चर्चा और वाद-विवाद किया करते थे?

ज.१०१-श्री लालदासजी महाराज विशेषकर सुबोधिनी टीका के उन चालीस प्रश्नों को, जो वल्लभाचार्यजी ने सुबोधिनी टीका में →

स.१०२-कौन लोग और किनके प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाते थे और मौन धारण कर रह जाते थे?

स.१०३-कौन-कौन कौतूहलवश मात्र चर्चा सुनने आये थे और चर्चा सुनकर सुन्दरसाथ समाज में शामिल हो गये?

स.१०४-लालदासजी महाराज के श्री मुख की भावभरी चर्चा सुनकर कौन-कौन धर्म में शामिल हुए?

ज.१०४-लक्ष्मणपुर-पोरबंदर में लालदासजी महाराज की वैराग्यपूर्ण और भावभरी चर्चा सुनकर दामा भाई, सूरचन्द, लालदासजी की →

→ करते रहते थे। परंतु जब उन्हें श्रीमद्भागवत की सुबोधिनी टीका के प्रश्न पूछे जाते थे, तो वे किसी प्रकार उनका उत्तर नहीं दे पाते थे क्योंकि उन प्रश्नों के उत्तर तारतम सम्बन्धी हैं। अतः उनकी दाल नहीं गल पाती थी।

→ उन्हें श्री लालदासजी की वाणी-चर्चा अत्यंत मीठी और सत्य प्रतीत होती थी। कोई-कोई तो चर्चा सुनते-सुनते उसी में तन्मय हो जाते थे। चर्चा श्रवण में आनेवालों में से कितनों को तो प्रत्यक्ष अनुभव होता था। अतः वे उस चर्चा-ब्रह्मज्ञान की प्रशंसा करते अघाते ही नहीं थे।

→ रखे थे, जिसके अर्थ का खुलासा होने पर श्रीजी द्वारा गोविन्द व्यास जागृत हुए थे, वे चालीस प्रश्न लेकर रात-दिन चर्चा और वाद-विवाद करते रहते थे। किन्तु उनके विरोधी वैष्णव लोग अपने ही धर्मग्रन्थ श्रीमद्भागवत के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाते थे और मौन रह जाते थे।

ज.१०२-वे वैष्णवी लोग जिनके नसीब में निन्दा और कपोल-कल्पित बकवास करना ही लिखा था, वे बिचारे वैष्णवी लालदासजी द्वारा पूछे गए उनके अपने ही ग्रंथ-सुबोधिनी टीका के प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाते थे और मुँह बाए देखते ही रह जाते थे।

ज.१०३-इधर-उधर निन्दा-प्रशंसा की विभिन्न बातें सुनकर कई लोग कौतूहलवश मात्र चर्चा श्रवण में आने लगे। उनमें से गोपीनाथ और खेमजी जोशी चर्चा सुनकर सुन्दरसाथ समाज में शामिल हो गये।

→ धर्मपत्नी-लालबाई, मावजी के पुत्र कान्हजी भाई, जो मसकत के थे, आदि ब्रह्मसृष्टियाँ-सुन्दरसाथ भारी संख्या में निजधर्म में शामिल हुये। प्रतिदिन नये-नये साथी चारों ओर से चर्चा में जुट जाते थे और श्री राजजी जिन पर अपनी कृपा-दृष्टि डाल देते थे, वे ध्यानमग्न हो चर्चा श्रवण कर अपना काम बना ही लेते थे।

स.१०५-कहाँ नित्य प्रति चर्चा-कथा, उत्सव-रसोई चल रही है? कहाँ से आकर कान्हजी भाई धर्म समाज में दीक्षित हुए?

ज.१०५- पोरबंदर-सुदामापुर स्थित श्री लालदासजी के घर में नित्य प्रति →

स.१०६-कहाँ भारी संख्या में नये-नये सुन्दरसाथ आ रहे हैं और उन पर श्री राजजी की कैसी कृपा हो रही है?

स.१०७-इस वक्त जब श्री राजजी की दयावन्त दृष्टि श्री लालदास अथवा लक्ष्मण सेठ पर पड़ी, तो क्या हुआ?

ज.१०७- श्री लालदासजी महाराज के वैराग्यपूर्ण प्रेम और भाव से भरी चर्चा के प्रभाव से श्रोतागण भाव-विभोर हो उठते थे और अपार →

स.१०८-इस समय लालदासजी पर ऐसी आपत्ति क्यों आई कि एक ओर दैविक धक्के के कारण सामान के साथ उनके निनानवे जलपोत ही समुद्र में डूब गये और दूसरी ओर उन्हें असन्तुष्ट लोगों की निन्दा भी सहन करनी पड़ी?

ज.१०८- "जाके धनिये पकड़े हाथ" अर्थात् भौतिक और धार्मिक इन उभय पक्षों से एक साथ आपत्ति-विपत्ति उसी के ऊपर बरसती है, जो परमात्मा की दया-दृष्टि के पात्र होता है। उक्त कथनानुकूल →

स.१०९-"जब कछु ना रह्या हाथ में" - ऐसी दशा आने पर आगे श्री लालदासजी महाराज के साथ और क्या-क्या हुआ?

ज.१०९- *"जब कछु ना रह्या हाथ में"* अर्थात् जब लालदासजी महाराज के हाथ कुछ भी नहीं रह गया, तब उन्होंने समझा, "श्री राजजी →

→ चर्चा-कथा, भजन-कीर्तन, उत्सव-रसोई की धूम मच रही थी। इसी बीच मसकत बंदर के धर्मप्रेमी मावजी भाई के सुपुत्र कान्हजी भाई ने यहाँ आकर धर्म-चर्चा श्रवण की और निजानन्द सिद्धान्त में दीक्षित हुए।

ज.१०६-पोरबंदर स्थित श्री लालदासजी महाराज के घर में ब्रह्मज्ञान की भावभरी चर्चा सुनकर धाम की बहुत-सी सम्बन्धी आत्माएँ धर्म में दीक्षित हुईं। यहाँ सुन्दरसाथ के ऊपर श्री लालदासजी महाराज के माध्यम से श्री राजजी की अनुपम अनुकम्पा की वर्षा हुई।

→ प्रेम उमड़ जाने के कारण वे अपने-आप को सँभाल ही नहीं पाते थे। धनी के प्रति ऐसे हृदयविदारक प्रेम और चर्चा की भावभरी ओजस्विता को देखकर श्री राजजी महाराज ने श्री लालदासजी को अपनी नजर में ले लिया तथा श्री राजजी की दयावन्त दृष्टि जब लक्ष्मण सेठ पर पड़ी, तो उन पर एक दैविक आपत्ति आई।

→ ही लक्ष्मण सेठ को भी एक ओर तो व्यापार में हानि होने से माया का धक्का लगा अर्थात् सामान से भरे निनानवे जलपोत समुद्री तूफान में बह गये और उनका सारा व्यापार चौपट हो गया तथा बार-बार लेनदार व्यापारी उन्हें तंग करने लगे। पुनः दूसरी ओर धर्म विरोधी लोग असन्तुष्टी के कारण उनका और उनके धर्म का उल्टा-सीधा प्रचार-प्रसार करने लगे। अब यहाँ माया की ओर से उनका दिल पूरी तरह से हट गया और वे सद्गुरु की ओर प्रेरित हो गए।

→ की इच्छा बिना ऐसा कभी नहीं.... कभी नहीं ... कभी नहीं हो सकता। ऊपरवाले की मेरे ऊपर अन्य ही दृष्टि होगी।" वे ऐसा सोचने लगे। अब सांसारिक ऐश्वर्यों से उनका लगाव पूरी तरह छूट गया। धर्म के प्रति उनकी दृढ़ता और बढ़ गयी।

स.११०-उक्त प्रकार का प्रकोप टूट पड़ने पर लक्ष्मण सेठ ने क्या किया? क्या उन्होंने धर्म को दोष दिया?

ज.११०-उपरोक्त प्रकार का दैविक प्रकोप टूट पड़ने पर श्री लक्ष्मण सेठ →

स.१११-श्री लालदासजी ने कब तक अन्न ग्रहण न करने का प्रण लिया?

ज.१११-अब लक्ष्मण सेठ सोचने लगे, "श्री राजजी ने न जाने मेरे लिये आगे क्या सोचा है? अतः इस बात की जानकारी के लिए अब मैं →

स.११२-कहाँ जाने का लक्ष्य रखकर लक्ष्मण सेठ कहाँ से मगरोल-पाटण आए?

ज.११२-अब कितने महीनों अथवा वर्ष के पश्चात् एक दिन लक्ष्मण सेठ अपने घर पोरबंदर से "सतगुरु चरण को छेत्र है, जाए जहाँ सब →

स.११३-मगरोल-पाटण में मानवरूपी दज्जाल को किसने और क्यों बैठाया था और उस दज्जाल ने किस तरह लक्ष्मण सेठजी की यात्रा में विघ्न डाला ?

ज.११३-मगरोल-पाटण होकर ही जामनगर जाया जा सकता था। अतः मगरोल-पाटण में सेठजी के साहुकारों ने मानवरूपी दज्जालों को प्रहरी के रूप में बैठा दिया था, जिससे वे मानवरूपी दज्जाल आड़े आकर लालदासजी को जामनगर जाने न दें। अतः उन्होंने सेठजी को रोकते हुए कहा, "आप जामनगर की ओर नहीं जा →

स.११४-लक्ष्मण सेठ को बहुत निराश क्यों होना पड़ा? किनकी आज्ञा मानकर वे जामनगर न जाकर सूरत की ओर चल पड़े?

ज.११४-लक्ष्मण सेठजी ने नवतनपुरी गादीपतिजी के दर्शन के बाद ही →

→ की चित्त-वृत्ति धर्म में लग गई और वे यह समझने लगे, "मुझे इस प्रकार सांसारिक वैभवों से दूर करने में श्री राजजी की बड़ी भारी आन्तरिक प्रेरणा है।" धर्म के प्रति दोष-दृष्टि आने के बदले धर्म के प्रति उनका विश्वास और बढ़ गया।

→ तब तक अनाज ग्रहण नहीं करूँगा, जब तक मैं सद्गुरु स्वरूप के दर्शन नहीं कर लेता।" इस प्रकार लक्ष्मण सेठ ने नवतनपुरी जाकर सद्गुरु स्वरूप गादीपति के दर्शन करने के बाद ही अन्न ग्रहण करने की प्रतिज्ञा की।

→ सोक" इस ध्येय से नवतनपुरी सद्गुरु स्वरूप गादीपतिजी के दर्शन करने यह सोचकर चले कि "वहाँ जाकर दर्शन द्वारा आत्म-शान्ति प्राप्त कर अन्न ग्रहण करूँगा।" अतः पोरबंदर से नवतनपुरी जाने का लक्ष्य रखकर लक्ष्मण सेठ मगरोल-पाटण आ पहुँचे।

→ सकते क्योंकि आपके साहुकारों का कहना है कि जामनगर में आपका धर्मस्थान-तीर्थक्षेत्र है। अतः यदि वहाँ जाकर आप साधु बन जाएँगे, तो उनका कर्जा कौन चुकायेगा?" श्री लालदासजी ने उन प्रहरियों को बहुत समझाया, परंतु वे नहीं माने और कहने लगे, "आप चाहें, तो सूरत की ओर जा सकते हैं, परंतु जामनगर नहीं।" तब लक्ष्मण सेठ ने सोचा, "गादीपतिजी जामनगर में हैं, परंतु सुना है कि धर्मदाता सद्गुरुजी तो अभी सूरत में हैं। यदि ये प्रहरी मेरी नहीं सुनते, तो सद्गुरुजी के चरण ही सही।"

→ अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने की ठानी थी। किंतु प्रहरियों के न मानने पर उन्हें बहुत निराश होना पड़ा। अतः ऊपरवाले की मर्जी नहीं है, यह सोचकर प्रहरियों की आज्ञा सिर पर लेकर वे सूरत की ओर चल पड़े।

स.११५-हिम्मती लक्ष्मण सेठ सूरत का लक्ष्य रखकर मगरोल से कहाँ पहुँचे?

स.११६-दीव बंदर में सुन्दरसाथ के बीच लक्ष्मण सेठ ने संसार से विरक्त होकर कितने दिनों तक चर्चा की?

स.११७-पुनः दीव बंदर से चलकर लक्ष्मण सेठ कहाँ से नाव में बैठकर कहाँ उतरे?

स.११८-लक्ष्मण सेठ सूरत तो पहुँचे, परंतु वे कहाँ से नाव में बैठकर कहाँ उतरकर श्रीजी के पास पहुँचे? इस समय कौनसा वि. सं.चल रहा था?

स.११९-श्री लालदासजी श्रीजी के चरणों में सर्वभावेन कहाँ और किस वि.सं. में समर्पित हुए?

स.१२०-लक्ष्मण सेठ से मिलकर श्रीजी को कैसा लगा और उस समय उन्होंने अपने श्री मुख से लक्ष्मण सेठ को क्या कहा?

स.१२१-भोजन ग्रहण करने के विषय में लक्ष्मण सेठ ने श्रीजी साहेबजी को क्या जवाब दिया?

ज.१२१-सद्गुरुजी की उक्त आज्ञा सुनते ही लक्ष्मण सेठ ने विनयपूर्वक →

ज.११५- हिम्मत के सम्राट लक्ष्मण सेठ सूरत का लक्ष्य रखकर मगरोल-पाटण से दीव बंदर आये।

ज.११६- दीव बंदर में सुन्दरसाथ समाज के बीच वैराग्यपूर्ण होकर कथा-चर्चा करते हुए लक्ष्मण सेठ पन्द्रह दिन रहे। तत्पश्चात् वे दीव बंदर के सुन्दरसाथ समाज से विदा लेकर आगे बढ़े।

ज.११७- पुनः दीव बंदर के सुन्दरसाथ से विदा लेकर लक्ष्मण सेठ घोघे बंदर आ पहुँचे। घोघे बंदर से नाव में बैठकर वे सूरत आ गये। सूरत में नाव से उतरकर सोचने लगे, "सैयदवाड़ा कहाँ है?"

ज.११८- श्री लालदासजी महाराज घोघे बंदरगाह से नाव में बैठकर सूरत उतरे और श्री प्राणनाथजी की चरण-शरण में आ पहुँचे। इस समय वि. सं. १७२९ चल रहा था। वहाँ श्री राजजी भी लालदासजी के इंतजार में बैठे सोच रहे थे, "वे कब आ पहुँचेंगे?"

ज.११९- श्रीमद्भागवत महापुराण, महाभारत और गीता के प्रकाण्ड धुरन्धर वैष्णवी लक्ष्मण सेठ अर्थात् श्री लालदासजी महाराज श्री प्राणनाथजी के चरणों में "खाली लेकर हाथ" इस दशा में सर्वभावेन सूरत में वि.सं. १७२९ में समर्पित हुए।

ज.१२०- लक्ष्मण सेठ से मिलते ही श्री प्राणनाथजी को सन्तोष तो हुआ ही, परन्तु उनकी हिम्मत दुगुनी हो गयी क्योंकि उनके विश्वस्त दायें हाथरूप एवम् विद्वान और सच्चे भक्त उनके पास आ पहुँचे। तत्पश्चात् उन्होंने लक्ष्मण सेठ से कहा, "उठो! अब भोजन ग्रहण करो।"

→ हाथ जोड़कर विनती करते हुए उन्हें बताया, "मैंने अनाज न खाने का प्रण लिया है। जब तक मैं गादीपति श्री बिहारीजी के चरणों में प्रणाम नहीं कर लेता, तब तक मेरे लिये भोजन ग्राह्य नहीं है।"

स.१२२- लक्ष्मण सेठ की उक्त बातें सुनकर श्रीजी साहेबजी ने उनसे क्या कहा और क्या निश्चित किया?

स.१२३- यहाँ आ पहुँचने पर बीतककार श्री लालदासजी महाराज ब्रह्मात्माओं को कौनसा पावन समय (सरत) याद करने का आग्रह कर रहे हैं?

ज.१२३- यहाँ आ पहुँचने पर बीतककार श्री लालदासजी महाराज ब्रह्मात्माओं को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं, "हे सुन्दरसाथजी! जिस तरह जिस घड़ी परमात्मा का नाम सुमिरन प्राप्त होता है, उस घड़ी को "शुभ घड़ी" कहा जाता है, उसी तरह जिस दिन त्रिताप से पीड़ित आत्मा सांसारिक उलझनों →



ज.१२२- लक्ष्मण सेठ की उक्त बातें सुनने के पश्चात् श्री प्राणनाथजी ने उनसे कहा, "तुम्हारा प्रण अब पूरा हो गया है। चिन्ता की कोई बात नहीं है" और निश्चित करते हुए उनसे यह भी कह दिया, "अब तुम ब्रह्ममुनियों के समूह में आ ही चुके हो।"

→ का सर्वभावेन परित्याग कर सद्गुरुजी के श्री चरणों में समर्पित हो जाती है, उस घड़ी को "पावन घड़ी" माना जाता है। मेरे लिए जागनी के ब्रह्माण्ड की यह अत्यंत पावन घड़ी है। अतः इस घड़ी को जरा स्मरण करो।" इस तरह आग्रह करते हुए वे चाहते हैं कि ऐसी पावन घड़ी समस्त साथ के जीवन में भी यथाशीघ्र आ जाये, जिससे शीघ्र ही ब्रह्मात्माएँ धाम पहुँच सकें।

-(प्रकरण ३१, सवाल-जवाब नं.१२३, कुल सं. ११२७+१२३=१२५०)।

पूर्वांश-प्रथम खण्ड समाप्त ।



नोट :-

यशवन्ती कहे मेरे श्रद्धा सुमन साथजी !

आपश्री घर में ही बैठे-बैठे, जरूर यह मनन करनाजी ।

मनन करके प्रेम धरके, शीघ्र ही परमधाम आनाजी ।।

यशवन्ती सखी कहे.....

- प्रणाम



आह्वान



निसदिन रंग मोहोलन में, साथ स्यामाजी स्याम ।
याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम ।।

- (परिक्रमा, प्र.४/चौ.५) ।

अर्थः- हे मेरे धामस्थ सुन्दरसाथजी !

हम सब अक्षरातीत ब्रह्मधाम-श्री रंगमहल में रात-दिन श्री श्यामश्यामाजी के साथ कैसे रहा करती थीं ? अपने अंग-प्रत्यंग से उन सुखों को याद करो, जिन्हें हम आठों पहर-चौबीसों घण्टों की लीलाओं द्वारा निरंतर प्राप्त किया करतीं थीं ! इतना तो करो !!

- लेखक

- श्री राज -

श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र चे. ट्रस्ट तथा श्री प्राणनाथ महिला मंडल (रजि.) बोरीवली, मुंबई

का ई. स. १९९८ से २०१४ तक का प्रकाशन -

१. विवरण पत्रको समीक्षा - नेपाली

२. विवरण पत्र की समीक्षा } (ई. स. १९७८ में नेपाल-धरान मंदिर से प्रकाशन हुआ है) - हिन्दी

३. मोहजलको पाँच प्रकरण } - नेपाली

४. समीक्षा- संसार और मेरा भर्तार की - हिन्दी

५. समीक्षा- संसार और मेरा भर्तारनी - गुजराती

६. Samiksha - A reply to Sansar Aur Mera Bhartar - English

७. संसार और मेरा भर्तार की समीक्षा का 'उपसंहार' - हिन्दी

८. संसार और मेरा भर्तारनी समीक्षाना 'उपसंहार' - गुजराती

९. विराट विज्ञान दर्पण - हिन्दी

१०. विराट विज्ञान दर्पण - गुजराती

११. अपना धाम दर्शन (दीनदयाल कृत मझली वृत्त) - हिन्दी

१२. आपणुं घर परमधाम (दीनदयाल कृत बचली वृत्त) - गुजराती

१३. आफ्नै घरको वर्णन (दीनदयाल कृत नेपाली वृत्त) - नेपाली

१४. चर्चनी के प्रश्नोत्तर (दीनदयाल कृत) - हिन्दी

१५. चर्चनीना सवाल-जवाब (दीनदयाल कृत) - गुजराती

१६. विराट विज्ञान दर्पण के सवाल-जबाब (दीनदयाल कृत)- हिन्दी

१७. विराट विज्ञान दर्पणना प्रश्नोत्तर (दीनदयाल कृत) - गुजराती

१८. अष्टादशोऽध्यायः (कुलजम स्वरूप साहेब के) - हिन्दी

१९. अष्टादशोऽध्यायः (कुलजम स्वरूप साहेब के) - गुजराती

२०. अष्टादशोऽध्यायः (" " " ") - नेपाली

२१. पञ्चरोशनी (" " " ") - हिन्दी

२२. पंचरोशनी (" " " ") - गुजराती

२३. पञ्चरोशनी (" " " ") - नेपाली

२४. त्रिरंगी बोध (" " " ") - हिन्दी

२५. त्रिरंगी ज्ञान (" " " ") - गुजराती

२६. द्वादश प्रकाश (" " " ") - हिन्दी

२७. द्वादश प्रकाश (" " " ") - गुजराती

२८. मेहेर सागर-नित्य पाठ (" ") - हिन्दी

२९. मेहेर सागर-नित्य पाठ (" ") - गुजराती

३०. सेवा-पूजा (दैनिक) - हिन्दी

३१. सेवा-पूजा (दैनिक) - गुजराती

३२. चर्चनी पट दर्शन - हिन्दी

३३. अभिनन्दन ग्रंथ (१०८ श्री दीनदयालजी
महाराज हीरक जयन्ती) - हिन्दी

३४. सेवा-पूजा (अर्थ सहित) - गुजराती

३५. अष्ट प्रहर सेवा-पूजा (अर्थ सहित) - गुजराती

३६. स्वामी श्री लालदासजी महाराज प्रणीत
बीतक साहेब के श्री दीनदयाल कृत - हिन्दी
- सवाल-जवाब ३ खण्डों में
१.पूर्वांश-प्रथम खण्ड-मजल शुरूआत से सूरत पर्यन्त
२.मध्यांश-द्वितीय खण्ड-मजल सूरत से उदयपुर पर्यन्त
३.उत्तरांश-तृतीय खण्ड-मजल मंदसोर से बीतक समाप्ति

३७. स्वामी श्री लालदासजी महाराज प्रणीत
बीतक साहेबना श्री दीनदयाल कृत - गुजराती
- प्रश्नोत्तर ३ खण्डोमां
१. पूर्वांश-प्रथम खण्ड-मजल शरूआतथी सूरत पर्यन्त
२. मध्यांश-द्वितीय खण्ड-मजल सूरतथी उदयपुर पर्यन्त
३. उत्तरांश-तृतीय खण्ड-मजल मंदसोरथी बीतक समाप्ति
३८. श्री प्राणनाथजी प्रणीत कुलजम स्वरूप साहेब अंतर्गत स्थित
श्री किरंतन और श्री प्रकाश ग्रंथ के 'पुराना किरंतन' और
'भागवत का सार' - हिन्दी
३९. श्री प्राणनाथजी प्रणीत कुलजम स्वरूप साहेब अंतर्गत स्थित
श्री किरंतन अने श्री प्रकाश ग्रंथना 'पुराना किरंतन' अने
'भागवत नो सार' - गुजराती
४०. श्री दीनदयाल सूक्ति - हिन्दी to English

❖ प्रणाम ❖